ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' 238 म अंक 15 नवम्बर 2017 (वर्ष 10 मास 119 अंक 238)

ऐ अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

जगदीश प्रसाद मण्डलक 2 टा दीर्घकथा संग्रह

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE **विदेह आर्काइव**

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)
२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)
२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)
२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह
२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।
2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)
2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- "**देवीजी**" (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।
२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।
२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ "**निश्तुकी**" (कविता संग्रह)लेल।
२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ "**मोहनदास**" (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)
२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)
२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)
२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा
श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह
श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव
श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईशा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मूर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र-** श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौंजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फूलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कृशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

कौँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढ़ियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौंजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि। पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
तान्पुरा सह भाव संगीत
(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)
तरसा/ तासा-
श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-
श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)
गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा
श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।
श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंका/ ढोल वादक
श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)
श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)
श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
नङेरा/ डिगरी-
श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-
१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८
Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf
२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८
Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf
३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०
Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67
४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०
Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70
५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०
Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72
६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११
Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77
७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२
Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111
८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३
Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126
९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३
Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142
१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५
Videha_01_01_2015
११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५
Videha_01_11_2015
१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५
Videha_01_12_2015
१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६
Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन
विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)
विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]
The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor
Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह


मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA
सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग- विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कैं मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ कैंhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html ''भालसरिक गाछ''- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा '''विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका'' धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब ''भालसरिक गाछ''जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

सिद्धिरस्तु

साहित्य

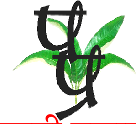
शम्भुदास

जगदीश प्रसाद मण्डल



शम्भुदास

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलबाड़ी लगौनिहार
तथा
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित

ISBN : 978-93-87675-21-6

दाम : ₹ 251/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

SHAMBHUDAS
Collection of Long Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal

कथाक सत्तैर-

दू शब्द

जगदीश प्रसाद मण्डल लोकक मोनमे पैसै छथि, बरहम बाबाक मोनमे पैसै छथि। आ तँए ने बरहम बाबा आ लोक दुनूक मोन हर्खित छै, से भाँज ओ लगा लै छथि। शम्भुआकेँ शम्भु बनैत ओ देखै छथि आ फेर दरबारी दास (शम्भुदास) बनैत सेहो। ढहैत बेवस्थाक तरमे शम्भुदासक पड़ब मिथिलाक कलाक राँइ-बाँइ हेबाक निशानी अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक कथाक मुख्य पात्र ने 'भैंटक लावा'मे आ ने 'बिसाँढ़' कथामे राँइ-बाँइ होइए, तखन शम्भुदास कोनो 'दरवारी' दास भऽ गेल? की जगदीश प्रसाद मण्डलमे कोनो परिवर्तन तँ नै आबि गेलन्हि, की ओ थाकि रहल छथि आ हारि रहल छथि?

मुदा जँ गँहिकी नजरिसँ देखबै तँ शम्भुदास कोनो तरहेँ 'भैंटक लावा' बा 'बिसाँढ़'क हीरोसँ न्यून नै अछि। तखन ओ किए हारि रहल अछि बा जगदीश प्रसाद मण्डल ओकरा किए हरबा रहल छथि? ऐँ यौ, ओ तँ लेखक छथि, ऐ पात्र सभक भगवान, ओ एकरा जितबेलथि किए नै?

जगदीश प्रसाद मण्डलक पात्र फुसियाँहीक नै होइत अछि, आ तँए ओ आर्थिक मोर्चापर जीति जाइत अछि, जतए हाथसँ काज होइ छै, मुदा कला (आ साहित्य सेहो)क शास्त्रीय घुरछी, जे आंगुरपर गानल जाइबला लोक द्वारा निर्मित अछि, मे ओ ओझरा जाइत अछि। ओकरा आर्थिक

स्थितिसँ लड़बाक छलै, लड़ल आ जीतल। कलाक क्षेत्रमे ओ दरबारी बनि गेल, तखने ओकर गुजर हेतै मुदा एतौ एकटा विद्रोहक झण्डा उठेलक शम्भुदास, घर-परिवार बिसरि बिआह नै करबाक ओकर निर्णय सिद्ध केलक जे 'दरबारी' दास बनब ओकर सुविधावादी प्रवृत्ति नै छै, लचारी छै आ तै लेल ओ बिआह नै करबाक निर्णय केलक। घर-परिवार लेल ओ सुविधावादी नै बनल, आ घर-परिवार बिसरि बिआह नै करबाक ओकर निर्णय 'दरबारी' दास बनबाक लेल कएल ओकर पश्चाताप मात्र अछि।

समानान्तर परम्परा कलाकेँ दरबारी दास बनबासँ रोकत। जँ शम्भुदास हारत तँ हारत मिथिला। जगदीश प्रसाद मण्डल नै हारता, हारत मिथिला। जँ मिथिला ऐ चेतौनीकेँ नै चिन्हत।

-गजेन्द्र ठाकुर

मइटुग्गर

जहिना सरयुग नदीमे नहा भक्त मन्दिरमे प्रवेश करिते भगवान रामक दर्शन करैए, तहिना तपेसर अँगनाक मेहमे ओंगैठ समाजकेँ भोज खुअबैक ओरियान देख रहल छला। पोखैरक पानि जकाँ शीतल, शान्त आ समतल तपेसरक मन अँगनाक सुगन्धमे मस्त छेलैन। तैबीच घुरनी चमकैत स्टीलक छिपलीमे पनरह-बीसटा सुखल बरी, एकटा बर आ पानिसँ भरल गिलास आगूमे रखि कहलकैन-

"बाबू, कनी चीख कऽ देखियौ जे नीक भेल की नहि?"

मुस्कियाइत बेटी आ छिपलीमे सजल बर-बरीकेँ देख तपेसर हेरा गेला। मन पड़लैन मइटुग्गर। मुदा चुल्हिपर चढ़ल लोहिया छोड़ि अँटकब उचित नै बुझि घुरनी चुल्हि लग पहुँच गेली। कमलक फड़ सन एकटा बरी मुँहमे लइते तपेसरके मन पड़लैन परिवारमे अपन कएल काज।

सौन मास। भोरहरबामे मेघ फटि बरखो भेल आ अधरतीए-सँ जे पुर्बा उठल ओ उठले रहल, तैसँग करखनोकाल झकसियो अबिते रहल। जेना-जेना दिन उठैत गेल तेना-तेना पुर्बाक लपेटि सेहो बढ़िते गेल। प्रसवक दर्दक आगम सुशीला सासुकेँ कहलैन। पुतोहुक बात सुनि सुनयना तपेसरकेँ पल्हैन बजबए कहलखिन।

ओसारक ओछाइनपर ओंघराएल सुशीलाक मनमे लड़ाइ पसैर गेल। एक दिस प्रसवक पीड़ा अपन दल-बलक सँग अंगक पोर-पोरमे

चढ़ाइ करैत तँ दोसर दिस जिनगीक कठिन दुर्गमे फँसल सुशीलाक मन खुशीक लहैरमे झिलहोरि खेलाइत। नारी जिनगीक श्रेष्ठतम काज। जेहने भरिगर काज तेहने मुँह-मंगा मातृत्त्वक उपहार...।

पुर्बाक लपेटि देख सुनयनाकेँ ठकमुड़ी लागल रहैन। आइ धरि प्रसव गठुलामे होइत रहल अछि। जइ घरक टाट हवाक झोंककेँ नइ रोकैत। आश्रमक घर जकाँ टाटमे लेब-दुलेब नहि। मुदा वोनक बच्चाकेँ कोन घर रच्छा करैए। सुनयनाकेँ हूबा जगलैन। गठुला छोड़ि मालक घरमे ओछाइन ओछा देलखिन। ओछाइन ओछा हियासए लगली जे अगियासी भाइए गेल, फाटल-पुरान लाइए अनलौं...।

मालक घरसँ हुलकी मारि सुनयना पुतोहु दिस देखलैन तँ चैन बुझि पड़लैन, मन असथिर भेलैन।

पल्हैन ऐठाम जाइत तपेसरक मनमे अपन काजक भार एलैन। एहेन भारी काजमे पुरुखक काज की अछि? डेग भरि हटल पल्हैनक घर अछि तेकर पछाइत? मचकीपर झुलैत झुलनिहार जकाँ तपेसर झुलैत पल्हैन ऐठाम पहुँच जनतब देलखिन। अपन उगैत लछमीकेँ देख मुस्की दैत पल्हैन कहलकैन-

"अहाँ आगू बढ़ू गाइक थैर बनौने पीठेपर दौगल अबै छी।"

पाँचो मिनट पल्हैनकेँ पहुँचला नइ भेल कि बेटाक जन्म भेल। धरतीपर बेटाकेँ पदार्पण होइते बिजलोका जकाँ तपेसरक परिवारमे जहिना खुशी पसैर गेल तहिना देह पोछैत पल्हैनक मनमे चालीस तम्मा निछौर, निपनौन, लाढ़ि◌-पुरैन कटाइक सँग उपहार नाचए लगलैन। तैपर सँ ईहो जे पसारी छी तँए मंगबोक अधिकार ऐछे, जाइकाल एकटा सजमैनो मांगि लेब। सिदहा तँ देबे करती। ..पल्हैनक मन हिसाबमे वौआ गेलैन। समाजमे भगवान केकरो सन्तान दइ छथिन तइमे हमरो सझिया कऽ दइ छैथ ने। जहिना बच्चाक जिनगी हमरा हाथमे अछि, तहिना ने अपनो जिनगी दोसराक हाथमे अछि। तरे-तर पल्हैनक मन खुशी भऽ

गेलैन, मुस्की दैत सुनयनाकेँ कहलखिन-

"काकी, पहिल पोता छिऐन, रेशमी पटोर पहिरबैन?"

धारक वेगमे दहलाइत दादीक मन, मुड़ी डोलबैत बजली-

"एकटाकेँ के कहए सातटा पहिरेबह।"

खुशीसँ पल्हैन बजली-

"बच्चाक मुँह, एन-मेन तपेसरे बौआ जकाँ छइ।"

पल्हैनक बात सुनि ओछाइनपर पड़ल पीड़ाएल सुशीलाक मनमे अपन सतीत्त्वक आभास भेलैन, अवसर भेटते बुदबुदेली-

"केहेन सपरतीभ जकाँ बजैए!"

मुदा पल्हैन सुनलैन नहि, जइसँ आगू किछु नहि बजली।

झीलक पानि जकाँ तपेसरक मन असथिर, समान्य परिस्थिति तँए समान्य मनक विचार। जहिना कठिन-सँ-कठिन, उकड़ू-सँ-उकड़ू काजपर लूरि डटल रहैए तहिना जिनगीक काजपर तपेसरक नजैर दौगैत डटल छेलैन, मनमे एलैन पत्नीक बीस-एक्कैस बर्खक उम्रो छेबे करैन, रोगो बियाधिक छुति देहमे नहियेँ छैन। ..बेटापर नजैर पहुँचते पुत्र सन सम्पैतक आगमनसँ मन फुला गेलैन। जहिना लगौल गाछमे पहिल फूल वा पहिल फड़ लगलापर बेर-बेर देखैक इच्छा होइत तहिना तपेसरक मनमे उठैत रहैन। मुदा बर्जित जगह बुझि परहेज केने रहैथ। मुदा तैयो जहिना डाँट टुटल कमल हवाक सँग पोखैरमे दहलाइत तहिना खुशीक हिलकोरमे तपेसरक मन तर-ऊपर करैन। मनमे उठलैन, पुरुख-नारी बीचक सम्बन्धमे बच्चो पैघ शर्त्त छी। परिवारमे विखण्डनक सम्भावना बनल रहैए। ..लगले मन अपनासँ आगू उड़ि माए-बापपर गेलैन। जाइते हृदए बिहुसए लगलैन। जहिना मातृत्त्व प्राप्त केलापर नारीक सौन्दर्य बढ़ि जाइत तहिना ने पितृत्त्व प्राप्त केलापर पुरुखोकेँ होइत। ..लगले सिनेमाक रील जकाँ बेटाक जन्मसँ अन्तिम समए धरिक जिनगी तपेसरक आगू नाचि उठलैन।

किछुए-कालक पछाइत सुशीलाकेँ फेर दरद शुरू भेल। समैक सँग दर्दो बढ़ए लगल। दर्दसँ सुशीला छटपटाए लगली।

सुशीलाक छटपटाहैट देख सुनयना पल्हैनकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, अहाँ देखियौन ता बच्चा सम्हारि दइ छी।”

पेटपर हाथ दैते पल्हैन बुझि गेली जे दोसर बच्चा हेतैन। बजली-

“काकी, एकटा बच्चा आरो हेतैन।”

पल्हैनक बात सुनि, जहिना मेघ तड़कैत तहिना सुनयनाकेँ भेलैन। जोरसँ तपेसरकेँ कहलखिन-

“बौआ, बौआ!”

अकचका कऽ तपेसर बाजल-

“हँ, माए!”

“हँ, अँगनेमे रहह!”

करीब बीस मिनटक पछाइत बेटीक जन्म भेल। अखन धरि जहिना खुशीक सुगन्ध अँगनामे पसरल छल तहिना एकाएक ठमैक गेल। दोसर बच्चाक जन्म होइते सुशीलाक देह लर-ताँगर भऽ गेलैन। सुनयना दिस देखैत पल्हैन बजली-

“काकी, पुरबा लपटै छइ। अगियासी नीक-नहाँति जगा देथुन। ओना तँ सभ भगवानक हाथमे छैन मुदा जहाँ-तलिक पार लगत से तँ करबे करबैन। जानिए कऽ तँ भगवान दुख बढ़ा देलखिन। पहिल बच्चापर ई नजैर रखौथ आ दोसरपर हम रखै छी।”

कहि पल्हैन बच्चाक पोछ-पाछ करए लगली। साँस मन्द देख मुँह-मे-मुँह सटा फुकि-फुकि साँसक गति ठीक केलैन। बच्चाक लक्षण देख पल्हैनक मन बाजि उठल- ‘जरूर दुनू बच्चा ठहरबे करत।’

पल्हैनक नजैर पैछला काज सभपर पड़लैन। एहेन की पहिल-पहिल बेर भेल। केतेकोकेँ भेलैन। किछु गोरेक दुनू बँचलैन, किछु गोरेक

एकटा आ किछु गोरे बच्चाक सँग अपनो चलि गेली। तँए काज तँ अनिसचित अछि मुदा अपना भरि तँ तिया-पछा करबे करबैन...।

तैबीच सुशीलाकेँ सुनयना पुछलखिन-

“कनियाँ मन केहेन लगैए?”

अर्ध-चेत अवस्थामे पड़ल सुशीला अपन टुटैत जिनगी देख हाथक इशारासँ सासुकेँ कहलकैन। तैसँग मुँहक सुरखी कहिते रहैन जे नै बँचब। ..सुशीलाक इशारासँ सुनयना घबराए लगली। मनमे उठलैन तपेसर भारी विपैतमे पड़ि जाएत! वेचारा फट्टो-फनमे पड़ि जाएत। हम बुढ़े भेलौं, जएह कएल हएत सएह ने सम्हारि देबइ। मुदा विपैत तँ तेतबेटा नै छइ। खेती-पथारी, माल-जाल, कुटुम-परिवार छै तैपर सँ दू-दूटा चिल्का भेलइ। केना सम्हारि पौत! ने स्त्री बँचतै आ ने एक्कोटा बच्चा! हमहूँ केते दिन जीब। सभ किछु वेचाराकेँ हेरा जेतइ..! सुनयनाकेँ खीझ उठलैन, बुदबुदेली-

“हे भगवान! तोरा केहेन दुरमतिया चढ़लह जे एहेन गनजन वेचाराकेँ केलहक।”

आँगनमे बैसल तपेसरक मनमे उठैत जे जेतेटा मोटरी माथपर उठत तेतबे ने उठाएब। नमहर मोटरी केतेकाल कियो माथपर सम्हारि कऽ रखि सकैए। मुदा तँए की, जीता जिनगी हारियो मानि लेब उचित नहि। करैत-करैत-लड़ैत-लड़ैत जे हेतै से देखल जेतइ।

जहिना रणभूमिमे दू दलक बीचक लड़ाइ अन्तिम दौड़मे अबिते दुनू दलक मन मानि लैत जे के जीतत के हारत। मुदा हरलोहोक बीच केते रंगक विचार उठैत जे किछु गोरे रणभूमिसँ भागए चाहैत तँ किछु गोरे अढ़ भँजिया नुकाए चाहैत। मुदा किछु एहनो होइत जे अपन बलि देख स्वेच्छासँ अन्तिम समए धरि हथियार उठौनहि रहैत। केना नै उठौत? अपन जिनगीक संगी, जे कौआ-कुकुरक पेट भरि अपन मनोरथ पूरा करत आ हम गुलाम बनि दुश्मनक जहलमे सड़ब...।

तैबीच सुशीला अपन अन्तिम बात पल्हैनो, साउसो आ पतियोकेँ कहलक-

“नइ बँचब, हम दुनियाँक सभसँ पैघ पापी छी जे अपनो रच्छा नै कऽ सकलौं! दुनू बच्चाकेँ अहाँ सभ देखबै।”

बजिते आँखि बन्न भऽ गेलैन। प्राण तँ बँचल रहैन मुदा चेतन-शुन्य भऽ गेली।

सुशीलाक बात सुनि पल्हैन चमैक उठली। बाप रे! सभसँ बेसी भार अपने ऊपर आबि गेल। जन्मक पालनक भार..! अखन धरि जेतेठीम काज केलौं, एहेन काजसँ भेँट कहाँ भेल। बुझल बात कम आ अनभुआर बेसी बजरत। ..जेते अपना दिस तकैत जाइत तेते चिन्ता बढ़ल जाइत। बच्चाकेँ दूध पिआएब जरूरी भऽ गेल। माइक तँ यएह गति छैन। हे भगवान! कोनो उपाय धड़ाबह! मन पड़लैन अपन बच्चा। अपनो तँ दूध होइते अछि तखन एते घबरेबाक की जरूरत। मुदा अपन दूध तँ छह मासक बकेन अछि। गौजरा तँ नहि। एते विचार करब तँ बच्चे मरि जाएत। हे भगवान जानिहह तूँ! मने-मन कहि पल्हैन दुनू बच्चाकेँ दुनू छाती लगा दूध पिआबए लगली। बच्चाक चोभ देख पल्हैनक मन खुशीसँ नाचि उठल। ठानि लेलैन जे बच्चाकेँ मरए नै देब। आइए बकरी दूधक ओरियान करैले सेहो कहि दइ छिऐन आ टेम-कुटेम अपनो चटा देबइ। मुदा अपनो बच्चा तँ छबे मासक अछि। सात माससँ पहिने केना दालिक पानि चटेबै, मातृत्त्व जगिते पल्हैन बुदबुदेली-

“ऐसँ पैघ काज ऐ धरतीपर हमरा लिए की अछि! जँ दुनियाँ देखए बच्चा आएल हएत तँ जरूर देखत।”

पुतोहुक बात सुनि सुनयना चेतनहीन हुअ लगली। कासक फूल जकाँ मन उड़ि-उड़ि वौड़ाए लगलैन। बच्चाक मुँहपर नजैर पड़िते वौड़ाए भगवानकेँ उपराग दैत बुदबुदेली-

“कोन जन्मक कनाइर ऐ बच्चासँ असुलि रहल छह। ऐ निमू-धनक

कोन दोख भेलइ। जँ तोरा नै सोहेलह तँ पेटेमे किए ने कनाइर चुका लेलह। एहेन बच्चाक एहेन गंजन तोरे सन बुते हेतह।”

चहकैत करेजसँ द्रवित भऽ सुनयना कुहैर उठली। एक तँ वेचारीक– पुतोहु– ऊपर तेहेन डाँग पड़ल जे अमूल्य कोखि उसरन भऽ गेलै, तैसँग बच्चा लटुआएल अछि। मुदा अपनो वंश तँ उसरने भऽ रहल अछि। थाकल-ठेहियाएल जकाँ छातीपर पथरो रखि आँखि ताकब मुदा तपेसर तँ से नइ अछि। जुआन-जहान अछि, हो-न-हो कहीं वौड़ ने जाए। केकरा के देखत! जहिना धारक बहैत धारामे माथक मोटरी खुललासँ मोटरीक वस्तु छिड़िया पानिक सँग भाँसए लगैत जइसँ किछु बिछेबो करैत आ किछु भँसियो जाइत तहिना सुनयनाक विचार किछु उड़ियाइत, किछु ठमकल आ छाती दहलाइत रहैन।

ओसारक खुट्टा लगा बैसल तपेसरक मन मानि गेलै जे चूक हमरोसँ भेल। आइ धरि जे देखैत एलौं वएह मनमे बैस गेल। की रेडियो-अखबारक समाचार झूठे रहैए जे दू-तीन-चारि धरि बच्चा मनुखकेँ होइ छइ। जहिना परम्परासँ अबैत बेवहारकेँ बिनु सोच-विचार केनौं सभ लकीरक फकीर बनि लहास ढोइत अछि तहिना तँ केलौं। मुदा हाथक डोरा टुटने जहिना गुड्डी अकासमे उधिया जाइत तहिना ने तँ उधिया गेलौं। सोचैक, बुझैक बात छल जे एक बच्चा-ले केते सेवाक जरूरत होएत आ दू बच्चा-ले केते। मुदा से नइ बुझि सकलौं। आइ जँ बुझल रहैत तँ एहेन दिन देखैक परिस्थिति नइ बनैत। परिवार उजैड़ जाएत। वंश विलैट जाएत। मुदा जे चुकि गेलौं ओकर उपाये की? ..जहिना लटुआएल अड़िकंचनमे सुन्दर सुकोमल पेंपी निकलैत तहिना तपेसरक मनमे आशाक पेंपी उगलैन। धारक धारा सदृश सिक्त मनमे उठलैन, जहिना एक दिस परिवार, वंशकेँ उजड़ैत-उपटैत देखै छी तहिना तँ भूत, वर्तमान आ भविस सेहो आँखिक सोझमे लहलहा रहल अछि। लहलहाइत परिवारकेँ देख तपेसरक हृदए उफैन गेलैन। जहिना धारक धारा माने वेगमे टपैकाल ओरिया कऽ पएर रखितो थरथराइत पएर

पिछड़ैत रहैत तहिना तपेसरक मन असथिर नै भऽ पिछड़ए लगलैन। मुदा जी-जाँति कऽ माटिपर पएर रोपिते मनमे उठलैन, माइयो जीविते छैथ, अपनो छी, तैपर सँ दूटा दुधमुहाँ बच्चा सेहो अछिए। तखन परिवार किए उपटत? हँ, ई बात जरूर जे पुरुख-नारीक बीच बच्चा-ले माए भोजनक पहिल बखारी होइ छथिन। मुदा युग धर्मो तँ कहिते अछि जे आजुक बच्चाकेँ नसीबसँ माइक दूध कटि रहल छइ। माने ई जे अपन शरीरक गठन दुआरे लोक कृत्रिक दूधक ओरियान कऽ अपन दूध छोड़ा दइ छइ। तैयो तँ बच्चा जीविए जाइत अछि। तखन ई बच्चा किएक ने जीत?

सोगाएल तपेसरक मुँह देख सुनयना बोल-भरोस दइले घरसँ निकैल लगमे आबि बजली-

“बच्चा, गाड़ीए पहिया जहाँति जीते जिनगी सुख-दुख अबैत रहैए। तइले सोगे केनहि की हेतह? भगवानक लीले अगम छैन। अखन हम जीविते छी। हमरा अछैत तोरा कथीक दुख!”

सिमसल आँखि उठा तपेसर माइक मुँहपर देलैन। हवामे थरथराइत दीपक टेमी जकाँ सुनयनाक छाती डोलैत रहैन। मुदा जहिना हवाक झोंककेँ सहन करैत दीप प्रज्वलित रहैत तहिना माइक धैर्यक लौ आ बोलसँ टपकल विचार सुनि तपेसरक मनक डोलैत जमीन थीर हुअ लगलैन। मनमे उठलैन, यएह माए पुरुख जानि अपन सहारा बुझै छैथ आ अखन सहारा बनि ठाढ़ छैथ। कलीसँ फुलाइत फूल जकाँ तपेसरक मन फुलाए लगल। तखने पल्हैन अपन मुँह उठा कऽ बजली-

“काकी, एतै आबथु।”

पल्हैनक बात सुनि सुनयना तपेसरपर नजैर दौड़ा सोइरी-घर दिस बढ़ली। मनमे उठलैन, ओना तँ अन्हारघर साँपे-साँप रहैत मुदा होंथैरियो-थाहि कऽ तँ लोक अन्हारोमे जीविते अछि। सभ मिलि जँ लगि जाएब तँ बच्चा जरूर उठि कऽ ठाढ़ हेबे करत।

तपेसरक मनमे उठल, ‘जाधैर साँस ताधैर आस।’ जँ अपना सभ

बुते काज नै सम्हरत तँ डाक्टरकेँ बजेबैन। मुदा लगमे तँ ओहो नहियेँ छैथ। जँ रोगीए-केँ लऽ जाए चाहब सेहो भारीए अछि। एक तँ तेहेन सवारी सुविधा नहि, दोसर तीनि-तीनि गोरेकेँ लए जाएब। तेतबे नहि, अपनो सभकेँ जाइए पड़त...।

एक दिस अब-तबक स्थिति, दोसर दिस सवारीक ओरियान आ मनमे ईहो शंका जे डाक्टर ऐठाम पहुँचैत-पहुँचैत बँचती कि नहि। ..जहिना अमती काँट एक दिस छोड़बैत-छोड़बैत दोसर दिस पकैड़ लैत तहिना तपेसरक मन ओझरा गेलैन। कोनो सोझ बाट आँखिक सोझहामे पड़बे नै करैन। बेकल मने तपेसर उठि कऽ सोइरी-घर पहुँच माएकेँ कहलक-

“माए...।”

‘माए’क पछाइत कोनो शब्द तपेसरक मुहसँ नै निकलल। तपेसरक बेकल मन देख पल्हैन बजली-

“बौआ, एना मन छोट नै करू। जे करतूत अछि सएह ने अपना सभ करब। केकरो जान तँ नइ दऽ देबइ। जखनसँ दुनू बच्चाकेँ छाती चटौलिऐ तखन से कल पड़ल अछि। सभसँ पहिने दूधक ओरियान करू। अखन महींस-गाइक दूध पचबैबला नै अछि, केतौसँ बकरी कीनि आनू। ताबे केकरो बकरी दुहि कऽ लऽ आनू। एक तँ बकरियो सभ तेहेन अछि जे अपनो बच्चा पालै-जोकर दूध नै होइ छै, मुदा जेकरा एकटा बच्चा हेतै ओहन कीनि लिअ।”

अशौच दुआरे दुनू जौंआँ भाए-बहिन–धीरज आ घुरनीक–छठियार नइ भेल। ने कियो सोइरी सँठनिहारि आ ने केकरो मन कखनो थीर होइत जे नीक-अधलाक विचार करैत। ओना तीनूक–पल्हैन, सुनयना आ तपेसरक–मन हरिदम बच्चेपर रहै छेलैन मुदा कखनोकाल नेकरमसँ अकैछ मने-मन सोचैथ जे दुनूकेँ ऋृण असुलए भगवान पठौलैन। जेते ओकर ऋृण बाँकी छै ओते तँ असुले कऽ जान छोड़त। मुदा लगले मन

घुमियौं जानि जे विधातो भाग-तकदीरकेँ नै बदैल सकै छैथ। जँ दुनू बच्चा ऐ धरतीक सुख भोगए आएल हएत तँ नहियों सेवा-बरदाइस करबै तैयो पानिक पाथर जकाँ जीवे करत। मुदा बच्चाकेँ छोड़ि तीनूक अपन-अपन जिनगी आ दुनियाँ सेहो छेलैन। पल्हैने वेचारी की करितैथ। एक तँ दस-दुआरी दोसर अपनो बाल-बच्चेदार परिवार तैपर सँ तड़िपीबा घरबला। धैनवाद बुढ़ीकेँ दिऐन जे सुखाएलो-टटाएल हड्डीपर ने कखनो हाथ-पएर कामै होइत आ ने मुँह सापुट लइत। अखनो वएह रूआब जे केते दिन जीब तेकर कोन ठेकान। हजार कि लाख आकि नहियेँ मरब तेकर कोन ठीक। मुदा साँपक मंत्र जकाँ भरि दिन सुगिया–पल्हैन–सासुक नीक-अधला बात सुनैत रहैत मुदा कोनो बातक उतारा नै दइत। अपन सभ किछु बुझि सासु–झिंगुरी मालिक जकाँ काजक समीक्षा हरिदम करैत रहैत जे कोन-काज केहेन उताहुल अछि। जेहेन जे काज उताहुल तइ काजकेँ दोसर काज छोड़ि करए लगैत तँए सुगिया सासुक बातो कथा सुनि चुप्पे रहैत। तँए कि झिंगुरी हरिदम पुतोहुपर गरमाएले रहै छेली? नहि, केना रहितैथ, जखन सुगिया कोनो अँगनाक पवनौट, तीमन-तरकारी वा सिदहा आनि आगूमे दैन वा बैसलोमे टाँग पसारि जाँतए लगैन तखन वएह सासु ने असिरवाद दइ छेलखिन जे ‘हमरो औरूदा भगवान तोरे देथुन।’ यएह ने परिवार छी जे हरिदम सुख-दुख, नीक-अधला हँसैत-कनैत मस्तीमे चैनसँ चलैत रहए। झिंगुरियोक जिनगीमे तहिना भेल। एक्के सन्तानक पछाइत विधवा भऽ गेली। अपना खेत-पथार तँ नहि, मुदा अदहा गाम (भैयारीक हिस्सा) तँ रहबे करैन, खनदानी सम्पैत। जइसँ खाइ-पीबैक कोन बात जे दू पाइ बेटोकेँ खाइ-पीबैले दैत रहली। बेटा भलेँ नँशेरी किए ने भऽ गेलैन। मुदा अखनो धरि बेटाकेँ कहियो एकटा खढ़ उसकबए नै कहलखिन। जँ माए-बाप अछैत बेटा सुख नै केलक तखन माए-बापक मोले की! ऐ बातकेँ गीरह बान्हि झिंगुरी कहियो बेटाकेँ कोनो भार अखन धरि नै देने। भलेँ बेटा सहलोले किए ने भऽ जानि, मुदा सिद्धान्तो तँ सिद्धान्त छी। ओकरो अपन महत छइ। भलेँ

करी वा नै करी। जँ से महत नइ छै तँ बुधियार लोकक बेटा बुड़िबक केना भऽ जाइए..?

दसदुआरी रहने सुगियाकेँ घरसँ बाहर एते काज करए पड़ैन जे दिन-राति रेजानिस-रेजानिस रहै छेली। साँझ-भोर, राति-दिन काज। केम्हरो जँत्ते-पीचैक समए तँ केम्हरो बिआउ करैक ताक। धैनवाद सुगियेकेँ दी जे घिरनी जकाँ हरिदम नाचि काज सम्हारैथ। तहूमे मइटुग्गर धीरज आ घुरनीक तँ सहजे माइए छथिन। दूध पिऔनाइसँ लऽ कऽ जाँति-पीचि कऽ देहो-हाथ सोझ करए पड़ैन। दसदुआरी रहने दस दिस सेहो आँखि-कान ठाढ़ राखए पड़ै छैन। जिनगीक काज सुगियाकेँ ऐ रूपे पकैड़ नेने जे दोसर दिस तकैये ने दैन। मन कहैन, जेकरा अपन माए जीबै छै स्त्री होइक नाते अपन चिलकाकेँ अपनो सम्हारि सकैए मुदा ऐ दुनू –धीरज आ घुरनीकेँ दुनियाँमे के देखनिहार छइ? हमरा हाथे जन्म भेल छै, जँ पैतपाल नै करबै तँ एकर परतवाए केकरा हेतइ। भगवानक घरमे दोखी के हेतइ। वेचारी दादी सुनयना छथिन मुदा ऐ उमेरमे दूध तँ नइ छैन। सोल्होअना बकरीए-दूधपर तँ दूधकटुए भऽ जाएत। जे बच्चा दूधकट्टू भऽ जाएत ओकर छाती कहियो सक्कत थोड़े हेतइ। ..खेने-बिनु खेने सुगिया भरि दिन ओइ जंगली जानवर जकाँ नचैत जे बच्चाकेँ दूध पिआ, गर लगा सुता चरौर करए जाइत, तहिना।

अधवयसू सुनयना अपन राजा बेटा–तपेसरक दुखक बोझ देख दिन-राति ओइ बोझकेँ हल्लुक बनबैले एकबट्ट केने रहैथ। जहिना युद्धभूमिमे अपन राजापर दुश्मनक अबैत तीर देख सेनापति उपयुक्त तीर तरकससँ निकालि दुश्मनक तीरकेँ रोकैक परियास अन्तिम साँस धरि करैत तहिना सुनयना तपेसरपर अबैत तीर- ‘भगवान केहेन डाँग मारलखिन जे जइ काजक लूरि पुरुखक हिस्सामे देबे ने केलखिन ओइ फाँकमे फँसा देलखिन। कोसिकन्हाक खेत जकाँ आड़ि-धूर मेटा बाउलसँ भरि देलखिन। स्त्रीगण होइत हमहूँ तँ स्त्रीगणक सभ काज–बच्चाकेँ दूध पीऔनाइ–नहियेँ सम्हारि सकब। जँ एहेन फाँसे लगबैक छेलैन तँ आरो

नमहर लगा दुनू बच्चोकेँ माइए सँगे नेने जैतैथ। पुरुखक–बेटा–देह तँ खाली रहितै। मन होइतै चिड़ैक खोंता जकाँ परिवार बना रहैत नै मन होइतै लौका-तुम्मा लऽ दुनियाँमे घुमि-फिर जीबैत। जाधैर हम जीबै छी ताधैर माइक ममता पकैड़ रखितै। मुदा तहू बीच जँ पत्नीक सिनेह बेटा-बेटीक सोह जगितै तखनो तँ मन वौड़ेबे करितै..!

अनासुरती सुनयनाक मनमे उठलैन, माया-मोहक लत्ती जेते दूर धरि चतरैए ओते दूर धरि मनुख तँ नइ चतरत। मनुखक तँ बाढ़ि छइ। तैबीच हम तपसियाक माए भेलिऐ, जेते धरि कएल हएत तेतबे ने करबै। आकि ओकरा दुखसँ दुखी भऽ अथबल बनि बैस कऽ कानब। माइक काज जेते दूर धरि छै ओइमे कलछप्पन नै करबै। परिवारे केकर छी, केकरो नइ छी? तखन तँ मनुख रहत घरेमे, खाएत अन्ने, पीत पानियेँ। जाबे जीबै छी ताबे बुझै छी जे सभ किछु छी, आँखि मूनि देबै अन्हारमे हेरा जाएब...।

सुनयनाक मन फेर घुमलैन– हमरा अछैत बेटाक आँखिक नोर देखब हाड़-चामक मनुखकेँ सहल जाएत? ओ तँ पाथरक नइ छी जे केतौ पड़ल रहत। मनुखकेँ तँ चलै-फिरै, सोचै-विचारै, बुझै-सुझैक बखारी छै ओ तँ देखिए-सुनि कऽ चलत। दुनियाँ बेइमान भऽ जाएत, भऽ जाह मुदा जहिना तपेसरक माए छिऐ तहिना तपेसर देखत। ओकरा मनमे कहियो ई नै उपकए देबै जे दुनियाँक सँग माइयो पएर पाछू केलक। ताधैर तपेसरक परिवारकेँ पकैड़ सम्हारने रहबै जाधैर बेकाबू नै भऽ जाएत। भगवान केलखिन आ दुनू पिलुआ उठि कऽ ठाढ़ भेल तँ जरूर परिवार फड़त-फुलाएत। अखन बेकाबू कहाँ भेल हेन, अखन तँ सम्हरैबला अछि। देखै छी, माटिक तरमे सजमैन-झुंगनीक बीआ गाड़ि देने, समए पाबि ओ जनैम कऽ ऊपर आबि धरतीसँ आसमान धरि लतैर जाइए! मुदा ई दुनू बच्चा तँ माटिक ऊपर अछि। जँ समुचित सेवा भऽ जाइ तँ जरूर कलैश कऽ गाछ बनत! ..आशा-निराशाक बीच सुनयनाक मन वृन्दावनक कदमक गाछपर झुलैत राधा-कृष्ण जकाँ झूलए लगलैन। ने अक चलैन ने

बक। आँखि निहारि दुनियाँ दिस देखए लगली। जहिना दू-पत्ती-चारि-पत्ती सजमैन-झुंगनी गाछ, जे लत्तीक आशामे अपनाकेँ ठाढ़ रखैत, तैबीच चारू भागसँ जहिना छोट-छोट कड़चीक टुकड़ी गाड़ि ओकर रक्षा लगौनिहार करैत तहिना सुनयना फुरफुरा कऽ उठि बड़बड़ेली-

“अनेर गाइक धरम रखबार।”

पितृ-प्रमुख परिवारमे पिताक परोछ भेलापर ताधैर मातृ-प्रधान परिवार बनल रहैत जाधैर पुत्र पितातुल्य नै बनि जाइत। ओहुना किछु काजमे मातृत्वे प्रमुख परिवार रहैत। एक तँ ओहिना बच्चाक पालन मातृ पक्षक काज बुझल जाइत तैपर सँ अखन धरि तपेसर माइयेक आदेशक पालन करैत आएल, तँए धैनसन। मुदा तैयो टुटैत परिवार आ नव उलझन देख मन ओझराए लगलैन। एते दिन खेती-पथारी करै छेलौं, दिन-राति ओहीमे लगल रहै छेलौं। आब तँ से नहि हएत। एक तँ दिनो-दिन माइक हूबा सेहो घटत, दोसर बच्चा सभले बकरीसँ गाए धरि पोसए पड़त। ओहिना थोड़े हएत। कहुना करबै तँ खुऐनाइ-पीऐनाइ, दुहनाइ-गारनाइसँ लऽ कऽ ओगरवाहि धरि करए पड़त। खुट्टापर छोड़ि कऽ केतौ जाएबो मोस्किल हएत। कुत्ता-बिलाइसँ लऽ कऽ साँढ़-बत्तू धरि उपद्रव करत। ओह! से नहि तँ खेत बँटाइ लगा देब। जँ से नइ करब तँ नइ सम्हरत।

छह मासमे छह दिन कम। बच्चाकेँ जँतै-पीचैक समए होइते सुगिया हाँइ-हाँइ गाइक नाइदमे सानी-कुट्टी लगा विदा भेली। डेढ़िया टपिते बामा भागसँ दहिना भाग बिलाइकेँ टपैत देखलैन। मनमे सगुन अपसगुन हुअ लगलैन। जँ दहिनासँ बामा भाग जाइत तखन ने अपसगुन होइत मुदा से तँ नइ बामासँ दहिना टपल। सगुन बुझिते सुगियाक मनमे खुशी उपकलैन। मुदा लगले फेर तर्कक सँग विर्तक, अति तर्क, अति वितर्क हुअ लगलैन। मन औनाए गेलैन। पुरुखक कहब ने छिऐन जे वामसँ दहिन टपने सगुन होइत, मुदा पुरुखक दहिन स्त्रीगणक वाम होइत आ वाम दहिन। प्रश्नक उत्तर नै पाबि सुगियाक मन ठमैक गेलैन। मुदा

लगले सोचलैन, अनजान-सुनजान महाकल्याण। जे पूत हरबाहि गेल देव-पितर सभसँ गेल। अनेरे कोन ओझरीमे ओझराएल छी। जानि कऽ रोग बेसाहि लेब तँ दोख केकर हएत। मन हल्लुक भेलैन। मन हल्लुक होइतै दुनू धीरज आ घुरनीपर नजैर बढ़लैन। दुनूक जन्मक दिन गनए लगली। वरसपैत दिन पूस मास। आँगुरपर गनैत-गनैत पाँच मास चौबीस दिन पुरलैन। छह मासमे छह दिन कम। हिसाब जोड़िते मन मधुआ गेलैन। अकास-पतालक बीच हृदए नाचए-गाबए लगलैन। एक दिन बितने तँ उनतीस माघ हेरा जाइत आ छह मासमे तँ छबे दिन कम रहल हेन। सकताइत-सकताइत बच्चा छहमसुआ भऽ गेल। माइयोक पेटमे जे छह माससँ कम रहैए ओकर आँखि नै फुटै छै मुदा छह मास पुरलापर जे जनमैए ओ तँ भगवतीक बेलक आँखि सन आँखि नेनहि अबैए। छबे दिन ने कम छै, आँखिक गुणक सिरखार तँ आबिए गेल हेतइ। फूलक कोढ़ी जकाँ पत्ती सभ जरूर निकैल गेल हेतइ। ..अधखिल्लू फूल जकाँ सुगियाक मन हर्ष-विषादक बीच पड़ि गेलैन। पीपरक पात जकाँ हरिदम डोलैबला नहि, बल्कि बड़क पात जकाँ भऽ गेलैन। ऐ दुनू बच्चाक माए तँ हमहीं भेलिऐ किने। अपन दादी–सुनयना–तँ पकले आम जकाँ छथिन। मुदा तैयो धैनवाद हुनके दिऐन जे घर-अँगनाक काजक सँग दुनू बच्चोकेँ सम्हारै छैथ। ओना भैयो–तपेसरो–अपन पुरुखपन काज–खेती-पथारी–छोड़ि अँगने-घरक काजमे भरि दिन लगल रहै छथिन। ई तँ ओही वेचारेकेँ धैनवाद दिऐन जे एहेन दुधमुहाँ बच्चाकेँ पोसि-पालि रहल छैथ। दस दुआरी रहितो अपनो की कम करै छिऐन। सुगियाक मन शान्त भेलैन। नजैर भगवान दिस बढ़लैन। भगवान दिस नजैर बढ़िते तामस लहरए लगलैन। कहैले भगवान छैथ, सभपर एक्के रंग नजैर रखैबला, मुदा वएह कहथु जे केकरो-केकरो तेते दइ छथिन जे तौला-कराही घिनाइ छै आ केकरो-केकरो चुट्टियाह बँसवाड़ि जकाँ ओइध धरि कोकैन कऽ उपैट जाइ छइ। जुगो तेहेन भऽ गेल जे जेहने पुरुखक किरदानी देखै छी तेहने मौगीक। जीबैयोबला बेटा-बेटीकेँ कियो मोड़ीमे फेकैए तँ कियो नून

चटबैए। फेर लगले मन अपना परिवार दिस घुमि नँशेरी पतिपर पड़लैन। पतिपर नजैर पड़िते सासु-ससुरपर खौंज उठलैन। बुदबुदेली-

“बेटाकेँ बिगाड़ैमे जहिना बुढ़ियाक–माने सासुक किरदानी भेलैन तहिना बुढ़बाक। गाँजाक गूल सुनगबैत-सुनगबैत बेटो अपने जकाँ गजेरी भऽ गेलैन! असगरे हमहीं की करब? घरसँ लऽ कऽ बाहर धरि खटैत-खटैत देह अकैड़ जाइए।”

तपेसर ऐठाम पहुँचते सुगिया बच्चा लग बैसल सुनयनाकेँ देखलैन। बाटक सभ बात बिसैर मुस्कियाइत बजली-

“काकी, छह मास पुरैमे छबे दिन कम छैन। आब दुनू दुनियाँ देखबे करतैन।”

पल्हैनक बात सुनि जहिना सुनयना अपन सभ किछु बिसैर बच्चाकेँ हृदैमे समा लेलैन तहिना तपेसरक रोपल गाछीक फड़ देख विस्मित भऽ गेली। मनमे आनन्दक हिलोर उठए लगलैन। दुनू मायपुतक मनमे सवुरक गाछ जनैम गेलैन।

अखन धरि सुनयना पल्हैनपर जेते ओंगठल छेली ओइमे कमी करैक एहसास भेलैन। छह-मसुआ बच्चा भऽ गेल, आब दूधक सँग अन्नो चाटत। दालिक झोर बना खुआएब। मुदा लगले मनमे उठलैन जे दालियो तँ केते रंगक होइ छइ। सभ एक्के रंग थोड़े अछि। कोनो गलनमा होइ छै तँ कोनो गरिष्ठ। सबहक अपन-अपन चालि-ढालि आ गुण-धर्म होइ छइ। मन औनाए लगलैन। औनाइत-औनाइत सुनयनाक नजैर खेरही दालिपर गेलैन। जेहने आकार तेहने गलनमा। अखन कि कोनो रोटीपर लठगर खुआएब। पल्हैनकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, सभसँ नीक खेरहीए दालि हएत।”

“हँ। जेना-जेना देह सकताइत जेतै तेना-तेना खोराको बढ़बैत जइहैथ। आब अपनोसँ ओरिया-ओरिया जँतबो-पिचबो करिहैथ आ तेलो-कुर दिहहथिन।”

पल्हैनक सभ बात सुनयना सुनबो नै केली कि बिच्चेमे मन उड़ि कऽ तपेसरक जिनगीपर चलि गेलैन। वेचाराकेँ दुनियाँक कोनो सुख नै भेल। पाँचो बर्ख कनियाँक सँग नै रहल। कोन जन्मक पाप बिषेलै से नइ जानि। फेर मन उनैट अपनो दुनू परानीपर गेलैन। जनु माइयो-बापक कएल नीक-अधला काजक फल बेटा-बेटीकेँ पड़ै छइ। ..सुनयनाक विचार जेना-जेना उठैत जानि तेना-तेना मुँहक सुर्खी क्षीण हुअ लगलैन। कहीं हमरे सबहक कएल पाप ने तँ वेचाराक ऊपर डिरिआइ छइ! फेर मन आगू बढ़ि समाज दिस बढ़लैन। एहेन बेर-विपैत की तपेसरेपर पड़ल अछि आकि आनो-आनकेँ पड़लै।

सोगमे पड़ल तपेसरक नजैर अपन गिरैत परिवारपर अँटकल रहैन। जेते उपजा-बाड़ी होइ छेलए, बँटाइ लगौने दूधक डारही होइए। एक तँ समैक कोनो ठेकान नहि तैपर लोढ़ि-बीछि कऽ सेहो लाइए जाइत अछि। मगर खरचा तँ बढ़िए गेल। अपनो काज-उद्यम छोड़ि भरि दिन अँगने-घरक काजमे लटपटाएल रहै छी। छोड़ियो केना देबइ? कोनो कि भेड़ी-बकरीक बच्चा छी जे पेटसँ निकलल आ कुदए-फानए लगत। मनुखक बच्चा तँ ताड़क गाछ जकाँ होइत अछि। जेकर जड़िए बन्हैमे केते समए लगै छइ। ई भिन्न बात जे ताड़क गाछ ने दोसरकेँ रोकैए आ ने अपने रूकैए।

भक्क टुटिते सुनयना पल्हैनकेँ पुछलखिन-

“कनियाँ, की कहलिऐ से नइ बुझलौं?”

पल्हैन कहलकैन-

“यएह कहलयैन जे आब अपनो सभ काज सम्हारि सकै छैथ।”

‘सभ काज सम्हारब’ सुनि सुनयनाक मनमे परिवार नाचि उठलैन। सोचए लगली जे जखन परिवारमे लोकेक बाढ़ि ठमैक गेल तखन धने-सम्पैत लऽ कऽ की हएत! पुन: विचार घुमलैन। जँ भगवान दुनूकेँ औरूदा देथिन तँ धन-सम्पैत कमा लेत। कमाइक बात मनमे उठिते अपन काज

दिस नजैर बढ़लैन। बिसवास जगलैन जे जखन पिलुआ सन दुनू छल तखन तँ पालि लेलौं, आब तँ सहजे छह-मसुआ भऽ गेल। हमरा अछैते तपेसर कानए, ई केहेन हएत? फेर सुनयनाक मनमे उठलैन, अपने पुरना साड़ीक विस्टी पोताकेँ बना देब आ पोतीले घघड़ी सीबि देबइ। उमेरे बेसी भऽ गेल तँए की। जाबे देहमे हूबा अछि ताबे तँ खटबे करब, जखन हूबा टुटि जाएत तखन बुझल जेतइ। तँए की बेटाकेँ कानए देब। दुनियाँमे कियो ओकर नोर पोछैबला नै छइ। जँ नइ छै तँ सुगिये किए एते करै छइ, ओकरा हमरा परिवारसँ कोन मतलब छइ। मुदा छइ। जेकरामे प्रेम छै ओकरे दुनियाँमे सभ छइ। दुनू बच्चाकेँ जाँति पल्हैन बजली-

“आब जँ बकरीक दूध नहियोँ हेतैन तँ गाइयोक दूधसँ काज चलि जेतैन। आब ओछाइनपर बच्चा अपनो उनटै-पुनटैले जोर करतैन। आस्तेसँ कर घुमा दिहथिन। ओना, बेर-कुबेर हमहूँ अबिते रहबैन। भैयाकेँ कहि दथुन जे काल्हि पटोर पहिर अँगनासँ निकलबैन।”

चिन्तामे डुमल तपेसर अपनो सोचैत आ दुनू गोरेक गपो-सप्प सुनैत। ओना किसानी बुधि तपेसरकेँ, तँए जेतेक मन काज दिस दौगैत रहैन ओते गप-सप्प दिस नहि। अखन धरिक जे जिनगी रहलैन ओइमे एकाएक मोड़ एलैन। 108 दानाक तुलसीमालाक जप जकाँ तपेसरक दिन-राति अपन घर-गिरहस्तीक काजक बीच बीति जाइन। ओना, जहिना मनक बिसवासकेँ आँखि नै झूठला सकैत तहिना तपेसरक हृदैमे माए आ पल्हैन चौपड़ि मारि बैसल रहैन, तँए चिन्ता ओते नहि जेते हेबाक चाहिऐन।

दुनू बच्चाकेँ जाँति पल्हैन हाथ-पएर सोझ करैत, टाँग पकैड़ उल्टा झुला, चानिमे काजरक टीक्का लगा मुस्की दैत सुनयनाकेँ कहलखिन-

“काकी, भैयाकेँ बिआह करा दथुन?”

‘बिआह’ सुनि सुनयना सुख-दुखक माने नीक-अधलाक बीचक

सरोवरमे पैस सोचए लगली। हमरे आशा केते दिन हेतइ। चौथापनमे पहुँच गेल छी, जेते दिन जीबै छी, जीबै छी। मुदा तपेसरक जिनगी तँ से नइ छइ। अखन ओकरा की भेलै हेन। बच्चोक कोन ठेकान अछि। जुआनो-जहान चलि जाइ छइ। एक तँ मनुक्खे माटिक काँच बरतन छी, तैपर ओ दुनू बच्चा तँ आरो गिलगर माटि जकाँ अछि। नीक जकाँ सुखबो ने कएल हेन। एक रत्ती कोनो चीजक टोना लगतै, टन-दे चलि जाएत। मुदा परिवार तँ पुरुख-नारीक संयोगसँ चलैए। जाबे दुनूक संयोग नै हएत ताबे सृष्टि आगू-मुहेँ केना ससरत? बातकेँ टारैत सुनयना बजली-

“कनियाँ, कहलौं तँ नीके बात मुदा साल भरिक बीच केना एहेन गप करब।”

सुगियाक बात तपेसरो सुनने। तरे-तर तपेसरक मन बजैले ओढ़ मारैत रहैन मुदा बुधि रोकि दैन। ओना, केतबो बुधि रोकलकैन तैयो बजाइए गेलैन-

“कनियाँ, अहूँ नीकेले कहलौं, कटै नइ छी मुदा जँ दुनू बच्चा उठि कऽ ठाढ़ हएत आ दुनियाँ दिस डेग बढ़ौत तखने..! एक तँ अहुना मइटुग्गर बुझि कियो अपन बेटा-बेटीकेँ ऐ घर आबै ने दैत, तैपर जँ अपने दोसर बिआह कऽ लेब तखन तँ आरो कियो अपना बेटा-बेटीकेँ सतमाए लग आबए नै दिअ चाहत।”

तपेसरक बात सुनि पल्हैन बजली-

“भैया, हिनका सन-सन समाजमे केते पुरुख छैथ। समाजो तँ एकरा अधला नै बुझि उठा लेने अछि, रस्ता बना देने अछि, तखन किए एना बजै छैथ।”

सुगियाक बात सुनि जहिना तपेसरक मुँह बन्न भऽ गेलैन तहिना सुनयनाक। मने-मन सुनयना सोचए लगली, कोनो नवकनियाँ– जेकरा दुनियाँ-दारीक थोड़ ज्ञान छै– परिवारमे सासु-ससुर, पति, भैंसुर-दिअर, ननैदक बीच अबैत। ओकरा काँच कड़ची जकाँ जइ रूपे लीबा कऽ

बनौल जाइत ओइ रूपक बनैत। किए लोक सतमाए-केँ दोख लगबैए। ओहो तँ मनुक्खे छी। जँ ओकरा मनुखक रस्ता छोड़ा देब तँ ओ मनुख बनत केना? मुदा किछु मनुक्खो तँ ओहन होइए जे जेरमे रहए नै चाहैए। हँ, मुदा ओहन सतमाइए-टा तँ नइ होइए, आनो-आन होइए।”

सुनयनाक मन ओझरा गेलैन तँए चुप भऽ गेली।

तपेसरक मनमे उठलैन जिनगी की? जँ जीबैले जिनगी अछि, तँ जीबैले अनेको तरहक साधनक जरूरत सेहो होइत। परिवारिक जिनगी-ले पुरुख-नारी दुनूक जरूरत होइत अछि। जँ से नइ हएत तखन परिवार केते दिन परिवारक रूपमे ठाढ़ रहत। अखन बुढ़ माइक आशापर दुनू बच्चा जीब रहल अछि जखन कि हुनको भानस-भात करए, सेवा-टहल करैले टहलूक जरूरत छैन। जँ ओहो मरि जेती तखन अपनो-सभकेँ के भानस कऽ खुऔत? अपने खाइक ओरियान करब आकि भानस। जँ भानसे नइ हएत तँ खाएब केना? जँ खाएब नै तँ जीब केना? जँ मनुक्खे नै जीवित रहत तखन परिवार केना बनल रहत? मुदा मनुखो तँ अजीव होइत अछि। कियो अपन घरमे लागल आगि मिझबै पाछू अपनो जरि-पकि जाइए तँ कियो हँसि-हँसि घरमे आगि लगबैए। मुदा अपना ऐठाम तँ से नइ अछि। अनजानमे भलेँ जे भऽ गेल हुअए मुदा जानि कऽ तँ किछु नइ भेल। पल्हैनक विचार तँ अधला नहियेँ छैन। ओहो वेचारी तँ दुनू बच्चाक-मुहेँ देख बजली, अपन जानि कऽ बजली। हुनको मनमे कहाँ छेलैन जे दोसर स्त्री कुल्टे हेतैन। सुपात्रो भऽ सकैए। खएर जे हौउ, मुदा परिवारमे लोकक जरूरत तँ अछिए। भलेँ अखन माए सम्हारि रहली हेन मुदा परोछ भेलापर–मुइलापर–तँ जरूरत हेबे करत। ..फेर मनमे उठलैन जँ कहीं माइक सोझहेमे बेटी भानस-भात करै-जोकर भऽ जाएत तखन। बिआह भेलापर ओहो सासुर जाएत। ताधैर पुतोहुओ तँ हएत।

साल लगि गेल। ऐ बेरक अदरा पावैन रीब-रीबेमे रहि गेल। माघमे तेहेन मारूख हवा चलल रहै जे एकोटा आमक गाछ मोजरबे ने कएल। धिया-पुताक कोन गप जे सियानो सभ आमक मास बुझबे ने केलक।

जहिना बिनु बरक बरियाती नै होइत तहिना बिनु आमक अदरा पावैने की! पुरुखे रहने ने मौगी गिरथानि बनैत, बिना पुरुखे तँ राँड़-मसोमात कहबैत। अन्तिम जेठमे मौनसुनी तँ नहि, मुदा बिहड़िया बर्खा भेल। बर्खा भेने धरतीक रंगे बदैल गेल। आन साल जकाँ ने बेसी गरमी पड़ल आ ने बाध-वोनक रूप बिगड़ल। हरिअर घाससँ बाध सुग्गा-पाँखिक रंगक साड़ी पहिरल जकाँ सुन्दर लगैत। अगता हाल भेने सुनयनाक पुबरिया घरक पछुआरक दाबा परहक गेनहारी सागक गाछ जनैम गेलैन। बीसे दिनमे आँगुर भरि-भरिक भऽ गेल। कनोजैड़ छोड़ै जोग भऽ गेल। काल्हिए बीरार देख सुनयना विचारि लेलैन जे काल्हि ऐ सागकेँ रोपि लेब। अखन रोपलासँ पाँच दिन पछुएबे ने करत मुदा कनोजैड़ तँ ठीक रहत। तहूमे पछबा थोड़े बहैए जे रोपलापर एकोटा लटुआएत। दुनू साँझ पानि देबै, लगले लागि जाएत। कनी-मनी रौदमे अलिसाएत तँ सेहो रातिक ठंढमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाएत। जँ अखन नइ रोपि लेब तँ भदबारिमे तीमनक दिक्कत हएत। मुदा लगले मनमे पड़लैन भदबारिक साग। तत्-मत् करिते रहैथ आकि मनमे उठलैन पोरो-पटुआ साग ने भदबारिमे कफाह होइए, सभ साग थोड़े होइ छइ। जहिना जाड़मे सेरसो-तोड़ी झँसगर होइए आ चैत-बैसाखमे पोरो-पटुआ, तहिना ने भदबारिमे गेनहारी-ठढ़िया होइए। सुनयनाकेँ खुशी भेलैन। खुशी होइते मनमे चमकलैन गेनहारीक रूप। हरिअर साड़ीसँ सज्जित पात, तहिक बीच लाल डाँटक पाढ़ि, धरतीपर ओलैर मस्तीक आँखिसँ दुनियाँ दिस देखैत। तेतबे नहि, गेनहारी-पटुआ अपन जिनगी दोसराक सेवा-ले अरोपि बेर-बेर मुड़ी कटला पछाइतो, मुड़ी पैदा कऽ सेवा-ले इशारा करैत।

जहिना मुरगी चूजाक सँग खोपसँ निकैल ओचौनसँ लऽ कऽ बाड़ी-झाड़ीमे चरौर करैत, बोलियो सीखैत आ दुनियोँ देखए जाइत तहिना दुनू बच्चा–धीरज-घुरनी–क सँग सुनयना लोटामे पानि नेने पछुआर दिस विदा भेली। दावा लग पहुँच ठाढ़ भऽ गेनहारीक बीरारकेँ देखए लगली। देखते मन पड़लैन भीतमे साटि कऽ राखल गुरमीक बीआ। आँखि उठा कऽ

देखलैन तँ चक-चक करैत बीआ नजैरपर पड़लैन। बीआ देख मन पड़लैन जे गुरमियोँ रोपैक समए आबि गेल। मारे बीआ अछि, एते थोड़े अपने रोपब। अनको देबइ। गुरमी मनमे रहबे करैन आकि दुनू बच्चा दिस तकली। गुरमीक कोमलता मनमे अबिते मुहसँ अनासुरती निकललैन-

"बौआ, आइ साग रोपि दइ छी काल्हि गुरमियोँ रोपि देब।"

दादीक बात सुनि धीरज बाजल-

"कोन गुलमी?"

भीतमे साटल गुरमीक बीआ आँगुरसँ देखबैत सुनयना बजली-

"ओ बीआ गुरमीक छी। जहिना अहाँ दुनू भाए-बहिन बच्चा छी तहिना ओहो बीआ छी। ओकरा खुरपीसँ माटिकेँ खुनि रोपि देबइ। पाँच-छह दिनमे गाछ जनैम जाएत। जहिना अहाँ दुनू गोरे हमरा एतेटा हएब तहिना ओहो बढ़ि कऽ फड़ए लगत।"

दादीक बात सुनि घुरनी ठुनकैत बाजल-

"गुलमी लेब। गुलमी लेब।"

घुरनीक ठुनकबपर धियान नै दऽ सुनयना लोटाक पानि सागक गाछपर छीटिलैन। पानि छीटैत देख घुरनियो चुप भऽ गेल। लोटा रखि सुनयना गाछ निंगहारि कऽ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे एक दिससँ उखाड़ैबला सभ गाछ नै अछि। से नहि तँ छोटकाकेँ बेरा-बेरा बड़का उखाड़ब। चारि दिनक पछाइत छोटको रोपाउ भऽ जाएत। फेर मन पड़लैन जे एक डेढ़ धूर करीबमे रोपब। चारि-पाँच डेग पूबे-पछिमे आ चारि-पाँच डेग उत्तरे-दछिने। एक-एक बीतपर रोपब। मने-मन हिसाब जोड़ि बीआपर नजैर दैते बुझि पड़लैन जे चारियो हिससँ कम्मे गाछ लगत। खएर, भगवान सभ चीज अहिना दौथ जे अपनो खाएब आ दोसरोकेँ देबइ।

सुनयना निहुरि कऽ सागक गाछ उखाड़ए लगली। तैबीच दुनू भाए-बहिन–धीरज-घुरनी–एक्के गाछपर हाथ दऽ उखाड़ए चाहलक। एक-

दोसराक हाथ-हटबैक कोशिश दुनू करए चाहलक। हाथ पकैड़ दुनू कटौझ करए लगल। दुनूक कटौझ नै छोड़ा सुनयना हाँइ-हाँइ छैंटगरहा गाछ उखाड़ि बजली-

"चलै चलू। भऽ गेल।"

आगू-आगू दुनू बच्चा आ पाछू-पाछू सुनयना आँगन एली। आँगन आबि बाटीक पानिमे गाछक जड़ि धोइ बाटीए-मे रखि देलखिन। रोपाउ जगहपर जन्मल घासकेँ उखाड़ि कातमे फेक ओसारक चारसँ खुरपी उतारि बीत-बीत भरिपर छअ मारि-मारि दड़ी बनबए लगली। गोर-दसेक दड़ी बनैबते दुनू भाए-बहिन हाथसँ खुरपी छीनए लगलैन। काजकेँ बाधिक होइत देख सुनयना दुनू बच्चाक हाथ छोड़ा, बीच आँगनमे खुरपी फेक देलैन। शंका रहैन जे खुरपी ने लागि जाइ। दुनू बच्चा खुरपी आनए दौगल तैबीच अपने बाटीसँ गाछ निकालि हाँइ-हाँइ रोपए लगली। दुनू बच्चा खुरपी पकैड़ फेर छीना-छीनी करए लगल। हाथमे खुरपी लगैक डर सुनयनाकेँ फेर भेलैन। दसो दड़ी रोपि बाल्टीन लऽ पानि आनए कल दिस विदा भेली। दुनू बच्चा खुरपी छोड़ि पाछू-पाछू दौगलैन। पानि आनि लोटासँ रोपलाहा गाछमे पानि दिअ लगली। फेर दुनू लोटा छीनए लगलैन। हाँइ-हाँइ पटा लोटा दऽ देलखिन। फेर दुनू लोटा छीना-छीनी करए लगल। तैबीच खुरपी आनि दड़ी खुनए लगली। दुनू बच्चाकेँ देख सुनयना वौआए लगली। खुरपी लऽ दड़ी खुनब, कि रोपब, आकि पटाएब..?

अढ़ाइ बर्ख बीति गेल। दुनू भाए-बहिन–धीरज-धुरनी–दादियो आ पितोसँ बाजब सीख लेलक। दुनूक बोलो फरिछा गेल। सुपुट बोल निकलए लगल। पियास लगलापर 'पानि' आ भूख लगलापर 'भात-रोटी' बाजए लगल। बजरूआ बच्चा जकाँ मोबाइलसँ गप, छुड़ी- पिस्तौलक खेलौना आ छुरछुरी फटाका फोरब तँ नइ बुझैत मुदा गमैआ बच्चाक जिनगी जरूर जीबए लगल। गाम-घरमे जे गति विधवा, निस्सहायक होइत से गति मइटुग्गर धीरज आ घुरनीक परिवारमे नइ भेल। ओना,

गाम-घरमे गरीब मइटुग्गर, बपटुग्गरक प्रति सियानोक नजैर विषैला होइत। तेतबे नहि, विधवाकेँ डाइनक सँग अशुभ बुझल जाइत, दुखताह, मइटुग्गर आ बपटुग्गरसँ घृणा कएल जाइत अछि।

पानिक बाल्टीन नेनहि सुनयना कलपर पिछैड़ खसि पड़ली। ओना देहमे चोट लगलैन मुदा माथ उठले रहलैन। ईंटाक चोटसँ दहिना गट्टा टुटि गेलैन। तत्काल चोट तँ तेहेन नै बुझि पड़लैन मुदा गट्टा फुलब शुरू भऽ गेलैन। तपेसर बाँसक पात आनए गेल रहए। ओसारपर ओछाइन खसा एक्के हाथे सुनयना ओछा पड़ि रहली। ओछाइनेपर दुनू बच्चा सेहो बैसल। पात लऽ कऽ अबिते तपेसर माएकेँ सूतल देख पुछलखिन-

"माए, सूतल किए..?"

नोर पोछि सुनयना बजली-

"बौआ, कलपर खसि पड़लौं!"

'खसब' सुनि तपेसर चमैक कऽ पुछलखिन-

"चोटो-तोटो लगलौं?"

"ईंटापर कनी चोट लगि गेल।"

लग आबि तपेसर गट्टाक फुलल देख गुम भऽ गेला। फुलबक हिसाबसँ भरिसक टुटि गेलइ। मन चनैक करेज दरैक गेलैन। मनकेँ थीर करैत बजला-

"डाक्टरकेँ बजौने अबै छी। दबाइ देथुन नीक भऽ जेमे।"

कहि कलपर पहुँच हाथ-पएर धो, अँगा पहिर विदा भेला। आँगनसँ निकैलते मनमे उठलैन जहाँ धरि पार लागत तहाँ धरि तँ करबे करबैन। जिनगीक कोनो ठेकान नहि जे कखन की भऽ जाएत। अपने बाँसपर चढ़ै छी जँ ओतैसँ खसि पड़ी तखन की हएत। ..तपेसरकेँ चिन्ता बढ़ए लगलैन।

डाक्टरक सँग आबि तपेसर माएकेँ कहलखिन-

"माए, जेना जे भेलौ से सभटा बात डाक्टर साहैबकेँ कहुन।"

सुनयनाक बात सुनि डाक्टर पलश्तर कऽ देलखिन। फीस लऽ चलि गेला।

गाएकेँ पानि पीआ तपेसर बाँसक पात टोनियबए लगला। मनमे उठलैन काजक बोझ। एक तँ ओहिना दिन-रातिमे एक्को छन निचेन नै होइ छी, तैपर माइक गट्टा टुटब तँ आरो काज बढ़ा देलक। छोड़ैबला कोन अछि। गाएकेँ खुऔनाइ-पीऔनाइ, घर-बाहर केनाइ छोड़ि देब से नहि बनत। एक तँ लछमी दुआरपर कलपती दोसर बच्चाक माए तँ वएह छी। अखन की भेल, दू-अढ़ाइ बर्खक अछि, जँ ओकरा कनियोँ कऽ दूध नै हेतै तँ सक्कत छाती केना बनतै। अपने नै हएत तँ नइ हएत। माइयो तँ तहिना भऽ गेल। एक तँ बुढ़ाड़ी तैपर जँ पाओभरि दूध नै हेतै तँ बुढ़ाड़ीक हाड़ केना जुटतै। एते दिन दुनू बच्चेक ताक-हेर करए पड़ै छल आब माइयोक करए पड़त। उपजा-बाड़ी तँ तेहेन होइए जे पार लागब मोसकिल भऽ गेल अछि। रौदी भेने ऐबेर आरो संकट बढ़ि गेल। पैछले माससँ बेसाह लगि गेल। पाइ-कौड़ीक कोनो दोसर उपाय नहि। हे भगवान! कोन जन्ममे चूक भेल जे चर्मरोग जकाँ सौंसे देह एकबट्ट केने जा रहल अछि..! मुदा, की चिन्ता केने दुख भागि जाएत?

तपेसर पत्ता टोनि कुट्टी काटए लगला। मन पड़लैन बाँसक पातक कुट्टी। एक तँ लगहैर गाएकेँ बाँसक पात खुअबै छी। मुदा उपाय की? जँ दू मुट्ठी हरियरी नै हेतै तँ नारक कुट्टी केना खाएत। अपने घास आनए जाएब से ओतेक पलखैत रहैए। गाइक नादिमे कुट्टी लगा माए लग आबि बजला-

"माए, चिन्ता-फिकिर नै कर। दिनक दोख छेलै, भेलइ। तोरा कोन चीजक कमी छौ। हमरा सन बेटा आ दूटा पोता-पोती लगेमे छौ, तखन तोरा कथीक दुख।"

भरभराएल स्वरमे सुनयना बजली-

"बौआ, आँखिक सोझमे तोहर दुख देख मन छटपटाइए। जेहो कोनो काजमे सँग-साथ दइ छेलियह सेहो आब..!"

माइक बात सुनि तपेसर अवाक भऽ गेला। बोल बन्न भऽ गेलैन। मनमे उठलैन रौतुका सिदहा। बेर टगि गेल। केना राति चुल्हि चढ़त। बिनु खेने केकरो नीन हेतइ। जे कनी-मनी रूपैआ हाथमे छेलए सेहो दबाइए-दारूमे चलि गेल। एना भऽ कऽ कहियो हाथ खाली नै भेल छल। नइ तँ पचासे रूपैआ दुआरे डाक्टर साहैबकेँ एना कहितिऐन..! तरे-तर तपेसरक छाती डोलए लगलैन। आगू नाथ ने पाछू पगहा। माएकेँ कहलैन-

"माए, खेत बेचने बिना एक्को दिन पार लगब कठिन भऽ गेल। से...।"

बेटाक बात सुनि सुनयना चुपे रहली। मनमे उठलैन घर-परिवार तँ ओकरे छिऐ। केना 'हँ' आकि 'नइ' कहबै। हमरा बुते की हेतइ। धारक वेग जहिना भौर लैत तहिना सुनयनाक मन भौर लिअ लगलैन। एक-एक पाइ कम भेने घर खसैत आ एक-एक पाइ जमा भेने उठैत अछि। एक-एक कट्ठा जँ बिकाइत गेल तँ निरभूमि होइमे केते दिन लगत। एक दिस परिवारक खर्च, दोसर दिस समैक मारि आ तैपर जेते सम्पैत कमत ओते तँ आमदो कमे होइत जाएत! ..माएकेँ चुप देख तपेसर बजला-

"जाइ छी, चौरी खेत बेचैक गप-सप्प करए।"

खेत बेचैक बात करए तपेसर विदा भेला। आँगनसँ निकैलते मनमे उठलैन सुपत्तोसँ कम दाम देत। जहिना गाड़ामे उत्तरीबलाकेँ कौआसँ खैर लुटौल जाइत तहिना ने हएत। मुदा लगले तपेसरक अपन मन कहलकैन-

"तोहर कोन दोख। मन-पेट काटि लोक घर बनबैए आ बिहाड़िमे उड़ि जाइ छै! तइमे बनौनिहारक कोन दोख।"

सवुर भेलैन डेग आगू बढ़ौला। दुनियाँ बड़ीटा छइ। जँ भगवान हाथ-पएर दुरूस रखने रहता तँ कहुना ने कहुना जिनगी गुदस कइए लेब।

मुदा आइक जे परिस्थिति अछि ओकरा छोड़ि कऽ भागब नहि, भागब तँ कायरता हएत। कोन मुँह लोककेँ देखाएब। हमरा सन-सन ढेरो लोक अछि। ..लगले तपेसरक मन उनैट गेलैन। जहिना गाममे केतेको वृत्तिक लोक होइत अछि तहिना गामोक अनेक रूप होइए। एक्के गाम केकरो लेखे विद्वानक होइत तँ केकरो लेखे मुरुखक। केकरो लेखे शराबी-जुआरीक होइत, तँ केकरो लेखे बेइमान-शैतानक। तँए कि आमक गाछमे तेत्तैर फड़ि जाएत आ तेत्तैर गाछमे आम? सबहक अपन-अपन गुण-सोभाव आ चलैक रस्ता होइ छइ। कियो फटेहाल जिनगी पाबि जीबैए आ कियो सुभितगर जिनगी जीबैए। एकर माने ई नहि जे फटेहाल जिनगी जीनिहार पतिते भऽ जाए। हँ, होइतो अछि। मुदा जेकर जेहेन विचार तरगर रहैए ओ ओहन जिनगी बना जीबैमे आनन्द प्राप्त करैए। आनन्दे प्राप्त करब तँ उदेस होइत अछि जिनगीक। कियो तत्त्व-चिन्तनमे समए लगबैत अछि तँ कियो दिन-राति लुचपन्नी केने घुरैत। एहनो-एहनो तत्त्व चिन्तक ऐ धरतीपर भेल छैथ जे दोहरा-तेहरा कऽ जिनगी मांगि तत्त्व-चिन्तन करैत रहला। ऐ असीमित भूमाकेँ कठिन मेहनतेसँ जानल आ ताकल जा सकैए।

..टोलक अन्तिम छोड़पर पहुँचते तपेसरकेँ कलकत्तासँ आएल खुशीलाल पुछलकैन-

"भाय केतए जाइ छी?"

खुशीलालक बात सुनि तपेसर ठमैक गेला। जहिना खुशी मनमे मधुआएल बोल पनपैत तहिना दुखी मनमे सिनेहक बोल। कनीकाल चोकरियाएल ठोर, थरथराइत पिपनी रूपमे ठाढ़ भऽ मिरमिराइत तपेसर बजला-

"बौआ, विपैतमे पड़ल छी। माएकेँ हाड़ टुटि गेलैन। पलश्तर तँ करा देलिऐन, मास दिनक पछाइत पलश्तर कटतैन। तैबीच पथ-पानिक सँग-सँग दबाइ-दारू सेहो चलतैन। केते कहबह?"

"भैया, हमहूँ अही समाजक बेटा छी। जेते शक्ति अछि ओते मदैत करब। साल भरिपर चारि-पाँच हजार रूपैआ लऽ कऽ कलकत्तासँ आएल छी। अखन जेते पाइक काज अछि लिअ, छह मासमे बिना सूदिक घुमा देब। अखन अहूँक काज चलि जाएत आ कनी दिके कि सिके अपनो चला लेब।"

बिनु सूदिक रूपैआ सुनि तपेसरक मनमे खुशी भेलैन। मुदा लगले मनमे उठलैन जे बेथा सुनि खुशीलाल औगुता कऽ ने तँ बजला। जहिना ओ बजला तहिना की हमहूँ करब। जहिना देहमे रोग सन्हियाइते रसे-रसे पसरए लगैत तहिना तँ अखन अपनो अछि। छह मासक समए दइ छैथ मुदा ओरियान हएत? दिन-दिन खरचो बढ़बे करत जखन कि आमदनीक कोनो जोगार नै देखै छी। तखन केना लेब? बजला-

"बौआ, दू कट्ठा खेते लऽ लएह।"

खेतक नाओं सुनि खुशीलाल सहैम गेला। मनमे उठलैन- एक तँ वेचारे विपैतक मारल छैथ। तैपर सँ खेत लेब तँ करेज थीर रहतैन? जखन करेजे थीर नै रहतैन तखन तँ आरो सोग बढ़बे करतैन किने। कहलखिन-

"भैया..!"

'भैया' बजैत खुशीलालकेँ आँखिमे नोर आबि गेलैन। नोर पोछैत बजला-

"छह मासक बदला दू-चारि सालक पछाइते देब।"

बिनु सूदिक रूपैआ तपेसरक मनकेँ तड़का देलकैन। मनमे चमकलैन सूदिप्रथा। जैपर दुनियाँक बैंक ठाढ़ भऽ नँगटे नचैत धनीकक (शासनक-सत्ताक) फुलवाड़ीक शोभा बढ़ौने अछि। जइसँ देशक उन्नति माने मनुखक कल्याण मुँहक बोल मात्र रहि गेल अछि। तैठाम समाजमे..! समाजकेँ सूदि दू भागमे बाँटि देने अछि एक सूदिखौक आ दोसर सूदिदार। बैंकक सूदि कम होइ छै मुदा छबे मासमे मूल धन बनि सूदि पैदा करए लगै छइ। बिआजक बंश दुनियाँमे पसैर गेल अछि।

जखन कि समाजक सूदि एकहरफी चलै छइ। भलेँ महाजनक बोही गीता-रामायणक थाकमे रहि पारसमणि जकाँ बोहियो गीता-रामायण बनि जाइत। देन-देनक सीमा-सरहद तोड़ि गीता-रामायणपर हाथ रखैत खौदकाक घराड़ीक रजिष्ट्रीक समए बना लइत। ..लगले तपेसरक मन घुमि अपन समस्यापर एलैन। छोट भाए जकाँ खुशीलालकेँ कहलखिन-

"बौआ, लोकक लाइगमे लोक अही दुआरे बसैए जे सुख-दुख सँग मिलि जीब। टुटल सीढ़ी जकाँ अखन परिवारक स्थिति बनि गेल अछि। कोहुना कऽ जँ एकटा पएर रौपे छी तँ दोसर टुटि जाइत अछि। एक्को डेग ससरब कठिन भऽ गेल अछि। जेना बुझि पड़ैए जे पानि-बिहाड़ि, पाथर-ठनका सभ सँगे आबि गेल अछि। जिनगीक कोनो ठेकान नै देख रहल छी। जहिना पानिमे नाव खेबनिहारक लग्गी थाह नै लैत तहिना भऽ गेल अछि।"

अनायास खुशीलालक मुहसँ निकललैन-

"भैया! लोकेक काज लोककेँ होइ छइ।"

तैपर तपेसर बजला-

"बेस कहलह। मुदा लोकोक बीच खाढ़ी बनल अछि। तोरासँ सात कछे बेसी सम्पैत अछि। मुदा जखन दुखेक जिनगी भगवान देलैन तखन ओइसँ केते पड़ाएब। जीता-जिनगी आँइखो केना मूनि लेब। मुदा तोड़ा पाबि छाती सूप सन भऽ गेल। जहिना पानिमे डुमैत चुट्टीकेँ खढ़क असरा होइत तहिना बुझि पड़ैए। एकटा संगी भेटल। मुदा दुखो असान नै अछि। समैया नहि बरह-मसिया अछि। तोरो कहबह जे जखन एते मेहनत कऽ कमाइ छह तँ पाइकेँ राइ-छित्ती नइ करह। अखन जे खेत बेचै छी ओ तुहीं लऽ लएह। फेर जँ बेचब तँ तोरे देबह। मरियो जाएब तैयो तोहर बेटा-पोता बाजत जे फँल्लाबला खेत छी। वेचारा माइयक सेवामे बेचलक।"

तपेसरक बात सुनि खुशीलालक हृदए पसीझ गेल। चुप-चाप घरसँ

एटैची निकालि अनला। चाभीसँ खोलि पाँचो हजार रूपैआ निकालि तपेसरक आगूमे रखि बजला-

"भैया, अखन धरि ने केकरो कोनो चीज ठकलिऐ आ ने चोरा कऽ एकोटा खढ़ उठौलिऐ। दुनू हाथ उठा भगवानसँ कहै छिऐन जे जहिना अखन धरि निमाहलौं तहिना आगूओ पार लगाएब।"

गंगाजल जकाँ खुशीलालक विचार सुनि तपेसरक मनक बखारीक मुँह खुजि गेलैन। बजला-

"बौआ, सभ बुझै छैथ जे जमीन जाल सदृश होइत अछि। जाल बनौले जाइत अछि फँसबैले। तोहर हृदए सौदा कागत जकाँ छह। ऐपर प्रेमो कथा लिखल जा सकैए आ अपराधिक सेहो। मुदा हम नै चाहब जे तोरा मनमे कनियोँ गन्दगी आबह। देखहक, जमीनेक चलैत झूठ-फूससँ लऽ कऽ बेइमानी-शैतानी, मारि-पीट, केश-मोकदमा सभ होइत अछि। कियो जबुरिया लिखा बेइमानी करैए तँ कियो महदा लिखा। कियो दोसरसँ निशान लऽ दोसराक हड़पैए तँ कियो बलजोरी आड़ि तोड़ि अपनामे मिला लइए। केते कहबह!"

तपेसरक मुहसँ नव बात सुनि, जहिना तैयार खेतमे बाउग कएल फसल अँकुरि धरतीसँ ऊपर अबैत तहिना खुशीलालक मनमे जिनगीक नव-नव अँकुर जनमए लगल। नव अँकुर देख जहिना धरतीकेँ अपन निरोग कोखिक एहसास होइत तहिना खुशीलालक हृदैमे भेल। विह्वल होइत बजला-

"भैया, दुनियाँ किछु हौउ आगि लगौ, पाथर खसौ मुदा मनुख अपने जिनगीक जवाबदेह होइए। एक्के गाछक एक डारिमे बाँझी लगलासँ बँझिया जाइ छै, तँ दोसर चुट्टिया जाइ छइ। मुदा एकर माने ई नइ ने जे ओकरामे फड़ैक शक्ति नै छइ। फड़बो करैए! कियो किछु करैए करह, जहिना अखन धरि जिनगीमे कोनो लेन-देन नै भेल, भाए-भैयारी जकाँ रहलौं तहिना जीता जिनगी रहब। अहाँ जेठ भाय तुल्य छी जे

कहब, करैले तैयार छी।"

खुशीलालक बात सुनि तपेसरोक हृदए परसाएल आम जकाँ पलपल करए लगलैन, बजला-

"बौआ, अपना गाममे चारि मेलक जमीन अछि। बाड़ी-घराड़ी, भीठ, मध्यम धनहर आ चौर। एक गामक रहितो चारि तरहक दाम छइ। कारणो छै उपजा आ उपयोगक। घराड़ीक जमीन ऊँचगर होइए जइसँ घर बनबैक काजमे अबैए। भीठ सीमानपर भेल। घरो बनौल जा सकैत मुदा घर नै बनने उपजो-बाड़ी होइत आ बागो-बगीचा लगौल जाइत। मध्यम धनहरमे सिरिफ अन्ने उपजैत अछि। जखन कि नीच जमीन भेने चौरीक महत सभसँ कम होइ छइ। कारण छै जे बेसी बर्खा भेने वा बाढ़ि एने ओकर फसल दहा-भँसिया जाइत अछि। चौरमे ने पानिक उपज होइत आ ने उपराड़िक। ओना, जँ ओकरा मुँह-कान बना पानिक वस्तु उपजौल जाए तँ ओहो ओहने मूल्यवान हएत जेहेन दोसर होइत। ओहो धरतीए छी, बनौलापर सभ तरहक बनि सकैए। मुदा केते कहबह। बड़ीखान घरसँ निकललौं, अखन जाइ छी।"

तपेसरकेँ दुनू बाँहि पकैड़ खुशीलाल बैसबैत कहलकैन-

"भैया, अहाँ पाबि बहुत पेलौं। आइ बुझि पड़ैए जे हमहूँ समाजक लोक छी। सोझे गामक सीमानमे धर बान्हि रहने तँ नहि हएत, हएत तँ तखन जखन सबहक सुख-दुख मिलत, जइसँ सभ एकबट्ट भऽ जिनगी बितौत। खाली हाथे केना जाएब। जँए एत्ते समए बितल तँए कनी आरो बितह। अहूँक एकटा काज भेल रहत।"

तपेसर बाजल-

"बौआ, खेत कोनो अन-पानि छी जे नापि-जोखि मूल्य बनत। एकर मूल्य आड़ि-पाटिक मूल्यसँ होइत। सभ तरहक जमीनक लेन-देन समाजमे चलिते रहैए। अपना गामक चौरी खेत डेढ़ हजार रूपैए कट्ठा बिकाइत अछि दू कट्ठा खेत देबह, तीन हजार रूपैआ दएह।"

तीन हजार रूपैआ गनि खुशीलाल तपेसरकेँ देलकैन। रूपैआ नेने तपेसर विदा भेला। बाटमे हिसाब बैसबए लगला जे सभसँ बेसी जरूरी बुतातक अछि। पहिने मास भरिक बुतात कीनि लेब। बाँकी जे बँचत हाथ-मुट्ठीमे रखब। जखन घरमे आगिए लगल अछि तखन कोन लुत्ती केमहर उठत तेकर कोनो ठीक।

मास दिन बितलापर सुनयनाक हाथक पलश्तर काटि डाक्टर कहलकैन-

"भारी काज नै करब। ओना बुढ़क हड्डी छी तँए बच्चा जकाँ नहियेँ जुटत मुदा तैयो बँचा कऽ रहब तँ नीके रहत।"

डाक्टरक बात सुनि सुनयनाक मनमे उठलैन जे जँ भारी काज नै करब तखन जिनगी भारी केना बनत। जिनगीमे हल्लुक-भारी सभ रंगक काज अबैए। मुदा जीते-जिनगी ने दुनियाँ देखै छी, आँखि मुनब सभ हेरा जाएत। कहुना भेलौं तँ बुढ़े भेलौं। मुदा जाबे पोता-पोती अपने जीबै-जोकर हएत ताबतो जँ जीब जाएब तैयो नीके हएत।

शरीरसँ शरीरी धरि सुनयनाकेँ सोगसँ सिकुड़ए लगलैन। एक दिस बेटाक बेथासँ बेथित मन, तँ दोसर दिस मइटुग्गर पोता-पोतीक जिनगी देख सुनयना झखैथ, तँ तेसर दिस जिनगी भरि पालल-पोसल, छाउर-गोबर देल खेतकेँ बोहाइत देखैथ, तँ चारिम दिस अपन देहक दुखसँ दुखीत..। ओना, जीबैक आशा मनमे उत्साह जगबैत रहैन मुदा जेना डिबियाक इजोतकेँ घनगर अन्हार घैरैत-घैरैत छोट बना दैत तहिना सुनयनाकेँ भऽ गेलैन। अन्हार छोड़ि दुनियाँमे किछु देखबे ने करैथ। जेना खसैत जिनगी उठल जिनगीकेँ दाबि सवारी बना लेलकैन, जइसँ ओछाइन धऽ लेली। केतबो हूबा उठैले करैथ मुदा उठि कऽ बेसीकाल बैसले नै होइन। बिछानपर पड़ल-पड़ल पहिलुका कएल काज भरि दिन पढ़ए लगली। जखन कखनो केम्हरोसँ आबि तपेसर पुछैन जे माए, मन केहेन लगै छौ। तँ जहिना कोनो फल वा तरकारीमे गुण तँ रहैत मुदा कोनो रसक सुआद नै रहैत तहिना सुनयनाक मन बेरस हुअ लगलैन।

बेरस होइत-होइत मरि गेली।

फगुआक तीन दिनक उत्तर चैती बर्खा भेल। ओना कुमासक बर्खा छल मुदा मौसमक रंग आरो हरिया गेल। कनी-मनी जे तापसँ दुपहरमे पसेनाक आगमन हुअ लगल से एकाएक रुकि गेल। घूरक ओरियान जे बन्न हुअ लगल छल ओ फेर दोबरा गेल। घरक राखल कम्मर, सीरक, सलगी फेर निकैल गेल।

पहिल बर्खा भेने सबहक घर चुबल। शीतसँ भीजैत आएल चार रौद पड़ने, पैरक बेमाए जकाँ चिड़ी-चोंत भऽ फटि गेल। जइसँ बर्खामे बखूबी चुबल। चुबैक आरो कारण छेलइ। चारमे फड़ल गराड़कें तकैत-तकैत चिड़ै सभ तेना खोदिया देने रहै जेना चौरी खेतमे धिया-पुता अनेरुआ केशौर उखाड़ैमे कऽ दइत। छप्पर सभमे खाधि बनि गेल छेलइ। ओना, पहिल बर्खा होइक कारणे केकरो मुँह मलिन नै भेलइ। पहिल बर्खामे अहिना होइत आएल अछि, जे सभकेँ बुझल। मुदा जहिना चैत माससँ साल शुरू होइत तहिना बर्खाक शुरूआत सेहो चैतेसँ भेल। पहिल पानि भेलापर सबहक मनमे उठल जे जखने अँटिएलहा नार-खढ़ सूखत आकि घर छड़ा लेब। से भेल कहाँ! पहिल बर्खाक दोसरे दिन दोहरा गेल। दोहरेबे नै कएल जे दोहरैबते रहि गेल। गोटे दिन दोहरा कऽ, गोटे दिन नागा हुअ लगल। पूस-माघ-फागुनमे जे नार वा खढ़ चैत-बैशाख-जेठमे छाड़ैक उदेससँ अँटियौल गेल छल ओ जाँकेमे भीज-भीज सड़ए लगल। जहिना एक बेर धारक नासी बाढ़िमे बहैत-बहैत सनमुख धार बनि जाइत तहिना चुबैत-चुबैत सबहक घर चुबाठ बनि गेल। चारक खढ़ो आ बत्तियो आ कोरौओ सड़ि-सड़ि खसए लगल। तहिना भीतक माटि सेहो धोखैर-धोखैर खसए लगल। थाल-कादोक घर बनि गेल। बर्खा हुअ लगै आकि कियो छिपली-बाटीसँ घरक पानि उपछैत कियो कोदारिसँ काटि-काटि भीतक खसल माटि हटबैत। खाएल अन्न लोककेँ पचब कठिन भऽ गेलइ।

अपन घरक दशा आ अपना परिवारकेँ अवग्रहमे फँसल देख

तपेसर भगवानकेँ सुमैर-सुमैर कहैन 'हे भगवान, अपना देश लऽ चलू। किए नर्कमे घिसियौर कटबै छी।'

मुदा खाली कहनेटा सँ नै होइत, लैयो गेनिहार ने चाही! अपन आगूक रस्ता बन्न देख तपेसर पाछू घुमि देखैथ तँ कनैत मन चिकैड़-चकैड़ कहैन जे आनो जन्मक पाप लोककेँ बिसाइ छै, मुदा अपना तँ पैछलो जन्मक पाप मन नै पड़ैत अछि। ..हारि-थाकि वेचारा अन्हारमे चलैत बटोही जकाँ आँखि मूनि थाहि-थाहि आगू डेग बढ़बए लगला। साल बितल, सबहक जान तँ बँचल मुदा रहैक घर रहैबला नै रहल।

धारक पानि जकाँ समए ससरल। दुनू भाए-बहिन–धीरज-घुरनी– पाँच बर्खक भऽ गेल। घरक छोट-छोट काजो आ खेतसँ बथुआ सागो तोड़ि-तोड़ि दुनू भाए-बहिन आनए लगल। आमक मासमे चटनी-ले गाछीसँ आमो बिछ-बिछ आनए लगल। जहिना गहुम-बदामक अँकुराकेँ कौआ उखाड़ि-उखाड़ि खाइत, से डर आब तपेसरकेँ दुनू बच्चाक प्रति नइ रहलैन। गील माटिक बनल बरतन वा मूर्ति जहिना रौद पाबि सकता जाइत तहिना दुनू भाए-बहिनक सकताइत शरीर देख तपेसरक मनमे खुशी हुअ लगलैन। नहियोँ माए छै तैयो दुनू उठि कऽ ठाढ़ भेल! आब तँ केकरो गाइयो-महींस चरा गुजर कऽ सकैए। कहुना जीविए लेत। दुनियाँ देखबे करत। जँ मइटुग्गरोक कलंक लगल छै तँ की बिआह दान नै हेतइ? जरूर हेतइ। जहिना हमर बेटा-बेटी मइटुग्गर अछि तहिना केतेकोकेँ हेतइ। ..अपन कमैत भार देख तपेसरक मन दुनू बेटा-बेटीक जिनगीपर पड़लैन। आब स्कूल जाइ-जोकर भऽ गेल। जुग-जमाना बदैल रहल अछि। तेहेन समए आबि रहल अछि जे बिनु पढ़ल-लिखल लोककेँ के पुछत! से नहि तँ दुनूक नाओं स्कूलमे जरूर लिखा देब।

..स्कूल मनमे अबिते तपेसरक नजैर लत्ता-कपड़ा आ सिलेट-पेन्सिलपर पड़लैन। खएर जे हौउ, बरस्पैत दिन जरूर नाओं लिखा देब। आँगुरपर दिन गनिते तेसरे दिन बरस्पैत भेटलैन। परसू तँ नाउए लिखाएब, तैबीच लत्तो-कपड़ा आ सिलेटो-पेन्सिल कीनि देबइ।

दोसर दिन भोरे तपेसर रोटी आ अल्लूक सन्ना बनौलैन। तीनू गोरे खा बजार विदा भेला। दुइए कोस बजार अछि उठैत-बैसैत साँझ तक घुमि आएब। अपना डेगे नै ओकरे सबहक डेगे चलब। कहुना छै तँ धिया-पुताकेँ नवका पएर छै किने, कुदिते-फनिते चलि जाएत। भूख लगतै तँ मुरही-कचड़ी कीनि देबइ। दू फँक्का अपनो खा लेब। एकटा काज तँ भऽ जाएत किने।

बजार पहुँच दुनू भाए-बहिनकेँ एक-एक जोड़ पेन्ट, एक-एकटा गंजी आ एक-एकटा अँगाक सँग एक-एक सिलेट आ डिब्बो भरि पेन्सिल कीनि तीनू गोरे घुमि गेला।

सूर्योदयसँ पहिनहि तपेसर उठि जलखैक ओरियान केलैन। भिनसुरका स्कूल छीहे। बेरुपहर नाओं लिखाएब ओते नीक नहि। अखन जे नाओं लिखा देबै तँ बेरसँ पढ़ैयोले जाए लगत।

टेल्हूक बेटा-बेटी भेने तपेसरक जान हल्लुक भेलैन। आँगन बहारब, चुल्हि-चिनवार नीपब आ थारी-लोटा धुअब-माँजब इत्यादि घुरनी करए लगल। अँगनाक काज पतराइत देख तपेसर सोचलैन जे खेती अपने करब। समए बदलने खेतीमे नव-नव ओजारो आएल। जइसँ उपजो-बाड़ी बढ़ल आ हल्लुको भेल। जैठाम तीन-तीन-चरि-चरि गाड़ करीन लगा लोक छह-कट्ठा-आठ-कट्ठा खेत भरि दिनमे पटबै छल तैठाम दमकल बोरिंगसँ चारि कट्ठा घन्टा भरिमे पटैए। तहिना टेक्टरसँ खेत जोतब, थ्रेसरसँ गहुम-धान दौन करब सेहो असान भऽ गेल।

ओना तपेसरक एक चौथाइसँ बेसी खेत बीकि गेलैन मुदा तैयो मनमे एलैन- जे जेतबो खेत बँचल अछि ओतबोमे जँ नवका ढंगसँ खेती करब तँ पहिनेसँ केते गुणा बेसी उपजा हएत। जहिना नव-नव ओजार बनल तहिना नव-नव किश्मक बीआ सेहो बनल। जे धान अदहा मनसँ लऽ कऽ कट्ठा मन उपजै छल ओ आब क्विन्टल कट्ठा उपजए लगल। ..जेते आगू दिस नजैर तपेसर बढ़बै छला तेते आशाक प्रखर ज्योति आँखिक सोझमे आबए लगलैन। मुदा समस्यो तँ झमटगर अछि। एक तँ

बाध सभमे छिड़ियाएल नीच-ऊँच साइजक खेत, तैपर माल-जालसँ लऽ कऽ बोनैया जानवर, चिड़ै-चुनमुनीक सँग मूसक उपद्रव, चोरा कऽ जजाति कटैसँ लऽ कऽ गाए-महींससँ चोरा कऽ चरबै धरिक उपद्रव इत्यादि ओझरी देख तपेसरक मन ठमैक गेलैन।

जहिना सघन वोनमे लोक हेरा जाइए जइसँ केम्हरो बढ़ैक साहसे ने होइत मुदा बिना निकलने जानो बँचैक सम्भावना नै रहैत तहिना तपेसरोकेँ भेलैन। ओझराएल मन संगी-सहयोगी ताकए लगलैन। संगी तँ जरूर अछि मुदा दू तरहक। पहिल ओहन जे जीवनक एक रस्ता बुझि अपनो कल्याण बुझैए आ दोसर अछि दोसराक कान्हपर बन्दूक रखि चलबैबला। ..सोचैत-विचारैत तपेसरक नजैरपर तीनटा संगी पड़लैन पहिल समाजक सहयोग, माने गौंआँक सहयोग आ दोसर बैंक आ तेसर सरकारी सहयोग।समाजमे जातिे-समप्रदाय ऐ रूपे पसैर गेल अछि जइमे केकरो कल्याण होएब कठिन अछि। सभ अपने ताले बेताल अछि। ने एक दोसरकेँ सोहाइत आ ने नीक देखए चाहैत। तहिना बैंकोक अछि। उचित सूदिपर कर्ज लइमे दौड़-बड़हा आ खर्च एते पड़ि जाइत अछि जइसँ लोकक मन टुटि जाइ छइ। सरकारी मदैत मात्र दिखाबा अछि। जहिना कनैत धिया-पुताकेँ माए-बाप रासि-रासिक लोभ देखा चुप करैत तहिना सरकारियो अनुदानक स्थिति अछि। ..फेर तपेसर ओझरा गेला। प्रश्न उठलैन, की कएल जाए? अपनो तँ दू तरहक पूजी अछि। पहिल श्रम आ दोसर धन। नगद नै अछि। मुदा खेत तँ अछि। जहिना खेत बेच माइक सेवा आ दुनू बच्चाकेँ पाललौं-पोसलौं तहिना किछु आरो बेच लेब। जँ किछु जमीन कमबो करत तँ ओते उपजो बढ़त...।

गामक स्कूलसँ धीरजो आ घुरनियो पास कऽ निकैल गेल। दस बर्खक भेने दुनू बच्चा घर-अँगनाक काजसँ पितोक काजमे हाथ बटबए लगल। आगू पढ़ैक आशा अइ-ले नइ रहै जे लोअर प्राइमरी स्कूल तँ गाममे रहए मगर मिड्लसँ ऊपरक स्कूल दू कोस गामसँ हटल छइ। सभ दिन चारि कोस चलि पढ़ब कठिन, तँए पढ़ाइ छोड़ि देलक।

तपेसर गिरहस्तीक रूपे-रेखा बदैल लेलैन। बाधे-बाध छिड़ियाएल खेतकेँ घट्टो लगा-लगा एकठाम कऽ लेलैन। तैसँग थोड़ेक खेत बेच कऽ बोरिंग-दमकल आ बरद सेहो कीनि लेलैन। अपना हाथमे पानि एने सालो भरि खेती करए लगला। ओना, सालमे चारिए मासकेँ–बरसातकेँ–किसान खेतीक रीढ़ बुझैत। जँ बेसी बर्खा भेल, बाढ़ि आएल तँ दहार भेल। नहि जँ कम बर्खा भेल तँ रौदी भेल। दस बजेक समए। चारिटा मकइ बालि खेतसँ नेने आबि तपेसर डेढ़ियापर सँ बेटीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

“बुच्ची, चारू बालि ओराहि दूटा अहूँ दुनू भाए-बहिन लऽ लेब आ दूटा दलानपर नेने आउ।”

हँसैत घुरनी धीरजकेँ कहलक-

“भाय, देखियो केहेन मकइ अछि। एहने मकइक मिठाइयो बनै छइ।”

मकइ बालि घुरनीकेँ दऽ तपेसर दरबज्जाक ओसारक खुट्टा लगा ओंगैठ कऽ बैस अपन जिनगीक सम्बन्धमे सोचए लगला। पेटक उपाय भऽ गेल। मुदा पेटे जकाँ घरो अछि। ओना अखन परिवारो नमहर नहियेँ अछि। मुदा तैयो रहैले तँ घरे चाही। तहूमे गिरहस्तक परिवार छी। बोरिंग ने खेतमे गाड़ल अछि मुदा दमकल रखैले तँ घर चाही। जँ से नइ करब तँ बरसातमे बीझा जाएत। जइसँ केते पार्ट-पुरजा बिगैड़ जाएत। सँगे बाहरमे रखने चोरो चोरा सकैए। आब कि कोनो पहिलुका चोर रहल जे ऊक्खैर-समाठ चोरौत। आब तँ यएह सभ- दमकल, टेक्टर, थ्रेसर इत्यादि चोरौत। तहिना बरदो-ले घर चाही। बेटो-बेटी ढेरबा भेल। काज केनिहार घरमे बढ़ने काजो बढ़बए पड़त। खेतसँ जोड़ल जे-जे काज अछि। वएह बढ़ाएब ने नीक हएत। अखन दुइए-टा गाए कीनब। पहिलुका तँ बुढ़ भऽ गेल। आब ओ थोड़े पाल खाएत। अन्नेक खेती नहि तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरीक खेती करब। कोन चीज सस्ता अछि। जितियामे पचास रूपैए मरूआ चिक्कस आ नरक निवारण चतुर्दशी दिन चालीस रूपैए अल्हुआ-सुथनी बिकैए। बोरिंग लग सेहो इंजिनबला पानि खसैए, जइसँ

कट्ठा भरिमे कोनो उपजा नै होइए। ओना जँ मोथी रोपि दिऐ तँ सेहो हएत मुदा आब की लोक मोथीक बिछानपर सुतैए। आब तँ पलाष्टिक जिनगीक ओहन प्रेमी बनि गेल अछि जे दिन-राति सँगे रहैए। तइसँ नीक जे कट्ठो भरि खुनि माछे पोसब। नै बेचै-जोकर हएत, खैयो-जोकर तँ हेबे करत। जखन एते मेहनत करै छी तँ नीक खेनाइ आ नीक घर बना नै रहब तँ धने लऽ कऽ की करब। आँखि मुनि तपेसर अपन आगूक जिनगीक सँग पाछू दिस सोचए लगला। तखने घुरनी दुनू ओराहल मकइ-बालि नेने आबि कहलकैन-

“बाबू, बाबू...।”

चौंकेत तपेसर आँखि खोलि बजला-

“अँइ।”

मकइ बालि हाथमे देख पुछलखिन-

“नोन-तेल औंस देने छहक किने?”

“हँ।”

तखने उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ जाइत चेतनाथ दरबज्जा-सोझे आबि ठाढ़ भऽ गेला। हाथमे बालि लऽ निंगहारि-निंगहारि तपेसर देखते रहैथ आकि आँखि बढ़ि चेतनाथपर गेलैन। चेतनाथकेँ ठाढ़ देख बजला-

“किए ठाढ़ छी। किनकासँ काज अछि?”

तपेसरक बात सुनि चेतनाथ बजला किछु नहि, ससैर दरबज्जा दिस बढ़ला। लग अबैत देख तपेसर दुनू बालि हाथमे नेनहि उठि कऽ ठाढ़ होइत बामा हाथक आँगुरसँ आँखि पोछि कऽ देखते सिहैर गेला। माथक सोन-सन केश दाढ़ी मोंछ झबड़ल। देहक हड्डी झक-झक करैत, दाँत विहीन मुँह, मैलसँ कारी खट-खट देहक वस्त्र।

अनासुरती तपेसरक मुहसँ निकललैन-

“कने एक घोंट पानि पीब लिअ?”

पानि सुनि चेतनाथक मनमे उठलैन। जिनगी भरि परमात्माक सेवा केलौं, अन्तिम अवस्थामे बिनु सेवाक फल केना खाएब-पीब? ओना, भूखसँ जरैत पेटक वायु हुमैर-हुमैर शान्त करैले कहैन। मुदा जिनगी भरिक तपल मन मानैले तैयार नै होइन। चेतनाथ तपेसरकेँ पुछलखिन-

“परिवारमे के सभ छैथ?”

चेतनाथक प्रश्न सुनि तपेसरक मन ठमैक गेलैन। ठमकल देख चेतनाथ दोहरबैत पुछलखिन-

“चुप किए भेलौं?”

पतझाड़क समए गाछमे कोनो-कोनो कलशक मुड़ी जहिना सुख-दुखक बीच अपन अस्तित्त्व जीवित राखए चाहैत तहिना तपेसरक मनमे भेलैन, मिरमिराइत बजला-

“माइयो-बाप आ पत्नियोँ मरि गेली। अपने छी आ दूटा बच्चा अछि।”

घुरनी लगेमे ठाढ़ रहैन। धीरज आँगनमे मकइ खाइत छल। चेतनाथ बजला-

“दुनू बच्चाकेँ सोर पाड़ियौ?”

घुरनीकेँ देखबैत तपेसर कहलकैन-

“एकटा यएह छी, आ दोसर आँगनमे अछि।”

कहि धीरजकेँ सोर पाड़लखिन। दुनू बच्चाकेँ देख चेतनाथ बजला-

“एक शर्त्तपर पानि पीब सकै छी?”

“की?”

“जँ दुनू बच्चाकेँ संगीत कला पढ़बैक काज दी। जिनगी भरि कमा कऽ खेलौं, मरैकाल एहेन अधर्म नै करब।”

अपन मनक विचार पाबि तपेसर खुशी भेला। अह्लादसँ हृदए ओलैर गेलैन। पेटमे गुद-गुदी लागए लगलैन। ठहाका मारि हँसैत बजला-

“अपनेक शर्त्त सहर्ष स्वीकार अछि। पहिने पानि पीब लेल जाउ।”

अपन झड़ैत जिनगीमे आशाक किरिण उगैत देख मुस्की दैत चेतनाथ बजला-

“हँ, आब पानियेँ नहि भोजनो करब।”

दुनू गोरे एक-एक बालि मकैक ओरहा खा पानि पीब, गप-सप्प करए लगला।

चेतनाथ कहलखिन-

“आइए-सँ दुनू बच्चाकेँ पढ़ाएब शुरू करब।”

तपेसर बजला-

“आइ छोड़ि दियौ दसम बर्खक अन्तिम दिन छी। काल्हि एगारहम चढ़त। एगारहम जन्म दिनक अवसरपर दसटा समाजोकेँ भोजन करेबैन आ दुनू बच्चाकेँ पढ़ाइयो शुरू करब। तैबीच अपने अपन जिनगीक किछु बात कहियौ।”

तपेसरक बात सुनि चेतनाथ विस्मित भऽ गेला। आइ धरि जे प्रश्न कियो ने पुछने छला, ओइ प्रश्नक उत्तर दिअ पड़त। एक क्षण धरि चुप भऽ सौंसे जिनगी देख चेतनाथ बाजए लगला-

“माता-पिता बहुत पहिने मरि गेला। पत्नियोँ मरि गेली, सखा-सन्तान नै भेल। असगरे छी। पाँच बर्ख पूर्ब धरि कहियो असगरुआ नै बुझि पड़ल। मुदा पाँच बर्खक बीच जे गति भेल ओ बजै-जोकर नै अछि।”

तपेसर पुछलकैन-

“से, की?”

चेतनाथ बजला-

“जहियासँ होश भेल तइ दिनसँ कहै छी- चारि भाए-बहिनक बीच सभसँ छोट छेलौं। माइक बड़ दुलारू। आठे-नअ बर्खक रही तहिए-सँ

नाच-तमाशा, कीर्तन भजन दिस मन लागए लगल। गामेमे नाचो पार्टी छल आ भजनियोँ पार्टी। सभ मंगलकेँ महावीरजी स्थानमे साँझू पहरमे कीर्तन होइ। अपना गामक सँग-सँग आनो गाम, अष्टजामो आ नाचो करए पार्टी जाए। भाँज लगा-लगा हमहूँ जाए लगलौं। ओतैसँ गोटे-गोटे पाँति सीखने आबी। जेकरा भरि दिन गाबी। खौजरी बनबैक मन भेल। फुटल चैलक कान हाँसूसँ काटि बेलक लस्सा लगा कागत साटि खौजरी बनेलौं।"

हँसैत धीरज पुछलकैन-

"कागतक खौजरी फुटबो करए?"

धीरजक बात सुनि चेतनाथकेँ क्रोध नै उठलैन बल्कि वात्सल्यक बाढ़िमे बहैत बजला-

"खूब फुटइ। मुदा काजो बड़ भारी नहियेँ रहए, जहिना अनेरुआ बेल भेटए तहिना दोकानक पुड़ियाक कागत। लगले फेर बना ली।"

धीरज मुस्कियाए लगल। चेतनाथ तपेसर दिस तकैत आगू बजला-

"गबैत-बजबैत साजपर हाथो बैस गेल आ बोलियो सर्रास भेल। गाममे रामलीला आएल। आँगनमे खाए ली आ भरि दिन-राति ओकरे सभ लग रही। जखन जाए लगल हमहूँ सँग पकैड़ लेलौं। साजो बजाएब सीख लेलौं आ पार्टो खेलए लगलौं। जेहने अवाज सुरिला रहए तेहने हरमुनियाँपर हाथ। एक दिन ठीकादास देखलैन। ओ राजक गबैया छला। सँगे लऽ गेला। हमहूँ राजक गबैया भऽ गेलौं। जखन राजशाही टुटलै तखन उनैट कऽ गाम चलि एलौं। किछु दिन गामे-गाम उत्सव सभमे जाए लगलौं। ओहो कमि गेल। तइ दिनसँ दिनो-दिन दशा बिगैड़ते गेल।"

❍

शब्द संख्या : 9811

शम्भुदास

जिनगीक ओइ सीमानपर शम्भुदास पहुँच गेल छैथ जेतए पैछला जिनगीक बहुतो विचार आ काज स्वत: छुटि गेलैन। किछु नव जे मनमे उपैक रहल छैन ओ करैले जइ शक्ति आ सामर्थक जरूरत छैन ओ तकनौं नै भेट रहल छैन। जेना आगिक चिंगोरा रसे-रसे पझा-पझा या तँ मोइल जकाँ ऊपर छाड़ने जा रहल छैन या झड़ि-झड़ि खसि रहल छैन। डन्टीसँ टुटल पोखैरक कमल सदृश हवाक सिहकी वा पानिक कम्पन्नसँ हृदय दहैल रहल छैन। जे कहियो कामधेनु, फूल-फड़सँ लदल वृक्ष सदृश छेलैन वएह आइ ठाँठ गाए वा पत्रहीन ठूठ गाछ बुझि पड़ि रहल छैन। जे शम्भुदास कहियो राजभोगक बीच दिन बितबै छला आइ अन-वस्त्र विहीन भीखक घाटपर बैस अपन जिनगीक हिसाब-वारी जोड़ि रहल छैथ। मन कहै छैन जे सभ दिन तँ गुनगुनाइत रहलौं, जे बच्चा कनैत ऐ धरतीपर अबैए आ हँसैत जाइक चाहिऐ, मुदा से कहाँ..? जे आत्मा बिनु विवेकक जिनगी टपि विवेकवान लग पहुँचल ओ आगू नै बढ़ि पाछू दिस किए ढड़ैक रहल अछि! सोन सन उज्जर धप-धप दाढ़ी-मोछक सँग माथसँ पैरक आँगुर धरिमे केश, आमील सन सुखाएल गालक सँग हाथ-पएर सामर्थहीन, मुदा आँखिक ज्योति भोरक ध्रुवतारा जकाँ ललौन। मन उफैन उठलैन जे देवस्थान जकाँ तिरपेखन ऐ दुनियाँक करब।

जहिना बाध-वोनक ओहन परती जैपर कहियो हर-कोदारि नै

चलल, सुखि-सुखि कऽ गाछ-बिरीछ खसि उस्सर भऽ जाइत, ओइ परतीपर या तँ चिड़ै-चुनमुनीक माध्यमसँ वा हवा-पानिक माध्यमसँ अनेरुआ फूल-फड़क गाछ जनैम रौद-वसात, पानि-पाथर, अन्हड़-बिहाड़ि सहि अपन जुआनी पाबि छाती खोलि बाट-बटोहीकेँ अपन फूलक सुगन्धसँ वा मीठ सुआदसँ तृप्ति करैत तहिना जमुना नदीक तटपर शम्भुदासक जन्म बँटाइ-किसान परिवारमे भेलैन। रबि दिन रहने समाजक दाय-माय शुभ दिन मानि शम्भु नाओं रखलकैन। परदेशिया जकाँ तँ नहि जे जन्मसँ पहिनहि माए-बाप नामकरण कऽ लइत।

छठम दिनसँ पूर्वक सभ कष्ट बिसैर शम्भुदासक माए–सुखनी–अपन सुखक निआसा छोड़ि देवस्थानक देवताक पूजनमे हेराएल। अपन मर्यादा कसि कऽ पकैड़ शम्भुक सेवामे जुटि गेली। परिवारक बोझक तर पिता। तँए बिलगा कऽ किछु नइ सोचैथ।

पाँच बर्ख पूर्ब धरि संतोखीदास आ सुखनी, खेतिहर बोनिहार छला। खेतियो तँ मौसमेक हाथक खेलौना तँए बेठेकान। मुदा तैयो तँ सभ बुझैत जे जाड़, गरमी आ बरसात, सालक तीन अवस्था छी। भलेँ गोटे साल शीतलहैर पाबि जाड़ अपन बिकराल रूप देखबैत, तँ रौदी पाबि गरमी आ तहिना बर्खा पाबि बसात बाढ़िक सँग नँगटे नचैत तँ झाँट पाबि ताण्डव करैत।

बजारवादक हवा सिहकल जे बिहाड़ि सदृश उठल, मुदा पहाड़ आ वोनक टाट थोड़े अँटकौलक, माने गतिकेँ कम केलक मुदा तैयो बहिते रहल। जाड़-रौदीक मारल किसानो आ बोनिहारो गाम छोड़ि बजार दिस विदा भेल। जहिना घर बनबैमे पातरसँ मोट खुट्टाक जरूरत होइत तहिना कारखाना चलबैले मजदूरसँ लऽ कऽ संचालक धरिक आवश्यकता भेल। उजड़ल-उपटल गामक रूखिमे बदलाउ आबए लगल। खेतमे काज केनिहार बोनिहारकेँ कारखानाक नव मजूरी भेटए लगल, जइसँ जिनगीमे हरिअरी आबए लगलै। मुदा हवाक गति धीरे-धीरे तेज भेल। सस्त मजदूर पाबि रंग-बिरंगक कारोबार शहरमे जन्म लिअ लगल, जइसँ श्रमिकक

मांग बढ़ल। टुटैत गामक जिनगीसँ तंग भऽ बेबस श्रमिक जेर बना-बना बजारक बाट पकड़लक। श्रमक बिक्रीक कारोबार जोर पकड़लक। खुल्लम-खुल्ला बिक्री-बट्टा हुअ लगल।

गामक श्रमिकक पड़ाइनसँ गामो हलचलाएल। खेतबलाकेँ कारखाना पहुँचने खेतीमे ठमकाउ आएल, श्रमिकक अभावमे खेती ठमकल। समाजक विचारधारामे बदलाउ आएल। एक विचारधारा, जे अखनो धरि सम्पैतकेँ प्रतिष्ठा बुझैत–ओ पहिलुके खेतीकेँ थोड़-थाड़ अन-पानि खुआ-पिआ जीवित रखलैन तँ दोसर विचारधारा, लोक शहरी कारोबार देख खेत-पथारकेँ, माने ग्रामीण सम्पैतकेँ पूजी बुझि आमद-खर्चक हिसाब जोड़ि विचारमे बदलाउ अनलैन। तैसँग बँटाइ खेतीक बीच नव-समस्या सेहो उठल। जैठाम अखन धरि गामक जमीनदार खेतक उपजे-बेरटा-मे खेतक दर्शन करैत, ओ गामसँ बाहर भेने सालक-साल खेतक दर्शनसँ बिमुख भेला। सँग-सँग गाममे श्रम-शक्तिक अभाव भेल। बँटेदार वर्गक वृद्धि भेल। खेतक बँटाइ प्रथामे बदलाउ आएल। जइसँ फड़क हिसावसँ आमक उपजाक मनखप आ पोसिया माल-जालमे बदलाउ आएल। कोनो धरानी संतोखीदास एकटा बरद किनलैन। दू परानीक हाथ-पैरक सँग आ एकटा बरद पाबि संतोखीदास बँटेदार किसानक रूपमे ठाढ़ भेला। पेट भरने परिवारमे खुशीक बाढ़ि तँ नहि, मुदा पटबी पानि सदृश खुशी जरूर आबि गेलैन। संतोखीदास बीघा भरिक खेतिहर बनि गेला। नव आर्थिक विकास भेने परिवारक बच्चो सभमे मौलाहट कमल। जइसँ बच्चाक मृत्यु-दरमे कमी आएल। ओना अखनो धरि श्रमिक परिवारमे बेटा-बेटीमे अन्तर नै बुझल जाइत अछि, किएक तँ भगवानक अगम लीलाक बीच कियो हस्तक्षेप नै करए चाहैत मुदा बजारक बिखाएल वयार तँ बहिए रहल अछि।

शम्भुकेँ तीन बर्ख पुरिते जहिना शीतलहैरमे पोह फटिते सुरूजक रोशनीक आशा जगैत, बदरीहन समए वादलकेँ छिड़ियाइते घरसँ बहराइक आशा जगैत तहिना संतोखियोदास आ सुखनियोकेँ आशा

जगलैन। जिनगी भरि-ले मनखप खेत भेटने किए नइ दुनू परानीक मनमे आशा औत। तहूमे बाढ़ि-रौदीक सालक कोनो देनदारीए नहि, रहल सुभयस्त समैक देनदारी। ओहो देनदारी की अनतहिसँ कमा कऽ आनए पड़त। धरती माता कामधेनु। जेते करब तेते पएब। जखन मन हएत तखन खाएब आ दिन-राति ओंघराएब।

अखन धरि सुखनी शम्भुक पाछू आँगनसँ नहि निकैल पबै छेली मुदा आब तँ शम्भु तीन सालक भऽ गेल। अगहन मासमे खेतक आड़िपर धानक खोंचैड़क घर बना देबै, ओइमे खेलेबो करत आ ओंघी लगतै तँ सूतबो करत। तहिना गरमी मासमे गाछक छाहैरमे रहत। लऽ दऽ कऽ बरसात रहल। तँ बरखो की लोककेँ बिना चेतौनहि अबैए। अबैसँ पहिनहि राजा-रजबार जकाँ समाद पठा दैत अछि। तहूमे बर्खा केहेन रूपमे औत सेहो तँ कहिए दैत अछि। जेठुआ बर्खामे जे दुइयो बेर देह धुआ जेतै तँ सालो भरि धुआएले रहतै। बच्चा कि कोनो सियान सैतान होइए जे भरि दिन डाँउ-डाँउ करत। ओकरा तँ अन-पानि भेट जाइ, भरि दिन वौआइत रहत। जहिना नव दाँत जनमने मसुहैर किछु करैले सबसबाइत अछि तहिना बच्चोक मन होइए।

जेठक दसहारा। बरस्पैत दिन। गिरहस्तीक पतराएल काज। अटुट फड़ल आम-जामुनक गाछ। गाम-गामक लोकक मन गदगद। किए ने रहत गदगद? दू मास जे अमृत फल भेटत। बाधक चौबगली गामक अकास अष्टयाम कीर्तनक मंत्रसँ गनगनाइत। केम्हरो "सीताराम, सीताराम सीताराम जय सीताराम" तँ केम्हरो "काली दुर्गे राधे श्याम, गौरी शंकर सीताराम।" तहिना केम्हरो "हरे राम, हरे राम...।" तँ केम्हरो "हरे कृष्ण हरे कृष्ण।"

दसहारा रहने बरहम स्थानमे घोड़ा चढ़ौल-सजौल जाइत। ऐबेर तँ जहिना बरहम बाबा खुशी छथिन तहिना लोकोक मन अछिए। तँए आन साल जकाँ की ऐबेर हल्लुक दामा टंगसुखा घोड़ा लोक चढ़ौत, पहिने साए-पचास वेना दऽ दऽ सरैसो घोड़ासँ नीमन-नीमन चढ़ौत। दूध-पीठ

खाइत-खाइत बरहमो बाबाक मन अकछा गेल छैन तँए ऐबेर सेरही, पन सेरही, दस सेरही, अध मनहीक सँग मनही मुंगबा सेहो परदेशिया सभ चढ़ौत।

दिनक एगारह बजैत। माटि-पानि तवने हबो तवि गेल। खेतक जे खढ़-पात अछि ओ जँ रोहैन-मिरगिसरामे नै सूखत तँ सालो भरि ओकर ओधि थोड़े सूखत। तँए संतोखीदास मरूआ खेत जोतए आ सुखनी खढ़ बीछए गेली। मुदा छोट बच्चा शम्भुकेँ असगरे आँगनमे केना छोड़ि दितैथ। शम्भु-ले बाटीमे भात आ भरि डोल पानि नेने खेत गेली। अपनो सभकेँ पियास लगतैन तहु पीबैक खियालसँ। खेतसँ कट्ठा दुइए हटि आड़िपर एकटा बज्जर केराइक अनेरुआ गाछ, जेकरा निच्चाँमे सघन छाहैर तँ नहि, मुदा छाहैर छइ। जेतए शम्भुकेँ खेलाइले छोड़ि अपने दुनू परानी संतोखीदास खेतमे काज करए लगला। काज लगिचाएल देख, खाली हड़मड़ी चौकी देब बाँकी, हर खोलि चौकी ठेकि संतोखीदास पत्नीकेँ कहलखिन-

"रौदमे मन तबैध गेल हएत, कनीकाल छाहैरमे जिरा लइले चलू।"

सुखनी लगले सुरे बजली-

"सएह कहए चाहै छेलौं मुदा काज लगिचाएल देख नइ बजै छेलौं। जे काज ससैर जाइ छै ओते तँ जाने हल्लुक होइ छै किने।"

"हँ से तँ होइ छइ। मुदा काजो की..?"

"से की?" सुखनी पुछलकैन।

गैंचियाह नजैर पत्नीपर दैत संतोखीदास मुस्कियाइत बजला-

"जहिना भाँग-गाँजा अपन सेवककेँ, वेश्या इश्कबाजकेँ वौड़ा दैत तहिना ने काजो अपन कर्ताकेँ बाबला बना जान लइपर तुलल रहैत।"

"नै बुझलौं?"

"देखै नै छिऐ, दोकान सभमे लिखि कऽ टाँगल रहै छै जे, काज करैत चलू फलक आशा नै करू।' जखन मनुख छी, रोड-सड़ककेँ नापि

मीलक पाथर गाड़ल रहैए तखन केतए कोन रस्ता चलक चाही से तँ सोचए पड़ैत किने। आकि रस्ते भुतिया जाए। जे बाट नै देखल रहै छै ओही बाटमे ने लोक भुतियाइए। खएर, छोड़ू ऐ सभकेँ चलू कनी ठंढाइयो लेब, दू घोंट पाइनो पीब लेब आ तमाकुलो खा लेब।"

दुनू परानी-संतोखीदास बज्जरकेराइक गाछसँ फरिक्के देखलैन जे शम्भु पूबारि पारक अष्टयामक मंत्र-

"हरे कृष्णा, हरे कृष्णा, कृष्णा-कृष्णा हरे-हरे" एक ताले छठिक ढोलिया जकाँ थोपड़ी बजबैत गबैए।

बेटापर नजैर पड़िते सुखनी अधखिल्लू फूल जकाँ बिहुँसैत पतिकेँ कहलखिन-

"देखियौ ऐ छौंड़ाकेँ। आन धिया-पुता रहैत तँ माए-माए करैत। केहेन मगन भेल अछि!"

पत्नीक बात सुनि संतोखीदास बजला-

"रौदमे तबैध तँ ने गेल अछि!"

"तबधल बच्चा थोपड़ी बजा गौत आकि अहोंछिया काटत?"

संतोखीदास मुड़ी डोलबैत बजला-

"हँ से तँ ठीके।"

जहिना तत्त्व चिन्तक आत्माक तार जोड़ि ब्रह्मतत्वक अन्वेषण करैत तहिना शम्भु कृष्ण मंत्रसँ अपन मनक तार जोड़ि अष्टयामक धूनमे बेसुधि भेल मीरा जकाँ गाबि रहल अछि। जहिना एक्के फुलवाड़ी वा गाछीमे भिन्न-भिन्न रंगक फूल वा फल ताधैर अपन परिचए-सँ हेराएल रहैत जाधैर बच्चा सदृश पालल-पोसल जाइत, मुदा जखन अपन गुण वा रूप देखबै-जोकर भऽ जाइए तखन एकठाम रहितो वेड़ाए लगैए तहिना छह बर्ख अबैत-अबैत शम्भुओ बेड़ाए लगल। परिवारमे अनेको रंगक वस्तु-जात रहितो ओतबे सिनेह रखैत जेते काजक वस्तु बुझैत। जइ वस्तुक परियोजन, आन-आन रूपकेँ आन-आन काजमे होइत तइसँ भिन्न

ओइ वस्तुक उपयोग अपन काज देख करए लगल।

अपना खेत-पथार नइ रहितो संतोखीदासक परिवार गामक किसान परिवारक खाढ़ीमे आबि चुकल छेलैन। जहिना किसान परिवारमे वाइस-बेरहट कऽ कऽ खाइत अछि तहिना संतोखियोदासक परिवारमे चलए लगलैन। ओना ई गति लगातार नै चलि पबैन किएक तँ किसान परिवार डेंगी नाह जकाँ सदैत ऊपर-निच्चाँ होइत रहैए। जइ साल खढ़चट्टा रौदी वा दहार समए भेल तइ साल सभ धुआ-पोछा गेल। मुदा जइ साल सुभितगर समए भेल तइ साल फेर नव-पुरानक चालि पकैड़ लइए। नवे-पुरान चालि ने रसगरो आ सुअदगरो होइए, ऐगला-पैछला बाट देख कऽ चलनाइए ने दिसा दइत। जेना एक्के आमक चटनी टटका नीक होइत तँ अचार बसिया। अचार जेते पुरान तेते रसगर। मुदा चटनी तँ लगले अरुआ जाइत, तहिना नवका कुरथीक दालि आ पुरान राहैरक दालि...।

अखन धरि शम्भु परिवारकेँ खाली खाइ-पीबै आ माता-पिताक सँग रहब मात्रकेँ बुझैत। किएक तँ बाल-बोध बुझि ने माता-पिता किछु करैले अढ़बैत आ ने शम्भु परिवारक काजकेँ अपन काज बुझैत। सदैत धैनसन। सोलहन्नी वैरागी जकाँ। मुदा तँए कि शम्भु भरि दिन ओछाइनेपर ओंघराएल रहैए सेहो बात नहि। जँ किछु नइ करैए तँ दिन-राति कटै केना छइ।

अखनो धरि गामक किसान धरतीसँ अकास धरिक स्मरण साँझ-भोर जरूर करैए। भोरमे धरतीक स्मरण तँ साँझमे अकास विचरण। आने परिवार जकाँ संतोखियोदासक परिवार। परिवारमे शम्भुक कोनो मोजरे नहि। मात्र खाइ-पीबै आ सुतैबेर माता-पिता सिर चढ़बैत। बाँकी समए शम्भु साँढ़-पारा जकाँ अनेर वौआइत-ढहनाइत। तँए कि सींग-नाँगैरबला पशु जकाँ शम्भुकेँ थइर-पगहाक जरूरत हएत? नहि। 'अनेर गाएकेँ धरम रखबार'।

भोरमे जखन संतोखीदास खेत-तमैक विचार करए लगैथ तँ नचैत

हृदयसँ घुंघरूक कम्पन्न ठोठक स्वर होइत खापैड़क मकड़-जनेरक लाबा जकाँ कुदि-कुदि निच्चाँ खसए लगैन, रंग-बिरंगक मौसमक सँग मौसमी सिनेह छिड़ियाए लगैन। जेकरा बिछ-बिछ शम्भु खेलेबो करैत आ तहिया-तहिया सीनाक डायरीमे लिखि-लिखि रखबो करैत तैसंग हृदयांगम सेहो करैत। मुदा बच्चाक डायरी रहने किछु लिखेबो करै आ किछु नहियोँ लिखाइ। मुदा प्रति भोर आ साँझक स्वर 'सीताराम-सीताराम', 'राधेश्याम-राधेश्याम' डायरीक ऊपरेक पन्नामे लिखा गेलइ। जेकरा भरि दिन शम्भु गो-मुखी रूद्राक्षक माला बना जपए लगल। कामधेनु गाए जकाँ सदैत दूधक ढारसँ नव-नव राग-रागिणी स्वत: आबए लगलै। कण्ठक स्वर-लहरी हाथकेँ थिरकबए लगल। जइसँ कखनो दुनू छुच्छे हाथे, तँ कखनो पल्था मारि बैस ठेहुनपर ताल मिलबए लगल।

घर-अँगना एक रहने पिताक सँग आ माइयोक पाछू-पाछू आँगन बहारैत-काल, चुल्हि-चिनमार नीपैत-काल, जाँत-ढेकी चलबैत-काल शम्भु नाचए-गाबए लगल। बेटाक वौड़ाइत मन देख माइयो आत्म-विभोर भऽ झूमि-झूमि शम्भुक आँखिमे आँखि गाड़ि फड़ैत-फुलाइत फुलवाड़ीमे हेरा जाइ छेली।

माता-पिताक उसकैत हाथ देख शम्भुओक हाथ खाइबला बाटीपर उसकए लगल। खौजरी जकाँ ओकरा बजाएब शुरू केलक। केना नै करैत। कामेसँ राम आ रामेसँ काम ने चलैए? मुदा भारी द्रव्यक बाटी रहने हाड़- मौसक हाथक आँगुर केते काल ठठत। जे बात शम्भु तँ नै बुझि सकल मुदा संतोखीदास बुझि गेलखिन। सोचलैन जे जँ खौजरी बना दिऐ तँ चौबीसो घन्टा शम्भु आनन्दमे मगन रहत। बेटाक प्रति पिताक दायित्वे की? यएह ने जे हँसी-खुशीसँ दिन-राति चलैत रहइ। ..मन मानि गेलैन जे बेटाकेँ खौजरी बना देब। एकलव्य जकाँ साजमे खौजरियो ने अछि। ने ओकरा दोसर संगीक जरूरत होइ छै आ ने कखनो अपनाकेँ असगर बुझत। जहिना हवामे उड़ैत रोग लोककेँ पकैड़ लैत, लगन अबिते बर-कन्याकेँ पकड़ए लगैत, तीर्थ-व्रतक डोरी लगैत तहिना शम्भुओकेँ गीत-

नाद, माने संगीतक राग पकैड़ लेलक। जइसँ पिताकेँ हर जोतैत, कोदारि पाड़ैत, धान-रोपैत कालक गुनगुनीक सँग माइक आँगन बाहरैत, धान कुटैत, जत्ता चलबैत कालक गुनगुनी पकैड़ लेलकै। जेकरा सँग शम्भु भरि दिन मगन भऽ गारा-जोड़ी केने बुलए-भाँगए लगल। मुदा तँए कि शम्भु एतबेमे ओझराएल रहल? नहि! ने ओकरा गामक आन घर अनभुआर आ ने लोक अनठिया बुझि पड़इ। तहूमे एकठाम रहने जखन माए-बापक सँग बाध-वोन दिस जाए तँ वएह घर वएह लोक देखए। समाज तँ ओहन सरोवर छी जइमे घोंघा-सितुआसँ लऽ कऽ कमल धरि फुलाइत अछि। देवस्थानमे साँझ-भोर घड़ी-घण्ट आ शंखक अवाज तथा खरिहाँनमे धान फटकैत सूपक अवाज अकासमे उड़ैत, काठपर ओंघराइत टेंगारी-कुरहैर गर्द करैत तँ चुल्हिपर चढ़ल बरतनक अदहन 'झ-झ-काली' करैत रहैत।

छह बर्खक बेटा-ले संतोखीदास खौजरीक ओरियान करैक विचार केलैन। ओना हाट-बजारमे खौजरी तँ नै बिकाइत अछि मुदा हरिहरक्षेत्र, सिहेश्वर, जनकपुर आ देवघरमे तँ बिकाइते अछि। मुदा ओतए-सँ औत केना? अखन तँ ओमहर-मुहेँ जाइक निआर नै अछि। ओना गामोमे बरही लकड़ीक कठरा बनबैए। सेरसोबा सनगोहि मारि मचैया खेबो करैए आ ओकर छाल बेचबो करैए। अगर जँ कठरा बनबा लेब आ सनगोहिक छाल कीनि लेब तँ तेबखाक बेसनसँ अपनो छाड़ि लेब। हम सभ कि कोनो शहर-बजारक लोक छी जे बेटा-बेटीकेँ पेस्तौल बम-बारूद आकि छुरछुरी-फटाका- खेलाइले देबइ। जँ खेत-खरिहाँन दिसक मन देखतिऐ तँ खिएलहा हँसुआ-खुरपी खेलाइले दैतिऐ, मुदा से नइ देखै छिऐ, तँए एकरा खौजरीए-क ओरियान कऽ देबइ। सएह केलैन।

जहिना हाथमे ओजार एने श्रमिक बड़का-बड़का इंजिन बना चलबैत तहिना हाथमे खौजरी एने शम्भुओ परिवारक सँग समाजक कीर्तन, भजन, यज्ञ इत्यादिमे शामिल हुअ लगल।

सात बर्ख बितैत-बितैत शम्भुक हाथ खौजरीपर बैस गेल। जइसँ

असगरे आँगनक ओसारपर बैस जाधैर हाथक आँगुर नइ दुखाए लगै ताधैर एकताले सीता-राम-सीता-राम, राधेश्याम-राधेश्याम खौजरीक अवाजक सँग अपन कण्ठक स्वर मिला उन्मत्त भऽ गबैत रहैत।

भगवानोक लीला अजीव छैन। एक्के मनुख वा पशु-पक्षीक कोनो बच्चाकेँ उम्रसँ बेसीए बना दइ छथिन आ कोनोकेँ कम बना दइ छथिन। कियो पाँचे बर्खमे पनरह बर्खक बुधि-ज्ञान अरैज लैत अछि तँ कियो पनरहो बर्खमे पाँचो बर्खसँ निच्चेँ रहैए। जेना शम्भुओकेँ भेल, साते बर्खमे पनरह बर्खक बच्चाक कान काटए लगल। तहूमे तेहेन समाजक स्कूल अछि जे जे जेते मेहनत करत ओकरा ओते फलो भेटबे करतै।

सदिकाल केतौ-ने-केतौ, कोनो-ने-कोनो उत्सव समाजमे होइते रहैए। देवस्थानसँ परिवार धरिमे केतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ केतौ बच्चाक मूड़न, केतौ सत्यनारायण भगवानक पूजा तँ केतौ बिआह-दुरागमन। शुभ काज तँए शुभ वातावरण बनबैले शुभ-शुभ क्रिया-कलाप। शुभ क्रिया-कलाप-ले केतौ ढोलक-झालि-हरमुनियाँक सँग रामधुन चलैत तँ केतौ ढोल-पिपहीक सँग गीत-नाद। तेतबे नहि, सँग-सँग परिवारिक उत्सवमे समबेत स्वरे माए-बहिनक गीत-नाद सेहो चलबे करैए।

जहिना पाँच बर्खक बच्चा स्कूलमे नाओं लिखा दोसर-तेसर बच्चा सँग पढ़ैत तहिना शम्भुओ समाजमे केतौ ढोलक-झालि वा ढोल-पिपहीक अवाज सुनिते ठोकले ओइ जगहपर पहुँच, वेद पाठी जकाँ आँखि-कान समैट ताधैर देखैत-सुनैत रहैत जाधैर विश्राम करैले बन्न नै होइत। शम्भुक क्रिया-कलापसँ दुनू परानी-संतोखीदास निचेन भऽ अपन-अपन काज करैत रहैथ। किएक तँ दुनू परानी बुझि गेला जे जेतए ढोल-पिपही बजैत हएत शम्भु ओतइ हएत। तँए संतोखीदास जखन खेत-पथारसँ काज कऽ घुमैथ तँ ठोकले ओइ स्थानपर पहुँच शम्भुकेँ ताकि अनैथ।

समाजो तँ ओहन बाट बना चलैत जइसँ हँसैत-खेलैत जिनगी बिनु थकनहि सदैत चलैत रहैए। केना नै चलत? धार केकर आशा-बाटक प्रतीक्षा करत? जहिना धार अपना गतिए दिन-राति चलैत रहैए तहिना ने

समाजो अपना गतिए सदैत चलैत रहैए।

नवम् बर्ख चढ़ैत-चढ़ैत शम्भुआ 'शम्भु' बनि गेल। कारण भेलै जे आन-आन बच्चासँ भिन्न काजक प्रति झूकाव शम्भुमे हुअ लगलै। जहिना जीवनी–जीवनक पारखी–वोन-झाड़ वा गाछी–बिरछीमे बरसातोपरान्त आसिन–कातिकमे नव-नव गाछकेँ माटिसँ ऊपर होइते डारि-पातसँ परैख लैत जे ई फल्लाँ वस्तुक गाछ छी, मुदा अनाड़ी नै परैख पबैत तहिना समाजोक पारखी शम्भुकेँ परखए लगल। छोट बच्चा जहिना लत्ती-फत्तीमे फड़ल हरिअर चारि पएरबलाकेँ, जेकर मुँह घोड़ा सदृश नमगर होइत ओकरा घोड़ा मानि पकैड़ अपन खेलक एक भाग, सर्कश जकाँ, बना खेलैत तहिना कीर्तन मण्डलीक बीच शम्भुओ एक अंग बनि गेल। ओना, अदौसँ लोक किछु समटल आ किछु बिनु समटल, जे लोकक वोन-झाड़मे हेराएल रहल, केँ चिन्हैत आबिए रहल अछि। जँ से नै रहैत तँ किछु बोनैया किए शिकारक पात्र बनैत। मनुखक लगौल खेती-बाड़ी वा माल-जालकेँ जँ बोनैया नष्ट करए चाहत तँ किए लगौनिहार अपना सोझहामे अपन श्रमकेँ नष्ट होइत देखत। एहनो-एहनो पारखी लगमे रहनिहार अपन बच्चाकेँ नै परैख पबैत। केना परखत? मनुख तँ गाछ-बिरीछ नहि, जे डारिक रंग-रूप आ पातक सिरखारसँ परैख लेत, मुदा मनुख तँ जीवक श्रेणी, जिनगीक पाँतिमे रहितो आनसँ अधिक नमगर-चौड़गर, फूल-फलसँ लदल दुनियाँबला छी। जे अपन गुण बाहर नहि भीतर छिपा कऽ रखने रहैए। रखने अछि आकि राखल छै ओ भिन्न बात...।

जे शम्भु अखन धरि मनुखक मेलाक बच्चाक जेरमे नुकाएल छल ओ आब नमैर कऽ धान-गहुमक गाछ जकाँ बेदरंग हुअ लगल। मुदा रंग-रूप अधिक गाढ़ नइ भेने ने अपने देखए आ ने आनेक नजैरक सोझ पड़इ। भलेँ उम्मस भरल भादोमे पुरबा-पछियाक लपकी नै बुझि पड़ैत मुदा ओहन लपकी तँ माघमे जरूर अपन रूपक दर्शन करैबते अछि, शम्भुओकेँ तहिना भेल। एक आँखिसँ दोसर आँखि, एक कानसँ दोसर

कान बीआ-बान हुअ लगल। मुदा बीआ तँ बीआ छी, कोनो फले बीआ, तँ कोनो आँठीए, कोनो पाते बीआ तँ कोनो डारिए। तहिना जेते मन तेते खेत। जेते खेत तेते रंगक गाछ। जेते गाछ तेते रंगक फल-फूलक आश...। मुदा मनुखक बीआ तँ सभसँ बेढंग अछि, अजीव अछि। जेहेन-जेते खेत तेहेन-तेते रंगक बीआ खसि तेते रंगक गाछ सँगे जनमैत। गाछ देख कियो बजैत-

"शम्भुक सिनेह संगीतसँ तेते भेल जाइ छै जे कहीं घर-परिवार छोड़ि ओकरे सँगे ने चलि जाए!"

तँ कियो बजैत-

"भगवान अपने बेटा जकाँ शम्भुकेँ लूरि-बुधि देने जाइ छथिन, एक-ने-एक दिन लगमे बजाइए लेथिन।"

ज्ञान स्वरूप देवत्त्व प्राप्त करैले प्रेमास्पदक बाट धड़ए पड़ैत, जे बिनु बुझने शम्भुमे आबए लगल। जहिना एके माटि आकि एक पानि जगह पाबि अपन भिन्न-भिन्न रूप बना भिन्न-भिन्न गुण पसारैत तहिना तँ समाजो अछि। माटिक आड़ि बनि-बनि बाध बँटल अछि, घेरा पाबि-पाबि पानि बँटल अछि तहिना ने समाजो अछि। समाजोक तँ भिन्न-भिन्न रूप अछि, भिन्न-भिन्न अर्थ अछि। केतौ गामक सीमान मानि समाज मानल जाइत अछि तँ केतौ जातिक अधारपर। केतौ कर्मक हिसाबसँ समाज बनैए तँ केतौ बेवसायिक हिसावसँ। ..कीर्तन मण्डलीक समाज ओहन अछि जइमे घर-परिवार सम्हारि लोक भगवानोक दरबार पहुँच अपन नीक-अधला माने उचितीः-विनती कहैए। तइले ने संगी-साथीक जरूरत आ ने साज-बाजक। थोपड़ी बजा वा चुटकी बजा वा बिनु बजेनौं मुँह खोलि वा बिनु मुहोँ खोलने जेतबे समए पबैत ओतबेमे राधा जकाँ कृष्णक सँग रमि जाइत।

नवम् बर्ख खटियाइत-खटियाइत शम्भु गामक कीर्तन मण्डलीक सदस्य बनि गेल। तइले ने नाओं लिखबैक जरूरत भेलै आ ने कोनो

रजिष्टरक। खाली मनक डायरीमे विचारक कलम चललै। मुदा दुनूकेँ– शम्भुओ आ मण्डलियोकेँ– आगू चलैक बाटो आ संगियो भेटलै। जहिना घरक छप्परसँ खसैत पानि धरियाएल आगू बढ़ि धारमे पहुँच जाइत, तहिना संगी पाबि शम्भुकेँ भेल। मण्डलियोक फुलवाड़ीमे एकटा नव फूलक गाछ पोनगल। जहिना नमहर थैरमे नव गाए-महींसकेँ जातिक समाज भेटलासँ अपन खुशहाल जिनगीक खुशी होइत तहिना शम्भुओक सम्बन्ध रंग-बिरंगक कला-प्रेमीसँ भेलइ। जहिना टाला-कोदारि लऽ बोनिहार, रिंच-हथौरी लऽ मिस्त्री अपन सेवा दइले जाइत तहिना खौजरीक सँग शम्भुओ मण्डलीक बीच अपन सेवा दिअ लगल।

अठबारे मंगले-मंगलकेँ महावीरजी स्थानमे आ अठबारे रबिए-रबिकेँ महादेव स्थानमे साँझू पहरमे कीर्तन होइत। जइमे कीर्तन मण्डलीक समाजक सँग भक्त प्रेमी सभ सेहो एकत्रित भऽ खाइ-पीबै राति धरि मगन भऽ भजनो-कीर्तन करैत आ सुननिहारो संगीक सँग समुद्रमे दहलाइत-उधियाइत। मुदा बाल-बोध शम्भु ने दिनक ठेकान बुझैत आ ने मासक। मंगल केना घुमिः-घुमि अबै छै, ने से बुझैत आ ने रबि। तँए अन्हारमे वौआइत। मुदा जहिना ऐगला बाट भेटने शंकाक समाधान भऽ जाइत तहिना शम्भुओ मंगल आ रबिकेँ भँजियाबए लगल। खोजनिहार जहिना घनगर वोन-झार सँ कोनो जड़ी वा जरूरतक गाछ ताकि कऽ लऽ अबैत तहिना शम्भुओ मंगल आ रबिकेँ भँजिया लेलक। सातो दिन आ बारहो मासक गुण-अवगुण भँजिया शम्भु मनमे रोपि लेलक। जइसँ तीसो दिन मासक बीचक तीर्थ आ सातो दिनक आठो पहरक बोध भऽ गेलइ। रातिः-दिनक बीच घरक काज कखन कएल जाए आ बाहरक कखन, अइले तँ पहरे पहरा करैए। वसन्ती-वयार तँ गोटि-पँगरा-ले नहि सबहक लेल समान सोहनगर अछि, भलेँ कियो कुम्हकर्णी नीनक मस्ती लिअए आकि ब्रह्मलोक पहुँच कुम्हारक चाक चलबए। जाधैर चाक नै चलत ताधैर नव बरतन केना गढ़ल हएत..?

ओहन खेत वा पोखैर जकाँ शम्भुक मन दिन-राति छिछलए लगल

जेहेन पोखैरक किनछैरमे ठाढ़ भऽ चौड़गर खपटा वा झुटका पानिक ऊपर फेकलासँ ऊपरे-ऊपर छिछलैत दूर तक चलि जाइत, जहिना अनगर लबल धानक सीसपर होइत मन छिछलैत एक आड़िसँ दोसर धरि छिछैल-छिछैल देख-देख खुशी होइत, तहिना।

भोरमे नीन टुटिते शम्भु ओछाइनेपर दिन भरिक जिनगीक बाट जोहए लगल। साँझ परैत-परैत जहिना कृष्ण संगी-साथीक सँग आबि माए जशोदाकेँ अपन लकुटि कमरिया सुमझा संध्या बन्धन करए विदा होथि तहिना शम्भुओ उगैत सुरूजक सँग दुनियाँ देखैक उपक्रम सोचए लगल। भगवानक नजैर तँ पहिने ओइ पुजेगरीपर ने पड़ैत जे नव-नव फूल-अछतसँ सजल सिक्कीक नव फुलडालीमे नव गाछक फूल लऽ रहैत। बाँकीकेँ तँ गिनती कऽ कऽ रखि लेल जाइत। गाछमे सबुरक फलक सिरखार, कटहर जकाँ देख पड़ैत। दिन भरि समए बँचल अछि जखने बाध-वोन दिस जाएब तँ कोनो-ने-कोनो भेटबे करत। जँ भेट गेल तँ बड़बढ़ियाँ नै तँ उचितीः-विनती कऽ आर्त्त भऽ थारीमे रूइक बत्ती नेस कानि-कलैप कहबैन। अनकर जँ सुनैत हेथिन तँ हमरो सुनता, नहि तँ केकरो नै सुनथिन। अपना-अपना करमे-भागे लोक जीब लेत।

चौदहो भुवन सद्दश समाजमे चित्र-कुटक घाट जकाँ अनेको घाट। कम वा बेसी सबहक मनमे भगवानक प्रति आस्था, भलेँ आत्मा, जीव आ मायाक तात्त्विक रूप नै बुझैत हुअए। से सिरिफ पुरुखेटा-मे नहि, महिलोमे। समरपित भऽ निअम-निष्ठासँ आठ घन्टासँ लऽ कऽ बहत्तैर घन्टा तकक उपवास हँसैत-मुस्कियाइत कऽ लइत। एहेन पत्नीए की जे अपन पतिकेँ देवालय जाइसँ रोकती। समाजक भीतर समबेत स्वरे अष्टयाम, नवाह आ नाचक सँग आनो-आन समाजिक कार्य होइत जइ अवसरपर मंचपर बैस सामूहिक रूपे गान-बजान चलैत, तहिना माइयो-बहिनक बीच छैन। मूड़न हुअए आकि उपनैन, कुमार गीत हुअए वा बिआह, छठि हुअए वा फगुआ, सामूहिक रूपे सभ एकठाम भऽ गबै छैथ। नव-नव गायिकाक सिरजनो होइत आ अवसरो भेटैत। किएक तँ

दादी-बाबी उदारतासँ कहै छथिन जे आब बुढ़ भेलौं, कफ घेरने रहैए तँए नवतुरिये-केँ गाबए दहक। समाजिक वातावरणमे श्रद्धा, प्रेमक सँग भाइचाराक बेवहारिक पक्ष अखनो अछि। एकर अर्थ ईहो नइ जे अपराधिक वृत्ति दबल अछि। अगुआएल छल, बहुत अगुआएल अछि। आँखिक सोझमे बहिन-बेटीक सँग दुरबेवहार, बाड़ी-झाड़ीक वस्तु बलजोरी तोड़ि लेब, खेतक फसल क्षति कऽ देब इत्यादिः-इत्यादि। एक नहि अनेक अपरधिक वृत्त अपन शक्तिसँ समाजकेँ दबने अछि। मुदा तँए कि जिनगीकेँ आश नइ छइ, छै! धर्मक सँग प्रेमसँ छइ! जँ से नै छेलै तँ बाड़ी-झाड़ी वा खेत-पथारमे काज-करैत किसान किए गौंओं-घरूआ आ बाट चलैत बटोहीकेँ दूटा आम खाइले कहै छथिन? एकटा सजमैन अगुआ कऽ दइ छथिन जे धिया-पुताकेँ तरकारी बना देबइ। ..कहाँ मनमे छैन जे दस रूपैआ बुड़ि रहल अछि। रोपैइए काल दू-दूटा फलक गाछ लगबै छैथ जे एकटा परिवार-ले आ एकटा समाज-ले। जँ परिवार-परिवारमे एहेन वृत्ति अपनौल गेल रहैत तँ की समाजिक सम्बन्धमे औझुके टुटान अबैत?

रबि-मंगलकेँ देवस्थानमे कीर्तन अनिवार्य रूपे चलिते छल, जहिना विद्यालयक कार्य-दिवस। अनदिना सेहो दरबज्जे-दरबज्जे होइते रहै छल। जेना सबहक जिनगी बन्हाएल चलैत होइ। लोक भरि दिन खेत-पथारसँ माल-जालक पाछू लगल रहै छला आ साँझ पड़िते कीर्तन-मण्डलीक बीच पहुँच जाइ छला जे खाइ-पीबै राति धरि चलै छल। खेला-पीला पछाइत सुतै छला। कहाँ कखनो समाजक प्रतिकूल बात सोचैक समए भेटै छेलैन। जे कियो मण्डलीकेँ हकार दऽ अपना ऐठाम कीर्तन कराबैथ ओ अपन विभवक अनुकूल भोजनो आ साजो-समानक ओरियान कऽ दइ छेलखिन।

पहिल दिन शम्भुओकेँ सवा हाथ वस्त्र आ सवा-आना पाइ भेटलै। खा कऽ जखन शम्भु विदा हुअ लगल तँ गरे ने अँटइ। दू हाथमे तीन समान–पाइ, वस्त्र, खौजरी–अन्हार रातिमे केना लऽ कऽ जाएब। पाइकेँ

जँ वस्त्रमे बान्हि एक हाथमे लऽ लेब आ दोसर हाथमे खौजरी लऽ लेब से भऽ सकैए, मुदा दुनू हाथ अजबाड़ि रातिमे चलब केना? ढिमका-ढिमकीक रस्तामे केतए ठेँस लगत केतए नहि। जँ घरवारीए-केँ सँग चलैले कहबैन सेहो उचित नहि। हमरा सन-सन केतेको गोरे छथिन। किनका-किनका सँग पुड़थिन। जँ कान्हपर आकि डाँड़मे वस्त्र लगा लेब तँ पहिरौठ भऽ जाएत। केना बाबूकेँ पहिरोठ वस्त्र देबैन। ..गुन-धुनमे पड़ल शम्भु एक गोरेकेँ अपना घर दिस जाइत देख पिताकेँ समाद पठौलक-

“बाबूकेँ कहि देबैन जे डलना तेहेन चोटगर बनल छेलै जे इच्छासँ बेसीए खुआ गेल। तैपर तीन-तीनटा वस्तु लऽ कऽ अन्हारमे केना आएल हएत तँए आबि कऽ लऽ जाइथ।”

एगारहम बर्ख पुरैत-पुरैत शम्भुक गिनती गामक भजनियाँक सँग भगवानक भक्तोमे हुअ लगल। तहूमे ओहन भक्त जे बिनु बिआहल हुअए। ब्रह्मचारी। ओना शम्भुक सोभावमे सेहो समान्य बच्चाक अपेक्षा विशेष गुण छेलै जे सभ देखैत। जहिना कियो पनरह बर्खक उमेर बितेला पछाइतो पाँचो बर्खसँ कम उमेरक बच्चासँ लूरि-बुधिमे पछुआएल रहैत आ कोनो-कोनो बच्चा दसे बर्खमे सियान जकाँ भऽ जाइत। मुदा समाज तँ अथाह समुद्र छी। जेहेन पारखी तेहेन परख। डोका-काँकोरसँ लऽ कऽ हीरा-मोती धरिकेँ समेटनिहार समुद्र सदृश समाज। एहनो पारखी जे एक तरहक जानवर–गाए-महींस इत्यादि– पोसि दोसरो-दोसरो तरहक जानवरक जिनगीकेँ दूर धरि देखैत, आ ओहनो जे सभ दिन सोझहामे रहितो किछु ने–जिबैक रस्ता–देखैत। तहिना, पारखी शम्भुओकेँ परखलैन। जइसँ कीर्तन मण्डलीक ऊपर श्रेणीक कीर्तनियाँमे शम्भुक गिनती हुअ लगल। गुरु तँ सदैत शिष्य तकैत। शिष्य-गुरुकेँ एकठाम भेनहि ने जिनगी आगू ससरैए। जाधैर से नै होइए ताधैर मिश्री कुसियारक पानिमे डुमल रहैत आ शिष्य सरपतक श्रेणीक गाछ बुझल जाइत। ..शम्भुकेँ एक सँग दू गुरु भेटल। एक अगुआ मुरते माने वजन्त्री-सँ-

गौनिहार धरि आ आ दोसर साज-बाज। जहिना रंग-बिरंगक कोठीमे रंग-बिरंगक अन-पानि देख गृहस्वामिनीक मन सदैत हरियाएल रहै छैन, तहिना शम्भुओ हरियाए लगल।

अखन धरि शम्भुक गिनती माए-बापक बीच, ओहन बच्चा सदृश छल जेहेनकेँ काजक भार तँ नहि, मुदा जिनगीकेँ जिआ रखब माए-बापक कर्तव्य-कर्मक श्रेणीमे रहैत। जइसँ बिनु पगहाक पशु जकाँ शम्भुओ। तहूमे आब शम्भु छेँटगर भऽ गेल। जखने भूख लगतै तखने दौगल औत नइ तँ भरि दिन भुखलो रहि सकैए। तँए कि शम्भुक खाइ-पीबैक आ रहैक ठौरो बिला गेल? नहि। ओ सभ रहबे कएल। हँ! एते जरूर भेल जे कखन औत कखन जाएत से पुछनिहार नइ रहल। सुखनीए संतोखीदासकेँ कहि देने रहैन जे बाल-बोधकेँ पाछूसँ नै आगूसँ टोकल जाइत अछि। जहिना राहैरक गाछक बुट्टीकेँ चारू भागसँ सिर पकड़ने रहैत तहिना तँ मनुखोकेँ अछि। मुदा जीवनी तँ गर लगा कोदारिक छह मारैत जइसँ अपन पएरो बँचै आ बुटो उखड़ै। तँए उत्तम कोटिक काज वएह ने जे साँपो मरि जाइ आ लाठियो ने टुटइ।

घरक कोनो काजक भार शम्भुकेँ नै रहैक कारण छल जे माए-बापक हृदए घेराएल रहैन जे माए-बाप अछैत जँ बेटा-बेटीकेँ कोनो भार पड़त तँ केराक गाछ जकाँ वा आन कोनो खिच्चा गाछ जकाँ पिचा कऽ थकुचा भऽ जाएत। जइसँ शरीर खिलैच जेतइ। जखने शरीर खिलचतै तखने जिनगी खिलैच जेतइ। जइसँ रोगाएल गाछ जकाँ सभ दिन खिद-खिद करैत रहत। जँ एहेन जिनगी बेटा-बेटीक भेल तँ ओ परिवार केते दिन आगू-मुहेँ ससरत। तँए, जाधैर बाल-बच्चाकेँ निरोग बना नै राखब ताधैर वंशकेँ आगू-मुहेँ ससारब कोरी-कल्पना हएत। जइसँ ने माए-बाप शम्भुकेँ कोनो काज अढ़बैत आ ने शम्भु किछु करैत। सभ किछु अपन रहितो शम्भु अपन किछु नइ बुझैत। तँए, धैनसन! परिवारक काजक तहमे पहुँचलापर ने कियो बुझैत जे ऐ काजकेँ नइ भेने परिवारमे की नोकसान हएत। ई जिनगीए तँ बर्खा-पानिक बुलबुला जकाँ अछि।

लगले बनत, चमकत आ फुटि जाएत। एहेन जे क्षणभँगुरोसँ क्षणभँगुर जिनगी अछि, जेकर कोनो बिसवास नहि, तेकरा पाछू पड़नाइए नादानी हएत। भने ने जनकजी ऐ बातकेँ बुझि भोगो-विलासकेँ अधला नइ बुझै छला। भलेँ शम्भुक मनमे जे हौउ मुदा माए-बापक मनमे जरूर रहैन जे जाबे थेहगर छी ताबे जँ काजसँ देह चोराएब तँ परिवारक प्रति अन्याय करब हएत। बुढ़ाढ़ीमे झुनाएल धान जकाँ सीसक टुर तुइ-तुइ जहिना खसैए तहिना ने शरीरक अंगो–आँखि, कान इत्यादि–खसबे करत। जखन देह भँग हुअ लगत तखन तँ बेटे-बेटी ने श्रवण कुमार जकाँ भारपर टाँगि तीर्थ-स्थान घुमौत। एहेन काज तँ ओकरा ऊपर लधले छै, तखन मुर्दा जकाँ आरो नअ मन बोझ लाधब उचित नहि। की करत वएह वेचारा, एक दिस माए-बापक बोझ पड़तै, अपनो जिनगी रहतै, तैपरसँ बाल-बच्चाक कोनो ठेकान छै जे भगवान केते देथिन केते नहि। हुनका थोड़े बुझल छैन जे अन-पानि केते महग भऽ गेल अछि। जेतए मरूआ बरबैर माछ बिकै छल ओतए मरूआ धिना कऽ देश छोड़ि देलक, आ माँछ सिमटीक चिनमारपर गिरथानि बनि अजबारि कऽ बैसल अछि।

ढेरबा बच्चा रहितो शम्भु समैसँ दोस्ती केलक। दोस्ती निमाहैले मण्डलीक सँग पूरि जखन सभ कियो सुतैले ओछाइनपर जाइत तखन शम्भु साइकिल सीखैत बच्चा जकाँ पहिने हरमुनियाँ, ढोलक, झालि इत्यादिकेँ निंगहारि-निंगहारि देखए। जहिना युवक-युवती पहिल नजैरमे पहिल रूप देखैत तहिना शम्भुओ देखलक। देखलक जे एक नै अनेको जुगल-जोड़ीक संयोगसँ समाज ठाढ़ अछि। जइमे अपन-अपन गुणकेँ मिज्झर भऽ कऽ मिलि-जुलि चलि उकड़ू-सँ-उकड़ू बाट टपि श्रृंगी ऋषिक फुलवाड़ी देखैत। ..एकपेरिया झालि केना टुक-टुक जोड़क बनल हरमुनियाँ सँग ठिकिया-ठिकिया चलैए। शम्भुक सिनेह समूहसँ भेल।

पाँचिम दशकसँ पूर्ब, अष्टयाम कीर्तनक मूलमंत्र “सीताराम, सीताराम” छल। कारणो स्पष्ट अछि। जगत जननी जानकीक मिथिला, जिनक संकल्प पूर केनिहार राम। सीताराम मंत्रमे शम्भुकेँ ऋतानुसार

सभसँ भेटए लगल। जहिना जखन जेहेन मन तखन तेहेन विचार, तहिना। भोरमे प्रभाती बेर ‘सीताराम’मे शम्भुकेँ वसन्ती वा ब्रह्मणी रस भेटैत जखन कि दिन-रातिक गतिए रसोक रस बदलए लगैत। मुदा मंत्रमे कोनो बदलाउ नै होइ। बाल-बोध रहितो शम्भु जीवनी जकाँ सिर सजमैनक भाँज बुझैत, हनुमानजी जकाँ नहि। जे छोटो काज-ले नमहर अस्त्रक प्रयोग करब। आ ने अनाड़ी-धुनाड़ी जकाँ पराती बेर साँझ आ साँझक बेर पराती गबैत। जँ गेबो करैत तँ जहिना हलुआइ चीनीक चासनीमे रंग-बिरंगक वस्तु बना ओइमे बोड़ि मधुर बनबैत...। एहने सन शम्भुओक मनमे उपजै। ओना जेते रंगक मंत्रक जरूरत होइत तेते एबो ने करइ। नइ अबै तहूमे ओकर दोख नहि। दोखो किए हेतै एक तँ वेचारा पशु जकाँ असगरे खुट्टा धेने, तैपर बाल-बोध। मुदा तैयो बकरीक बच्चा जकाँ नहि जे दूध पीविते छड़पए-कुदए लगैत।

हरलै-ने-फुरलै शम्भु घरसँ पड़ा गेल। दुनू बेकती संतोखीदास खेतमे काज करए गेल रहैथ। तँए भरि दिन कोनो भाँजे नै लगलैन। कारणो छल, दुपहर तक तँ आनो दिन हटले-हटले रहै छला आ साँझमे खोज करै छेलखिन। ओहो ऐ दुआरे जे दिन तँ घुमै-फिरैक होइ छै, मुदा राति तँ ठौर पकड़ैक होइ छै, तँए।

घरसँ निकैलते शम्भु घरक सभ किछु बिसैर गेल। खौजरियो बिसैर गेल। बिसैर नइ गेल मनसँ हटि गेलइ। तीर्थानुसार नव चानक नव ज्योति भेटलै। जहिना ताड़ी देनिहार खजुर लपैक कऽ ताड़ पकैड़ लैत, तहिना शम्भुक खौजरी-तबला पकैड़ लेलक। तबला पकैड़ते खौजरीए-क हाथसँ शम्भु बजबए लगल। बजबैत केते दूर गेल तेकर बोध नै रहलै। दुनियाँक बीच हेरा गेल। जेमहर देखैत दिन छोड़ि किछु ने देखैत। बाध-वोन, गाछ-बिरीछ, पोखैर-झाँखैर, हल्लुक-सुखाएल धार-धूर तँ सभ गाममे रहिते छइ। आड़ि-धूर बनौनिहार आकि नक्शा-खतियान देखनिहार ने खेत-पथार, गाम-घरक बात बुझैत, जे नइ बुझैत ओ दिन-राति छोड़ि आरो की बुझत, तहिना शम्भुओ। बीच बाटपर शम्भुक मन हुदकए

लगलै। हुदकैत गामक कीर्तन मण्डलीक अगुआक मुँहक बात मन पड़लै। मन पड़लै जे पचगछियामे बड़का-बड़का साजो-बाज छै आ बजोनिहारो। खैयो-पीबैले देल जाइ छै आ रहैयोक बेवस्था छइ। जहिना कोनो बीज भूमिकेँ छेदि अँकुरि ऊपर आबि अपनाकेँ वृक्षक पूर्ब रूप बुझि इतराइए तहिना ने बच्चोक बुधिक अँकुर जगैए, शम्भुओकेँ सएह भेल। उत्साहित भऽ घरसँ निकैल विदा भऽ गेल मुदा खास जगहपर पहुँचैले जानकारीक जरूरत भेलइ। ओना, जँ खास जगह नहि, आम जगह देखए चाहब तँ कोनो परिचयक जरूरत नै होइत। जएह देखब, जेतबे देखब, जेतए देखब सहए दुनियाँ। जेहेन आँखिक ज्योति तेहने रंगक दुनियाँ। मुदा पंचगछिया जाइले तँ जानकारी बनाएब जरूरी अछि। मनमे उठलै जखन पुछि-पाछि लोक केतए-सँ-केतए चलि जाइत अछि, तखन हम किए ने जा सकै छी। जहिना आन बाट-घाट टपि लोक अपन स्थानपर पहुँचैए तहिना हमहूँ किए ने पहुँचब। पेटक भूखक सँग मनोक भूख कमलै। भूख कमिते संकल्प शक्तिक उदय भेलइ।

पचगछियाक रायबहादुर लक्ष्मीनारायणजी जेहने संगीत कलाक मर्मज्ञ तेहने साधको। संगीत कलाक सिनेही रहने 'संगीत कला केन्द्र' स्थापित केने छैथ। जइसँ मिथिलांचलक अनेको गायक, वादक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति पौलैन।

एगारह-बारह बर्खक शम्भुकेँ केन्द्र लग पहुँचलोपर भीतर जाइक हिआउ ने डटइ। कातमे ठाढ़ शम्भु ओइ भूखल-पियासल मरूभूमिक चिड़ै जकाँ जे दूर-दूर धरि अन-पानिक छुति नै देखैत, समुद्रक ओइ सीप जकाँ मुँह बाबि जे स्वाती नक्षत्रक बूनक आसमे रहैत। ..तखने माँगन मण्डल निकलला। अन्तर्राष्ट्रीय स्तरक संगीत मर्मज्ञ। शम्भुपर नजैर पड़िते आँखि आकर्षित केलकैन। मुदा चेहरा अपन भूख देखौलकैन। बिना किछु पुछने-आछने शम्भुक बामा बाँहि पकैड़ केन्द्रक भीतर आनि माँगैन मण्डल खेनाइ खुऔलखिन। खेनाइ खेलापर शम्भुक मन असथिर भेल।

माँगन पुछलखिन-

"बाउ, की नाओं छी?"

"शम्भु।"

"परिवारमे के सभ छैथ?"

"बाबू, माए।"

"भाइयो-बहिन छैथ?"

"हूँ।"

"आइ रहि जाउ काल्हि निचेनसँ गप करब।"

"बड़बढ़ियाँ।"

दिन बितल साँझ आएल। बाहर दिससँ अन्हार आबए लगल। जेना-जेना अन्हार अबैत गेल तेना-तेना करियाइत गेल। करियाइत-करियाइत ओते करिया गेल जे अपन आँखि हाथो ने देखैत। जे जेतै से तेतै गबदी मारैक ओरियानमे लगि गेल। मात्र टूटा पिपनी लगल कपाट कखनो खुजै आ कखनो बन्न भऽ जाइ। डर सन्हियाए लगलै। जेना-जेना डर अपन पैठ बनबैत गेलै तेना-तेना शम्भुकेँ डरौन बुझि पड़ए लगलै। कानए लगल। कनिते मनमे उठलै माए-बाप, संगी-साथी, गाम-घर...। केना नै मन पड़ितै? माटिक बनल रस्तो अन्हारमे बजैत- भाय ऐठाम कटारि अछि, आगू हुच्ची। भलेँ रस्ताक हिसाबसँ ओकाइत कम अछि मुदा खुरलुच्ची सबहक खुनल छी तँए रस्ता बगैल कऽ टपब...। शम्भुक मनमे फेर उठलै माइक कएल भानस। खाइ-पीबै राति भऽ गेल। भानस कऽ कऽ माए तकैले वौआइत हएत। मने-मन कहैत हएत साँझ भऽ गेलै अखनो धरि शम्भु किए ने आएल। चारि बेर सोर पाड़ि बाबूओ अकैछ कऽ अपनो खेनाइ छोड़ि ओछाइनपर ओंघरा गेल हेता।

मन केतौ, तन केतौ जहलक कैदी जकाँ शम्भुक स्थिति बनि गेल। हुचकी आबए लगलै जे बढ़िते गेलइ। आगूमे ठाढ़ भेल माँगन असमंजसमे पड़ल छला। केना नै पड़ितैथ। जिनगीक पहिल दिन, पहिल

दृश्य। तँए नाटकक बिनु देखल दृश्यक सदृश, सोलहन्नी नव। जहिना परीक्षा फीस नै रहने विद्यार्थीकेँ फार्म भरैक अन्तिम चारि बजेमे एकाएक परिवारमे कोनो नमहर बेमारी भेने, आ जेठुआ दुपहरियामे पीआकक मन वौड़ा जाइत तहिना माँगनकेँ हुअ लगलैन। एक दिस हुअबला जिनगीक प्रश्न अछि तँ दोसर दिस असगरे ओइ जगहपर पहुँच गेल अछि जेतए सभ अपरिचिते छइ। मन नाचि भगवान रामपर गेलैन। अयोध्याक राजक बदला हुनका वोन भेटलैन। मुदा अयोध्यासँ निकैल गंगा पार होइते कोनो-ने-कोनो ऋृषि-मुनिक आश्रम भेटते गेलैन, तखन वोन की भेलैन? ..मुदा लगले माँगनक मन उनैट गामक बुढ़ माए-पर गेलैन। वेचारीकेँ जही दिन नातिनक जन्म भेने बेटी मरि गेलैन, नानीसँ माए बनि वेचारी 'मरनी बेटी' दुलारूक नाओं नातिनक रखलैन। उत्साह जगलैन। मन बाजि उठलैन- ऐ बच्चाकेँ नै वौआए देबइ। भलेँ राति किए ने जागि कऽ बितबए पड़त। मुदा शंको तँ जीविते अछि। लगले मनमे उठलैन जे हो-न-हो अनचोकेमे नीन चलि आबए आ तहीकाल पड़ा जाए। ..झाड़ी वोन जकाँ माँगनकेँ रस्ता भेटबे ने करैन। जँ भेटबो करैन तँ कोसिकन्हाक खट्टा-पटेरक रस्ता जे लगले ओरा जाइत। ओरेबो केना नै करैत? भूख-पिआस आकि नीन केकरो पुछि कऽ अबैए। भलेँ ओकरा सुति कऽ आकि खा-पी कऽ भगौल जा सकैए। आगूक बाट भेटते माँगन कोठरीक केबाड़मे लगल तालाक कुन्जी सिरमामे रखि लेलैन। मुदा तैयो शंका दबिते रहैन जे जखन नीनभेर भऽ सूतब आ शम्भु पड़ाए चाहत तँ की सिरमाक चाभी नै निकालि सकैए..?

मुदा आब धीरे-धीरे शम्भुक कनैक अवाजमे मिठापन आबए लगल। भरिसक नीनक आगमन भऽ रहल छइ। मिठासे कानब ने सुखोक एकटा कारण छिऐ। मुदा तैयो माँगनक मन उचैटते जाइन। घर-बाहरक वा तीर्थ यात्रा आ तीर्थस्थानक सीमापर जहिना संकल्पक उदय होइत तहिना माँगनकेँ सेहो भेलैन। तकैत आँखिए कौल्हुका सुरूज देखब। मुदा असगर तँ रातियो काटब असान नहियेँ अछि...। माँगन

समुद्रक अगम पानिमे डुमए लगला। मुदा लगले नाचक हरही बुढ़ियापर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते मनमे उठलैन ओहो बुढ़िया गामक युग पारखीए छी। आन-आनकेँ देखै छिऐ जे लोकक लाटमे राति बितबए चाहैए आ ओकरा कियो लाटमे रहै ने दिअ चाहै छइ। मुदा बुढ़िया तँ बुढ़िए छी, कियो ओकर बात सुनै वा नै सुनै, मुदा भरि राति बड़बड़ाइते रहैए। भलेँ साँझकेँ भोर कहैत हौउ आकि भोरकेँ साँझ। जखन जे मन फुरै छै तखन से पहरिया नोकर जकाँ भरि राति ठाढ़ करैत रहैए। असविस करैत बरियातीकेँ जहिना खिस्सकर रंग-रंगक चसगर चासनीमे डुमबैत तहिना माँगन मण्डलक मन बड़बड़ाए लगलैन। बिसरए लगला शम्भुकेँ आ अपन कर्तव्य-कर्ममे डुमए लगला। तैबीच हाथ-पएर मारि अन्हारे-अन्हार नीन आबि शम्भुकेँ गोंति देलक। जहिना अथाह पानिक तरमे मुँहक बोल पानिए-मे विलीन भऽ जाइत तहिना शम्भुक कानब विलीन भऽ गेल।

नाकक साँसक अवाजसँ माँगनकेँ बिसवास भऽ गेलैन जे शम्भुकेँ नीन आबि गेल, निन्न पड़ि गेल। असथिर भेला। मुदा फेर लगले मनमे उठलैन जे चहाएल मन कखनो चहा कऽ उठि सकैए। जँ कहीं शम्भुक नीन देख अपनो नीन पड़ि गेलौं तखन तँ सभ चौपट भऽ जाएत! ओना दुनियाँ देखैबलाक अछि। देखैबला दुनियाँक बीच हेराएत किए। जखन सभ किछु मिलाइए कऽ दुनियाँ अछि तखन हेराइक प्रश्ने केतए? मुदा लोककेँ दिसांशो तँ लगै छइ। दिसांशे लगलापर ने कियो पूबकेँ पच्छिम आ उत्तरकेँ दच्छिन बुझै छै। मुदा अकासकेँ पताल आ पतालकेँ अकास कहाँ बुझै छइ? माँगन लगले ओइ सीमानपर पहुँच गेल जेतए बाल-बोधक रच्छा होएत। बाल-बोधक रच्छा तखने भऽ सकैए जखन ओकरापर नजैर राखल जाए। तैबीच मनमे उठलैन अपन आ अपन संगीक सँग संस्थाक महत। मन बुदबुदाए लगलैन।

मनुखक जीवन तँ तखने ने जीवन, जखन जीवनक वोन लगा दिअए। ओना एक बारगी एहेन शक्तिक उदय सम्भव नहि, मुदा डारि,

पात, सिर, फड़, फूल इत्यादिक एक-एक अंगक तात्त्विक बोध होइ। केतेको बेकती ऐठामसँ गायक, वादक बनि-बनि अपन शक्तिक प्रदर्शन करैत आबि रहल छैथ। ओइ आम-जामुनकेँ किए ने सवुर हेतै जे अपन बाल-बच्चाक–गाछी–सँग शरीर त्यागत!

जहिना आइ धरि, घर-परिवार बसबै पाछू लगल रहलौं तहिना जाबे घटमे घटवार अछि, नाह खेबैत रहब। भिनसरमे जखन शम्भुक सँग गाम पहुँचाबए जाएब तखन सोझे घुमि कऽ चलि नै आएब। ‘सरियादासीनसँ’ भेँट भेना बहुत दिन भऽ गेल। स्वर्गक गायिका! मुदा से नै पाहि लगा एकठामसँ शुरू करब आ सबहक भेँट करबैन। हँ, जरूर करबैन। मुदा गुरुओजी मानैथ तखन ने। जहाँ एकसँ दोसर दिन हएत आकि हकबाहि करए लगता। समाद-पर-समाद पठबए लगता। ओहो तँ जरूरीए अछि। नै रहने अपन सुन्नर फुलवाड़ीक ताम-कोर के करत? खएर जे हौउ, बाल गोविन्दजीक ऐठाम जरूर जाएब। बड़ागामक लहलहाइत बगीचाक ओगरवाहि तँ वएह ने कए रहला अछि। ओना अपने सिख-लिखक समांग महेन्द्र सेहो छैथ। महेन्द्र, बालानन्द, शंकर, संजीव, रामनारायण, विनय, बेचन आ ओइठामसँ राम प्रसाद महतो ऐठाम होइते आगू बढ़ब। नइ जाएब सेहो उचित नहियेँ हएत। मनुख तँ कौछु नइ छी जे अण्डा दैत पड़ाइत जाएब। मुदा काँकोड़ो तँ नहियेँ छी जे जेकरा पेटमे रखलौं ओ पेटे खोखैर खा लिअए। शीतनारायण, सुरेन्द्र आ अजयसँ सेहो भेँट कइए लेब। ओना, भेँट हएत कि नहि, सेहो ठेकान नहियेँ अछि, किएक तँ उड़ंतबाज सभ ने बनि गेला अछि। ओह! हदसँ अधिक पीतमरू राम प्रसाद छैथ। प्रेमकेँ जहिना प्रेमास्पदक बाट भेटते बिसवास भऽ जाइत जे प्रेमी सँगे-सँग चलि रहल छैथ तहिना राम प्रसादो ने छैथ। मुदा बेसी लटारममे केतौ नै पड़ब। लटारममे पड़ब तखने ने बेसी दिन लगत, जँ से नै करब तँ किए बेसी समए लगत। हँ तखन एकटा करब जे जखन कियो भेँट हेता तँ हुनको गुरुजीसँ मोबाइलपर भेँट करा देबैन। जखने भेँट हेतैन तखने ने बुझथिन जे परिवार आ सन्यास की छिऐ।

जखन ओमहर जाएब तखन हिताइदास, बेचन मण्डल, राम गुलामदास, रामायणी देवी, छठूदास, दरबारीदास, बतहू मण्डल, लखनदास, राधेश्यामजी, रामजीदास, बौआ झा, राम भजनसँ भेँट नै करिऐन तँ जिनगी भरि उपरागक मोटरी कपारपर चढ़ल रहत। जँ कहियो भेँट हेता तखनो आ समदियो दिया समाद पठा कहता जे ‘एमहर एलौं, हमरा छोड़ि देलौं!’

माँगनक मनमे उठलैन माटिए पानिक संयोगसँ ने जीवधारीक सिरजन होइए। गंगा-ब्रह्मपुरक बीचक धरती मिथिला। एकलब्य सदृश एक-सँ-एक योद्धा कर्मरत् छैथ। एक लपकन अमतो चलिए जाएब। राधाकृष्ण आ कारतारामक लगौल फुलवाड़ी। तैसंग ध्रुपदक विशेष चमत्कारी शैलीक फुलवाड़ी सेहो। तेतबे नहि, पद्मश्री राम चतुरजी, विदुर, अभय, रामकुमार, रमेश आ पाठकजीक भेँट सेहो कइए लेबैन। मन बिलमलैन। रातिक बारह बजि गेल। कोठरीसँ निकैल अकास दिस तकलखिन तँ बुझि पड़लैन जे अन्हार ओससँ सिक्त भऽ शीतल बना रहल अछि। साँझसँ दबाएल इजोत अन्हारक सोझहामे आबि ठाढ़ भऽ गेल अछि। अदहे राति तँ आब जगैक अछि। एक दिन बितने तँ माघ सन जाड़केँ पिहकारी दऽ भगौल जा सकैए तँ अदहा रातिकेँ एकटा धुनो ने ठेल सकैए। पुन: कोठरी आबि शम्भुकेँ देख ओछाइनपर जा माँगन मण्डल ओंगैठ गेला। ओंगैठते मन पड़लैन पनिचोभ। जखन अमता जेबे करब तखन एक लपकन पनिचोभो चलिए जाएब। ओना जखने पनिचोभ जाएब तँ ओ दिन गुनैत-गुनैत सात दिनसँ पहिने नहियेँ छोड़ता, मुदा ओत्तो नै अँटकब। एमहर अँटकब तँ अपन बोहियो जाएब। अबधजीक लगौल गाछी कोन तरहेँ रामचन्द्र, दिनेश्वर, राजकुमार, मँगनू, फुलानन्द, भूपेन्द्र ओगरबाहि कऽ रहल छैथ सेहो बिना गेने केना देखब। ओमहरसँ बनारसक गुरु-शिष्य परम्पराक जीवित रखनिहार खरबान-जीक ऐठाम सेहो जेबे करब। तैसंग मनसा मिश्र आ डीही मिश्रक लगौल कृष्ण लीला आ रामकथाक वृक्ष कोन तरहेँ सीतू, हीरा, भगत, रामजी,

परमेश्वरी, अनन्त, दम्मन, सत्यनारायण आ रामवृक्ष सिंह पालि-पोसि रहला अछि सेहो देख लेब। ओना बीच बाटपर दरबारीदास सेहो पड़ता मुदा ओ घुमन्तु लोक छैथ, भेँट हेता आकि नहि। खएर, गाम तँ कम-सँ-कम देख लेब। तेतबे नहि, आगू कहियो दोखियो तँ नै हएब।

भोर होइते चारू दिसक गाछी-कलम-बँसबाड़िसँ चिड़ै सबहक अवाज उठए लगल। कियो अपन संगीकेँ कहैत जे भोरूका नीन बेसी सोहनगर होइ छै तँए एक नीन ओरो लगा लिअ, तँ कियो कहैत सुरूज उगलापर तँ दुनियाँक एक-कोणसँ दोसर कोण धरि उड़ैक समए रहैए, तँए ओइसँ पहिने जेते उड़ि लेब ओते अगुआएल रहब।

चिड़ैक अवाज सुनि माँगनक मनमे सवुर भेलैन जे भरिसक भोर होइपर अछि। राति बीति गेल एकोबेर नीन कहाँ आएल। आब जँ शम्भु उठबो करत तँ रौतुका डर थोड़े खेहारतै। मुदा प्रश्न उठलैन- भरि राति जगैक परियोजन की?

जहिना गाछपर रहैबला चिड़ै-चुनमुनी हुअए आकि पोखैरमे रहैबला चाहे माटिमे रहैबला जीव-जन्तु हुअए आकि पाथरमे बास करैबला, सबहक माए-बाप ताधैर ओगरबाहि करै छै, जाधैर ओ स्वतंत्र भऽ जिनगी नै प्राप्त कऽ लइए।

प्रात भने, दोसर दिन शम्भुकेँ गाम पहुँचा माँगन आगू बढ़ि गेला।

शम्भुपर नजैर पड़िते दुनू परानी-संतोखीदासकेँ राति भरिक चिन्ता उड़ि गेलैन। पुछैक परियोजनो ने बुझि पड़लैन जे पुछिऐ राति केतए रहए। ओना दुनू परानीकेँ पहिनहिसँ मनमे रहैन जे केतौ कीर्तन मण्डलीक सँग हएत, भगवानक भजन-कीर्तनमे। मुदा तैयो शम्भुपर नजैर पड़िते मन खुशी भेलैन। मनमे उठलैन जे माल-जाल जकाँ मनुखकेँ थोड़े बान्हल जा सकैए। जेना-जेना सरकैत जाएत तेना-तेना अपने ने जिनगीक बान्ह लगैत जेतइ। आह्लादित भऽ संतोखीदास पुछलखिन-

“बौआ, काल्हिए-सँ नै देखने छेलियह। केतौ अनतए गेल छेलह?”

पिताक सिनेह शम्भुक सिनेहकेँ जगा देलक। बाजल-

“बाबू, काल्हि भोरेसँ मन औनाए लगल। केतबो असथिर हुअ चाही से हेबे ने करी। घुमि-फिर कऽ पचगछिये मन पड़ि जाए।”

संतोखीदास पुछलखिन-

“पचगछिया केना बुझलहक?”

शम्भु-

“कीर्तन मण्डलीमे बेसी काल चरचा होइ छेलइ। जेना सभ किछु बिसैर गेलौं। हरल-ने-फुरल विदा भऽ गेलौं। ओतइ चलि गेल छेलौं। बड़का-बड़का गवैया, वजन्त्री सभ ओइठाम छइ।”

संतोखीदास पुछलखिन-

“अइले एते दूर जाइक कोन खगता। सुनै छी अपने गाममे महिना दिन रमलीला चलत। केते देखबह?”

शम्भु बाजल-

“केते दिनमे औत?”

संतोखीदास-

“ऐगला मासमे औत। अखन आसिन-कातिक छिऐ ने, रजो-महराजक बखारी खलिया जाइ छइ। तैपर दुनू मास तेहेन अछि जे सभ दिन पावैने-पावैन अछि। ऐगला मास धानोक लड़ती-चड़ती शुरू भऽ जाएत आ पानियोँ-बुन्नी ठमैक जाएत।”

शम्भु पुछलकैन-

“सिनेमा जकाँ एक्के सभ दिन हएत?”

संतोखीदास-

“नइ, जहिना बच्चाक जन्म होइ छै आ लागल-लागल ठेहुनिया दइ छै, खसैत-पड़ैत उठै छै, उठि कऽ चलै छै, पढ़ै-लिखै छै, बिआह-दुरागमन होइ छै, घर-परिवार होइ छइ। ताबे माइयो-बाप बुढ़ भऽ जाइ

छइ। ओकरो सेवा-बरदासि करैए। तहिना रमलीलोमे होइ छइ। सभ दिन सभ रंगक होइ छइ। जइसँ बेसी खरचो होइ छै आ समैयो लगै छइ। तँए भरि मन देखबो करैए। जइ काजमे जेते समए, मेहनत आ खर्च लगत ओ काज ओते नम्हरो आ नीको होइ छइ किने।"

शम्भु पुछलकैन-

"अपना गाममे कहियो भेलो छइ?"

संतोखीदास-

"नइ। रमलीला कोनो अट्टी-गुट्टी छी जे सभ गौंआँ कऽ लेत। दुर्गापूजा जकाँ छी। जहिना पावैन-तिहार, पूजा-पाठ तँ घरे-घर होइए मुदा दुर्गोपूजा करैमे गौंआकेँ डोराडोरि सक्कत कऽ कऽ बान्हए पड़ै छइ तहिना।"

छठिक परातेसँ झट्टा-पिट्टा शुरू भेल। बाधक रंग बदलए लगल। एक तँ रंग-रंगक धानक चास, तैपरसँ धानक बदलैत रंग। बेरू-पहर जे किसान भरल चास देखैत ओ भिनसर सेहो देखैक उदेससँ खुशी होइत घरपर अबैत आ जे भिनसरू पहर ओसमे नहाएल देखैत ओ बेरू पहर फेर देखैक आससँ अबैत। जहिना भरल-पूरल परिवारमे देहक सभ अंग भरल-पूरल चलैत तहिना सुभ्यस्त समए भेने शुरूहेसँ धानोक भेल। जहिना खेतमे काज करैकाल किसान हेरा जाइत तहिना अगहनमे बोनिहार। के नइ दुइयो-चारि कट्ठा खेती केने रहैए।

कातिकक पूर्णिमाक परातसँ रामलीला शुरू हएत। तँए अबैसँ आठ-नअ दिन पहिने रहुआक कमल नारायण, गरीब झा, जलेसर आ दयाकान्त बेर टगैत, करीब तीन बजेमे गाम पहुँचला। ओना गामक लोक पनरह-बीस दिन पहिनेसँ बुझैत जे रामलीला हएत। मुदा बिआह-दुरागमनक लगने जकाँ लोकक मनमे। असल लग्न तँ तखन ने शुरू होइए जखन बर-कन्याक देखा-सुनी हुअ लगैए।

..गाम पहुँचते जेना हवाक सँगे अबैक समाचारो पसरल।

सीमाकातक आमक गाछक निच्चाँमे ठाढ़े-ठाढे चारू गोरे विचार करए लगला जे गौंआँ सभसँ गप-सप्प केना हएत? बिना गप-सप्प भेने आगू काज नै ससरत। मुदा गौंआसँ मुखातीब केना हएब। ईहो तँ नान्हिटा काज नहि, अखनो समाजमे ओहन लोकक कमी नहि जे बिना आग्रह केने बरो-बेमारी आकि मुरदो डाहए नइ जेता। तैठाम अनगौंआँक सँग की करता ई तँ कठिन प्रश्न अछिए। मुदा एकटा तँ अखनो अछि जे नव लोक वा नव चीज गाममे एने लोक बिनु कहनौं देखए जाइए। भलेँ बाधे दिस जाइक बहाना किए ने करैत। ..कमल नारायण गरीब झाकेँ पुछलखिन-

"गाम तँ आबि गेलौं, आगू की सभ हएत?"

कमल नारायणक बात सुनि गरीब झा गाम दिस आँखि उठौलैन तँ देखलैन जे एक्के-दुइए आगू-पाछू लोक सभ धरियाएल आबि रहल छैथ। लोककेँ देखबैत गरीब झा बजला-

"जहिना अपना सभ गौंआकेँ रामलीला देखबए चाहै छिऐन तहिना ने गौंओं सभ देखैक ओरियान करता। एहेन-एहेन काज अगुतेने होइ छइ।"

अखन धरि गाममे रामलीला नै होइक कारण रहल जे गाममे ने एक्कोटा जमीन्दार आ ने जेठरैयत। कम आँट-पेटक किसान। जिनका अपने जिनगी पहाड़। बाढ़ि-रौदीक इलाका। एक सालक बाढ़ि वा रौदी किसानकेँ पाँच बर्ख पाछू धकेल दैत अछि। तैठाम दुर्गापूजा आकि रामलीला लोकक मनमे उठत केना। मुदा गामक एकटा गौरव अछि- दू साए बर्ख पहिने जेते लोक आ परिवार छल ओइमे दस गुणा वृद्धि भेल अछि। ओना ई बात नहि जे ओइ गामक लोक बम्बै, कलकत्ता, दिल्लीक आमदनी नै बुझैत, बुझैत! मुदा गामक सिनेह आ विश्वामित्र सदृश सेहो जिबठगर। किए ने जिबठगर रहत? कोनो की आइए रौदी, बाढ़ि आकि अन्हड़-बिहाड़ि, भुमकम भेल अछि आकि सभ दिनसँ होइत आएल अछि आ होइत रहत। तरहत्थीक मैल जकाँ दू बेर रगैड़ देबै छुटि जाएत।

तेतबे नहि, गामक ईहो गौरव अछि जे बरहबर्णा माने बारहो वर्णक गाम रहितो ने कहियो अपनामे लाठी-फराठी निकलल आ ने कोट-कचहरीक दछिना भरए पड़लै।

रामलीलो पार्टी आ गौंओंक बीच गप-सप्पक क्रममे तँइ भेल जे बरहम स्थान सार्वजनिक जगह छी, तँए ओत्तै बैस ऐगला गप-सप्प हुअए। सएह भेल। ..लोकक बीच कमलजीक हृदए उमैड़ गेलैन। कला-सिनेही। विह्वल भऽ बजला-

"आइ धरि एहेन गाम नै देखने छेलौं जैठाम एहेन हृदैक मिलान भेल। अखन धरि जेहेन-जेहेन गाम देखलौं तइसँ भिन्न गाम बुझि पड़ैए। ऐ रूपे कहाँ कोनो गाममे रामलीलाक प्रति आकर्षण छइ।"

मुदा लगले मन आगू बढ़ि गेलैन। भगवान रामक प्रति लोकक बिसवासक कारण अछि आकि मनोरंजनक? मनोरंजनो तँ जीवनक सँगे चलैबला सहचरीए छी आकि जिनगीसँ अलग चलैबला? कर्म-आनन्द मिलि लीला करैए। ..सभ सबहक मुँह देखैत जे के की बजै छैथ। कारणो अछि। सभ अपनकेँ नव बुझि नव फूलक सुगन्ध लिअ चाहैत। सभकेँ चुप देख पुन: कमलजी बजला-

"अही बेरटा नहि, जहिया कहियो लीला देखबैक अवसर देब तहिया जरूर आगूओ देखबैत रहब।"

जहिना राज-दरबारमे किछु गोरेकेँ बजैले परमीशन नै लिअ पड़ैत तहिना रामलीलाक मेड़ियाक बीच गरीबजीकेँ छैन। जहिना गरीब नाओं तहिना एक चेराक चेहरा। भीतर-बाहर एक्के रंग। ने गमहारिक चेरा जकाँ अमेरिकन आ ने कटहरक चेरा जकाँ यूरोपीयन। बस-बस सोल्होअना आमक चेरा जकाँ इण्डियन। चौबीसो घन्टा शरीरसँ कला छिटकैत रहै छैन। मुस्की दैत बजला-

"भाय, सर-समाज जहिना कमल भाइक सँग पाबि हम सभ पात्र बनि सेवा-ले एलौं, तहिना अहूँ सभ गारा-जोड़ी कए संगी बनब।"

सभ कियो मुड़ी डोलबए लगला। तैबीच हँसैत गरीब झा पुन: बजला-

"जेना हिजरा-हिजरनी सभकेँ देखै छिऐ जे कोनो-गाम, कोनो समाज ओकरा बान्हि कऽ नै रखै छै तहिना हमरो-सभसँ छिपाएब नहि।"

कहि कमलजी दिस तकैत फेर बजला-

"होउ भाय, आब अपन ऐगला विचार कहियौन।"

गरीब झाक विचारकेँ कमलजी मनमे औटैत-पौड़ैत रहैथ। मनमे हौड़ैत रहैन जे भरिसक अपना इलाकामे जेते रामलीला पार्टी छैथ, ओ सभ भरिसक एक सीमाक भीतरे चक्कर कटैत रहला। जइसँ सभकेँ उठैक समान वातावरण नै भेट सकलैन। भरिसक गनल-गूथल गाम आ गनल-गूथल समाजक भीतरे रहि गेला। मुदा ईहो तँ झूठ नहियेँ जे जेते रामलीला देखै-देखबैक जरूरत अछि ओते मेड़िया ऐछो नहि, मुदा तँए कि लोक नै देखैए सेहो बात नहि। जहिना पचमहलो कोठामे मनुखे रहैए आ बाधमे बनल रखबारक खोपड़ीमे सेहो मनुखे रहैए, तहिना रामलीलाक अतिरिक्तो नाटक, नौटंकी, थिएटर, रास, ऑरकेस्ट्रा, लोक नाच, विषय-कीर्तन, कौव्वाली, इत्यादि तँ चलिते अछि। रामलीलामे जहिना रामकथा चलैए तहिना लोको नाचमे तँ चलिते अछि। मुस्कियाइत कमल बजला-

"आइ अहाँ सबहक अतिथि-अभ्यागती भेल। हम सभ गाछी-बिरछीमे रहैबला छी, तँए भारो कम्मे देब। रातिमे निचेनसँ सभ एकठाम बैस हबगब करब। अखन एतबे कहू जे हृदैसँ चाहै छी कि नहि।"

एक तँ गाममे पहिले-पहिल रामलीला हएत तेकर खुशी, तैपर उपजल गामक गदगदी रहबे करइ, एक स्वरे सभ हुँहकारी भरि देलकैन।

दिसा-मैदान दिस टहैल दोसर साँझमे सभ कियो एकठाम बैसला! लोकक खुशीकेँ अपना दिस खिंचैत गरीब झा ठाढ़ भऽ बजला-

"अहाँ सभकेँ बुझले हएत जे रामलीलाक स्टेज बनत। स्टेजक

पाछू कलाकारक बेवस्था रहत आ आगूमे देखनिहारक। स्टेज आ स्टेजक पाछूक बेवस्था-ले तँ बासो-बेलन आ परदो अछिए। रहल स्टेजक आगूक बेवस्था, ओ सरनजाम तँ समाजे करब।"

गरीब झाक बात सुनि संतोखीदास दोहरबैत कहलखिन-

"कनी फरिछा कऽ कहियौ गरीबबाबू, नीक-नहाँति नै बुझि सकलौं?"

गरीब झा बुझबैत बजला-

"केते गाममे रामलीला खेलेलौं हेन। सभ गाममे किछु-ने-किछु तफरका रहिते अछि। जेना केते गाममे पुरुख दर्शक-ले अलग आ महिला-ले अलग ढाठ गाड़ि बेवस्था कएल जाइत अछि। तँ कोनो-कोनो गाममे से नै होइए, सएह कहलौं।"

संतोखीदास मुस्कियाइत बजला-

"गरीब भाय, देखनिहारसँ पहिने खेलेनिहारक चर्च करू जे खेलेनिहारक बीच ने तँ..?"

संतोखीदासक प्रश्न सुनि गरीब झा सकपकाए लगला। ओना पेटक बात ओंढ़ मारि गोंगिया-गोंगिया निकलए चाहैन, मुदा अपनाकेँ एक कलाकार मानि सहैम जाइथ। दुनू गोरेक बीचक सवाल-जवाब सुनि कमलजीकेँ नै रहल गेलैन। मुदा नजैर गाम-समाज दिस नहि पड़ि अपन मेड़ियापर पड़लैन। सभ एकठाम बैस खाइ-पीबै आ सुतै-बैसै छी। घर-गिरहस्तीक सँग घरवाली बाल-बच्चाक सँग कला-साहित्यपर विचार करैत गति‍-मुक्तीक विचार-विमर्श करै छी, तखन एहेन प्रश्न किए उठल..?

कमल बाबूकेँ मनमे झटका लगलैन। गुम्म भऽ गेला। सभ कियो हुनके दिस देखए लगला। पचपन-साठि बर्खक छरहर देह, मुँहक ऐगला दाँत टुटल, केश पाकल...। मुदा कियो किछु बजला नहि, कमल बाबूक मनमे उठलैन जहिना गाए-ले गोशाला, विद्यार्थी-ले विद्यालय, रोगी-ले

अस्पताल तीर्थस्थान होइत तहिना ने कला प्रेमी-ले रंगमंच अछि। यएह गरीब झा छैथ जे प्राथमिक विद्यालयमे शिक्षक छला। दरमाहाक पाइ कहियो परिवारमे नै दइ छेलखिन। सभ दिन सिनेमे आकि नाटकक चक्करमे घुमैत रहला। मुदा जखन अपन पार्टी ठाढ़ भेल तखन विद्यालय छोड़ि एला। तहिना दयाकान्तो छैथ। बनारसमे रहि शास्त्रीय, उपशास्त्रीय संगीत सिखने छैथ। तहिना जलेसर सेहो मनचोभिया नाचसँ आएल छैथ। अपनो कुटुमक संसर्गमे पचगछियामे रहल छी। पुन: मनमे उठलैन सच्चामे कच्चा की! उफनैत बजला-

"सभ काजक अपन सीमा होइ छइ। अहाँ सबहक जे सीमा अछि तेकर भार अहाँ सभपर आ हमर सबहक जे सीमा अछि तेकर भार हमरा सभपर। द्वारपाल बनि अपन-अपन सेवा जँ इमानदारीसँ देब तँ कोनो तरहक गन्दगी नै औत।"

कमल नारायणजीक विचार सुनि संतोखीदास बजला-

"आइ धरि ऐ गाममे रामलीला भेबे नइ कएल अछि तखन अनुमानसँ किछु सोचब आ बुझबमे केतौ-ने-केतौ कमी रहिए जाएत, मुदा ईहो नै कहब जे ओ अनिवार्य अछि, नहियोँ भऽ सकैए। ई निर्भर करैए गामक बेवस्थापर। जइ गामक जेहेन बेवस्था रहत तइ गाममे तेहेन काज हएत। ओना गामक भीतर मकड़ाक जाल जकाँ पसरल अछि। एहनो नाच वा पूजा अछि जइमे खास जातिक प्रवेश आ खास जातिक निषेध अछि। जखन कि मूल प्रश्न अछि कला आ धर्मक। तहिना मनुखक सँग देवतो आ कलो बँटाएल अछि। जइसँ जबरदस टाट लगि गेल अछि।"

संतोखीदासक बात सुनि गरीब झा ठहाका मारि पुछलखिन-

"तखन?"

गरीब झाक जिज्ञासा देख संतोखीदास मुस्की दैत कहलखिन-

"जेकरा जइ गाछक जड़िक बोध हएत वएह ओइ गाछक गुण

बुझि सकैए। मुदा ऐठाम तँ अखन गाछ जनमैक सुरे-सार भऽ रहल अछि, तखन तँ प्रश्न उठैक समैयो नै बनल अछि।"

गरीब झा पुछलखिन-

"तखन?"

संतोखीदास बजला-

"हँ, अखन घरसँ बाहर धरिक छी तँए अखने आगू-ले रस्ताक निर्माण कऽ लेब, नीक हएत। ओना कोनो निअम अस्थाइ नै भऽ सकैए। कारण जे समैक सँग समाज चलैए तँ निअमोक सँग चलए पड़त। जइसँ किछु ने किछु सुधार होइते चलत। जे समैक अनुकूल हेतइ। हमर समाज ओहन अछि जइमे टोल-टोलक आठ-नअ बर्खक बच्चासँ लऽ कऽ चेतन आ बुढ़-पुरान धरि सँगे बाध-वोनमे एकठाम भऽ घास छिलैत तीन-तीन-चरि-चरि घन्टा सँगे बितबैए। खेतमे सँगे रोपैन-कमठौन करैए। ढेरबासँ जुआन धरि सँगे साइकिलसँ दस-दस किलोमीटर स्कूल-कौलेज जाइत अछि। तैठाम रामलीला सन जगहमे खाढ़ी बनए! ई केहेन..?"

संतोखीदासक प्रश्न सुनि कमल गरीब दिस कनडेरिए आँखिए झँकलैन आ गरीब जलेसर दिस, जलेसर कमल दिस। तीनूक-तीनू विपरीत दिसामे वौआए लगला। एक-दोसराक बीच नजैरक मिलान हेबे ने करैन। जहिना छोट बच्चा केशौरक ऊपरका भाग देख हाथेसँ खोधिया उखाड़ए चाहैत तहिना तीनूक बीच मनमे हुअ लगलैन। मुदा से गरे ने लगैन। दयाकान्त-ले धैनसन। मने-मन पावसक विसर्जन करैत समदौनक ताल-मात्रा मिलबैत रहैथ। तखने कमल नारायण पुछि देलखिन-

"की दया?"

जहिना कियो अनचोकमे कोनो प्रश्नक उत्तर किछु दऽ दैत तहिना दयाकान्त मुड़ीक ताल मिलबैत धाँइ-दे बाजि उठला-

"हँ, हँ, सभ नीके।"

मुदा लगले जखन भक्क टुटलैन तँ मनमे उठए लगलैन जे भायकेँ की उत्तर दऽ देलिऐन? ओ राय पुछलैन आ हम ओइ बच्चा जकाँ कहि देलिऐन! जहिना कोनो भोंतियाइत यात्रीकेँ बिसवासक सँग बिनु देखल रस्ता बता दइत! तहिना ने तँ भेल! अखन समदौनक मात्रा मिलबैक समए नै छल जे मृत्युक पछाइतक वएह मात्रा जन्मकालक केना हएत। किए ने हएत। जन्म-मृत्युमे अन्तरे की छइ। खेतक आड़ि जकाँ थोड़े अछि जे खेतसँ ऊपर होइमे वा आड़िपर चढ़ैमे डाँड़पर हाथ लिअ पड़त। ई तँ ईंटाक खरंजाक बाट छी जे फुटलाहा छोड़ि-छोड़ि सौंसकापर पएर दैत चली...।

दयाकान्तक उत्तर सुनि कमल आरो भोंतियाए लगला- जखन सभ नीके तखन अधला की? जँ अधला नै तँ राक्षसक जन्म किए? आ जँ राक्षस नै तँ मनुखक देहमे मौस-खून किए नहि? मुदा तखने गरीबो झा आ जलेसरो अपन भाँज पुरबैले कमल दिस तकलैन। बजैले दुनूक मुँह लुसफुसाइत रहैन। मुदा पहिने केना बजता। जलेसरक मनमे होनि जे गरीब भायकेँ गुरु बुझै छिऐन, अखनो बहुत सिखबै छैथ। जखन कि गरीब झाक मनमे उठैन जे कलाकारक रूपमे भलेँ दुनू गोरेक एक जिनगी अछि, मुदा गाम-समाजक बन्हनमे तँ दू छी! तँए पहिने जलेसरक विचार जरूरी अछि। जँ से नहि, अगर पच्चीस तरहक रोगसँ ग्रस्त रोगीक इलाज पहिने नै भऽ एक बेमारीबलाक इलाज हएत तँ निसचित रूपेँ अधिक बेमारीबला रोगी मरबे करत। मुदा से नहि, जँ पच्चीस बेमारीक इलाज उपलब्ध हएत तँ एक बेमारीक इलाज एकटा कोरामिनोसँ भऽ जाएत। ..आँखिक इशारासँ जलेसर गरीबकेँ आग्रह केलखिन।

शिक्षक गरीब झाक मनमे बिजलोका जकाँ तड़कलैन जे रोगीक रोगक इलाज केमहरसँ कएल जाए? ..जलेसर आ गरीब झाक तत्-मती देख कमल नारायणजीक मनमे उठलैन जे केतौ जरूर नमहर खाधि अछि। विचारकेँ बदलैत कमल नारायणजी हँसैत बजला-

"जिनगीक पहिल दिन एहेन आनन्दक अवसर भेटल!"

कहि चुप भऽ गेला। मनमे उठलैन जहिना घरमे आगि लगलापर आन्हरो भागए चाहैत, मुदा आँखि नै रहने ढिमका-ढिमकीमे ठेंसियाऽ-ठेंसिया खसैत मुदा कोनो टंगटुट्टाकेँ कियो आभास पाबि जे जान बँचबए कहतै तँ ओ टंगटुट्टा यएह ने बाजत जे 'भाय केकरा के देखै छै जे तोरा हम देखबह कि तूँ हमरा। तोरा आँखि नै छह जे देख कऽ चलबह आ हमरा टाँग नै अछि जे देखतो एको डेग चलब।'

कमल सदृश खिलैत कमलजीकेँ संतोखीदास कहलकैन-

"भाय, जेतेकाल अहाँ स्टेजपर रहब ओतेकाल अहाँ राम, हनुमान आकि रावणक रूप बना रहब मुदा तेकर पछाइत जेते समए बँचत ओ तँ समाजेक भाए-भैयारी बनि रहब किने। बारह-तेरह बर्खक एकटा बेटा हमरो अछि। अहीठाम ऐछो। जाबे धरि ऐठाम अहाँ सभ रहब ताबे धरि ओ सेवामे लगल रहत।"

हँसैत कमल बजला-

"सेवाक फल मेवा होइ छइ।"

'जे रोगीकेँ मन भावए से वैदा फरमाबए!' अपन नाओं सुनिते शम्भु फुरफुरा कऽ उठि कमलजीकेँ गोड़ लागि लेलकैन। मुदा जाबे कमलजी असिरवाद दैतएथिन तइसँ पहिनहि गरीबो, जलेसरो आ दयाकान्तोकेँ गोड़ लागि समाज दिस घुमि पिताकेँ गोड़ लगैत पाहि लगा सभकेँ गोड़ लागए लगल। मनमे बेहद खुशी रहबे करइ। ओहन खुशी जेहेन दुरगमनियाँ बहिन, पहिलुका समाजसँ आगू बढ़ैत नव समाज दिस डेग उठबैत अछि।

अखन धरि शम्भुकेँ असिरवाद दइक विचार कमलजी करिते रहैथ। कारणो भेल, जखन शम्भु गोड़ लगलकैन तखन कमल योगासनमे बैसले छला। जइसँ दहिना पएर पोन तर दबल आ बामा बाहर रहैन। तँए असिरवाद दइमे पहिल देरी भेलैन, दोसर देरी भेलैन जाबे असिरवाद देथिन-देथिन ताबे शम्भु तीनू गोरेकेँ गोड़ि लागि लेलकैन, जइसँ कमल

असमंजसमे पड़ि गेला। स्कूल-कौलेजमे विद्यार्थीक प्रवेशक दिन जँ शिक्षकक बीच हुअए आ ओही दिन शिक्षक विद्यार्थीक बीच प्रवेश पर्व होइ जइ दिन सभ विद्यार्थी-शिक्षक रंगमंचक कलाकार जकाँ नव-नव चेहरा सजा, नव-नव कला देखबैत। जइसँ एक-कलाकारकेँ जहिना एक संगी भेटलापर नन्द रूप आनन्दक रूपमे बढ़ैत, तहिना ने ओहू पर्वमे हएत। ..सभकेँ तत्-मत् करैत देख गरीब झा टपकला-

"आइ शम्भु ओइ सीमापर आबि अँटैक गेल जैठामसँ दिसा बदलैत अछि। बहुत पैघ आश समाजमे भेटल। मुदा सबुर कहाँ भेल। सबुर हएत तखन जखन भरि पोख काज अहाँ सभ लेब। शम्भुए किए, एहेन-एहेन शम्भु समाजक फुलवाड़ीमे छिड़िआएल अछि।"

गरीब झाक विचार सुनि संतोखीदास बजला-

"गरीब भाय, आन जे होथि, नै बुझल अछि मुदा अहाँ प्राइमरी शिक्षकसँ कलाकार भेल छी, तँए जहिना देवपूजन-ले फुलवाड़ीक फूल बर्जित नै अछि, पुस्तकालयक पुस्तक बर्जित नै अछि तहिना निरविकार भऽ अहू समाजक फुलवाड़ीमे घुमि-फिर अपन पूजाक फूल चुनि पूजा-पाठ करैत माने तामैत-कोरैत सेवामे लगा सकै छी।"

छठिक तेसरा दिन, अकासक चान अपन प्रवेश देख मधुरिया मुस्की दइत। ठंढ-गर्मक सीमान जेहने मोहक होइत तेहने दुनू समाजक बीत मोहक वातावरण। एकक मनमे जे दस गोरे एकठाम बैस रामलीलाक आनन्द लेब, तँ दोसराक मनमे नव समाजक बीच जँ नव-कलाक प्रदर्शन नइ हएत तखन समाजकेँ जे भेटौन मुदा कलाकार तँ शंखे फुकैत रहि जेता! अपन सत्ताइसो मेड़ियाक सँग दू बजेमे माने बेरू-पहरमे टाएर-गाड़ीपर साज-बाज, पर्दा-पोस, बाँस-बेलन नेने सभ कियो पहुँचला। स्कूलक बगलक गाछीक जगह बूझले रहैन, एक्के-दुइए गौआँ सेहो पहुँचए लगला। जाबे टाएरपर सँ समान उतारि परतीपर रखैथ ताबे लोको गोलिया गेल। देखले गरीब झा। नजैर पड़िते संतोखीदास पुछलकैन-

"भाय, शम्भुकेँ डटि कऽ पहुँनाइ करौलिऐ?"

संतोखीदासक बात सुनि गरीब झा कहलकैन-

"एते दिन शम्भुक सँग रहितो नै परैख सकलौं जे शम्भु की चाहैए!"

संतोखीदास-

"मतलब?"

गरीब झा-

"यएह जे केकरो शुरूहेसँ बाजा दिस नजैर रहल, तँ केकरो नाच दिस, केकरो गान दिस। मुदा शम्भु तँ अद्भुत अछि जे बजो दिस ओहने झुकाउ देखै छिऐ आ अवाजक चर्चे की।"

संतोखी बजला-

"आब तँ गप-सप्प होइते रहत। जखन आबि गेलौं तखन अँगस-मँगस नहियेँ हएब नीक। की विचार अछि?"

गरीब झा बजला-

"अखन धरिक यएह रहल जे आइ खुट्टा-खुट्टी गाड़ि लेब। काल्हि परदा-पोस लगा लीला शुरू कऽ देब।"

"हद करै छी गरीब भाय। अहाँ सभ खाली देखबैत रहियौ गौआँ सभ एक्के घन्टामे सभटा तैयार कऽ देत। मुदा जखन गाम आबि गेलौं तखन एको दिन नागा करब समैक सँग धुरतइ हएत।"

सभ कथुक जोगाड़ घन्टे भरिमे भऽ गेल। आइसँ रामलीला हएत ई समाचार जेना सबहक छाती धड़कबए लगल। जिनगी विषयक कथाक रंगमंच मास दिन धरि गौआँ देखता। किएक ने खुशीक हिलकोर उठतैन। आरती चढ़ौआक बर्खा सेहो बरिसबे करत।

मास दिन शम्भु सँगे-सँग खटल। आइ समाप्त भऽ रहल अछि। काल्हि सभ कियो दोसर गाम चलि जेता। आड़िपर शम्भु ठाढ़ भेल सोचि रहल अछि। समाज बदैल कहाँ रहल अछि, बढ़ि कहाँ रहल अछि..!

संतोखीदासक मनमे उठैत रहैन जे छोटसँ पैघ दुनियाँमे प्रवेश केनिहारकेँ किछु कहब कठिन अछि। तहूमे आब तँ शम्भु सहजे नेनासँ चफलगर भेल।

जाइकाल कमलजीक नोर टघैर रहल छैन। वएह नोर जे सासुर जाइवालीक रहै छइ।

साल भरि बितैत-बितैत शम्भु रामलीलाक प्रमुख कलाकारक श्रेणीमे आबि गेल। ओना प्रमुखताक कारण उत्कृष्टता होइत मुदा शम्भुक प्रमुखताक कारण भेल बहुआयामी। जहिना अदराक पहिल बर्खामे ओहन किसानक मन अधिक छटपटाइत जेकरा एक सँग अनेको खेती करैक रहै छइ। फसल लगबैले मन छटपटाए लगै छै जे अगहनी धानोक बीआ आ चौरियो खेत अछि, गरमा धानक सेहो रंग-रंगक बीआ अछि, जे मौसमक हिसावसँ नहि समैक हिसाबसँ होइत अछि। जँ ओ बिआ समैपर नै उखारि लगौल जाएत तँ उपजा प्रभावित हएत। मुदा बर्खा चटकने तँ चौड़ीक खेतीए बुड़ि जाएत। मुदा शम्भुकेँ से नै भेल। ढोलक, हरमुनियाँ बजबैसँ लऽ कऽ नचनाइ, पार्ट खेलनाइ तकमे शामिल भेल। जइसँ पार्टीक भीतर शम्भुक महत बढ़ि गेल। कोनो आदमीक अभिनयकलासँ लऽ कऽ वाद्यकला धरिक अनुपस्थितिक पूर्ति शम्भु करए लगल।

कमलजीक रामलीला पाटीमे शम्भु सात बर्ख रहल। ओना अधिक उमेर भेने कमल नरायणक पार्टी खसा लेलैन। गामोक स्थितिमे ठनका खसलैन। सन्मुख कोसीक मुँह पच्छिम-मुहेँ जोर केलक। जइसँ गामक छिड़िआएल बास समटा कऽ घोदिया गेल, खेतबलाक स्थिति बिगड़ए लगलैन। केतेको परिवार गाम छोड़ि परदेश रहए लगला।

बीस बर्खक शम्भु अपन ओकाइत माने लम्बाई-चौड़ाइ बुझए लगल। मनमे रंग-रंगक विचार उठए लगलै। मुदा सभ गुण होइतो शम्भुक मन उपशास्त्रीय संगीत दिस अधिक झूकल। जेहने स्वर तेहने कला। सामन्त सबहक टुटैत स्थिति शास्त्रीय संगीतकेँ प्रभावित केलक। ओना

प्रभावित उपशास्त्रीय संगीत सेहो भेल मुदा कम। ..दरबारीदासक लाट पकैड़ शम्भु राजक गबैया बनि विभूषित भऽ गेला।

हजारो लोकक भीड़मे जहिना कियो अपन प्रेमी देख सभ किछु बिसैर जाइत तहिना संगीत प्रेमी शम्भुदास अपन घर-परिवार बिसैर बिआह नै केला। ढहैत बेवस्थाक तरमे शम्भुओदास पड़ि गेला।

बेवस्थाक बेवस्था चलैत मिथिलाक धरतीए जकाँ मिथिलाक कला सेहो राँड़-बाँड़ भऽ छिड़िया-बितिया कऽ टुटि-फाटि गेल।

❍

शब्द संख्या : 9674

फाँसी

काल्हि बारह बजे बलदेवकेँ फाँसी हएत, रेडियो-अखबार कान-कान जना देलक अछि। जहिना बलदेव बुझैत तहिना जहलक अधिकारियो। जहिना बलदेवक परिवार बुझैत तहिना सर-समाज, दोस-महिम सेहो। सबहक मन बारह बजेपर अँटकल। वएह बारह बजे दिन वा राति अपन प्रखर रूपमे दिसा दिस मैदानक रस्ता धड़ैए।

जहलक एक नम्बर सेल घर। जे घर ओइ अपराधीकेँ ओइ बीच भेटैए जखन न्यायालयसँ फाँसीक तिथि निर्धारित होइत अछि। ऐ सेलक बुनाबटो आन सेलो आ वार्डोसँ भिन्न अछि। ओना सेलक बुनाबट विचित्र अछि मुदा आनसँ अलग तँ अछिए। कोठरियेक आँट-पेटक कोठरीनुमा घर अछि। ओना, एक कोठरी ओहन होइत जे नमहर घरमे बनैत आ एक कोठरी ओहन होइत जे घरे कहबैत। एक नम्बर सेलो तहिना बनल अछि। चिमनीक एक नम्बर ईंटा, क्यूल-लक्खीसरायक बीचक सोन नदीक पथराएल बाउल, दू-एक–बाउल-सिमटी–क जोगसँ देबाल बनल अछि। सात स्क्वाइर फुटक घर जे घरक कोठरियोसँ हीने अछि। पोने दू फुट आगूक दरबज्जा, खिड़की दरबज्जा नहि जे भीतर-बाहर अबैत-जाइत अछि। लोहाक बनल केबाड़ लगल अछि। शेष कोनो देबालमे ने खिड़की-खोलिया अछि आ ने पूब-पच्छिम दिसा देखबैक कोनो दोसर साधन। एक तँ ओहुना जैठाम सभ किछु–दिसा-बोधक लेल रहैए तहूठाम

दिसांश लगि जाइ छै–जइसँ पूबकेँ पच्छिम पच्छिमकेँ पूब बुझए लगैए।

जिनगीक पूर्ण लीला बलदेवकेँ ओइ कोठरीनुमा घरमे आइ पनरह दिनसँ होइत अछि। ओना, तइसँ पहिने सात नम्बर सेलमे तीन सालसँ रहैत आबि रहल अछि मुदा, ओना एक नम्बर सेलमे एलापर बलदेवकेँ एतेक सुविधा जरूर भेट गेल छेलै जे पहिनेसँ नीक भोजन, नीक ओढ़ना-बिछौना छेलइ। भलेँ घरमे नहियेँ बिजलीक तार रहै आ ने बौल लागल छेलै मुदा दरबज्जा सोझे एकटा एहेन बौल टाँगल छेलै जइसँ कोठरीक भीतरो किछु इजोत पहुँचइ। कोठरीक बाहर स्पेशल सिपाहीक बेवस्था सेहो भऽ गेलइ।

बारह बजे रातिक घन्टी टावरक मुड़ेरापर बजल। रातिː-दिनक पाशा बदलैक समए भऽ गेल। जैठाम भूत-वर्तमानमे आ वर्तमान भविसमे बदलैए, सएह मुहूर्त। जेतए राति दिनक बाट पकड़त। मुदा दूत-भूत एतेक प्रबल जे आरो बेसी उग्र बनए लगल। जहिना रातिक जन्मल बच्चा दिनेक होइत तहिना बलदेवक राति सेहो दिने भऽ गेलइ। रातिː-दिन भऽ गेलै आकि निनियेँ देवी विघ्नवादिनीक सँग डरे पड़ा गेलखिन से नइ कहि। ..ओछाइनपर पड़ल बलदेव उठि कऽ बैस कोठरीक चारू देबाल दिस देखए लगल। अन्हारमे सभ हेराएल बुझि पड़लै। किएक तँ बाहरक बिजलीक इजोत सेहो अन्हारक चद्दैर ओढ़ि ओहन भऽ गेल जे अपनो भरि नै देख पड़ैत। अन्तमे बलदेव अपन देह दिस तकलक, हाथ-हाथ नै सुझैत। तखन अजमा कऽ घरक मुँह लग ससैर कऽ पहुँचल। हाथ बढ़ा देखलक तँ बुझि पड़लै जे यएह घरक मुँह छी। घरक मुँह देख बलदेवक मनमे बिसवास जगलै जे ऐठामसँ अन्हार-इजोतक सभ किछु देखब। हिया कऽ बिजली खुट्टामे लटकल बौलपर नजैर देलक। मरियाएल इजोत, तैपर असंख्य मच्छर-माछी अपन जान गमबैले तैयार भऽ नाचि रहल अछि। खुट्टापर गिरगीटक झुन्ड, मुँह बाबि खाइले तैयार भऽ आसन लगौने। निच्चाँमे बेंगक जेर कुदैत। तैबीच मच्छरक जेर गीत गबैत फाटक टपि भीतर पहुँचैत। मुदा बलदेवक धियान मच्छरपर नै

गेल। जहिना शरीरमे अनेको रोग रहलापर बड़का रोग छोटकाकेँ चापि रखैत, तहिना बलदेव बाहरक मच्छरक भोगकेँ दाबि देलक। केना नै दाबैत, जैठाम जिनगीक खूनक कोनो महत नहि तैठाम मच्छर केते खून पीबे करत। मुदा तहूसँ बेसी बलदेवक मनमे जागि गेल जे जखन बारह बजे अन्ते भऽ रहल छी, तैबीच जँ कनियोँ उपकार दोसरक भऽ जाइ छै तँ ओहो धर्मे छी किने। ...तखने पएर दाबि सिपाहीक झुन्ड सेलक चारूकात चक्कर काटए लगल। अन्हारमे सभ हेराएल। पैरक धमकसँ बलदेव बुझि गेल। जहिना गाए-महींस मनुखो आ कुत्तो-बिलाइक चालि अन्हारोमे परैख लैत तहिना बलदेवो परेखलक। मुदा सभ चुप्प। बलदेवक मनमे उठलै- जखन कि बारह बजेमे फाँसीए-पर चढ़ब तखन किए एते ओगरबाहिक जरूरत छइ? एक तँ ओहिना बड़का छहर-देबालीक बीच जेल बनल अछि! तैबीच वार्ड-सेल बनल छै, तैबीच एते ओगरबाहिक कोन खगता? मुदा लगले विचार बदैल गेलइ। वार्ड सबहक कैदी तँ अबैत-जाइत रहैए। सभ दिन दू-चारिगो एबो करैए आ निकलबो करैए। मुदा हम तँ आब निकैल नै पएब। निकलब नइ, आकि जिनगीए अन्त भऽ रहल अछि? आँखि उठा बलदेव आगू तकलक तँ बुझि पड़लै जे साल-महिनाक कोन गप जे मात्र किछु घन्टा-ले छी। जइ दिन फाँसीक आदेश न्यायालयसँ भेल ओही दिन किए ने फाँसियो भऽ गेल। अनेरे कोन सोग-सन्ताप देखै-भोगैले पनरह दिन जीआ रखने अछि। मन शान्त केलक। शान्त होइते, जहिना पोखैरक अगम पानिकेँ पुर्बा-पछबा हवा डोलबैत रहैए तहिना बलदेवक डोलैत मनमे उठलै- फाँसी किए हएत? प्रश्नपर नजैर अँटैकते उठलै जे फाँसीपर सपूत-कपूत दुनू चढ़ैए। फेर उठलै जे तइ सपूत-कपूतमे हम की छी?

..अन्हड़ उठैसँ पहिने जहिना हवा खसि पड़ैए, वायुमण्डल शान्त भऽ जाइत अछि तहिना बलदेवक मन शान्त भऽ गेल। कोनो तरहक तरंग नहि। मुदा लगले मनमे उठलै जे जिनगीक अन्तिम सीमानपर पहुँच गेल छी। जहिना एक गामक सीमान टपिते दोसर गाम आबि जाइत

अछि तहिना जीवन-लोकसँ मृत्यु-लोक चलि जाएब। मुदा एते तँ हेबे करत जे अखन ठेकानल जिनगी अछि मुदा पछाइत बेठेकानलमे पहुँच जाएब...। फेर उठलै- जीवनलोक तँ खाली मृत्यु लोक नइ छी। जीवनो तँ लोक छी। जहिना कोनो जंगलसँ पड़ाएल जानवर दोसर जंगलक सीमानपर पहुँचते चारूकात नजैर उठा कऽ देखैत जे रहै-जोकर अछि वा नहि, तहिना जीवन-मृत्युक सीमानपर बलदेवक मन अँटैक गेल। धरतीपर जहिना एक-दिसासँ दोसर दिस बहैत धार रस्ताकेँ बाधित कऽ दैत तहिना बलदेवकेँ जीवन धार बाधित कऽ देलक। ..आगू टपैक आशा नै देख बलदेव बामा-दहिना दिसा पकड़ैक विचार केलक। एक दिस पहाड़सँ निकलैत धार धरती टपि समुद्रमे मिलैत तँ दोसर दिस धरती टपि समुद्रमे मिलैत। आगू मात्र किछु घन्टा शेष अछि मुदा पाछू सौंसे जिनगी पड़ल अछि। की एक बेरक फाँसी फाँसी छी आकि फाँस चढ़ल जिनगीक फँसरी फाँसी छी? बलदेवक मन ठमैक गेलइ। मुदा लगले मनमे उठलै जे गुमसुम भऽ समए काटब नीक नहि। केतेकाल पहिनहि बारह बजेक घन्टी बजल। जहिना धरतीपर आएल बच्चा आस्ते-आस्ते सकताए लगैत तहिना बलदेवक मन सेहो सकताए लगलै। मन पड़लै पनरह दिन पहिलुका फाँसीक सजा। मनमे खौंझ उठलै- जखन फाँसीक आदेश भेल! तखन फेर पनरह दिन जहल किए भेल? कोन अपराधक फल भेटल? जँ ओही दिन फाँसी भऽ जाइत तँ पनरह दिन जे सोग-सन्ताप भेल से तँ नइ होइत। तेतबे नहि, अपनो ऊपर अनेरे भार किए बढ़ौलक? ..फेर मनमे उठलै जे अनेरे ओझराइ छी। मन शान्त केलक। शान्त होइते मनमे उपकलै, सपूत बनि दुनियाँ छोड़ब आकि कपूत बनि? कियो हिलसैत-पुलसैत दुनियाँ छोड़ैए आ कियो बिलखैत, डुमैत दुनियाँ छोड़ैए। मुदा जे हिलसैत-फुलसैत छोड़ैए ओ छोड़ैत कहाँ अछि? ओ तँ जीवात्माकेँ एहेन चुहैट कऽ पकड़ैए जे छोड़ौनौं नै छुटैए। मुदा हम तँ से नइ छी। ..फेर मन घुमलै। दुनियाँ बड़ीटा अछि.., बड़ छोट अछि...। मुदा बड़कीटा ओकरा-ले छै जे बरी पाबए चाहैए। मुदा बरी तँ ने भोजेक

अन्तिम पराव छी आ ने घरेक। भोजोक मध्यछी आ घरोक मध्य। तखन किए ओकरा पाबए चाहैए। ..बलदेवक मन फेर ठमकल। अनेरे अछाहे कुकुर भूकब नीक नहि। अपनो तँ संसार अछि। जइमे अकास-पताल, चान-सुरूज, नदी-सरोवर सभ किछु अछि। तखन अपन छोड़ि दोसराक देखब अपनासँ दूर हएब हएत किने। अपन कर्म आ अपन धर्मक मर्म बुझब उचित हएत। जाबे से बुझि दुनियाँक रंगमंचमे नै उतरब ताबे कौआ कान नेने जाइए, तइ पाछू दौगब हएत..! अपन रंगमंच आ अपन अभिनय लग अबिते बलदेवक मन ठमैक कऽ ठाढ़ भऽ गेल। ठाढ़ होइते अनासुरती मनमे उठलै। अभिनाइयो तँ देखिनिहारो-ले आ संसारो-ले रंग-बिरंगक, केतेक स्तरक होइत अछि। मुदा कहल तँ जाइ छै- अभिनाइए। कियो लीला रचि अभिनय करैए तँ कियो गुन-गुनाइत अभिनय करैए। कियो मूक भऽ करैए तँ कियो प्रेमावेशमे करैए। केना एकरा बिलगाएब? एक दिस चित्र-विचित्र बनल अछि तँ दोसर दिस कुचित्र सेहो बनल अछि...। बलदेवक ओझराइत मन झमान भऽ झमा उठलै। अनेरे ओझरेने समए ससैर जाएत। गनल कुटिया नापल झोर जकाँ समए बँचल अछि, तेकरा जँ ओझरौठेमे राखब नीक नहि। बारह बजेक घन्टी केतेखान पहिनहि बाजि चुकल अछि। हाथमे जँ घड़ी रहैत तँ ठीक-ठीक समैयोक बोध होइत, सेहो नहियेँ अछि। जइ दिन जहलमे प्रवेश केलौं तही दिन जहलक मुँहपर जमा कऽ लेलक। जइ दिन निकलब तइ दिन देत। मुदा निकलब कहिया? आइ तँ फाँसीए-पर लटैक जिनगीक विसर्जन करब तखन घड़ी केना लेब आ पहिर कऽ समए केना बुझब? खएर.., जइ गाममे मुर्गी नै रहै छै तइ गाममे भोर नै होइ छइ? पाँच-दस मिनट आगू-पाछू, अनुमान तँ काइए सकै छी। मुदा काजक सँग जे समए चलैए ओकर अनुभव आ बिनु काजक अनुभवोमे तँ अन्तर होइते अछि। काजक दौड़क अनुभव बेसी बढ़ियाँ होइ छइ। किएक तँ काजक सँग समए सटि चलैए। मुदा हमरा तँ सेहो ने अछि! बस दू बेर खाइ छी, ढेंग जकाँ ओंघराएल पड़ल रहै छी। कखन जगल रहै छी आकि सूतल रहै

छी, से आनक कोन बात जे अपनो नै बुझि पबै छी! पछतेनौं तँ किछु ने भेटत। ..फेर मनमे उठलै-

"फाँसी किए?"

किछु समए गुम्म रहला पछाइत अनासुरती बलदेवक मनमे उठलै जँ भक्ति-भावसँ समए कटने रहितौं तँ हँसी-खुशीसँ चढ़ितौं, से नहि केलौं तँए कुहैर-कलैप चढ़ब! जहिना शक्तिक स्रोत ज्ञान छी तहिना ने भक्तिक स्रोत श्रमो छी। फेर मन ठमकलै। जँ भक्तिक स्रोत श्रम छी तँ हमहूँ तँ श्रमिक छीहे। जँ से नइ रहितौं तँ एत्ते खेल केना केलौं? ..अचताइत-पचताइत बलदेवक मुहसँ निकललै-

"से तँ जरूर केलौं।"

मनमे उठलै, एक पसीना पत्थर तोड़ैमे चुबैए, दोसर पत्थर बनबैमे चुबैए। हँ से तँ दुनूमे चुबैए। मुदा की दुनूक मिठास एक्के रंग छइ? से तँ नइ छइ। तखन श्रम-सेवा केकरा कहबै? ..फेर बलदेव ठमैक कऽ नजैर उठा-उठा चौकन्ना होइत चारू दिस ताकए लगल। मुदा अन्हारमे किछु देखबे ने करए। मनमे उठलै, अनेरे श्रमक पाछू वौआइ छी। गेल समय फेर नै लौटए। आब तँ जिनगीक अन्तिम खाढ़ीपर चलि एलौं। ने श्रमिक छी आ ने श्रमक सिरजन कर्ता। अनेरे अनका पाछू वौआ रहल छी। सभकेँ अपन-अपन जिनगी छै आ अपन-अपन जगह छै, जे सदैत समैयो आ प्रकृतोक प्रभावसँ प्रभावित होइत रहै छइ। तँए अपन बात जेना लोक अपने बुझैए तेना आन थोड़े बुझत। ..चारू दिससँ घुमैत-फिड़ैत बलदेवक मन अपना लग एलइ। मनमे खौंझ उठलै। यएह मन छी जेकर किरदानीसँ कियो भगवान बनि जाइत अछि आ कियो हत्यारा बनि दुनियाँक सोझहामे फाँसीपर लटैक जाइए! मुदा कहबै केकरा आ सुनत के? मन ठमकलै। हत्यारा के, हत्या की, आ के पैदा करैए? जहिना कम माछी-मच्छर रहने खेबोकाल आ सूतबोकाल ओते परेशानी नै होइत जेते अधिक रहने होइत। बलदेवक मन फेर ओझरा गेलइ। ओझरी छुटिते अपनापर ग्लानि हुअ लगलै। हमहूँ तँ दुनियाँक चुनल अपराधीमे छी!

जिनगी भरि अपनेमे बेहाल रहलौं मुदा बेहाले जे रहि गेलौं, से कहाँ बुझि पेलौं। जहिना धरतीकेँ बेहाल भेने सृजन शक्ति कमि जाइ छै तहिना ने हमरो भेल। मन उफैन गेलइ। चिचियाइत बाजल-

"हम अपराधी छी, अपराध केने छी। डकैतीक सँग हत्या केने छी। अखने हमरा फाँसी हुअए?"

पितोक मास्चर्ज ओइ बेटासँ, ओही दिनसँ कमए लगै छैन जइ दिन सुपात्रसँ कुपात्र दिस जाइत देखै छैथ, तहिना बलदेवक कलपैत आत्मा मनसँ हटए लगल, अनधुन मुँह फटकए लगल-

"अपराधी छी, अपराध केलौं। एक अपराध नहि, अनेको, एक दिन नहि, जिनगियो भरि! बहुत विलैम कऽ फाँसी भऽ रहल अछि। बहुत पहिनहि भऽ जाइक छल। मुदा भेल किए नहि?

बलदेवक मुँहमे जेना एका-एक पर्दा लगलै तहिना हुमड़ैत मन पाछू दिस ससरलै। अन्तिम हत्या आ डकैतीक फल फाँसी छी, मुदा आरो जे जिनगी भरि केलौं, तेकर की भेल?

मध्यमासक स्नान जहिना आन मासक स्नानसँ अधिक सुन्दर आ अधिक शीतल होइत तहिना जिनगीक अपराधक बीच बलदेवक मन अँटैक गेल। एक दिस जिनगी आ दोसर दिस अपराध, शीतल भेल शान्त मनमे उठलै, की हमर जन्म अपराधीए बनैले भेल छल जे अपराधीक जिनगी बितेलौं? मुदा बुझियो कहाँ पेलौं जे अपराध करै छी, अपराधी बनै छी? ..ओझराइत मनकेँ सोझरबैत बलदेवकेँ जिनगीक एक-एक दिन आ एक-एक घटना मोन पड़ए लगल। मुहसँ निकललै-

"अपन जिनगीक बात जेते अपना मनमे अछि ओते दोसराकेँ केना हेतइ? खाली हत्ये-लूटटा तँ नइ केने छी, माए-बहिनक सम्बन्ध सेहो तोड़ने छी!"

मन कलैप कऽ बजलै-

"एक बेर नहि, हजार बेर फाँसी हेबा चाही।"

बलदेवक मन बेकल हुअ लगलै, केकरा-ले केलौं? ई बात मनमे उठिते धियान परिवार दिस बढ़लै। अन्तिम दिन पत्नी आ बेटाक दर्शन हएत। ओ सभ बेचैनीसँ भेँट करए जरूर औत। मुदा की जहिना परिवारमे भेँट होइ छल तहिना हएत? से केना हएत? सिपाहीक घेराबन्दीमे हम रहब आ ओ सभ हटि कऽ कातमे ठाढ़ रहत। ..मन घुमलै। अनेरे किए कियो भेँट करए औत? कोन मुँह देखत आ कोन देखौत। तइसँ नीक जे भने हमहूँ हेराएल छी आ ओहो सभ हेराएले रहए। दुनियाँक सभ चिन्हतै-जनतै। जँ समाजमे लोक आँगुर देखौतै तँ ओइ समाजकेँ छोड़ि दोसर समाजमे चलि जाएत। जखने कियो एक समाजसँ दोसर समाजमे जाइए तखने पैछला समाजक बान्ह टुटि जाइ छइ। बान्हक भीतर बनल समाज अपन हितक बात सौचैए। मुदा समाज तँ समुद्र छी, जइमे घोंघा-घोंघीसँ लऽ कऽ गोहि-गमार तक अछि। ..बलदेवक मन ठमकए लगल। जहिना जन्म-जन्मान्तरसँ वा कुरीतिे-कुसमए पाबि बाँसक छाँहमे जन्मल लतामक गाछ सेहो समए पाबि कलैश जाइए तहिना बलदेवक मन कलशल। अबोध बच्चाक हाथसँ गिरल ऐना, माए-बापक दुख जकाँ नहि, मुदा तैयो टुकड़ी बीछि-बीछि जोड़ैक कोशिश करैए तहिना बलदेवक कलशल मनमे उपकलै। तीन बर्ख जहल एला भऽ गेल। राता-राती घरसँ पकड़ा बन्दूकक हाथे जहल आएल रही। नव-नव लोक, नव-नव जगहसँ भेँट भेल...।

जहिना देशो आ मिथिलांचलोक वासी दुनियाँक कोण-कोणक बीच बसि अपन पूर्ब परिवारक स्मरण करै छैथ तहिना बलदेवक मनमे परिवार सेहो आएल। मुदा लगले जहलक परिवार अगुआ गेलइ। एक-फाटक टपि दोसरमे घेराएल रही। तलाशीक सँग सभ किछु घेरा गेल। बाहरसँ औत नहि, अपने घेराइए गेलौं। मुदा तैयो नव-नव चेहरासँ भेँट भेल। भीतर अबिते–वार्डमे घुस्सा-मुक्काक सलामी भेल। जहिना अखड़ाहापर उतरैत खलीफाकेँ पानि उतरए लगै छै तहिना उतरल। जिनगीक पहिल बेर जहल देखलौं। स्वागतक पछाइत मेट लग पहुँचौल

गेलौं। अखड़ाहा बदलने खलीफाक पानियोँ बदैल जाइ छइ। मुदा...। मेटक रजिष्टरमे नाओं चढ़िते ढेर हुकुम एक सँग उठल। झाड़ू लगबैक ड्यूटी, पैखानामे पानि पहुँचाबैक ड्यूटी इत्यादि-इत्यादि। काजक भारसँ मन दबाएल जा रहल छल कि मसनदपर पसरल मेटक हुकुम भेल-

"एमहर आ, पहिने जाँत तखन दोसर काज हेतउ।"

अवग्रहमे फँसल मन हल्लुक भेल। मनमे खुशी उपकल जे कनियोँ- कनियोँ कान अँइठैत तँ काने उखैड़ जइताए! जान बँचल तँ लाख उपाय। एक करोट घुमैत मेटक मैनजन कहलक-

"पहिल दिन छिऔ, आइ तोरा खेनाइ नै भेटतौ।"

जहिना मुर्दापर अस्सी मनसँ नब्बे मन जारैन चढ़ि जाइ छै तहिना चढ़ि गेल। असबिसो नै कऽ सकलौं। मुदा तैयो सवुर भेल जे नै खाइले देत, सुतैक तँ जगह भेट गेल किने। तैबीच मैनजन हुकुम फेकलक-

"कोन केसमे एले हेन?"

केसक नाओं सूनि मन दलदल भऽ गेल। जहिना सोग-पीड़ामे नोर बहा केकरो सान्त्वना दैतकाल होइत, तहिना। जहलसँ निकलैक आशाक अँकुर जागल। हलैस कऽ बजलौं-

"सरकार, डकैती आ खून सँगे अछि।"

'डकैतीक सँग' खून सूनि मेटक मन ठमकल। अधिक दिनक संगी हएत। तँए दोस्तीए करब नीक। पड़ले-पड़ल हुकुम चलौलक-

"नवका कैदीकेँ खैयो आ सुतैयो-ले दिहक।"

जहिना जिनगीक सुख, खाएब-सूतबमे अबै छै तहिना सूतबक आश देख हमरो मनमे खुशी उपकल। खुशी उपैकते मन वौआए लगल। तही बीच मेटक मुहसँ फुटलै-

"तेलक शीशी छेबे करौ, काल्हिसँ गोदामे सँ लऽ लऽ अनिहेँ।"

'गोदाम'क नाओं सुनिते वार्डमे गल-गूल शुरू भेल।

"नवका कैदीकेँ गोदाम केना जाए देब!"

"हँ! ई अन्याय छी।"

तैबीच एक कैदी ठीकेदारकेँ पुछलकै-

"की बात छिऐ हौ ठीकेदार भैया! एना किए हरबिर्डो केने छह?"

ठीकेदार कहलकै-

"तूँ अखन तड़ी-घटी नै बुझबिही।"

"से किए हौ भैया, सुनने लोक सुनबो करैए आ नहियोँ सुनैए। बुझौने लोक बुझबो करैए आ नहियोँ बुझैए। पहिने बजबहक तब ने?"

"रौ बुड़िबक, सभ गप सभठीम बाजब नीक थोड़े होइ छइ। नीको अधला भऽ जाइ छै आ अधलो नीक भऽ जाइ छइ।"

"एक बेर अजमा कऽ देखहक। नरकोमे ठेलम-ठेल करै छह। बहरामे जखन लोक किछु करैए तँ भीतर अबैए, जहल अबैए। मुदा ऐठामसँ केतए जाएत। बाजह, तोरा की बुझि पड़ै छह जे हम ओहिना आएल छी। आकि किछु कए कऽ आएल छी।"

ठीकेदारक बढ़ैत संगी देख कठहँसी हँसि मेट बाजल-

"की रे ठीकेदरबा, कथीक बमकी धेने छौ। सुन...।"

एक दिस ठीकेदारकेँ अपन घटैत आमदनी मनमे नचैत तँ दोसर दिस मेटक आदेश। घुसैक कऽ ठीकेदार लगमे आबि फुसफुसा कऽ बाजल-

"मेट भैया, अहाँसँ कि कोनो बात छिपल रहैए। बुझिते छिऐ जे दू पाइ बँचा कऽ गाम पठबै छी।"

ठीकेदारक बातसँ मेटक मनक आगि ठंढेलै नहि, बल्कि हवाक लहकी जकाँ लगलै। मनमे उठलै दस लंठ तखन ने महंथ, जँ से नहि, तँ असगर बरसपैतो फुइस। जहिना गुलाबी लाल आल-अड़हुल बनि जाइत, रंग बदैल अपराजित उज्जर-कारी बनि जाइत, दिन-रातिक खेलमे पूर्णिमा

अमावस्या आ अमावस्या पूनो बनि जाइत तहिना बलदेवक मनमे जिनगीक जुआरि उठए लगलै। मुदा बिनु जारैनक आगि जहिना, पियासल बिनु पानि जहिना, खेतिहर बिनु खेत जहिना शक्ति रहितो हीनशक्तिका बनि जाइत अछि तहिना जिनगीकेँ सुता कऽ राखब छी। मुदा प्रश्नो तँ अजनव अछि। नीक भोजन आ नीक नीन इन्द्रासनक मुख्य द्वार छी, तखन जिनगी..?

जिनगीक आवश्यक तत्त्वमे नीनो तँ अनिवार्य अछि। तखन अधला केना भेल? मुदा जखन दस कोठरी बहारैक, साफ करैक भार रहत तखन एक्के कोठरी बहारबो तँ उचित नहियेँ...। मेटक मन ठमकल। ने आगूक बाट देखै आ ने पाछू घुमि ताकब नीक बुझइ। मनमे फेर उठलै, जहिना कियो जोग क्रियामे जोगी बनि जोगिया जाइत अछि आ कियो भोगी बनि भोगिया जाइत अछि तहिना तँ कियो काजोमे कजिया जाइए। मुदा कज्जी भेने तँ अबाहो भाइए जाइए। ओना, जैठाम निरोगक बलि प्रदान होइए तैठाम अबाहक पूछे केतेक?

भाव-विह्वल मेट सामंजस करैत बाजल-

"बौआ ठीकेदार, ई दुनियाँक खेल छी। अपना सभ जहलमे तीत-मीठ करै छी आ कियो खुलल धरती-अकासक बीच खूलि कऽ खेलाइए। तैठाम तोहीं कहह जे की नीक हेतइ?"

जहिना चोरोक भरमार अछि, किसिम-किसिमक चोर अछि तहिना ने एकरंगाहो चोरक भरमार अछि। अमती काँटमे ओझराएल जकाँ ठीकेदार ओझरा गेल। जँ चोर चोरि करि कऽ आनए आ जरूरतमन्द लोककेँ दऽ दइ, तखन ओकरा की कहब? चोरि तँ ओ ने होइत जे चुपचाप आनि चुपचाप रही। जइसँ कियो बुझबो ने करत आ तरे-तर मखड़ैत रहब। ठीकेदारकेँ गुम देख मेट पुछलकै-

"ठीकेदार, गुम किए छह? तोरेपर छोड़ि देलियह जे जे तूँ कहबह सएह करब। जाधैर प्रेम-प्रेमसँ, आत्मा-आत्मासँ आ मन-मनसँ मिलि कऽ

नै चलत ताधैर भरि मन सिनेह केतए सिंगार करत?”

जवाबक तगेदा सुनि ठीकेदारक मनकें नै रहल गेलै, बाजल-

“मेट भाय, जखन किलो-किलो तेल अहाँकें पहुँचैबते छी, तखन नवका कैदीकें किए गोदाम जाइले कहलिऐ?”

“बौआ, मालीमे तेल हौंथरैत देखलिऐ, तँए बजा गेल।”

अपन बढ़ैत पक्ष देख ठीकेदारक मनमे खुशी पनपलै। खुशियाइत बाजल-

“जे आदमी आइए जहल आएल अछि ओकरा सोझे गोदाम पठाएब नीक नहि। चोर अछि आकि छुलाह अछि से अखन लगले केना बुझि जेबइ? जखन हमरे हाथमे गोदाम अछि तखन अहाँकें अभाव नै हएत, सएह ने?”

ठीकेदारक बात सुनिते मेटक मन तीआइरमे फँसल माछ जकाँ ओझरा गेल। चोर तँ चोर भेल मुदा छुलाह की भेल? मुदा मेट भऽ कऽ पुछनाइयो नीक नहि। जेकरे हाथ सभ किछु, सएह नै बुझतै। मेटक मन घुरिआए लगलै। एते दिनसँ जहलमे छी, ठीकेदारक हिसाबे छुलाहोक संख्या कम नै अछि, मुदा अपने नै बुझि पेलौं से केहेन भेल?

शब्दक मोड़ बदलैत मेट बाजल-

“केते रंगक छुलाह जहलमे हएत, ठीकेदार?”

जहिना नारद धरतीक रिपोर्ट अकासमे करैत तहिना ठीकेदार अपनाकें महसूस करैत बाजल-

“भाय साहैब, तेहेन घुरछी लगल सवाल अछि जे औगताइमे छुटि जाएत, तँए बिहिया कऽ देखए पड़त। पान-सात दिनमे पूरा-पूरी कहि देब।”

बलदेवक मनमे जहलक पहिल दिन नाचए लगलै। पुन: मनमे उठलै, मात्र किछु घन्टा-ले दुनियाँमे छी, तखन एक्के दिनक काजमे

घेराएल रहब नीक नहि। मुदा कहबो केकरा करबै आ सुनबो के करत...।

आगू बढ़िते मनमे उठलै, जिनगीमे जे किछु जे करैए ओ आन देखौ, बुझौ आकि नै देखौ-बुझौ मुदा केनिहार तँ जरूर देखबो करैए आ बुझबो करैए। मनमे ग्लानि उठए लगलै। जहिना बर्खाक बहैत बूनक वेग, घेरामे घेरा जमा हुअ लगैए तहिना जिनगीक चलैत चक्रक चालि बलदेवक मनमे समटाए लगलै। केते भारी अपराधी छी जे धरतीक भार बनि गेल छी, जँ हमरा सन अपराधीकें फाँसी नै होइ, सेहो अनुचित हएत। ..मन असथिर भऽ गेलइ। मनुखे ने मानवो आ दानवो बनैए। दुनियाँक ऐ रंगमंचपर कियो वीर बनि तँ कियो कायर बनि पार्ट अदा करैए।

..मन ठमकलै। पुन: उठलै, जइ धरतीक भार उठबए आएल छेलौं ओइ धरतीक भार बनि गेलौं! एना किए भेल? की जिनगी भरि हाथ-पएर मारि रहलौं, सेहो तँ नइ अछि। हाथ-पएर चलबैत आएल छी। तखन भार किए बनि गेलौं? मन अँटैक गेलइ। आइ जरूर बुझि पड़ैए जे जिनगी भरि विपरीत, बेपिरित दिसा चलि कऽ कुमार्ग पकैड़ लेलौं। मुदा से ओइ दिन कहाँ बुझलिऐ जे कुमार्ग छी आकि सुमार्ग? काजोमे केतौ बाधा कहाँ उपस्थित भेल? जहिना धारक धारा सिरासँ भठ्ठा दिस धड़धड़ाइत चलैए मुदा भठ्ठाकें सिरा दिस ससरैमे सामना करए पड़ै छइ। केना पानियें पानिकें रोकैत रहैए। मुदा बीचमे एकटा तँ होइ छै सिरोक पानि आ भठ्ठोक पानि एक-दोसरसँ रोकाइ छै, जइसँ ठाढ़ हुअ लगै छइ। आ ताधैर ठाढ़ होइत रहै छै जाधैर धारसँ ऊपर उठि धरतीपर नै छिड़ियाए लगैए। मुदा धरतियोपर तँ दिसा अवरूद्ध करिते अछि। आइ धरि जे नै बुझि सकलौं ओ अपने केना बुझि पएब? मुदा नहि, जिनगीक अन्तिम छोरपर भलें सभ बात नै बुझि सकिऐ, मुदा किछु नव तँ जरूर बुझि पाबि रहल छी। जँ से नहि तँ कहियो किए नै बुझि पेलौं जे फाँसी हएत? हमहीं नहि, बहुतो एहने वृत्ति करैए मुदा सभकें फाँसीए कहाँ होइ छइ? जैठाम पुरजा-पुरजी मनुखक अंग बनल अछि, सभ अंगमे गुण-दोष छै, तैठाम केना

जोड़ि कऽ चलौल जा सकैए। समए पाबि कियो दौड़ए लगै छै आ कुसमए पाबि थकथका जाइत अछि। तैठाम सौंस मनुख बनब धिया-पुताक खेलौना नइ छी। समैक अनुकूल बनए पड़ै छै आ बनबए पड़ै छै, से नहि तँ रग्गड़मे लोक रगड़ाए किए जाइत अछि।

बिसैर गेल बलदेव बारह बजेक फाँसी। मन आगू दिस बढ़लै। जैठाम अधिकांश फूल ओहन अछि जे अनेको रंगक होइए। गन्ध, रूप आ आकार एक समान रहितो एक-दोसराक अनुकूलो आ प्रतिकूलो अछि। तहिना गुलाबी आ लाल आलो-लाल आ गाढ़ो लाल बनैए तहिना तँ अपराजित कारियो बनैए आ उज्जरो। आ जँ उजरोपर कारीए रंग चढ़ि जाए, जेना एक-दोसरपर चढ़ैए। भलें थलकमल उज्जरसँ लाल भऽ जाए मुदा सभ तँ थलकमले नै छी।

जहिना फुलवाड़ी, फलवाड़ी वा वँसवाड़ी टहलला पछाइत छाहैरमे बैसैक मन होइत तहिना बलदेवकें सेहो भेल। दुनियाँक दृश्य देख मन हरियाए लगलै। ऐठाम के देत? केकरासँ मंगबै? जँ मंगबो करबै तँ गारंटी नहि अछि जे नीके देत। अधलोकें नीक कहि दैत अछि।

जुग-जुगसँ रंग-बिरंगक फूल-फलक गाछ रहितो अखनो हेराएल अछि आ हेराइयो रहल अछि। भरिसक हेराइ-जीताइक खेले ने तँ चलैए? ..बलदेवकें अपने-आपपर शंका उठलै। अखन जहलक सेलमे छी, अकलवेरामे फाँसीपर चढ़ब, कहीं बुइधे तँ ने भँगैठ रहल अछि। भँगठले बुधि ने बताह कहबै छइ। मुदा बिनु भँगठलोकें तँ बताह कहै छै! ..जहिना धान-रब्बीक रगड़सँ हाँसू मुरैछ जाइए तहिना बलदेवक मन मुरैछ गेल। किछु समए निकैलते मनमे उठलै- आइक पछाइत के हमरा मोन रखत? कोनो कि हम असगरे मृत्युदण्ड पेलौं आकि पबै छी। कियो गाछपर सँ खसि कऽ, तँ कियो पानिमे डुमि, तहिना कियो बीखहा दबाइ पीब कऽ तँ कियो विषैला सँपकट्टीसँ मरैए..! मुदा हम तँ ओइ सभसँ भिन्न छी? दुनियाँक बीच अपराधी छी, ओहन अपराधी जेकरा दुनियाँ थूक फेक भगबैए...।

बलदेवक मनमे हुमड़ैत वायुक दरद बुझि पड़लै। केकरा-ले एते अपराध केलौं! अपना-ले आकि परिवार-ले? आइ के हमरा सँग फाँसीपर चढ़त? जँ अपना-ले केलौं तँ की हाथ-पएर नै अछि? ..मनमे एकाएक समुद्रक शीतल समीरक झटका लगलै। झटका जकाँ लगिते मुहसँ निकलए लगलै-

“ओ फाँसी केहेन होइए जे हँसैत अपने हाथे गरदैनमे लगबैए। ओहिना हँसैत मुँह लोकक सोझहामे हँसैत रहै छइ। आ ओ फाँसी केहेन जेकरा थूक फेक लोक आँखि मूनि लइए। कियो सपूत बनि फाँसीपर चढ़ि अमर ज्योति जरबैए आ कियो करियाएल इजोतमे अन्हराएल रहैए। ऐ धरतीपर केकरो सँग कियो नै जाइत अछि। सभ अपन-अपन स्वार्थक पाछाँ रहैए! ..मन ठमकलै। ठमकल मनमे उठलै- केना नै जाइत अछि, आत्माक सँग आत्मा जरूर जाइत अछि, तहिना नीकक सँग नीक आ अधलाक सँग अधला तँ जाइते अछि।”

रातिक अन्तिम पहर। एक दिस राति उसरैक बेर तँ दोसर दिस दिन चढ़ैक समए। अर्द्धचेत बलदेवक भक्क तखन खुजलै जखन अन्हारमे हेराएल पौड़की अपन संगीक बीच उपस्थिति दर्ज करबैले घुटकल। आ तैपर अपन-अपन आवेशी अवाजमे गामसँ आन गाम आ एकसँ अनेक किसिमक गाछपर सँ सभ एक जुटताक अवाज देलक-

“यएह समए छी जे गौतमो ऋृषिकें चन्द्रमा धोखा देलकैन। सराप चाहे गौतम जे देलखिन मुदा एते तँ भेबे केलैन जे आत्मासँ खसि देहलोकमे उतैर गेला। चन्द्रमामे जखन गहन लागि जेतै तखन अन्हारमे धरतीपर केकरा के चिन्हत?”

पौड़की सबहक अवाज सुनिते बलदेवक मनमे जहिना तरेगन रहितो भुरुकबा-तरेगन आल-लाल ज्योति धरतीपर हँसैत आबि प्रकाशित करैक परियास करैत, तहिना बलदेवक मनमे सेहो पतराएल प्रकाशक आगमन भेलइ। ज्योतिक आगमन होइते उठलै, कोनो कि हमरेटा फाँसी हएत आकि अदौसँ होइते एलै आ भविसोमे होइत रहतै। मुदा हमरा

जिनगीमे फाँसी चढ़ैक बाट पकड़ाएल कहिया?

बलदेव पाछू उनैट ताकए लगल। हम तँ ओही दिन फाँसीक बाट पकैड़ लेलौं जइ दिन डगर छोड़ि डगहर पकैड़ लेलौं। डगरक तँ सीमा-सरहद होइ छै, निसचित जगहसँ निसचित जगह पहुँचैए, मुदा डगहर तँ से नइ होइत अछि। घुरिया-फिड़िया वौअबैत रहैए। मनुखक तँ डगर होइ छै, डगहर तँ पशु-ले होइ छै, जैपर चलि कऽ पशु जंगलमे चरैले जाइए। की हमहूँ पशुए भऽ गेलौं? मुदा पशुओ तँ जीबे छी आ मनुखो जीबे छी। दुनूक बीच आत्माक बास होइ छइ। मुदा आत्माक बास रहितो पशु कहाँ बुझि पबैए जे हमरा बीच आत्माक बास अछि। मुदा मनुखकेँ तँ से नइ होइ छइ। मनुखे ने जीव-जन्तुसँ प्रेम करबो करैए आ प्रेम पेबो करैए। तेतबे नहि, सहयोगी बनि जिनगीमे सहयोगो करैए आ सहयोगक अपेक्षो रखैए। जँ से नहि तँ पशु अपन रहैक बेवस्था किए ने कऽ पबैए। जेकरा रहैक बेवस्था नै हेतै तेकर जिनगीक गारन्टी की भऽ सकै छइ। भलेँ वौआ-ढहना घास-पात वा अन्य भोज्य पदार्थ ताकि पेट भरि लिअए मुदा ओ मनुख जकाँ तँ जिनगी जीबैक गारन्टी नै कऽ सकैए। मनुख तँ पातालसँ पानि आनि पीब सकैए, धरतीसँ भोज्य-पदार्थ उपजा सकैए...। फेर मन ठमकलै, सोचती बन्न भेलइ, सोचनशक्ति रूकलै।

जहिना कटल वा टुटल रस्ता देख राही ठमैक जाइत अछि जे ओइ पार केना जाएब। मुदा कटबो आकि टुटबो तँ रंग-बिरंगक होइत अछि। एक टुटब ओहन होइत अछि जइमे पानि-थाल-कीच होइ छै आ दोसर ओहन होइ छै जे सुखले रहैए, जइमे सावधानीसँ निच्चाँ उतैर पार कएल जाइ छइ। तहिना तँ पनियाएलो-थलाहमे होइत अछि। केतौ अगम होइत तँ केतौ कम होइत जैठाम कम होइत तैठाम कनी कठिनाहे सही मुदा पार तँ कएले जा सकैए। मुदा अगममे तँ डुमबोक आ गड़बोक सम्भावना बनले रहै छइ। फाँसी लगा, गरदैन दाबि हमर प्राण लेत मुदा फँसरियो लगा तँ लोक मरिते अछि। एहेन-एहेन परिस्थिति पैदा कऽ दैत जे बेवस भऽ लोक अपन गरदैनमे फँसरी लगा प्राण गमबैए। की ओ अपराधी छी

आकि अपराधीक सजा पबैए! जखन ओ अपराधी नइ छी, तखन अपराधीक सजा किए भेटलै? वोनक बाघ-सिंह किए दोसराक प्राण लऽ लऽ खून पीबैए? ओकर की दोख छइ? यएह ने जे ओकरा आगू ओ अब्बल अछि। फेर मन ठमकलै। कियो इनार-पोखैरमे डुमि मरैए, कियो आगिमे जरि मरैए, तहिना पानि-पाथर आ कियो विर्ड़ोमे मरैए। तेतबे नहि, कियो गाछपर सँ खसि मरैए, तँ कियो गाछपर चढ़ैत-उतरैतकाल खसि कऽ मरि जाइए। प्रकृतिक तँ अद्भुत लीला अछि। क्षणे-क्षण पले-पल बाटो पकड़बैए आ धकेल-धकेल निच्चोँ करैए! ऊपर-निच्चाँक खाढ़ी बना जीवन-मृत्युक सीमान बनोनै अछि। एक तँ ओहिना आगिमे अगियाएल अछि, पानिमे पनियाएल अछि, हवामे हबियाएल अछि, तखन केना परैख पएब? परखैले जेहेन आँखिक इजोत चाही, तेहेन ने करियाएल वादलमे अछि जे बर्खासँ सिक्त करत आ ने डभियाएल धरतीमे अछि जे धरतीक परतकेँ तेना सिर गछाड़ने अछि जे शक्तिहीन बना देने छइ। सुखल माइक छातीमे दूध कहाँ अछि जे चाहियो कऽ वेचारी दऽ सकती। अन्हारो रातिमे, जखन हाथ-हाथ नै सुझैत, जखन अपन देहो हेरा जाइत, देहक सभ अंग निष्क्रिय भऽ जाइत तखनो तँ किछु रहिते अछि जे हौंथैरो-हौंथैर किछु दूर धरि लाइए जाइए। मुदा हम तँ सोलहन्नी अन्हरा गेलौं। जहिना पीबैयोबला पानि बसिया गेने फेका जाइत, तहिना आइ दुनियासँ फेका रहल छी। अपन फेकाइत जिनगीपर नजैर पड़िते बलदेवक मन सहैम गेल। ने आगूक बाट देख पबैत आ ने पाछू घुसैक पबैत। जहिना जिनगीक ओइ मोड़पर कियो चारू भागसँ दुश्मनसँ घेरा, हारि-जीतक तारतम नै कऽ पबैत तहिना बलदेवो घेरा गेल। हारियो मानने दुश्मनक हाथे प्राण गमेबे करब, तखन प्राणक मोह रखि हारियो मानब उचित नहि। तइसँ नीक जे सामना करैत सामनेमे जेतेकाल ठाढ़ रहब ओत्तेकालक जिनगीक महत तँ आरो किछु हएत।

मुदा ठाढ़ रहि के सकैए? जेकर शरीर टी.बी., केन्सर सन रोगसँ जर्जर भऽ खोखला भऽ गेल ओ ठाढ़ केना रहि सकैए,ओकरा पएरमे ओ

शक्ति कहाँ छै जे ठाढ़ रखतै। ..बलदेवक मन विचलित भऽ गेल।

किछु क्षणक पछाइत मनमे उठलै, फाँसी तँ पोखैरक जाइठ सदृश जिनगीक छी। कियो अगम पानिमे डुमकुनियाँ काटि, माटि निकालि जाठिक मुड़ेरापर लगबैए तँ कियो किनछैरेमे पिछैड़ कऽ खसि, पिछड़ैत-पिछड़ैत अगम पानिमे डुमि, सड़ि-सड़ि सड़ैनक गन्ध पसारैए। मुदा जिनगीक अन्तिम छोड़पर बुझनहि की हुअए? कम-सँ-कम जँ अपनो-ले केने रहितौं तँ कनैत किए, हँसैत किए ने दुनियाँ छोड़ितौं। जिनगीक अचूक उपाय कहाँ बुझि पेलौं..!

सूर्योदय भऽ गेल। बलदेवक पत्नी–कामिनी आ बेटा–सुशील गुमसुम भेल अपन-अपन काजमे लागल, मुदा मनमे विचित्र स्थिति बनल रहइ। ने बेटा माएकेँ किछु कहैत आ ने माए बेटाकेँ। दुनूक मनकेँ बलदेवक फाँसी भीतरे-भीतर खिंचैत रहैन। जइसँ मनक पीड़ा बढ़ैत रहैन। मनक पीड़ा तँ ताधैर बढ़िते रहैए जाधैर ओकरा निकालि दोसरकेँ नै कहल जाइए। तखने अकासमे एकटा कौआ बाजल। कौआक बोलमे कामिनीकेँ अपशगुन बुझि पड़लैन, मुदा सुशीलकेँ सगुन बुझि पड़ल। गुम्मी तोड़ैत कामिनी बजली-

“बौआ, कौआक बोल केहेन ओल सन भेल!”

ओना बलदेवक फाँसी दुनूकेँ बुझल, मुदा तैयो मनकेँ फुसलबैत बहलबैत कामिनी बजली। ..माइक बेथाकेँ सुशील बुझि गेल, मुदा जिनगीमे अहिना सोग-पीड़ा अबै-जाइ छइ। छोटसँ-छोट पीड़ा होइ आकि पैघसँ-पैघ हौउ मुदा समैक सँग तँ लोक ससरिये जाइ छइ। जइसँ धीरे-धीरे कमैत-कमैत मेटा जाइ छइ। जहिना चलैले रस्ता चाही, से नीक आकि बेजए अछिए। समाज तँ ओहन समुद्र छी जइमे करोड़ो-अरबो जीव-जन्तु स्वछन्द भऽ जीवन-यापन करैत रहैए, भलेँ एक-दोसराक बाटो घेरैत रहै छै, पकैड़-पकैड़ खेबो करै छै, मुदा तैयो तँ रहबे करैए। नीक की अधला, मनुख मनुखे बीच रहैए। माइक पीड़ाकेँ सुशील भाँपि गेल। मने-मन सोचलक जे एक तँ वेचारीकेँ जिनगी भरिक संगी छुटि

रहल छैन तैपर जँ हमहूँ ओहने बात कहबैन तँ आरो मनमे धक्का लगतैन। चोट-पर-चोट लगने आरो अधिक वेदनाक अनुभव होइ छइ। मुदा जहिना कड़ू लगने लोक पानि पीब कड़ू कम करैए तहिना जँ दरद मेटबैक उपाय करब तँ दरद आगू नै बढ़ि या तँ ठमकल रहतैन वा कमतैन। ..समगम होइत सुशील माइक बातक उत्तर देलक-

“माए, कौआ तँ केहेन सुन्दर बाजल, कबकबाएल कहाँ?”

सुशीलक बात सुनि कामिनी बजली-

“आन दिन केहेन सुन्दर भिनसुरका बोली निकालै छेलै, आइ केहेन सबसबाएल बोल निकाललक।”

माइक हृदैक वेदनाकेँ सुशील भाँपि लेलक। ओना, मनुखक हृदैक थाह नइ छइ। एक दिस रूइयाक फाहा जकाँ बिनु हवोक उड़ैए तँ दोसर दिस जुआन पति, कमाइबला जुआन बेटाक मृत्यु, सेहो तँ सहबे करैए। बाट टुटल हौउ वा कटल हौउ, चाहे छोटसँ नमहर खाइधे हौउ, मुदा लोककेँ चलैले तँ बाट चाहबे करी। एकठाम बैसलासँ तँ जिनगी नहियेँ चलै छइ। कोनो-ने-कोनो उपाय तँ करैये पड़ै छइ। केतौ लोक कुदि कऽ खाधि पार करैए तँ केतौ बगलक माटि काटि वा छीलि कऽ ओकरा पहेट चलैए। केतौ एहनो होइ छै जे नमहर टुटान वा कटान रहै छै तँ ओकरा छोड़ि दोसर बाट बना लइए। ..माइक पीड़ाकेँ कमैत नइ देख सुशीलक मनमे उठल। एक-एक ढेपासँ सेहो बाटक खाधि भरल जाइए आ खाधिक हिसाबसँ चेकान काटि सेहो भरल जा सकैए। सुशील बाजल-

“माए, हमरा तँ कौआक बोलमे सकुन बुझि पड़ल। जहिना केकरो कोनो वस्तु हेरलासँ दुख होइ छै तहिना ने भेटनिहारकेँ खुशियो होइ छइ। बीचक वस्तु तँ एकेटा रहै छइ। एक्के बात वा वस्तु एक-ले नीक अछि आ दोसरा-ले अधलो भऽ जाइत अछि। जीवन रक्षक पतियो होइत अछि आ बेटो होइत अछि। मुदा एक काज रहितो दुनूक करैक विधिमे किछु-ने-किछु अन्तर तँ भाइए जाइत अछि। वएह अन्तर तँ एक-दोसराक बीच

अन्तरो पैदा करैए।"

सुशीलक विचार कामिनीक विचारक सोझहा-सोझही ठाढ़ भऽ गेलैन जइसँ कामिनीक विचार ठमकलैन। एकाएक ठाढ़ भेने जहिना शरीरमे झोंक अबै छै तहिना कामिनीकेँ एलैन। झोंक अबिते मन डोललैन। डोलिते नजैर एक दिस पतिपर तँ दोसर दिस पुत्रपर विभाजित हुअ लगलैन। जइ छत्र-छायामे अखन धरि रहलौं ओ तँ टुटि रहल अछि। मन निराश हुअ लगलैन, मुदा लगले आगूमे पुत्रकेँ देख आशा जगलैन। पुत्रो तँ पतीए जकाँ प्रहरी होइत अछि। कामिनीक निराशाक मचकीमे आशाक आस लगलैन। हृदए सिहरलैन। सिहैरते पुत्रक प्रति प्रेम जगलैन। ओ प्रेम नहि, जे माइक आशामे पुत्रकेँ होइत, बल्कि ओ प्रेम जइ आशामे पुत्रक आश्रयमे माए जीबै छैथ। जहिना जलसँ जलकण आ ओससँ ओसकण बनि पुन: जल वा ओसक सृजन करैए, तहिना। कामिनीक निराश मनमे खुशीक संचार भेलैन। संचार होइते खिलैत कली जकाँ मन खिललैन। जहिना खापैड़मे मकइ वा धानक लाबा एक्के-दुइए फुटि-फुटि अपन रंग बदलैत तहिना कामिनीक मनक रंग बदलए लगलैन। केना लोक बजैए जे अनुकूले वातावरण भेटने कोनो बीआमे अँकुर होइ छइ। बीआकेँ अँकुरै-ले तँ वएह वातावरण अनुकूल भऽ जाइत अछि जइ मूलक ओ बीआ आ बीआक गाछ होइत अछि। जँ से नहि तँ एक दिस अगम पानिबला समुद्रमे बीआ अँकुरि पनिगाछक जन्म दैत अछि, तँ दोसर माटि-पानिक बीच सेहो दैत अछि। तेतबे किए, दोखरा बाउलो आ चखान भेल पाथरोमे तँ कोनो-ने-कोनो गाछक बीआ तँ अँकुरिते अछि। जखन दुनियाँक सभठाम शक्ति मौजूद अछि तखन मिथिलाक भूमि किए शक्तिहीन भऽ जाएत, जे बीत भरिक पेटक रच्छा नै कऽ सकैए। जे धरती भिखारीकेँ भिक्खु बना सकैए, भोगीकेँ जोगी बना सकैए ओ जोगीकेँ किए ने भोगी आ भिक्खुकेँ भिखारी बना सकैए..?

एक नव शक्तिक उदय कामिनीक मनमे भऽ चुकल छेलैन।

धानक लाबा जकाँ मन दू फाँक भऽ गेल छेलैन। जहिना खापैड़मे एक-फाँक, दू-फाँक, तीन-फाँक होइत लाबा खापैड़सँ उड़ए चाहैए, उड़बो करैए तहिना कामिनीक विचार उड़लैन। मुदा मुँहक बोल सूखा गेलैन आ कण्ठक तरास बढ़ए लगलैन। पति◌ि-पुत्रक बीच चलैत धारमे अपनाकेँ पाबि कामिनीक हृदए छटपटेलैन। छटपटाइते बेटाकेँ आँखिमे आँखि गाड़ैत बजली-

"बाउ सुशील! आइ अपने–अहाँक पिता अन्तिम दिनक छनमे छनैक रहल हेता। कनी चलि कऽ दुनू गोरे भेँट कऽ लहुन?"

माइक बात सुनि सुशीलक मन ठमकल। केकरो मनमे फूलक वर्षा होइत अछि तँ केकरो मनमे पानि-पाथर बनल 'ओला' बरसैए। मुदा जहिना मरबो दुनू करैए तँ जीबो तँ करिते अछि। भेँट करए चलैले माए कहै छैथ मुदा की ई उचित हएत? हम सभ जेबे करब तइसँ किछु हुनका भेटतैन, आकि हमरे सभकेँ किछु भेटत? अस्ताचलगामी सुरूजक लाभ तँ ओकरे भेटै छै जे उदीयमान अछि। जे उदीयमान नै अछि ओकरा-ले तँ जेहने दिन तेहने राति, तखन अस्ताचलक महौते की? हुनका किछु ने भेटतैन, भेटतैन वएह जे अपना-ले फाँसीपर चढ़ि रहला अछि आ परिवार-ले? जँ परिवार-ले, तँ की अधले काजपर परिवार चलि सकैए आ नीक काजपर नै चलि सकैए। जँ चलि सकैए तँ ओ खुद नीक बाट छोड़ि अधला बाटपर चलि अन्तिम दर्शन देखा रहला अछि। अन्तिम दर्शन की? यएह ने जे धरतीपर कनैत एलौं हँसैत जाएब, आकि जहिना कनैत एलौं तहिना कनैत जाएब, तँ की एहेन जिनगीकेँ सुभर जिनगी मानबै? कथमपि नहि! जखने घरसँ डेग उठाएब तखनेसँ लोक कहबो करत आ थूकबो करत जे खूनियाँ-अधर्मीक बौह-बेटाकेँ देखियौ? निरलज जकाँ केहेन घमौड़ दैत जा रहल अछि!

..माइक प्रश्नक उत्तर दैत सुशील बाजल-

"माए, कोन मुँह देखए आ देखबए जाएब। सोझ पड़लापर पिता यएह ने कहता जे अहीं सभले जा रहल छी। मुदा अपना सभ कथी

पुछबैन?"

सुशीलक विचार कामिनीक मनमे अभिभावक रूपमे जगलैन। जहिना साइयो हाथक लत्ती बिनु सहाराक धरतीसँ नै उठि सकैए तहिना ने नारियो अछि। डाँड़मे चोट मारि ने विधातो विधिक रचना केलैन। बेटाक सहारा देख कामिनीक मनमे ऐगला जिनगीक आस जगले रहैन। विह्वल भऽ बजली-

"बेटा, बेटा बनि जँ धरतीपर आबी तँ बेटा कहबैत चली। आब तँ तोंही ने सभ किछु भेलह। वैधव्य भेने एक अँकुश मात्र लगत। मुदा आरो जिनगी तँ सँग मिलि चलबे करबह किने, तोहर जे विचार हेतह सएह ने हमरो विचार हएत। कहुना भेलह तँ तूँ पुरुख-पात भेलह। हम केतबो हएब तँ घरे भरिक हएब।"

माइक बात सुनि सुशीलक मन पसीज गेल? अपन दायित्वक भान भेलइ। मुदा लगले मन मुरैछ गेलइ। एक दिस धरती सदृश निश्छल माए तँ दोसर दिस कुकर्मी, अपराधी, धरतीक पापात्मा पिताकेँ देखए लगल। पिताक प्रति मनक उष्मा तेज भऽ गेलइ। बाजल-

"माए, परिवारक बड़का बोझ उतरैक दिन...।"

सुशीलक बोल बन्न भऽ गेल। विस्मित अवस्थामे सुशीलकेँ देख कामिनी बजली-

"सोग नै करह। जइ दिनक जे भवितव्य छेलै ओ भेल। जहिना जरल-मरल धरती अदराक बून पाबि सिरिफ जीविते नै सृजक सेहो बनि जाइत अछि। तों तँ सहजे पुरुख छह। आन के केकरा कहत आ केकर के सुनत। मुदा जहिना तोहर पिता तहिना तँ हमरो पति छैथ। तँए अन्तिम घड़ीमे श्रद्धापूर्वक स्मरण कऽ बिसैर जाह। चलह अँगनेक ओसारपर बैस चाहो बना पीब आ गपो-सप्प करब। दुनियाँ किछु कहह, मुदा तोहर मुँह देख एहेन खुशी भऽ रहल अछि जे जिनगीमे कहियो नै भेल छल।"

माइक बात सुनि सुशीलक मन ओहिना फुरफुरा उठल जहिना

आवेशीक मुँहमे दुरभाखवा फड़फड़ा जाइत अछि। बाजल-

"माए, जिनगी जीब बड़ असाध नहि छै मुदा बड़ असानो तँ नहियेँ अछि।"

बेटाक आस भरल बात सुनि कामिनीक हृदए पसीज गेलैन। बजली-

"बौआ, आब तूँ बौआ नहि बेटा भेलह। बापक काजकेँ देख परैख दुनियाँक सँग चलैक एक सिपाही भेलह, परिवार-समाजक कर्म-कर्ता भेलह। ने अनका पढ़ने आनकेँ ज्ञान होइत आ ने अनकर ज्ञान अनका-ले सबतैर उचिते होइत। तँए अपन समए, परिस्थितिकेँ अँकैत परिवारकेँ आगू-मुहेँ ससारैक तँ भार माथपर आबिए गेल छह। केहेन मनुख बनि धरतीक धारण केलौं, यएह ने जिनगीक परीक्षा छी।"

माए-बेटाक बीच जिनगी आ परिवारक गप-सप्पक बीच कामिनीक मन कखनो पतिसँ हटियो जानि मुदा लगले फेर आबि मनकेँ पकड़ियो लैन। जखन मनसँ हटि जानि तखन अपनो हाथ-पएर निंगहारि-निंगहारि देखए लगै छेली आ सुशीलोकेँ निंगहारि-निंगहारि देखैथ। मनमे उठलैन पाँखि तँ टिकुलियोकेँ होइ छै, अकासमे उड़बो करैए मुदा तँए ओ चिड़ै तँ नइ कहाइत अछि। चिड़ै-ले तँ पाँखिमे दम चाही, से कहाँ टिकुलीमे होइ छइ। कनियों किछु होइ छै आकि पाँखि टुटि जाइ छइ। जइसँ अकासमे उड़बो बन्न भऽ जाइ छइ। तहिना तँ अखन अपनो परिवार भऽ गेल अछि। हम उमरदार छी तैयो घरसँ बाहर किछु करबे ने केलौं आ सुशील तँ सहजे कोनो भार बुझबे ने केलक। नै बहराइक कारणो भेल जे अपनाकेँ घरेक सीमामे रखलौं। जे उचितो भेल आ अनुचितो भेल। अर्द्धांगिनी होइक नाते जिनगीक सभ वृत्तिसँ परिचित हेबा चाहै छल से नइ भेल। जँ से भेल रहैत तँ जरूर नीक-अधला वृत्तिक विचार करितौं। मुदा, अपसोचो केने तँ नहियेँ किछु हएत। बजली-

"बेटा, जँ ऐ धरतीपर बेटा बनि आबी तँ किछु कऽ देखाबी। जँ से

नहि तँ बेटाक महौते की?"

माइक बात सुनि सुशीलक मन नव कलशल टुस्सा जकाँ नव रूपमे पोनगल। माइक आँखिमे आँखि गाड़ि बाजल-

"माए, दुनियाँमे सभ अपन-अपन भाग-तकदीर लऽ जिनगी बनबैए। जेहेन जेकर जिनगी जीबैक बाट रहै छै तेहने से भार उठा चलैए।"

सुशीलक बात सुनि कामिनी विह्वल होइत बजली-

"बेटा, जहिना एक बेटा बनल-बनाएल परिवार-खनदानकेँ नाश कऽ दैत अछि तहिना तँ खसल-पड़ल परिवारकेँ उठा ठाढ़ो कऽ दैत अछि।"

जहिना कल्पवृक्षक निच्चाँ बैसनिहार वौड़ाइत रहैए तहिना फाँसीपर चढ़ैत बलदेवक परिवारक मन वौड़ा रहल अछि। असमसान जाइकाल मुर्दाक पाछू कठियारीबला कहैत चलैत- 'राम-नाम सत् है, सबको यही गत है।', मुदा घुमतियो-काल, जखन कि मुर्दा नै रहैत, वएह कहैत- 'राम नाम सत् है, सबको यही गत है।' भलेँ मृत्युक आँगन आबि लोह-पाथर, आगि छुबि बिसैर जाइत वा छोड़ि दइत। जैठाम बच्चासँ सियान धरि एहेन 'मंत्र' जपैए तैठामक जिनगीक एहेन दशा किएक? ..जहिना रस्ता चलैत बताह कखनो रस्तासँ हटि तँ कखनो सटि ललकारो भरैत आ कखनो असथिर भऽ बौको बनि जाइत तहिना माए-बेटाक अर्थात् सुशील-कामिनीक मन पिता-पतिक फाँसीक किछु समए पूर्ब पुरबा-पछबा जकाँ रस्सा-कस्सी करैत रहैन। कामिनी बजली-

"बेटा, तीन गोरेक परिवारमे एक अन्त भऽ रहल अछि तैयो तँ दू गोरे बँचलौं। तोहर बिआह होइते फेर तीन गोरे भऽ जाएब।"

माइक बात सुनि सुशील बाजल-

"अहिना परिवार कम-बेसी होइत एलैए आ होइत चलतै। तइले केते माथ धूनब। तखन तँ एकटा बात बुझए पड़त जे आन के केकर

परिवारक भार उठबैए, अपन परिवारक भार तँ अपने उठबए पड़त।"

कामिनी-

"हँ, ई तँ बेस बजलह।"

सुशील-

"दुखे की सुखे परिवारक बोझ तँ परिवारेक लोककेँ उठबए पड़तै।"

सुशीलक बात सुनि कामिनीक मन सहैम गेलैन। बेटा सहजे अनाड़ीए अछि, अपने कहियो भारे ने बुझलौं। तखन..? बकार बन्न भऽ गेलैन। जहिना भुमकम होइकाल धरतीक सभ किछु डोलए लगैत तहिना कामिनीक भीतर-बाहर डोलए लगलैन। धारक बहैत पानिमे जहिना पएर असथिरो कऽ टपैमे थरथड़ाइत तहिना कामिनीकेँ हुअ लगलैन। सुशीलोक मन विचलित होइत मुदा मनकेँ थीर करैत बाजल-

"माए, प्रश्न तँ छुटिए गेल अछि। उत्तर कहाँ देलँह।"

सुशीलक प्रश्न मन पाड़ि कामिनी बजली-

"अर्द्धांगिनी बनि जइ पुरुखक सँग पकड़लौं हुनका चीन्हि नइ सकलयैन। आइ बुझै छी जे पुरुखक भीतरो पुरुख होइ छै आ नारीक भीतर सेहो नारी होइ छइ। जँ से बुझने रहितौं तँ एतेक दूरी नै बनिताए। ओना, परिवारक भीतर अपन भार निमाहैमे कहियो कोताही नै केलौं। मुदा आब उपैये की!"

बजैत-बजैत कामिनी ठमैक गेली। जहिना नदी-नालाक पानिक वेग आगूमे बान्ह पाबि अँटैक जाइत तहिना कामिनीकेँ भेलैन। सोहत बेधल माछ जकाँ छटपटाए लगली। छटपटाइत मनमे आबए लगलैन, एक दिस तत्त्ववेत्ता तात्त्विक चिन्तन-विवेचनमे लगल रहै छैथ तँ दोसर दिस बेकती-बेकतीक बीच सेहो होड़ लगल अछि। सभ सभसँ आगू बढ़ए चाहैए। जइसँ सँगे चलब छुटि जाइत अछि, समाज विखण्डित भऽ जाइत अछि, श्रमिक अश्रमिकक बीच दिसा-दिसान्तरक अन्तर बनि

जाइत अछि।

दुनू माए-बेटा गुमसुम भेल एक-दोसराक मुँह बड़ीकाल धरि देखैत रहल। पछाइत गुम्मी तोड़ैत सुशील बाजल-

"माए, तोहर की इच्छा छौ?"

बेटाक बात सुनि कामिनीक मन शान्त भऽ गेलैन। पतिक फाँसी मनसँ हटि गेलैन। जेना किछु मन पाड़ैत बजली-

"बेटा, बहुत दुनियाँ देखलौं। नाना-नानी, दादा-दादी, बाप-माए, मामा-मामी, केते कहबह। पाछू उनैट तकै छी तँ सभ किछु देखै छी, मुदा आगू तकै छी तँ तोरा छोड़ि किछु ने देखै छी। जहिना नमहर गाछ खसि बटोहीक रस्ता रोकि दइ छै तहिना आगू बुझि पड़ैए।"

माइक बात सुनि सुशील बाजल-

"माए, तोहर जे इच्छा छौ, ओकरा जहाँ धरि भऽ सकत पुरबैक कोशिश करब। जे धरती छोड़ि चलि गेल ओ तँ सहजे चलि गेल, ओकरा सँग किछु जाएत मुदा जे अछि, ओकर आशा तँ अछिए।"

आशा भरल सुशीलक विचारमे आस लगबैत माए बजली-

"दुनियाँक खेल छिऐ जे एक-पर-साए ठाढ़ अछि आ कखनो साए, साए दिस छिड़ियाएल रहैए आ कखनो...। तँए सभ किछु बिसैर जाह। बितलाहा काल्हि मन राखह आ ऐगला काल्हि-ले हाथ-पएर उठाबह।"

नअ बजिते जहलक भीतर ओहने चलमली आबि गेल जेहेन नमहर बर्खा भेलापर वा भुमकम भेलापर होइत अछि। किछु सिपाही नहाइ-खाइले गेला आ किछु दस बजेक पछाइत निकलैक तैयारीमे जुटि कागत-पत्तर सेरियबए लगला। ओना अनदिनासँ ऑफिसोक रंग बदलल। जेना घन्टा-घन्टा भरि ऑफिसरक अभावमे गेटपर ठाढ़ भऽ प्रतीक्षा करए पड़ैत, तेना नहि। ऑफिस समैए-पर खुजि गेल। केना नहि खुजैत, आइ बलदेवकेँ जहलक सजा जे समाप्त भऽ रहल अछि। फाँसी तँ जिनगीक छी। सिरिफ दूटा सिपाही बलदेवकेँ सेलसँ निकालि अग्नेयक

गाछक निच्चाँमे, सब्जीए-पर बैस गप-सप्प करए लगल। तहूमे एक गोरे चीलमक भाँज-भुँजमे लगि गेल आ दोसर बलदेवसँ गप-सप्प करए लगल। मुदा तीनू गोरे– माने दुनू सिपाही आ बलदेव–क मन तीन दिस वौआइत-ढहनाइत। चीलमक भाँज-भूँज केनिहार पहिल सिपाही तमाकुल-बलापर बिगैड़ गरियबैत जे साला सभ पानि छीटि अधलो पत्ताकेँ तेहेन डगडगी आनि दइए जे लेनिहारकेँ बुझि पड़ैत जे टिपगर अछि। मुदा स्नो-पोडर लगौलहा मुँह तँ ओतबेकाल ने चमकैत जेतेकाल ओकरा चमकैक शक्ति छै, मुदा तँए कि सभ मुँह ओहने होइए जे लगले चमकत, लगले दबि जाएत, विलीन भऽ जाएत। तमाकुलक तामस सिपाहीकेँ आगू बढ़ा सरकार दिस लऽ गेल। सरकारपर नजैर पड़िते हँसी लगलै। बड़बड़ाए लगल-

"अजीब मदारी-नाच सरकारो करैए। एक दिस तमाकुल खेती करैक लाइसेंस, गुटका बनबैक लाइसेंस दइए आ दोसर दिस कैंसर रोगक कारण कहि मनाही करैए। मुदा लगले मन घुमि कऽ अपनापर चलि एलइ। तीस बर्खक नोकरीक कमाइ अही-गाँजा-भाँगमे चलि गेल। जखन रिटायर करब आ अदहा दरमाहा भेटत तखन की करब। एक तँ देहमे किछु ने रहल जे दोसरो काज करब, खेनाइ-पिनाइक अभाव सेहो हेबे करत। तैपर बुढ़ाड़ियो तँ बेमारीक जड़िए छी, कहियो दाँत टुटत, कहियो आँखिक इजोत कमत, कहियो कानक बहिर हएब तँ कहियो बातरस ठेहुनमे पकड़त। मुदा अपना विषयमे अपने सोचलौं कहिया जे बुझब...।

दोसर सिपाही जे बलदेवक आगूमे बैसल रहए, ओकर मन भिन्ने वौआइत। जहिना शराबीकेँ शराबक बोतल आगूमे अबिते शराबक खुमारि आबि-आबि नाचए लगैत तहिना ने मृत्यु वा फाँसीसँ पूर्वक क्षण होइ छइ। फाँसीसँ पूर्ब धरि ने बलदेव अपराधी छी आ हम ओकर पहरेदार सिपाही। मुदा किछु कालक पछाइत अर्थात् बारह बजेक पछाइत के केतए रहब तेकर कोन ठेकान अछि। से नहि तँ अखन ने हम

सिपाही, आ ने बलदेव अपराधी। की केने बलदेव एत्ते पैघ अपराधी भेल आ हम ओकर सिपाही छी...।

बलदेवक मन बीरान होइत ऐ दुनियाँकेँ देखैत जे जहिना फलसँ लुबधल आमक गाछ बिहाड़िक झोंकमे खसि पानि फेरि दैत तहिना ने अपनो आ परिवारोकेँ भऽ रहल अछि। मुदा आब तँ ने सोचै-विचारैक समए रहल आ ने ओकरा पुरबैक...।"

तीनू गोरे अपने-आपमे मस्त। मुदा जहिना तीर्थस्थानमे अनठिया यात्री एक-दोसर लग बैस अबैक कारणो पुछैत आ रस्ताक भीड़-कुभीड़ सेहो पुछैत तहिना दोसर सिपाही चुप्पी तोड़ैत बलदेवकेँ पुछलक-

"भाय, आइ तँ फाँसीए-पर चढ़ि जिनगीक अन्त करबह। मुदा एकटा बात कहह जे केना-केना करैत एहेन सजाए-क भागी भेलह?"

सिपाहीक प्रश्न सुनि बलदेव मर्माहत भऽ जिनगीक समुद्रमे डुमि गेल। जहिना पोखैरमे पानिक ऊपरक अवाज तँ पानिक भीतरोमे पहुँचैए मुदा पानिक भीतरक अवाज ऊपर नै अबैए तहिना बलदेवकेँ भेल। बकार बन्न रहै मुदा कलपैत मन किछु बजैत जरूर रहइ। जिनगीक समुद्रमे डुमैत बलदेवकेँ, जहिना छठियारीक दूध बच्चाकेँ मन पड़ि जाइ छै तहिना जिनगीक ओइ धरतीपर पहुँच गेल जेतए अवोधे नहि, छेहा अबोध रहैए। मन पड़लै ओ दिन जइ दिन दोसर बच्चाक खेलौना छीनि नुका धेलक आ माइयो झूठ बाजि लाथ कऽ लेलकै। मन पड़िते भोरका सुरूज जकाँ चेहरामे दप-दपी आबए लगलै। मुस्कियाइत बाजल-

"सिपाही भाय, बच्चाक ओ दिन मनसँ निकलैले छटपटाइए तँए पहिने वएह कहै छी।"

बलदेवक बात सुनि सिपाहीक मन सेहो अपन बालपन आ परिवारक बच्चापर पड़लै। सड़क नपैत दूरबीन जकाँ केतौ-सँ-केतौ दुनू गोरे नापए लगल। सगतैर बच्चे-बच्चा देख पड़ैत। आगूओ बच्चा, पाछूओ बच्चा आ तैबीच अपनो दुनू बच्चा। बच्चाक वनमे दुनू गोरे हेरा गेल।

हेराइते दुनू गोरे सहैट कऽ आरो लग आबि गपकेँ आगू बढ़ौलक।

जहिना दुखक निवारण बोल आ नोर दुनूसँ होइत तहिना बलदेव अपन दुखनामा बजैत बाजल-

"भैयारी, बच्चामे हम दोसर बच्चाक खेलौना छीनि कऽ चोरा रखलौं। कनैत ओ बच्चा आँगन जा माएकेँ कहलक। बच्चाक सँगे माए आबि पुछलक। नठि गेलौं। मुदा रखैले माएकेँ दऽ देने रहिऐ। माइयो नठि गेल। तेसर दिन वएह खेलौना लेने ओकरे आँगन खेलाइले गेलौं। दुनू माए-बेटा चिन्ह गेल। कहलक तँ किछु नहि, मुदा चोरबा नाओं रखि देलक।"

बलदेवक बात सुनि ठहाका मारि सिपाही अपन संगी, माने दोसर सिपाही दिस इशारा करैत बलदेवकेँ बाजल-

"भैयारी, संगी तँ गाँजा पीब मस्त छैथ। बँचलौं दुइए गोरे, जेकरा सबहक राज-पाट छिऐ से सभ अपन सम्हारह। तइसँ हमरा की। अच्छा तेकर पछाइत की भेलह?"

सिपाहीक बात सुनि बलदेव गुम्म भऽ गेल। कनीकाल धरि गुम्मे रहल, पछाइत बाजल-

"ओइ दिनक नीक आइ अधला बुझि पड़ैए।"

बलदेवक उत्तर सुनि चौंकैत सिपाही बाजल-

"से केना, से की?"

विस्मित होइत बलदेव बाजल-

"भैयारी, बात ओतबेपर नै अँटकल। आगू बढ़ि गेल।"

"की आगू बढ़ि गेल?"

"पानि भरैले माइयो इनारपर गेल आ ओहो दुनू मायपुत आएल, आरो लोकसभ रहइ। तैबीच ओ माएकेँ कहलक, अहींक बेटा हमरा बेटाक खेलौना चोरा लेलक। एतबे बजैत मातर अँएले-वँएले पछियामे

पजरल पसाही जकाँ लगि गेलइ। दुनूक बीच कहा-कही शुरू भेल। कहा-कहीसँ गारा-गारी हुअ लगल। जहिना सात पुरुखाकेँ हमर माए उकटए लगलै तहिना ओहो उकटए लगल। तैबीच एक्के-दुइए आनो-आनो कहा-कहीमे शामिल हुअ लगल। हल्ला सुनि आरो लोकसभ आबए लगलै। जे अबै से कोनो दिस सन्हिया जाइ। दू पाटीमे बँटि खूब गारि-गरौवैल चलए लगलै।"

बलदेव बात समाप्तो नै केने छल, तइ बिच्चेमे दोसर सिपाही टोनि देलकै-

"ई तँ नाहँकमे एत्ते बात बढ़ल!"

"से की ओतबेपर अँटकल। आरो बेसिया गेल। दुनू दिसक गबाही कमलेसरीए माता हुअ लगलखिन। कारण जे सभ तँ कोनो-ने-कोनो दिसक पाटी बनि गारि-गरौवैल आ झगड़ामे शामिल रहए।"

जहिना फुलाएल पानकेँ मुँह बन्न कऽ आनन्द लेल जाइत अछि तहिना आनन्द लैत सिपाही पुछलकै-

"स्त्रीगणेक बीच झगड़ा भऽ कऽ रहि गेल। आकि आगू बढ़ल?"

सिपाहीक प्रश्न सुनि बलदेव बाजल-

"मरद स्त्रीगणमे कोनो भेद अछि। ने मरद मरद जकाँ रहैए आ ने स्त्रीगण स्त्रीगण जकाँ। मरदो मौगयाही चालि पकैड़ मौगी बनि गेल अछि आ मौगियो मरदनमा चलि पकैड़ मरद बनि गेल अछि। स्त्रीगणक गारि-गरौवैल पुरुखक मुँहमे चलि आएल। जहिना एक चम्मच दही तौला भरि दूधकेँ दही बना लइए, जइसँ एक तौलाकेँ के कहए जे केतेको तौला दूध दही बनि जाइए तहिना स्त्रीगणक मुँहक गारि पुरुखमे चलि आएल।"

बिच्चेमे सिपाही बाजल-

"तखन तँ होत-सँ-होतान भऽ गेल हएत!"

बलदेव-

"अँए, एतबे भेल! स्त्रीगण ने भोरसँ साँझ धरि गारियेक माला जपि सकैए मुदा पुरुखमे तँ से नइ होइए, एकसँ दू गारि मुहसँ निकैलते हाथ उठए लगै छइ। जखने हाथ उठत तँ दोसरेपर ने खसत किने। सएह भेल।"

रस चुसैत सिपाही पुछलक-

"तखन तँ मारि भऽ गेल हएत?"

सिपाहीक जिज्ञासु प्रश्न बलदेवकेँ उत्साहित करए लगलै। उत्साहित होइत बाजल-

"मारिए भेल की गधकिच्चैन मारि भेल। मुदा दुनू दिस एक रंग नै भेल। हमर दियादी नमहर, तहूमे तेहेन छड़े-छाँट समांग सभ अछि जे देखैयोमे राक्षसे जकाँ लगैए। ओकर दियादी छोट माने कम संख्याक अछि तँए वएह सभ बेसी मारि खेलक।"

सामंजस करैत सिपाही बाजल-

"एतए तँ दुइए गोरे छी, तेसर हमर संगीटा अछि, ओहो भकुआएले अछि। निच्चाँ धरती ऊपर अकास अछि। तँए दुइए गोरेक बीच पनचैती करू जे नीक भेल कि अधला?"

सिपाहीक बात सुनि बलदेव आगू बढ़ैत बाजल-

"अखने औगता गेलौं! पनचैती पछाइत करब। अखन तँ पेनियों ने छनाएल।"

बलदेवक बात सुनि सिपाही घड़ी देखलक। एक तँ ओहिना प्रतीक्षाक समए गड़ूगर होइते छै तैपर जहलक बीचक प्रतीक्षा..! समए पाबि सिपाही बाजल-

"आरो बात अछि, भैयारी?"

'आरो' सुनि जहिना आदि-इत्यादि नेनमुँह बच्चाकेँ हेरा दैत अछि तहिना बलदेव हेरा गेल। बाजल-

"आरो की कनियेँ अछि जे धक-दे नजैर चलि जाएत। मारे-अमार लगल अछि। तैबीच सँ बीछए पड़त किने, नहि तँ ओही नेनमुँह बच्चा जकाँ जिनगी भरि आदि-इत्यादि करैत रहब, मुदा बीछि नइ पएब।"

बलदेवक थीर विचार सुनि सिपाही अपनाकेँ थीर करैत बाजल-

"अच्छा हौउ। अखन दू घन्टासँ बेसीए समए अछि।"

दू घन्टासँ बेसी समए सुनि बलदेव बाजल-

"दू घन्टामे तँ विद्यार्थी परीक्षा पास कऽ लइए। तइसँ बेसी समए लगने बोर्ड-युनिवरसिटीसँ डिग्री लऽ अबैए। अखन बहुत समए अछि।"

समए पाबि सपाही जेबीसँ सलाइ-सिगरेट निकालि एकटा अपनो आँगुरसँ दबलक आ दोसर बलदेवोकेँ देलक। सलाइ खड़ैर सिगरेट सुनगा दुनू गोरे पीबए लगल। दुनूक मुँहक धुआँ निकैलते तेना मिलैत जाइ जे फुटा कऽ देखब असम्भव भऽ गेल। मुँहक सिगरेट सठिते बलदेव बाजल-

"भैयारी, किछु घन्टाक मेहमान छी, पछाइत अहाँ केतए रहब हम केतए रहब तेकर कोन ठेकान। मुदा मनमे जे अछि ओ केकरा कहि सकबै, तँए जाबे एकठीम छी ताबे सुनू। जेतए धरि भऽ सकत ओते तँ मन हल्लुक रहत।"

बलदेवक बात सुनि सिपाही बाजल-

"जखन सुनए लगलौं तँ सुनाउ, जेते सुनाएब सभ सुनि लेब। तहूमे बाल-बोधक गप छी, हम सभ नै सुनब तँ के सुनतै। आखिर गारजनो तँ छिऐहे।"

मुस्कियाइत बलदेव बाजल-

"ओना, ठीकसँ मन नइए, मुदा वएह सात-आठ बर्खक रही।"

बिच्चेमे सिपाही टोकलक-

"ने सात ने आठ, साढ़े सात भेल। तइले एत्ते ततमताइ किए छी।"

बलदेव आगू बाजल-

"एते नीक नहाँति मन अछि जे अनका बाड़ीसँ नेबो, दाड़ीम, लताम चोरा-चोरा खूब आनी। पड़ोसियेक नेबो बाड़ी हमरा भाँगक चहैट लगौलक।"

जिज्ञासा करैत सिपाही-

"से केना, से केना?"

"बाड़ी-झाड़ी लगबैमे एकटा पड़ोसिया बड़ माहिर। भरि दिन ओही पाछू बेहाल रहै छला। मुदा गुणो रहैन, ने केकरो बाड़ी-झाड़ी जाइसँ रोकथिन आ ने सोझहामे छुच्छे हाथे केकरो घुमऽ देथिन। हुनके बाड़ीसँ सभ दिन दूटा नेबो तोड़ि ली आ चौकपर बेच, भाँगो आ पानो खा ली। गुजर करै-जोकर खेत-पथार तँ नहियेँ रहए मुदा तैयो सात-आठ मास खेतक उबजासँ गुजर चलि जाए। कट्ठा दसे-बारहेक करीब बँटाइयो खेत बाबू करैत रहैथ। तइ सभ मिला साल-माल लगि जाइ छल। ओना साँझू पहर जे अन्ट-सन्ट काजो करी आ बजबो करी तइसँ बाबू बुझि गेल रहैथ जे छौड़ा बहबाँइर भेल जाइए, संगैत खराब भऽ गेल छइ।"

सिपाही-

"बाबू किछु कहैथ नहि?"

बलदेव-

"बाबू की कहितैथ, माइयक ने दुलारू बेटा रही। जँ कहियो किछु बजौ चाहैथ तँ तेना कऽ माए झपैट लैन जे-मुहेँ बन्न भऽ जाइन। ओना भैयारीमे असगरे रही तहूसँ कहियो तेना भऽ कऽ किछु नै कहए चाहैथ।"

सिपाही-

"तब की भेल?"

बलदेव-

"एक दिन कनी पहिनहि, माने सबेरे एकटा पिसुआ भाँगक गोली खा लेलौं आ तैपर सँ पान सौ नम्मर जरदा देल पान कनी पुष्टसँ चढ़ा

देलिऐ। घरपर अबैत-अबैत खूब निशाँ लगि गेल। बाबू दरबज्जेपर रहैथ। कहलैन जे एकटा बात पुछियौ, कहलयैन जे 'एकेटा किए एक हजार पुछू।' हमहूँ हाथीए-पर सवार रही।"

'हाथीपर सवार' सुनि सिपाहीकेँ हँसी लगि गेलइ। बाजल-

"आ जे हाथीपर सँ खसि पड़ितौं तखन की होइतए?"

मुस्कियाइत बलदेव बाजल-

"हद करै छी भैयारी। से जँ बुझैत रहितिऐ तँ अहिना करितौं। यएह ने नै बुझलिऐ जे केना लोक उट्ठी-बैसी खेल खेलाइए, केना खसलाहा अपनाकेँ चढ़ल बुझैए!"

सिपाही-

"बाबू की पुछलैन?"

"पुछलैन जे अन-पानि तँ जेना-तेना बँटाइयो-खोंटाइ कऽ साल-माल लगिए जाइए मुदा दूध-दहीक नसीब नै होइए। दूध-दहीक नाओं सुनि अपनो मन चमकल। कहलयैन से की कहै छहक। कहलैन, एकटा महींस पोसिया लऽ लइतौं। आब तोहूँ चरबै-बझबै-जोकर भाइए गेलह।"

बिच्चेमे सिपाही टोनलक-

"बड़ सुन्दर बात कहलैन।"

बलदेव-

"हँ-हँ। से तँ अपनो नीक लागल। मनमे उठल जे जहिना खेतक उबजाक अगो, तीमन-तरकारीक पहिल फड़क हकदार आने होइत तहिना गाए-महींसबला परिवारमे डारहीक हकदार तँ धिए-पुते ने होएत। एक तँ डारहीसँ छालही धरि, दोसर दूधसँ दही धरिक ओरियान हएत। तैपर सवारी बना महींसपर चढ़ि सौंसे गामो घूमब। बिनु किछु केनौं काजक मोजर सेहो हेबे करत। आ कनी-मनी संगैतियो सबहक-मुहेँ सुनि ईहो बुझिते रहिऐ जे गजेरी-भँगेरीक पथ्य दूधे-दही छी। जँ से नइ खाएत

तँ उनटे गाँजा-भाँग खा जेतइ। जानिए कऽ तँ भाँग खाइते छी, आ ओहीमे रमलो रहै छी। जे काजुल अछि ओ ने काजमे रमैए, तहिना जे चिन्तक अछि ओ चिन्तनमे। मुदा हम तँ तइ सभमे नइ छी। जिनगी जँ रमता जोगी बहता पानी नै बनल तँ जिनगी सराठीए ने भऽ जाइए।"

चौकैत सिपाही बाजल-

"'सराठी जिनगी' केकरा कहै छिऐ?"

सिपाहीक बात सुनि बलदेवकेँ हँसी लागल। जहिना एको दाना नून आकि चिन्नी अपन सुआद जना दइए, तहिना बलदेवकेँ अपन ज्ञानक सुआद लगलै। मुस्की दैत बाजल-

"जहिना धारक पानि ताधैर चलता रहैए जाधैर सँगे-सँग चलैत रहैए। मुदा जखने कोनो खत्ता-खुत्तीमे फँसि जाइए आ बहाउ रूकि जाइ छै तखन माटिक सँग सड़ए लगैए। सड़ैत-सड़ैत तेतेक सड़ि जाइए जे नहाइ-पीबैक कोन गप जे अपन सड़ैनसँ ओहन-ओहन बेमरियाह किड़ी सभकेँ जनमाबए लगैए जे हाथियो सन-सन जानवर ओइमे फँसि जान गमबैए। महींस चरबै-जोकर भाइए गेल रही। किएक तँ देखिऐ जे हमरोसँ छोट-छोट छौड़ा सभ चरबैए। कहलयैन- 'नीक काजमे एक्को दिन देरी नै करबाक चाही, बाबू। जे देरी करैए वएह पछताइए।' बाबूओकेँ गप नीक लगलैन। एकटा पोसिया महींस लऽ अनलैन।"

'महींसक नाओं' सुनि सिपाही बाह-बाही भरैत बाजल-

"जखने कमाइ-खटाइ लोक करए लगैए तखनेसँ अपन धरतीक भार उतारए लगैए।"

सिपाहीक बात बलदेवकेँ नीक लगलै। जहिना एके अन्न पेट भरैक सँग-सँग मनमे आनन्दो दइ छै तहिना बलदेवोक मनमे भेलइ। गदगदाइत बाजल-

"असलाहा बात तँ कहबे ने केलौं।" कहि चुप भऽ किछु मन पाड़ए लगल।

जहिना खिस्सकरक सँग हुँहकारी भरने ओकर उत्साह उठैत रहै छै तहिना बलदेवो उत्साहित भेल। राज-काजसँ हूसल रागी-भोगी जकाँ दोहरबैत बाजल-

"ओह, सुखक दिन चलि गेल। आब थोड़े देखब कि भोगब। ओ हो हो।"

दुनूक मनसँ बारह बजेक फाँसी हेराएल। एक फाँसी ओहनो होइत जइमे संकल्प रूपी कल्याणी माइक कोरामे बैस हँसैत चढ़ैए, दोसर एहनो होइत जे खण्ड-खण्ड टुटल-छिड़ियाएल मन शरीरकेँ छौड़ैए। ...हुँहकारी भरैत सिपाही बाजल-

"से की। से की?"

चानि ठोकैत बलदेव बाजल-

"महींससँ दूध-दही होइते रहए। पाँच गोरे एहेन छड़े-छाँट महींसवार रही जे महींस चरा साँझू पहर, घुमतीकाल लोकक खेतक जजातो चरा लिऐ आ धानक महिनामे धानो नोचि लिऐ आ नारो बान्हि महींसपर लादि लऽ आनिऐ। तेते अन्न घरमे ढेरिया जाए जे खाइक दुखे हेरा गेल रहए।"

सिपाही-

"सभ दिन महींसे चरबैत रहलिऐ?"

आँखि-भौं चमकबैत बलदेव बाजल-

"अहूँ हद करै छी भैयारी! बुधि-बलक सँग जिनगियो ने घटै-बढ़ै छइ। ठीकसँ तँ नइ मन अछि। मुदा एते मन अछि जे दुरागमन भऽ गेल रहए। बाबूओ मरि गेल रहैथ। जहिना खेत-पथार बेच लोक नोकरी करए जाइए तहिना महींस बेच लेलौं। मुदा पाँचो महींसवारक सम्बन्ध आरो बढ़ि गेल। खेनाइ-पिनाइ कथा-कुटुमैतीक सँग पनचैती-सभ सेहो करए लगलौं। गामेमे बहरबैया मालिकक जमीनो आ कचहरियो रहइ। कचहरीक बराहिलसँ दोस्ती भऽ गेल। संजोगो नीक रहल, बराहिलगिरीक

नोकरी भऽ गेल। साए बीघा जमीनक मालिक भऽ गेलौं।"

मालिकक नाओं सुनि सिपाही बाजल-

"तखन तँ मानो-दान खूब हुअ लगल हएत?"

'मानदान' सुनि कठ-मुस्की दैत बलदेव अपशोच करैत बाजल-

"सोझहामे जहिना मान-दान बढ़ल परोछमे तहिना गारियो बढ़ि गेल!"

"से किए?" –सिपाही पुछि देलकै।

किछु मन पाड़ैत बलदेव बाजल-

"करबो तहिना करिऐ। जेना गमैया नेता सभकेँ देखबै जे ऊपरका नेताक आगूमे जे किछु बाजत आ करत, लोकक बीच उनैट कऽ मुहोँ आ चालियो बदैल लेत। तहिना करए लगलौं। मालिक–जमीनदार–क आदमीक बीच किछु आ लोकक बीच किछु करए लगलौं।"

उनटैत-पुनटैत पाशा देख सिपाही बाजल-

"से की?"

बलदेव-

"गामक लोककेँ कोनो मोजर दिऐ! अनेरे केकरो गरिया देलौं, बलजोरी कोनो चीज लऽ लेलौं। तहिना स्त्रीगणो सभकेँ, केकरो किछु कहि दिऐ, केकरो किछु।"

"कियो जवाब नै दिअए?"

"जवाब की दइत, जहिना पर्डू खुट्टा देख चुकड़ै छै तहिना ने रहए। एक दिस मालिकक धाक, दोसर अपन बलउमकी।"

बिच्चेमे सिपाही बाजल-

"की अपन बलउमकी?"

"जहिना शरीरक मुख्य अंग आँखियो छी आ कानो, मुदा दुनूमे केते अन्तर छै से देखै छिऐ। कान वेचारा एहेन सज्जन अछि जे नीकसँ

नीक आ अधलासँ अधला सुनि किछु नइ करैत, मुदा आँखि केहेन लुच्चा अछि जे देखते छिऐ, कखनो ललिया कऽ अगिया जाइत तँ कखनो कनखिया जाइत अछि आ कखनो गैंचियाए लगैए। तहिना अपनो अलेल खेने-पीने सदिकाल रमकी चढ़ले रहै छेलए।"

सिपाहीक मनमे तरंग उठलै। तरैंग कऽ बाजल-

"गामक पढ़ल-लिखल लोक ऐ बातकेँ नै बुझै?"

सिपाहीक प्रश्न सुनि बलदेव गुलाबी हँसी हँसि बाजल-

"जहिना कृष्ण एक दिस भदवरिया चोर बुझल जाइ छैथ तँ दोसर परब्रह्म सेहो छैथ, मुदा छथिन तँ सभ-ले मुदा जे जेहेन तेकरा-ले तेहेन। तहिना वीणावादिनी सेहो ने छैथ। जेहेन कर्म तेहेन बोध। तही बीचमे ने समाजक पढ़लो-लिखल लोक छैथ, जखन जेहेन तखन तेहेन।"

"से केना?"

'से केना' सुनि अपनाकेँ सम्हारैत बलदेव बाजल-

"जहिना काजोमे लोक एहेन रमान रमि जाइए जे खेनाइ-पिनाइसँ लऽ कऽ अपन जिनगीक किरिया-कलापक सँग घरो-परिवार बिसैर जाइए, तहिना दोसर दिस बेरागी सेहो ने ब्रह्ममे लीन भऽ सभ किछु बिसैर जाइ छैथ, रमता जोगी तँ दुनू बनि जाइ छैथ, मुदा की दुनू एक्के भेल?"

बलदेवक बात सिपाही नै बुझि सकल। बाजल-

"कनी फरिछा कऽ कहियौ भाय।"

जहिना कारखानाक बनल कपड़ाक थानसँ दरजी काटि-काटि रंग-रंगक वस्त्र बनबैत तहिना बलदेव बनबैत बाजल-

"देखियौ, सप्ताह मास आ सालेक लिअ। आइ तारीख एक, आ महिना एक छी। ई दू सालक बीचक सीमानपर अछि। एकक अन्त दोसराक आरम्भ छी। बाँकी जेते अछि से सभ कचिया अछि। जेना

मासक भीतर बाइस दिनकेँ की कहबै? तहिना सप्ताहक भीतर पाँच दिनकेँ कथी कहबै?"

बलदेवक बात सुनि सामंजस करैत सिपाही बाजल-

"खएर, छोड़ू दुनियाँ-दारीकेँ। ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ दइए।"

सिपाहीक बात अन्तो ने भेल छल कि बिच्चेमे बलदेव बाजल-

"भैयारी, आइ बुझि पड़ैए जे गलती नै भेल गलतीक बाटे पकड़ा गेल।"

चौंक कऽ सिपाही बाजल-

"से की! से की?"

उदास होइत बलदेव बाजए लगल-

"भैयारी, कहैले तँ जेते मुँह तेते बाट अछि, जँ से नइ रहैत तँ हृदैसँ निकैल दोसर हृदैमे सटैत केना अछि। मुदा ओते कहैक अखन समए नइए। तँए एतबे कहब जे मनुखक बीच दू रस्ता बनल अछि। एक रस्ताकेँ लोक मनुखक रस्ता बुझि केकरो कियो चलैसँ रोकैत नै अछि आ दोसर ओहन अछि जइमे अपना छोड़ि दोसरकेँ मनुख बुझिते ने अछि। रस्तासँ हटि जहिना जंगल-झाड़मे चलैत-चलैत डगर बनि जाइ छै तहिना डगर धड़ा देने अछि।"

जहिना लोहाक कोनो ओजार जखन भोथ हुअ लगै छै तखन कारीगर ओकरा आगिमे धीपा, पीटि पानिमे पनिया दैत, जेकरा पानि चढ़ाएब कहल जाइ छै। तहिना तँ पाथरपर पानि दऽ दऽ, रगैड़-रगैड़ सान सेहो चढ़बैए, तहिना सिपाहीकेँ कारीगर सिगरेट पीबाक इच्छा जगौलकैन। जेबीसँ सिगरेट निकालि एकटा अपनो लेलक आ एकटा संगीकेँ–जे गाँजा पीब मस्त भऽ सुनै छल– देलक आ एकटा बलदेवोक हाथमे दैत सलाइ खरड़लक। एक दम पीब धुँआँ फेकैत बाजल-

"अनेरे अहाँ दुनू गोरे मगजमारी करै छी। एते छिलैन करैक कोन

बेगरता अछि। देखबै जे भोजमे दर्जनो समान रहितो खेनिहार एके-दूटापर चोट करैए। परसनिहारक काज छिऐ पुछि-पुछि देनाइ। खेनिहारक मन छिऐ जे खाएब कि नहि। आइ जइ गतिक फल पाबए चलब से केना भेल?"

सिपाहीक प्रश्नसँ बलदेवकेँ दुख नै भेल। संगीक एहसास भेल। जहिना जुआन-जहानकेँ सासुरक रंगोली कथा संगीकेँ सुनबैत आनन्द अबैत तहिना बलदेवकेँ भेल। दुखो तँ दोसरकेँ कहने कमैए। जँ से नइ तँ नोरक सँग कियो किए अपन पति-वियोगक खेरहा सुनबैए। ..बात मन पाड़ैक समए बनबैत बलदेव बाजल-

"भाय साहैब, औझुका खुशी सन जिनगीमे कहियो खुशी नै भेल छल।"

सिपाही-

"से की?"

बलदेव-

"अपन बेथा-कथाकेँ सुननिहार जँ एकोटा भेट जाए तँ ओइसँ नीक की हएत। हृदैक वेदना जँ अहाँ सुनए चाहलौं तँ जिनगीक अन्तिम दिनक अन्तिम पहरमे सीढ़ीक अन्तिम पौदानक बात कहए चाहै छी।"

बलदेवक विचार सुनैक खुशीमे सिपाही विह्वल भऽ गेल। बाजल-

"जहिना भतभोजक अन्तिम विन्यास चीनी होइत तहिना जँ अहाँक मधुर वाणी अपन वाणीक सँग मिलत तखने ने मिश्री बनि पाथर सदृश सक्कत हएत। यएह ने जिनगीक ओर-छोर छी।"

सिपाहीक बात सुनि दोसर सिपाही बाजल-

"भैया, अहाँ भकुआएल मने भकुआ लगा देलिऐ आ भकुआ गेलौं। कनी चिक्कन जकाँ कहियौ।"

पहिल सिपाही बाजल-

"सभ दिन तँ दस किलोक बन्दूक कन्हामे लटकौने रहै छह, तखन फूल सन विचार पाथर सन भारी कोन कान्हमे लटकेबह। ओहिना तँ कान्ह बदैल दुनू कान्ह बदलैत-बदलैत भकभकाइत रहै छह, तखन माटि तँ माटिए छी।"

दोसर सिपाही-

"कनी फरिछा कऽ कहियौ।"

पहिल सिपाही-

"देखहक जहिना ई दुनियाँ माटिक बनल अछि तहिना ने ई देहो माटियेक छी। तँए देह बुझैले माटि बुझए पड़तह। रंग-रंगक माटिसँ ई दुनियाँ बनल अछि। एकर गिनती करब साधारण नहि। जहिना देखबहक जे साते रंग तेते रंग बनि गेल अछि जे डोराक दोकान, जे साइयो रंगक डोरा बेचैए तेकरो दोकानपर सँ दर्जी घुमि जाइ छै जे ऐ रंगक डोरा नइए। तहिना माटियो अछि। एक माटि, थाल बनबैए तँ दोसर चिक्कन। तेतबे नहि, एक पाथर सन सक्कत पत्थर बनबैए तँ दोसर पानि सनक वस्तुकेँ पैदा करैबला लेयर छी, माने जल मिश्रित माटि। अच्छा छोड़ह अपना सभ गप। वेचारा बलदेवक अन्तिम समए गुजैर रहल छै, तँए पहिने एकर सुनह। ई सुनब ओहिना सूनब होएत जहिना सूर्यास्तक समए कोनो दूर जाइत बटोही अनभुआर जगहपर आबि अँटकैक ओरियान करए चाहैत।"

बलदेव दिस तकैत-

"पहिने अहाँ अपन बात विसर्जन करू बलदेव भाय, तखन जे हेतै से हेतइ। जे जीबए से खेलए फागु, जे मरए से लेखे जागु।"

अन्तिम तीर निकलैत जहिना हजारो वाणसँ वेधल तीराएलक हृदए सुखसागरक घाटपर पहुँच हियबैत जे सभसँ सुन्दर जल कोनठाम छै, जैठाम स्नान करब, जाधैर पवित्र पानिसँ पथ नै पखारब ताधैर पएर पिछैड़ते रहत, आ जाधैर पएर पिछड़ैत रहत ताधैर सोझ भऽ चलि नै सकै

छी, जाधैर सोझ भऽ ठाढ़ नै भऽ पएब ताधैर कमलासन देख नै पएब, आ जाधैर कमलासन देख नै पएब ताधैर रंग बदलैत कमल कुमुदनीक सँग भौराकेँ पराग-जालमे ओझरा लाल-उज्जर अँचरा समैट राति भरिक जीवन-रक्षण ओइ मातृ सदृश करैत जइ सदृश छातीमे सटा मैया यशोदा अपन लाड़लाकेँ जिनगीक कथा-बेथा सुना-सुना सुनबैत तहिना अन्तिम तीरसँ तीराएल वा वाणसँ वेधाएल बलदेवक संकल्प-शक्ति जागलै। शर्त लगबैत बलदेव बाजल-

"भैयारी, दुनियाँमे हित-अपेछित, दोस-महिम आदि अनेको तरहक होइत अछि, मुदा से नहि, जिनगी तँ ओकरे ने सार्थक होएत जे संकल्पित हुअए। भलेँ छोट-सँ-छोट संकल्प किए ने हौउ। मनुखक पहिल वाण तँ संकल्पे वाण ने होइत। जँ से नहि तँ जिनगी की। आइ हमरा ओहन विचार-बोध भऽ रहल अछि जे सपनोमे नै सपनाएल छेलौं। ओना सपनो तँ सपने छी। कोनो हवाइ जहाजक साइर करबैत, तँ कोनो मलेरिया मच्छरक मेलामे साइर करैत।"

जहिना कोनो वस्तुक जिज्ञासा एते बढ़ि जाइत जे सभ किछु बिसैर ओकरा पकड़ैले बवाल बनि जाइए तहिना सिपाही बाजल-

"समैपर धियान रखए पड़त। कालक गति केकरो बुते ने रोकाइ छइ। तँए अपनाकेँ ओइमे समावेश करू।"

जहिना भोजक वारीक चँगेरामे खाजा रखि एकटा हाथमे नेने पंचक आगूमे आग्रह करैत, तेहने तगेदा बुझि बलदेव बाजल-

"भैयारी, अहाँ तँ भाइक सँग अबैत ओ यार छी, तँए संकल्प बुझू जे झूठ नै कहै छी। ई बात आइ बुझै छी अनकर मेहनतकेँ तागैतक बलपर लूटैत-चोरबैत एलौं। जेकर चोरौलिऐ ओहो हमरे सन मनुख दूटा हाथ-पैरबला ने छइ। हम किए छुलिऐ। हमरा ओही दिन फाँसीपर समाज चढ़ा सकै छल आ अपन निअममे सुधार कऽ सकै छल। मुदा से नइ भेल। हम गलती कहाँ केतौ केलौं, गलतीक बाटक जे कर्तव्य छै, वएह ने

केलौं। हम तँ तखन बुझितिऐ जे जखन अपने-टा एहेन रहितौं। से तँ नहि, आगू-पाछू दुनू दिस भरल देखलिऐ...।"

सिपाही-

"भैयारी, एहेन सजा किए भेल, से कहाँ कहलिऐ?"

एक टकसँ दुनू सिपाहीपर नजैर राखि बलदेव टकटकी लगा देखए लगल। जहिना हजारो मील हटि कोनो विचार जन्म लऽ सटि जाइत तहिना सिपाही अपराधीक दूरी मेटा गेल। ने सिपाही किछु बजैत आ ने बलदेव। मुदा ड्यूटीक तीर सिपाहीकेँ लगलै। घड़ी देख बाजल-

"भैयारी, आब सुनैक समए नै पाबि रहल छी।"

समैक अभाव देख बलदेव ओहन कथाकार जकाँ जे जिनगीक बेथाकेँ कथा कहैत। घटना-विशेष तँ ओहनो होइत जइसँ गढ़गर घटना सुननिहार भोगने रहैत। मुदा तँए की हुनकर विचारकेँ विचार नै मानबैन। तँए समाजक वस्तु साहित्य छी। विचार-सुझाव-ले पाठक-श्रोताक दरबज्जा सदैत खुजल रहक चाही। समाधानक अनेको उपाय अछि। तँए जाधैर साहित्य समाजक सचित्र नै बनि, बेकती-चित्र बनैत रहत ताधैर दुनूक बीच विषमत नइ रहए ओहो अनुचित।

बलदेव अपन जिनगीक अन्तिम मोहक बात, अन्तिम मोड़पर आबि बाजल-

"भैयारी, सरकारक विरोधमे हवा उठल। हमहूँ बराहिलगिरी छोड़ि नेता बनि गेलौं। हमरा सबहक जीत भेल। अपनेमे टुटान शुरू भेल। माने सभमे, किसान, वेपारी, वुद्धिजीवी, अपराधीमे टुटान भेल। इलाकामे जाल पसरल छल। बुझबे ने केलिऐ जे नेताक टुटानसँ हमहूँ टुटि गेलौं। ऊपरे-ऊपर अपेछा रहल, भीतरे-भीतर दुश्मनी भऽ गेल। जहिना तीतहा रोगक तीतहो दबाइ होइत आ मीठहो, तहिना टुटानमे फँसि गेलौं। चुनावक समए एलै, दोसरा ऐठाम धन लूटैक योजना बनल। मुदा ई नै बुझलिऐ जे ग्रुपमे ओहनो अछि जे खून करए जाइए। भेलै सएह। खून

केलक कियो आ नाओं लागल हमर। अपनो मन कहैए जे खुनी तँ हम नइ छी, मुदा सोझहामे खून भेल तखन हम केमहर रहिऐ।”

तही बीच दर्जनो तैयार सिपाहीक प्रवेश भेल।

सिपाहीक कफलाकेँ देखते ईहो दुनू सिपाहियो आ बलदेवो चौंक उठल। उठि-उठि सभ ठाढ़ भेल। जहलसँ निकैल सभ सभकेँ देखए लगल।

❍

शब्द संख्या : 10487

कथा लेखन क्रम

1. भैंटक लावा- शब्द संख्या : 3100, 2. बिसाँढ़- शब्द संख्या : 2516, 3. पीरारक फड़- शब्द संख्या : 2064, 4. अनेरुआ बेटा- शब्द संख्या : 3369, 5. दूटा पाइ- शब्द संख्या : 3294, 6. बोनिहारिन मरनी- शब्द संख्या : 3412, 7. हारि◌-जीत- शब्द संख्या : 2373, 8. ठेलाबला- शब्द संख्या : 2572, 9. जीविका- शब्द संख्या : 3655, 10. रिक्साबला- शब्द संख्या : 3963, 11. चुनवाली- शब्द संख्या : 2452,

12. डीहक बटबारा- शब्द संख्या : 4789, 13. भैयारी- शब्द संख्या : 4026, 14. बहिन- शब्द संख्या : 2688,15. घरदेखिया- शब्द संख्या : 4021, 16. पछताबा- शब्द संख्या : 2663, 17. डाक्टर हेमन्त- शब्द संख्या : 4407, 18. बाबी- शब्द संख्या : 2167 19. कामिनी- शब्द संख्या : 2289, 20. स्रष्टाक समग्र रचना- शब्द संख्या : 137, 21. प्रतिभा- शब्द संख्या : 154, 22. मर्म- शब्द संख्या : 142, 23. अधखरूआ- शब्द संख्या : 255, 24. समैयक बेरबादी- शब्द संख्या : 213, 25. पहिने तप तखनि ढलिहैं- शब्द संख्या : 084, 26. खलीफा उमरक सिनेह- शब्द संख्या : 165, 27. जखने जागी तखने परात- शब्द संख्या : 103, 28. अस्तित्वक समाप्ति- शब्द संख्या : 218, 29. खजाना- शब्द संख्या : 388, 30. उग्रघारा- शब्द संख्या : 328, 31 बेवहारिक- शब्द संख्या : 218, 32. समर्पण- शब्द संख्या : 149, 33 उत्थान-पतन- शब्द संख्या : 138, 34. देवता- शब्द संख्या : 232, 35. पाप आ पुण्य- शब्द संख्या : 218, 36. परख- शब्द संख्या : 129, 37. आलसी- शब्द संख्या : 136, 38. प्रेम- शब्द संख्या : 293, 39. हैरियट स्टो- शब्द संख्या : 137, 40. बुझैक ढंग- शब्द संख्या : 142, 41. श्रमिकक इज्जत- शब्द संख्या : 093, 42. वंश- शब्द संख्या : 074, 43. तियाग- शब्द संख्या : 145, 44. सद्विचार- शब्द संख्या : 184, 45. साहस- शब्द संख्या : 103, 46. बरदास- शब्द संख्या : 133, 47. भूल- शब्द संख्या : 139, 48. धैर्य- शब्द संख्या : 099, 49. मनुखक मूल्य-

शब्द संख्या : 099, 50. मदति नै चाही- शब्द संख्या : 209, 51. मेहनतिक दरद- शब्द संख्या : 281, 52. मैक्सिम गोर्की- शब्द संख्या : 146, 53. मूलधन- शब्द संख्या : 174, 54. कपटी मित- शब्द संख्या : 281, 55. भीख- शब्द संख्या : 118, 56. भगवान- शब्द संख्या : 098, 57. एकाग्रचित- शब्द संख्या : 261, 58. सीखैक जिज्ञासा- शब्द संख्या : 101, 59. अनुभव- शब्द संख्या : 092, 60. आसिरवादक विरोध- शब्द संख्या : 088, 61. धर्मक असल रूप- शब्द संख्या : 197, 62. सौन्दर्य- शब्द संख्या : 138, 63. स्तब्ध- शब्द संख्या : 257, 64. एकता- शब्द संख्या : 236, 65. विधवा बिआह- शब्द संख्या : 176, 66. देश सेवाक व्रत- शब्द संख्या : 134, 67. आत्मबल- 1- शब्द संख्या : 110, 68. स्वाभिमान- शब्द संख्या : 121, 69. कलंक- शब्द संख्या : 429, 70. बुलकी- शब्द संख्या : 211, 71. भद्रपुरुष- शब्द संख्या : 173, 72. झूठ नै बाजब- शब्द संख्या : 103, 73. आर्दश माए- शब्द संख्या : 097, 74. नारी सम्मान- शब्द संख्या : 100, 75. अनुशासन- शब्द संख्या : 190, 76. सादा जिनगी- शब्द संख्या : 127, 77. विचारक उदय- शब्द संख्या : 072, 78. पुष्ट इकाइसँ समर्थराष्ट बनैत- शब्द संख्या : 102, 79. डर नै करी- शब्द संख्या : 119, 80. आसिरवाद उलैट गेल- शब्द संख्या : 223, 81. रत्न गमेवाक दुख- शब्द संख्या : 226, 82. निशाँ- शब्द संख्या : 194, 83. सामना- शब्द संख्या : 124, 84. शिष्टाचार- शब्द संख्या : 171, 85. ठक- शब्द संख्या : 115, 86. पत्नीक अधिकार- शब्द संख्या : 128, 87. शिनीची सिनेह- शब्द संख्या : 211, 88. सिखबैक उपय- शब्द संख्या : 171, 89. कर्तव्यपरायन सुगा- शब्द संख्या : 171, 90. तस्वीर- शब्द संख्या : 134, 91. मितक प्रयोजन- शब्द संख्या : 359, 92. स्वार्थपूर्ण विचार- शब्द संख्या : 121, 93. संगीक महत- शब्द संख्या : 130, 94. उपहास- शब्द संख्या : 196, 95. महादान- शब्द संख्या : 176, 96. भाग्यवाद- शब्द संख्या : 171, 97. सद्वृति◌- शब्द संख्या : 150, 98. आश्रम नहि सोभाव बदली- शब्द संख्या : 281, 99. पुरुषार्थ- शब्द संख्या : 255, 100. नैष्ठिक सुधन्वा- शब्द संख्या : 274, 101. सद्गृहस्त- शब्द संख्या : 195, 102. सद्भाव- शब्द संख्या : 134, 103. आलस्य वनाम पिशाच- शब्द संख्या : 302, 104. स्वर्ग आ नर्क- शब्द संख्या : 265, 105. यथार्थक बोध- शब्द संख्या : 115, 106. विद्वताक मद- शब्द संख्या : 165, 107. अनन्त- शब्द संख्या : 128, 108. हँसैत लहास- शब्द संख्या : 184, 109. अनगढ़ चेतना- शब्द संख्या : 162, 110. सत्य विद्या- शब्द संख्या : 108, 111. समता- शब्द संख्या : 165, 112. जेते चोट तेते सक्कत- शब्द संख्या : 116, 113. परिष्कार- शब्द संख्या : 198, 114. कथनी नै करनी- शब्द संख्या : 176, 115. शालीनता- शब्द संख्या : 157, 116. मजूरी- शब्द संख्या : 140, 117. जीवन यात्रा- शब्द संख्या : 145, 118. ज्योति◌- शब्द संख्या : 081, 119. पवनक विवेक- शब्द

संख्या : 180, 120. आत्मबल-2- शब्द संख्या : 105, 121. खुदीराम बोस- शब्द संख्या : 172, 122. शिष्यकेँ शिक्षेटा नै परीक्षो- शब्द संख्या : 187, 123. लौह पुरुष- शब्द संख्या : 124, 124. जंग लगल- शब्द संख्या : 150, 125. जीवकक परीछा- शब्द संख्या : 117, 126. तप- शब्द संख्या : 162, 127. उल्टा अर्थ- शब्द संख्या : 203, 128. जाति नहि पानि- शब्द संख्या : 142, 129. ऊँच-नीच- शब्द संख्या : 206, 130. पागलखाना- शब्द संख्या : 223, 131. दोहरी मारि◌- शब्द संख्या : 1368, 132. केना जीब? - शब्द संख्या : 1039, 133. नवान- शब्द संख्या : 2306, 134. तिलासंक्रान्तिक लाइ- शब्द संख्या : 2056, 135. भाइक सिनेह- शब्द संख्या : 1201, 136. प्रेमी- शब्द संख्या : 2526, 137. बपौती सम्पैत- शब्द संख्या : 2350, 138. डंका- शब्द संख्या : 2401, 139. संगी- शब्द संख्या : 1849, 140. ठकहरबा- शब्द संख्या : 2349, 141. अतहतह- शब्द संख्या : 2486, 142. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या : 3057, 143. ऑपरेशन- शब्द संख्या : 1616, 144. धर्मनाथ- शब्द संख्या : 1968, 145. सरोजनी- शब्द संख्या : 1810, 146. सुभद्रा- शब्द संख्या : 1922, 147. सोनमाकाका- शब्द संख्या : 1572, 148. दोती बिआह- शब्द संख्या : 1822, 149. पड़ाइन- शब्द संख्या : 1970, 150. केतौ नै- शब्द संख्या : 1203, 151. बिहरन- शब्द संख्या : 3300, 152. मायराम- शब्द संख्या : 2095, 153. गोहिक शिकार- शब्द संख्या : 2152, 154. मातृभूमि- शब्द संख्या : 1048, 155. भबडाह- शब्द संख्या : 2105, 156. परिवारक प्रतिष्ठा- शब्द संख्या : 1974, 157. फॉगु- शब्द संख्या : 2134, 158. लफ साग- शब्द संख्या : 1203, 159. तिलकोरक तरुआ- शब्द संख्या : 1835, 160. एकोटा ने- शब्द संख्या : 1149, 161. धोतीक मान- शब्द संख्या : 480, 162. साझी- शब्द संख्या : 998, 163. सतभैंया पोखैर- शब्द संख्या : 2999, 164. न्याय चाही- शब्द संख्या : 1311, 165. पनियाहा दूध- शब्द संख्या : 2152, 166. कर्ज- शब्द संख्या : 2949, 167. परदेशी बेटी- शब्द संख्या : 2515, 168. मान- शब्द संख्या : 648, 169. मनोरथ- शब्द संख्या : 1161, 170. कियो ने- शब्द संख्या : 3780, 171. सूदि भरना- शब्द संख्या : 922, 172. जन्मतिथि- शब्द संख्या : 2370, 173. इमानदार घूसखोर- शब्द संख्या : 2267, 174. पटियाबला- शब्द संख्या : 2395, 175. सनेस- शब्द संख्या : 1284, 176. उलबा चाउर- शब्द संख्या : 2630, 177. बलजोर- शब्द संख्या : 2410, 178. बेटी हम अपराधी छी- शब्द संख्या : 3341, 179. बगबाइर◌- शब्द संख्या : 1900, 180. मुइलो बिसेबैन- शब्द संख्या : 4288, 181. सड़ल दारीम- शब्द संख्या : 2577, 182. चुप्पा पाल- शब्द संख्या : 2572, 183. मइटुग्गर- शब्द संख्या : 9811, 184. शम्भुदास- शब्द संख्या : 9674, 185. फाँसी- शब्द संख्या : 10487, 186. कचोट- शब्द संख्या : 315, 187. काँच सूत- शब्द संख्या : 384, 188. बुधनी दादी-

शब्द संख्या : 267, 189. खिलतोड़- शब्द संख्या : 395, 190. मुँह-कान- शब्द संख्या : 213, 191. अनदिना- शब्द संख्या : 307, 192. अपन काज- शब्द संख्या : 367, 193. दूरी- शब्द संख्या : 265, 194. पुरनी भौजी- शब्द संख्या : 117, 195. छुटि गेल- शब्द संख्या : 111, 196. काल्हि दिन- शब्द संख्या : 151, 197. अप्पन हारि- शब्द संख्या : 286, 198. कनफुसकी- शब्द संख्या : 132, 199. मुँहक बात मुहेँमे- शब्द संख्या : 134, 200. कनीटा बात- शब्द संख्या : 101, 201. गति‍-गुद्दा- शब्द संख्या : 250, 202. बिसवास- शब्द संख्या : 316, 203. कचहरिया भाय- शब्द संख्या : 270, 204. गोहाइर- शब्द संख्या : 432, 205. शिवजीक डाक-बाक्- शब्द संख्या : 070, 206. सोग- शब्द संख्या : 341, 207. पनचैती- शब्द संख्या : 195, 208. कनमन- शब्द संख्या : 323, 209. अजाति- शब्द संख्या : 090, 210. पटोर- शब्द संख्या : 409, 211. फुसियाह- शब्द संख्या : 311, 212. गति‍-मुक्ति- शब्द संख्या : 238, 213. चौकीदारी- शब्द संख्या : 442, 214. झगड़ाउ-झोटैला- शब्द संख्या : 243, 215. घबाह ट्यूशन- शब्द संख्या : 244, 216. दादी-माँ- शब्द संख्या : 411, 217. पटोटन- शब्द संख्या : 350, 218. मुसाइ पण्डित- शब्द संख्या : 568, 219. भरमे-सरम- शब्द संख्या : 233, 220. देखल दिन- शब्द संख्या : 441, 221. फज्झैत- शब्द संख्या : 401, 222. अकास दीप- शब्द संख्या : 235, 223. बुधि‍-बधिया- शब्द संख्या : 267, 224. पहाड़क बेथा- शब्द संख्या : 216, 225. उमकी- शब्द संख्या : 321, 226. बजन्ता-बुझन्ता- शब्द संख्या : 147, 227. चर्मरोग- शब्द संख्या : 571, 228. शंका- शब्द संख्या : 325, 229. ओसार- शब्द संख्या : 210, 230. छोटका काका- शब्द संख्या : 398, 231. सीमा-सरहद- शब्द संख्या : 200, 232. रमैत जोगी बोहैत पानि- शब्द संख्या : 253, 233. गंजन- शब्द संख्या : 178, 234. सजए- शब्द संख्या : 090, 235. घटक बाबा- शब्द संख्या : 335, 236. आने जकाँ- शब्द संख्या : 046, 237. दान-दछिना- शब्द संख्या : 151, 238. उड़हैड़- शब्द संख्या : 504, 239. मत्हानि- शब्द संख्या : 258, 240. मेकचो- शब्द संख्या : 216, 241. झुटका विदाइ- शब्द संख्या : 359, 242. मुँहक खतियान- शब्द संख्या : 278, 243. कोसलिया- शब्द संख्या : 234, 244. हूसि गेल- शब्द संख्या : 204, 245. पोखला कटहर- शब्द संख्या : 154, 246. सरही सौबजा- शब्द संख्या : 269, 247. तेरहो करम- शब्द संख्या : 322, 248. डुमैत जिनगी- शब्द संख्या : 286, 249. चोर-सिपाही- शब्द संख्या : 202, 250. दूधबला- शब्द संख्या : 275, 251. टाइपिस्ट- शब्द संख्या : 263, 252. समदाही- शब्द संख्या : 295, 253. बुढ़िया दादी- शब्द संख्या : 332, 254. एक धाप जमीन- शब्द संख्या : 2505, 255. ओझरी- शब्द संख्या : 1970, 256. मुसहैन- शब्द संख्या : 2742, 257. केलवाड़ी- शब्द संख्या : 2685, 258.

स्वरोजगार- शब्द संख्या : 2388, 259. घूर- शब्द संख्या : 2812, 260. कनियाँ-पुतरा- शब्द संख्या : 2335, 261. वारंट- शब्द संख्या : 1638, 262. गामक मुँह फेर देखब- शब्द संख्या : 3073, 263. पेटगनाह- शब्द संख्या : 236, 264. जनक हाथे खेती- शब्द संख्या : 238,

265. पाइक मोल- शब्द संख्या : 2412, तिथि : 22 दिसम्बर 2013
266. चोरूक्का झगड़ा- शब्द संख्या : 538, तिथि : 24 दिसम्बर 2013
267. अपसोच- शब्द संख्या : 548, तिथि : 26 दिसम्बर 2013
268. पतझाड़- शब्द संख्या : 2587, तिथि : 31 दिसम्बर 2013
269. झीसीक मजा- शब्द संख्या : 453, तिथि : 1 जनवरी 2014
270. मति-गति- शब्द संख्या : 1807, तिथि : 07 जनवरी 2014
271. अपन सन मुँह- शब्द संख्या : 5696, तिथि : 25 जनवरी 2014
272. रिजल्ट- शब्द संख्या : 2343, तिथि : 16 जनवरी 2014
273. सुमति- शब्द संख्या : 3072, तिथि : 30 जनवरी 2014
274. फेर पुछबैन- शब्द संख्या : 346, तिथि : 31 जनवरी 2014
275. माघक घूर- शब्द संख्या : 1683, तिथि : 06 फरवरी 2014
276. खर्च- शब्द संख्या : 330, तिथि : 07 फरवरी 2014
277. अखरा-दोखरा- शब्द संख्या : 342, तिथि : 10 फरवरी 2014
278. पेटगनाह- शब्द संख्या : 593, तिथि : 14 फरवरी 2014
279. बड़की माता- शब्द संख्या : 1224, तिथि : 18 फरवरी 2014
280. धरती-अकास- शब्द संख्या : 184 , तिथि : 19 फरवरी 2014
281. बकठाँइ- शब्द संख्या : 883, तिथि : 24 फरवरी 2014
282. चैन-बेचैन- शब्द संख्या : 936, तिथि : 09 मार्च 2014
283. हथियाएल खुरपी- शब्द संख्या : 645 , तिथि : 11 मार्च 2014
284. अलपुरिया बरी- शब्द संख्या : 287, तिथि : 12 मार्च 2014
285. नीक बोल- शब्द संख्या : 565, तिथि : 13 मार्च 2014
286. सुआद- शब्द संख्या : 624, तिथि : 14 मार्च 2014
287. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या : 690, तिथि : 19 मार्च 2014
288. भौंटक गहमी- शब्द संख्या : 508, तिथि : 24 मार्च 2014

289. भँसैत नाह- शब्द संख्या : 597, तिथि : 26 मार्च 2014
290. पान पराग- शब्द संख्या : 1692, तिथि : 29 मार्च 2014
291. सिरमा- शब्द संख्या : 760, तिथि : 31 मार्च 2014
292. नौमीक हकार- शब्द संख्या : 1119, तिथि : 03 अप्रैल 2014
293. फोंक मकड़- शब्द संख्या : 1744, तिथि : 10 अप्रैल 2014
294. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1252, तिथि : 14 अप्रैल 2014
295. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या : 326, तिथि : 16 अप्रैल 2014
296. खोंटकर्मा- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 19 अप्रैल 2014
297. किछु ने- शब्द संख्या : 503, तिथि : 22 अप्रैल 2014
298. झकास- शब्द संख्या : 1589, तिथि : 26 अप्रैल 2014
299. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या : 2919, तिथि : 01 मई 2014
300. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या : 611, तिथि : 04 मई 2014
301. अर्जुन रोग- शब्द संख्या : 1003, तिथि : 7 मई 2014
302. गरदैन कट्टा बेटा- शब्द संख्या : 575, तिथि : 10 मई 2014
303. नैहराक धाड़- शब्द संख्या : 885, तिथि : 14 मई 2014
304. अवाक- शब्द संख्या : 1041, तिथि : 17 मई 2014
305. पोखरिक सैरात- शब्द संख्या : 923, तिथि : 20 मई 2014
306. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या : 409, तिथि : 22 मई 2014
307. धरम काँट- शब्द संख्या : 395, तिथि : 23 मई 2014
308. पल भरि- शब्द संख्या : 1116, तिथि : 24 मई 2014
309. किरदानी- शब्द संख्या : 5309, तिथि : 14 जुन 2014
310. सगहा- शब्द संख्या : 2860, तिथि : 22 जुन 2014
311. अकाल- शब्द संख्या : 1238, तिथि : 24 जुन 2014
312. उझट बात- शब्द संख्या : 1152, तिथि : 26 जुन 2014
313. कर्जखौक- शब्द संख्या : 1175, तिथि : 2 जुलाई 2014
314. उनटन- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 6 जुलाई 2014
315. रेहना चाची- शब्द संख्या : 1307, तिथि : 9 जुलाई 2014
316. बुधनी दादी- शब्द संख्या : 1256, तिथि : 11 जुलाई 2014

317. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या : 1229, तिथि : 14 जुलाई 2014
318. हारि- शब्द संख्या : 1240, तिथि : 16 जुलाई 2014
319. सोनाक सुइत- शब्द संख्या : 1135, तिथि : 17 जुलाई 2014
320. मरूभूमि‍- शब्द संख्या : 1214, तिथि : 20 जुलाई 2014
321. असगरे- शब्द संख्या : 1557, तिथि : 24 जुलाई 2014
322. पुरनी नानी- शब्द संख्या : 1304, तिथि : 27 जुलाई 2014
323. कटा-कटी- शब्द संख्या : 1140, तिथि : 30 जुलाई 2014
324. केते लग केते दूर- शब्द संख्या : 1206, तिथि : 3 अगस्त 2014
325. गलती अपने भेल- शब्द संख्या :3386, तिथि : 06 अगस्त 2014
326. चोरक चोरबती- शब्द संख्या : 884, तिथि : 6 अगस्त 2014
327. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 10 अगस्त 2014
328. सजल स्मृति- शब्द संख्या : 2363, तिथि : 14 अगस्त 2014
329. सनेस- शब्द संख्या : 2654, तिथि : 16 अगस्त 2014
330. सए कच्छे- शब्द संख्या : 488, तिथि : 19 अगस्त 2014
331. एक मुठी घास- शब्द संख्या : 411, तिथि : 21 अगस्त 2014
332. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या : 318, तिथि : 24 अगस्त 2014
333. पुरस्कार- शब्द संख्या : 2414, तिथि : 24 अगस्त 2014
334. गावीस मोइस- शब्द संख्या : 687, तिथि : 29 अगस्त 2014
335. मनकमना- शब्द संख्या : 6110, तिथि : 19 सितम्बर 2014
336. घरवास- शब्द संख्या : 4879, तिथि : 26 सितम्बर 2014
337. समधीन- शब्द संख्या : 6098, तिथि : 04 अक्टुबर 2014
338. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या : 1616, तिथि : 7 अक्टुबर 2014
339. कलम हानि कऽ- शब्द संख्या : 2226, तिथि : 10 अक्टुबर 2014
340. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या : 1184, तिथि : 14 अक्टुबर 2014
341. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या : 2596, तिथि : 20 अक्टुबर 2014
342. जितिया पाबैन- शब्द संख्या : 3706, तिथि : 24 अक्टुबर 2014
343. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या : 3690, तिथि : 30 अक्टुबर 2014
344. भैयारी हक- शब्द संख्या : 3131, तिथि : 4 नवम्बर 2014

345. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या : 3335, तिथि : 13 नवम्बर 2014
346. खुदियाएल- शब्द संख्या : 2887, तिथि : 17 नवम्बर 2014
347. खटहा आम- शब्द संख्या : 3515, तिथि : 22 नवम्बर 2014
348. ढकरपेंच- शब्द संख्या : 3759, तिथि : 30 नवम्बर 2014
349. असहाज- शब्द संख्या : 2865, तिथि : 04 दिसम्बर 2014
350. समरथाइक भूत- शब्द संख्या : 3853, तिथि : 07 दिसम्बर 2014
351. विदाइ- शब्द संख्या : 5131, तिथि : 17 दिसम्बर 2014
352. खलओदार- शब्द संख्या : 735, तिथि : 19 दिसम्बर 2014
353. मनुखदेवा- शब्द संख्या : 1027, तिथि : 22 दिसम्बर 2014
354. उमेद- शब्द संख्या : 3643, तिथि : 31 दिसम्बर 2014
355. गलगर भैंस- शब्द संख्या : 3392, तिथि : 4 जनवरी 2015
356. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या : 3328, तिथि : 9 जनवरी 2015
357. सुरता- शब्द संख्या : 3304, तिथि : 15 जनवरी 2015
358. असुध मन- शब्द संख्या : 2353, तिथि : 19 जनवरी 2015
359. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या : 1410, तिथि : 21 जनवरी 2015
360. ठोररंगू- शब्द संख्या : 1531, तिथि : 23 जनवरी 2015
361. लगबे ने कएल- शब्द संख्या : 1449, तिथि : 25 जनवरी 2015
362. उकड़ू समय- शब्द संख्या : 1467, तिथि : 27 जनवरी 2015
363. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या : 1615, तिथि : 29 जनवरी 2015
364. चौरचनक दही- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 31 जनवरी 2015
365. अपन मन अपन धन- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 3 फरवरी 2015
366. टुटली मरैया- शब्द संख्या : 1951, तिथि : 7 फरवरी 2015
367. हकार- तिथि : 11 फरवरी 2015, शब्द संख्या : 1911
368. दहेजुआ गाए- शब्द संख्या : 1908, तिथि : 15 फरवरी 2015
369. मेटाइत जिनगी- शब्द संख्या : 2129, तिथि : 20 फरवरी 2015
370. धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!- शब्द संख्या:1996, तिथि : 23 फरवरी 2015
371. लेहाज- शब्द संख्या : 1906, तिथि : 26 फरवरी 2015
372. विचार हेरा गेल- शब्द संख्या : 1917, तिथि : 1 मार्च 2015

373. ओ दिन- शब्द संख्या : 1782, तिथि : 4 मार्च 2015
374. उरीन- शब्द संख्या : 3235, तिथि : 8 मार्च 2015
375. नहरकन्हा- शब्द संख्या : 1209, तिथि : 11 मार्च 2015
376. बटखौक- शब्द संख्या : 1272, तिथि : 14 मार्च 2015
377. पसेनाक धरम- शब्द संख्या : 1263, तिथि : 16 मार्च 2015
378. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या : 1103, तिथि : 18 मार्च 2015
379. हँसीएमे उड़ि गेलौं- शब्द संख्या : 1243, तिथि : 20 मार्च 2015
380. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या : 1234, तिथि : 23 मार्च 2015
381. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या : 1207, तिथि : 26 मार्च 2015
382. नोकरिहारा- शब्द संख्या : 1146, तिथि : 26 मार्च 2015
383. घसवाहि- शब्द संख्या : 1213, तिथि : 28 मार्च 2015
384. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या : 1319, तिथि : 1 अप्रैल 2015
385. छूआ- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 6 अप्रैल 2015
386. दोसराइत- शब्द संख्या : 1270, तिथि : 9 अप्रैल 2015
387. लछनमान- शब्द संख्या : 1173, तिथि : 13 अप्रैल 2015
388. हमर कोन दोख- शब्द संख्या : 1527, तिथि : 17 अप्रैल 2015
389. मौसी- शब्द संख्या : 1393, तिथि : 21 अप्रैल 2015
390. नटकिया गति- शब्द संख्या : 1313 24 अप्रैल 2015
391. खाए चाहैए- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 27 अप्रैल 2015
392. मधुमाछी- शब्द संख्या : 1892, तिथि : 07 मई 2015
393. दनगर घास- शब्द संख्या : 2775, तिथि : 13 मई 2015
394. सझिया खेती- शब्द संख्या : 3135, तिथि : 23 मई 2015
395. मुफतिया माल- शब्द संख्या : 3231, तिथि : 29 मई 2015
396. मथाहाथ- शब्द संख्या : 2923, तिथि : 02 जून 2015
397. पहपैट- शब्द संख्या : 1369, तिथि : 05 जून 2015
398. इजोरिया राति- शब्द संख्या : 1512, तिथि : 07 जून 2015
399. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या : 2010, तिथि : 12 जून 2015
400. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या : 605, तिथि : 14 जून 2015

401. डकरा हाल- शब्द संख्या : 2529, तिथि : 17 जून 2015
402. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या : 2062, तिथि : 21 जून 2015
403. गठूलाक गारि- शब्द संख्या : 1532, तिथि : 25 जून 2015
404. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या : 1983, तिथि : 29 जून 2015
405. गामक बान्ह- शब्द संख्या : 2437, तिथि : 03 जुलाई 2015
406. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या : 2443, तिथि : 08 जुलाई 2015
407. सीरक गाछ- शब्द संख्या : 3071, तिथि : 13 जुलाई 2015
408. हरदीक हरदा- शब्द संख्या : 2924, तिथि : 19 जुलाई 2015
409. जाम- शब्द संख्या : 3355, तिथि : 29 जुलाई 2015
410. गण्डा- शब्द संख्या : 2304, तिथि : 5 अगस्त 2015
411. हाथी आ मूस- शब्द संख्या : 3016, तिथि : 11 अगस्त 2015
412. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या : 3625, तिथि : 17 अगस्त 2015
413. फलहार- शब्द संख्या : 2350, तिथि : 25 अगस्त 2015
414. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या : 2697, तिथि : 31 अगस्त 2015
415. क्रियाशील- शब्द संख्या : 3395, तिथि : 13 सितम्बर 2015
416. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या : 2927, तिथि : 23 सितम्बर 2015
417. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या : 1025, तिथि : 29 सितम्बर 2015
418. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या : 825, तिथि : 5 अक्टूबर 2015
419. गजपट खेती- शब्द संख्या : 1171, तिथि : 8 अक्टूबर 2015
420. समुद्री विद्या- शब्द संख्या : 787, तिथि : 11 अक्टूबर 2015
421. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या : 959, तिथि : 12 अक्टूबर 2015
422. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या : 679, तिथि : 13 अक्टूबर 2015
423. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या : 574, तिथि : 15 अक्टूबर 2015
424. धोखा- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 17 अक्टूबर 2015
425. खसैत गाछ- शब्द संख्या : 2234, तिथि : 22 अक्टूबर 2015
426. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या : 2099, तिथि : 01 नवम्बर 2015
427. प्रिगर शत्रु- शब्द संख्या : 1087, तिथि : 26 दिसम्बर 2015
428. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या : 1172, तिथि : 31 दिसम्बर 2015

429. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या : 2616, तिथि : 4 जनवरी 2016
430. एक घोंट पानि- शब्द संख्या : 2516, तिथि : 10 जनवरी 2016
431. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द : 3371, तिथि : 16 जनवरी 2016
432. माइक वचन- शब्द संख्या : 2999, तिथि : 21 जनवरी 2016
433. पान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 26 जनवरी 2016
434. आजुक जिनगीक आइ परीछा- शब्द : 1676, तिथि : 01 फरवरी 2016
435. शुभचिन्तक- शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016
436. करिछौन लाली- शब्द संख्या : 3000, तिथि : 13 फरवरी 2016
437. मोहरा- शब्द संख्या : 1223, तिथि : 15 फरवरी 2016
438. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या : 1187, तिथि : 17 फरवरी 2016
439. जेना हाथी रही- शब्द संख्या : 1245, तिथि : 20 फरवरी 2016
440. कठफल- शब्द संख्या : 1294, तिथि : 22 फरवरी 2016
441. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या : 1680, तिथि : 25 फरवरी 2016
442. झूठे- शब्द संख्या : 1969, तिथि : 29 फरवरी 2016
443. लाही- शब्द संख्या : 2335, तिथि : 3 मार्च 2016
444. परतीहा खढ़- शब्द संख्या : 1667, तिथि : 6 मार्च 2016
445. उजगी- शब्द संख्या : 1079, तिथि : 9 मार्च 2016
446. हाथक जिनगी- शब्द संख्या : 983, तिथि : 14 मार्च 2016
447. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या : 2000, तिथि : 20 मार्च 2016
448. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या : 2103, तिथि : 25 मार्च 2016
449. अपने केलहा- शब्द संख्या : 2314, तिथि : 31 मार्च 2016
450. बत्तु- शब्द संख्या : 2244, तिथि : 10 अप्रैल 2016
451. कछमछी- शब्द संख्या : 2322, तिथि : 15 अप्रैल 2016
452. गैत-वीध- शब्द संख्या : 2424, तिथि : 21 अप्रैल 2016
453. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या : 2089, तिथि : 29 अप्रैल 2016
454. एक दिन- शब्द संख्या : 2063, तिथि : 5 मई 2016
455. दुधियाएल बरखा- शब्द संख्या : 2059, तिथि : 11 मई 2016
456. गलफूलू- शब्द संख्या : 2117, तिथि : 14 मई 2016

457. बिटगरहा- शब्द संख्या : 1992, तिथि : 19 मई 2016
458. आब नइ आगि लगैए?- शब्द संख्या : 1962, तिथि : 23 मई 2016
459. कटौज- शब्द संख्या : 1977, तिथि : 28 मई 2016
460. बाल बोध- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 2 जून 2016
461. डभियाएल गाम- शब्द संख्या : 2483, तिथि : 6 जून 2016
462. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या : 2189, तिथि : 11 जून 2016
463. मरियाएल मन- शब्द संख्या : 1921, तिथि : 17 जून 2016
464. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या : 2900, तिथि : 23 जून 2016
465. कन्हा भँट्टा- शब्द संख्या : 2539, तिथि : 30 जून 2016
466. जिगेसा- शब्द संख्या : 3977, तिथि : 8 जुलाई 2016
467. गुलेती दास- शब्द संख्या : 5993, तिथि : 12 अगस्त 2016
468. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या : 2359, तिथि : 17 अगस्त 2016
469. दुरकाल- शब्द संख्या : 3189, तिथि : 22 अगस्त 2016
470. कलंक- शब्द संख्या : 2763, तिथि : 27 अगस्त 2016
471. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या : 2077, तिथि : 31 अगस्त 2016
472. बगदल गाम- शब्द संख्या : 2405, तिथि : 6 सितम्बर 2016
473. बत्तीसोअना- शब्द संख्या : 890, तिथि : 8 सितम्बर 2016
474. कचहरिया रोग- शब्द संख्या : 1651, तिथि : 12 सितम्बर 2016
475. दिन घटि गेल- शब्द संख्या : 2425, तिथि : 5 अक्टुबर 2016
476. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या : 2352, तिथि : 11 अक्टुबर 2016
477. गामक सुरता- शब्द संख्या : 2265, तिथि : 19 अक्टुबर 2016
478. खतियाएल घर- शब्द संख्या : 2057, तिथि : 09 नवम्बर 2016
479. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या : 1889, तिथि : 15 नवम्बर 2016
480. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या : 2233, तिथि : 20 नवम्बर 2016
481. देव उठान- शब्द संख्या : 2297, तिथि : 24 नवम्बर 2016
482. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या : 2397, तिथि : 28 नवम्बर 2016
483. भोरक सपना- शब्द संख्या : 1013, तिथि : 1 दिसम्बर 2016
484. बालमण्डली- शब्द संख्या : 1288, तिथि : 6 दिसम्बर 2016

485. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या : 1053, तिथि : 09 दिसम्बर 2016
486. माघक चाह- शब्द संख्या : 1330, तिथि : 12 दिसम्बर 2016
487. भँसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या : 1306, तिथि : 15 दिसम्बर 2016
488. माघक घूर- शब्द संख्या : 1812, तिथि : 18 दिसम्बर 2016
489. पाही पट्टी- शब्द संख्या : 2370, तिथि : 25 दिसम्बर 2016
490. बीरांगना- शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016
491. स्मृति शेष- शब्द संख्या : 1941, तिथि : 6 जनवरी 2017
492. मनकेँ फुसलबै छी- शब्द संख्या : 1023, तिथि : 10 जनवरी 2017
493. चहकल विचार- शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017
494. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017
495. बीरांगना : 2- शब्द संख्या : 1992, 29 जनवरी 2017
496. पकिया चेला- शब्द संख्या : 1976, तिथि : 06 फरवरी 2017
497. कान फुटल कप- शब्द संख्या : 1595, तिथि : 09 फरवरी 2017
498. वर्थ डे- शब्द संख्या : 2535, तिथि : 16 फरवरी 2017
499. जानक मोल- शब्द संख्या : 2782, तिथि : 23 फरवरी 2017
500. गामक कटान- शब्द संख्या : 3115, तिथि : 01 मार्च 2017
501. कर्ज- शब्द संख्या : 3252, तिथि : 07 मार्च 2017
502. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या : 2621, तिथि : 11 मार्च 2017
503. अपन गारि अपन दुआरि- शब्द संख्या : 2546, तिथि : 17 मार्च 2017
504. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या : 2735, तिथि : 26 मार्च 2017
505. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 31 मार्च 2017
506. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या : 2619, तिथि : 7 अप्रैल 2017
507. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या : 2100, तिथि : 11 अप्रैल 2017
508. जारैनक दुख मेटा गेल- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 17 अप्रैल 2017
509. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या : 3775, तिथि : 26 अप्रैल 2017
510. हरवाहि- शब्द संख्या : 2784, तिथि : मजदूर दिवस (01 मई) 2017
511. क्रान्तियोग- शब्द संख्या : 3432, तिथि : 13 मई 2017
512. उचितवक्ता- शब्द संख्या : 3461, तिथि : 19 मई 2017

513. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या : 3607, तिथि : 24 मई 2017
514. विघटन- शब्द संख्या : 3419, तिथि : 31 मई 2017
515. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या : 3456, तिथि : 06 जून 2017
516. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या : 2420, तिथि : 11 जून 2017
517. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या : 2465, तिथि : 23 जून 2017
518. मर्माहत- शब्द संख्या : 2509, तिथि : 29 जून 2017
519. गुणहीन- शब्द संख्या : 3138, तिथि : 6 जुलाई 2017
520. समझौता- शब्द संख्या : 2280, तिथि : 13 जुलाई 2017
521. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या : 2696, तिथि : 19 जुलाई 2017
522. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या : 2841, तिथि : 25 जुलाई 2017
523. नमहर फेरा- शब्द संख्या : 2902, तिथि : 29 जुलाई 2017
524. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 02 अगस्त 2017
525. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या : 2279, तिथि : 06 अगस्त 2017
526. बेटपन- शब्द संख्या : 3054, तिथि : 11 अगस्त 2017
527. छातीक हार- शब्द संख्या : 2291, तिथि : 16 अगस्त 2017
528. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या : 2986, तिथि : 22 अगस्त 2017
529. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 05 सितम्बर 2017
530. पुरान साड़ी- शब्द संख्या : शब्द संख्या : 2453, तिथि : 24 अक्टुबर 2017
531. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या : 2482, तिथि : 28 अक्टुबर 2017
532. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या : 2925, तिथि : 01 नवम्बर 2017
533. किछु ने फुरैए- शब्द संख्या : 2095, तिथि : 12 नवम्बर 2017
534. महिरम- शब्द संख्या : 1984, तिथि : 20 नवम्बर 2017
535. बेर परहक भदवा- शब्द संख्या : 2726, तिथि : 29 नवम्बर 2017
536. सड़क-कातक खेत- शब्द संख्या : 2722, तिथि : 10 दिसम्बर 2017
537. दोहरी हाक- शब्द संख्या : 2700, तिथि : 21 दिसम्बर 2017
538. पाइक इज्जत- शब्द संख्या : 1999, तिथि : 05 जनवरी 2018
539. सेहन्ता- शब्द संख्या : 2014, तिथि : 11 जनवरी 2018
540. राक्षसक झड़- शब्द संख्या : 1649, तिथि : 15 जनवरी 2018

541. बेरपर- शब्द संख्या : 2585, तिथि : 19 जनवरी 2018
542. केकरा-ले केलौं- शब्द संख्या : 2649, तिथि : 23 जनवरी 2018
543. स्वाभिमानी जिनगी- शब्द संख्या : 2767, तिथि : 28 जनवरी 2018
544. बाबाक बाग-बगिया- शब्द संख्या : 3089, तिथि : 3 फरवरी 2018
545. अब-तब- शब्द संख्या : 2076, तिथि : 7 फरवरी 2018
546. अगिलह- शब्द संख्या : 2472, तिथि : 11 फरवरी 2018
547. कुकुरपन- शब्द संख्या : 2229, तिथि : 28 फरवरी 2018
548. हेराएल जिनगी- शब्द संख्या : 3107, तिथि : 5 मार्च 2018
549. आशापर पानि फेर गेल- शब्द संख्या : 2447, तिथि : 9 मार्च 2018
550. देखल दिन- शब्द संख्या : 2582, तिथि : 27 मार्च 2018
551. इज्जत उतैर गेल- शब्द संख्या : 1904, तिथि : 30 मार्च 2018
552. संकट- शब्द संख्या : 2593, तिथि : 4 अप्रैल 2018
553. एकतीस मार्च- शब्द संख्या : 2816, तिथि : 10 अप्रैल 2018
554. गेल माघ उनतीस दिन बाँकी- शब्द संख्या : 2391, तिथि : 15 अप्रैल 2018
555. बापक चलैत- शब्द संख्या : 2606, तिथि : 20 अप्रैल 2018
556. बेटाक चलैत- शब्द संख्या : 2889, तिथि : 25 अप्रैल 2018
557. प्रवल इच्छा- (जारी...)



जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : 5 जुलाई 1947, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **सम्मान/पुरस्कार :** 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत। **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...।

प्रकाशित पोथी : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन-उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता-बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 65. दोहरी हाक, 66. सुभिमानी जिनगी- लघु कथा संग्रह।

सम्पर्क- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी, पिन- 847410, बिहार। **मो.** 9931654742

E-mail: jpmandal.berma@gmail.com



पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

दीर्घ कथा संग्रह

जगदीश प्रसाद मण्डल

रटनी खढ़



रटनी खढ़

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलबाड़ी लगौनिहार
तथा
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित

कथाक सत्तैर-

ISBN : 978-93-87675-22-3

दाम : ₹ 251/-

तेसर संस्करण : 2017

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : दी साहु प्रिन्टिग प्रेस. निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

RATNI KHARDH
Collection of Long Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal

किरदानी

रामरूप प्रसाद जे छह मास पहिनहि लेबर-कमिश्नरक पदसँ सेवा-निवृत भेल छला, गाम एला।

नव लोकक आगमनसँ गाममे चहल-पहल शुरू भेल। जेते मुँह तेते बोल, कियो 'बौआ भाय' तँ कियो 'बौआ काका' तँ कियो 'लाल बौआ' कहि-कहि रामरूप प्रसादकेँ सम्बोधित करैत। धिया-पुताकेँ मतलबे कोन जे के आएल के गेल। जुआन-जहानसँ लऽ कऽ चेतन-अधवेशू धरि अपन-अपन हाजरी दर्ज करबए पहुँच रहल छला। केना नै पहुँचतैथ, गामक पहिल बेकती जे एते नमहर हाकिम छैथ...। किए बूझत जे हाकिमपना चलि गेलैन, खलिये रामरूप छैथ।

बेठेकानो आमक गाछपर गोला फेक पाकल आम तोड़ने तँ अनठेकानो ने ठेकाने बनि जाइए, तहिना अपन गामक पूर्वपीठिया देख जँ गौंआँ रामरूप बाबूकेँ भेँट करए अबै छैथ तँ अपन समाजिकतो ने निमाहि लइ छैथ। जाबे धरि कमिश्नर साहैब काज करै जोकर छला ताबे धरि गाम दिस तकबे ने केलैन आ जखन अथबल, श्रमहीन भऽ गेला तखन गाम मन पड़लैन। गाम कि मन पड़ितैन, मन पड़लैन पिताक पुश्तैनी भूमि। पुश्तैनी भूमि तँ हजारो लाखो अछि मुदा से नै, केते खेत आ ओकर केते मूल्य भेल। खाएर, किछु हुअए मुदा स्वतंत्र देशक नागरिक होइक नाते एते तँ अधिकार सभकेँ छइहे जे जे मन

फुड़ै, जेना मन फुड़ै तेना अपन सम्पैतक उपयोग करए। चाहे बेल रोपए आकि बगूर। मुदा एहनो की नै होइए जे अनकर गोरहा, चौमासकेँ बाँस-गाछ रोपि अछाह करि नष्ट कऽ देल जाइए?

चाह-पर-चाह, पान-पर-पान रामरूप बाबू दिससँ चलि रहल अछि, लोकक आवा-जाही अछिए। लोको लाज तँ ओहने ने लाज भेल जेहेन वैदिक लाज होइए। ओना किछु गोरे जे भरि दिन रौद-वसातमे रहै छैथ हुनकर दुनियोँ तँ अँगने भरिक छैन, ओकरा आनसँ मतलबे कोन? जेतबे अँगना रहत तेतबे पथार पसारब। मुदा फुसन काका कमिश्नर साहैबसँ भेँट करए एला।

फुसन काका गामक ओहेन लोक जिनका अदहा गामक लोक फुसियाह झुट्ठा कहै छैन तँ अदहा गामक लोक उचितवक्तो आ ठाँहि-पठाँहि बजनिहार सेहो तँ कहिते छैन। ई तँ अद्भुत खेल अछि जे एके गोरे दुनू केना? साल-दू-साल फुसन काका कमिश्नर साहैबसँ जेठे रहैथ, मुदा जेठ-छोट उमेरेटा सँ नै मानल जाइए दोसरो-तेसरो कारण छै, खाएर जे छइ। फुसन काका कमिश्नर साहैबक बगलेमे बैस पहिने तँ दोसर-तेसरक बात सुनलैन मुदा चाह पीला, पान खेला पछाइत अपनो मुँह खोललैन-

"जुगो पछाइत दुनू गोरे एकठाम भेलौं, सभ हरेलहा समए हेरा गेल। केम्हर-केम्हर उदए भेलै?"

कानून-कायदाक लोक रामरूप बाबू तँए शास्त्रीय भाषाक बोध नै। मुदा तैयो अपन बात रखैत बजला-

"अपन जे पाँचो बीघा चौमास अछि तइमे सागवानक खेती करब।"

कमिश्नर साहैबक बात सुनि फुसन कक्काक मन कड़कलैन।

कड़कलैन ई जे दसे बीघा नकोर[1] जमीन गाममे अछि, तेहेन चौरियाह[2] गाम अछि जे केकरो घर छै तँ अगवास नै आ अगवास छै तँ गाछी-कलम नै, तैठामक खेतमे सागवानक खेती गाममे हएत! वन विभागकेँ बोनक जंगलेटा सुझै छै मंगल नै सुझै छइ। दुनियाँक कोन एहेन उपजा अछि जेकरा मिथिलांचलक भूमि अंगीकार करैक शक्ति नै रखैए, मुदा ई तँ विचारणीय भेल। बर्खाक कटाउ हौउ आकि बाढ़िक आकि वायु प्रदूशन, गाछ-बिरीछ तँ जरूरी अछिए। मुदा जैठामक गाछ फलो दइए, लकड़ियो दइए, नीक ऑक्सिजनो दइए तेकरा छोड़ि जे एकमुश्त पनरह बरख सम्पैतकेँ घेरावंदी कऽ लेब! तहूमे जेकर उपयोग अपना जिनगीमे नै..!

मुदा बजला किछु ने। हड़ताली कर्मचारी जकाँ मुँहमे ताला झुलौने रहला, तरे-तर हूँहकारी भरैत रहला। चारूकात घुमा-घुमा मुड़ी डोलबैत रहला। मन केम्हरो, शकल-सूरत केम्हरो घुमि रहल छैन! समाज दिस नजैर पड़िते मन हुमड़लैन। हुमड़लैन ई जे समाजोकेँ की डोराडोरि छै जे डाँड़ सक्कत रहतै। बिनु डोराडोरिक समाज केमहर कखन ससैर जाएत तेकर कोनो ठेकान छइ। नीक करू आकि अधला, किछु गोरे तँ संग पुरनिहार हेबे करता, जखन समूह संग पुरनिहार तखन समाजक जँ विरोधो अछि तँ समर्थनो तँ अछिए। समाजे पाबि ने कियो शक्तिशाली बनैए। भलेँ समाज जेहेन होइ। नमहर भेने नमहर आ छोट भेने छोट। तहिना नीकक बनने नीक आ अधलाक बनने अधला...।

मुदा लगले फुसन कक्काक मनमे उठलैन, एक तँ ओहिना पाइ-कौड़ीबला लोक रामरूप बाबू छैथ, तैपर सरकारक बीच अपन

[1] सभसँ उत्तम किसिमक

[2] नीच जमीनक

हस्तियो छैन। बढ़ा-चढ़ा कऽ बजबे करता, अनेरे दसटा फलतुआ लोको संग देबे करतैन। गपे-सप्पमे विचार भेद भेने ने गारि-मारि अबैए, किए ने औत..?

फुसन कक्काक गुमी देख रामरूप प्रसाद बुझलैन जे भरिसक विचार नीक लगलै। अपन विचारकेँ आरो मजगूती दैत बजला-

"एकटा बात बुझल अछि किने?"

'एकटा बात' सुनि फुसन काका चौंकला। चौंकैक कारण भेलैन जे गामक बात आकि बाहरक। मन गवाही देलकैन जे बाहरसँ मतलबे की आ गाममे रहै छी हम आ हमरे नै बुझल रहत...।

अह्लादित अतिथि जकाँ आँखि-भौ, मुँह बिहुसबैत पुछलखिन-

"से की?"

मुँह बाउल बच्चा जकाँ फुसन काकाकेँ बुझि चहरा दैत रामरूप बाबू कहलखिन-

"खाली अपने खेतीक बात नै अछि, गामक जे कियो सागवानक खेती करए चाहता सभकेँ सरकारी अनुदान दिआ देबैन। हमहूँ ओही विभागसँ ने जुड़ल छी।"

जहिना तामस उठला पछाइत बुधियार, गिलास भरि पानि पीब तामसकेँ दबैत अछि तहिना फुसन काका पानक खिल्ली बदलैत, रीशकेँ कम केलैन। मुदा पेटक वायु डिरियए लगलैन। डिरियए ई लगलैन जे जो रे अन्हरा लोक, अन्हरा गाम आ अन्हराएल अन्हरा...। कहू! जे मिथिलांचलक भूमि ओहन सक्कत-सक्कत गाछ-बिरीछकेँ पेटमे समेटने अछि जेकर तख्तामे बन्दूकक गोली नै छेद सकैए, ओहन गाछ जे प्रकृतिक रंगक संग ओहन-ओहन फलो दइए जेकर तुलना कोनो आन भूमि नै कऽ सकैए, तैठाम जँ लोकक एहेन धारणा बनि जाए जे

पनरह-बीस सालक खेती एक बेर पूजी लगौलासँ भऽ जाएत, बाँकी साल निगरानी भरि, तखन खेतबलाक हाथमे पनरह-बीस बरख धरि काज की रहल?

रामरूप बाबूक विचार सुनि फुसन काका जेना मनक लोकसँ आगू बढ़ि संकल्पित लोक पहुँच गेला। समाजकेँ अपन गाम-समाजक विचार अपना ढंगसँ करए पड़तै। मुदा से ओहिना करतै आकि समाजक नीक-अधलाक विचार करैत करत। कोन गाम एहेन अछि जइमे शिक्षाक मदमे गैर सरकारीसँ लऽ कऽ सरकारी धरि करोड़ोमे नै चलि रहल अछि, मुदा शिक्षाक स्तर की अछि...।

अकछैत मन फुसन काकाकेँ विचार देलकैन-

“कियो कीमती हरिअर-सुखाएल तरकारी बुझि अपना खेतमे सांगरीए लगा लेत तँ लगा लिअ! मुदा अपन की हएत से विचार करैत करह...।”

उठैत-उठैत फुसन काका बजला-

“अखन रहब किने?”

फुसन कक्काक मोनक बात जे हौउ, मुदा रामरूप बाबू बजला-

“जेना अहाँ सभ रहए देब तहिना ने रहब?”

सभ बातक जवाब टटके नीक नै होइ छइ। चुपे-चाप फुसन काका विदा भेला। मुदा मन कहलकैन-

“एहेन किरदानी आकि किरदानी केनिहारक बास समाजमे उचित नै..!”

गामक ओहेन परिवारमे रामरूप प्रसादक जन्म भेल छेलैन जेकरा समाजमे सुभ्यस्त मानल जाइ छेलै। पनरह बीघासँ ऊपर जमीन, पिता मेहनती किसान, कहियो परिवार चलबैमे खाँच नै

भेलैन। तैसंग समाजमे पैंचो-पालट करिते छला। गाममे स्कूल नै रहने रामरूप ममहरेमे रहि मिडिल पास केलक। मिडिल पास केला पछाइत होस्टलक खर्च पिता दिअ लगलखिन। आन विद्यार्थी जकाँ रामरूपकेँ कहियो ने भेलैन जे कोर्सक किताव नै अछि आकि फीसक दुआरे परीछे छूटि गेल। मैट्रिक पास केला पछाइत पिताकेँ अपन हाथक मेहनत कएल पाइक मोल लालमे बुझि पड़लैन। एते तँ बात ऐछे जे पितोकेँ कहियो हाँट-दबार करैक मौका रामरूपक प्रति नै भेटलैन। कहियो कानमे भनक नै लगलैन जे आन-आन जकाँ ताड़ी-दारू करैए। तैसंग साले-साल पासक फल सुनि मनमे गदगदी चढ़िते गेलैन। कौलेजमे नाओं लिखबैक प्रश्न जखन रामरूपक उठलैन तखन पिता स्पष्ट कहि देलखिन-

“ऐ धनकेँ जेते चला-बना पुरा सकब तेते तँ पुरेबे करब मुदा जखन नै पूरत तखन खेतो-पथार तँ ऐछे, मुदा जँ तोहर विचार आगू पढ़ैक छह तइमे नै रोकबह। अखने तोरा समए छह, पछाइत जखन घर-परिवारमे ओझरेबऽ तखन एहेन समए थोड़े भेटतह, से नै तँ अनुकूल समए छह हमर खर्च तोहर पढ़ाइ।”

बी.ए. पास केला पछाइत देश स्तरक तँ नै मुदा राज स्तरक प्रतियोगिता परीछा रामरूप जरूर पास केलैन। जइसँ समैक अनुकूलता पबैत कमिश्नर भऽ रिटायर केलैन। जाबे तक नोकरी केलैन ताबे तक गाम बिसैर गेल छला मुदा काजसँ पलखैत भेने, सेवा निवृत भेने आब गाम मन पड़लैन। मन पड़लैन पिताक चास-बास...। ओना समाजो, परिवारो आ पितोक देल जिनगीक साइयो-हजारो धरोहर सम्पैत अछि मुदा ऐठाम से नै। पितोकेँ पूर्वजक देल आ अपन अरजल खेते-पथार भरि अछि। समए किछु हौउ, मुदा एहनो परिवारक कमी मिथिलाक पेटमे नै अछि, आ ओकरा नकारलो नहियेँ

जा सकैए, जे पुर्खाक देल सम्पैतकेँ, खेत-पथारकेँ लाड़ि-चारि अपन जिनगी निमाहैत ओइ सम्पैतकेँ अमानत रखि ऐगला पीढ़ीकेँ बिनु कहनौं-सुननौं सुमझबैत आएल अछि। तहिना रामरूपो बाबूकेँ अपन पिताक चास-बासपर नजैर पड़लैन।

जेठ मासक सौंझका झकासक पछाइत पूर्बाक लहकीमे ओसारपर बैस पटनेसँ गामक आनन्द रामरूप बाबू लइ छला। तही बीच चाहक कप नेने पत्नी पहुँचलैन। ओना आँखिक टकटकी रहैन मुदा ज्योति विहीन। पत्नीकेँ नै देख पौलैन...।

ओना, कादम्बरी बुझैत जे केम्हरो मन भँसि गेल छैन तँए कप बढ़बैत बजली-

“चाह पीब लिअ, भक टुटि जाएत।”

कहि बगलेक कुरसीपर बैस अपनो चाह पीबए लगली। चाहक चुस्की लैत रामरूप बाबू बजला-

“गाममे बहुत सम्पैत अछि ओकर उपयोग केना करी तैबीच नजैर घुसिये ने रहल अछि।”

बहुतो एहेन तँ छैथे जिनका ठोरेपर बरी पकै छैन। प्रश्न पुरल आकि नै पुरल, उत्तर पहिने दऽ देता। भलेँ उत्तर नूनगर भेल आकि कड़ू आकि मीठनोन, तेकर चिन्ता नै। तहिना कादम्बरियो छैथ। केना नै रहती। अर्थशास्त्री पिताक बेटी, तैपर अपनो आनर्सक संग एम.ए. अर्थशास्त्रेसँ केने छैथ। बजली-

“आइक पूजीमे करोड़ोक सम्पैत अछि, बेचि कऽ बैंकमे जमा कऽ लिअ, लाखोमे आमदनी बढ़ि जाएत।”

गरूड़ जहिना कागभुसुण्डीक बात धियानसँ सुनैत तहिना रामरूप बाबू पत्नीक बात सुनलैन। मुँहमे तँ ताला लगौने रहला मुदा

भीतरे-भीतर मन हौंड़ए लगलैन। अपन नोकरीक जिनगी मन पड़लैन, जिनगी भरि पाइए हँसोंथलौं, जइसँ पटना सन शहरमे दस कट्ठाक घराड़ीमे तीन मंजिला मकान बनेलौं, पेन्शन भेटैए, बैंकोमे ऐछे! तखन जँ बाप-दादाक देल जमीन बेचि समाजसँ नाक कटाएब, ई हमरा सन लोक लेल केते उचित हएत? बच्चाक महिरम जेना माए-बाप बुझैए तहिना ने खेतो अरजनिहार खेतक बुझै छइ। की केकरो दस कट्ठाक चौमास पूर्वज अहीले देलैन जे जा बेटा बेचि कऽ बैंकमे रखि लिहऽ जे खूब सुइद हेतह। आकि ओ बारहो मासक कामधेनु बुझि देलैन? मुदा आइक बहरबैयाक जे रूप-रंग कहियौ आकि नव कृषक संस्कृति पकैड़ लेलक अछि ओइसँ उपजा-वाड़ीक रूप की वएह रहत? ने राधाकेँ नअ मन घी हेतैन आ ने राधा नचती। ने गाछमे डारि हएत आ ने कियो मचकी झूलता...।

रामरूप बाबूक मन हुमड़लैन, पत्नीक पैत्रिक सम्पैत नै छिऐन- पैत्रिक सम्पैतक माने परिवारिक विचारधारा- ओ अपन छी, ओकर रक्छा के करत? नै! पत्नीक विचार नै सुनबैन। कोनो परिस्थितिमे खेत नै बेचब। विचारक दृढ़ता मुँह फोड़ि निकललैन-

“बाप दादाक मान-सम्मानसँ जुड़ल जमीन अछि, ओकर उपयोग केना हएत ई विचारणीय भेल।”

अखन धरिक जिनगीमे रामरूप बाबू पत्नीक विचारकेँ अङेज नेने छला। सेहो ओहिना नहि, हुकुमदारी करैत-करैत एहेन मोड़ बनल जाइमे दुनू बेकती निर्णए केलैन जे दरमाहा पत्नीक हाथ जेतैन आ ओ घर चलौती। जइसँ जेना पुरुखक कलंक उठैए जे फल्लाँ फल्लाँठाम, से तँ झूठ भाइए जाएत। अँगने नै तँ राधा नचती केतए? मुदा ऊपर-फटकी आमदनी तँ बिनु आड़ि-मेड़क होइए, ओ केना हिसाबमे औत? ओना, अइले घोंघौज दुनूक बीच भेलैन, मुदा ओ परिवारक

हिसाबसँ बाहर रहल। मुदा ओकरा केना कामयावी बनाबी यएह ने भेल बुधियारी। जहिना कादम्बरीक मन छेलैन जे पतिक सोलहन्नी कमाइ हाथ आबए, सएह भेबो केलैन। जे निर्णयक पछाइत रामरूप बाबू मासे-मासे चेक पत्नीक हाथ दैत रहलखिन। तइसँ एते तँ भेबे केलैन जे मछट्टा जाइक जरूरत नै पड़लैन। नून-सँ-हरदी तकक भार कादम्बरीएपर रहलैन। जइसँ कादम्बरियो अपनाकेँ बेरोजगार नहियेँ मानली। ओना कादम्बरी पतिक आदमनीकेँ ओइ थर्मामीटरसँ नपैत जइसँ छह बजे साझसँ बारह-एक बजे रातिमे थाकल-मारल अबैक कारण की? नोकरीक ड्यूटी दिनका छैन, तखन?

मुदा लगले मन मुड़ि जाइन। मुड़ि ई जाइन जे अपनो देह भरिक स्वत्रंताक अधिकार जँ पुरुखकेँ नै भेटए, तँ पुरुखपना केतए औत? मुदा तैयो एते तँ इमानदारी रामरूप रखिते छैथ किने जे आमदनीकेँ छिड़ियबै नै छैथ, किछु-ने-किछु मोटगर काज तँ सम्हारिये लइ छैथ। पटना सन शहरमे दस कट्ठा घराड़ीक बीच तीन मंजिला मकान तँ हुनके कमाइक छिऐन आकि कियो दोसर देलकैन। अनेरे झूठ-फूसक गपक नाँगैर पकड़ैले वौआएब। ओना दुनू परानीक बीच खौटका बनियेँ गेल। रामरूप बाबूक विचार जैठाम छैन तइसँ कादम्बरीक विचार हटल रहबे कएल। जमीनक नीक उपयोग भेने ने सम्पैतक नीक सुख भेटै छइ। जँ ओकर उपयोगे ने हएत तँ माटिक धरती माटि छोड़ि सोनाक थोड़े भऽ जाएत। हँ, उपयोग केला पछाइत माटियो सोना बनै छइ। तैठाम कादम्बरीक हटल विचार ई जे खेत बेचि बैंकमे रखने निश्चित आमदनीपर पहुँच जाएब तइ हिसाबसँ परिवार चलत। ने हाथ मैल आ ने पएर मैल हएत। धारक महार टुटिते दू तरहक धारा निरमित भाइए जाइए। एक जे मुख्यधारा ओकर जगह बना पेटमे समटैए तँ दोसरो एहेन ऐछे जे अपना धारामे आरो धफार पैदा कऽ दोसर दिस रेड़ैए। ओना अखन धरि दुनू परानीक बीच केतेको दिन

एहेन प्रश्नपर मतभेद होइत रहलैन। समझौतौ होइत रहलैन, मुदा कादम्बरीक आइक प्रश्न रामरूप बाबूकेँ किछु दोसर दिशामे मोड़ि देलकैन। रंग-बिरंगक प्रश्न मनमे उचड़ए लगलैन। की अपन समाज टुटि गेल? आकि अपन जिनगी टुटि गेल? एकरा की मानल जाए? माए-बापक सेवा इतिहास शास्त्र-पुराणक पन्नाक पाछू पड़ि गेल? ऐ उमेरमे केकर आशा..?

विचारमे मोड़ एलैन। एक तँ ओहिना दुनियासँ हटल छी तैपर जँ दुनू बेक्तियो हटि-हटि कऽ रहब सेहो नीक नै।

बिहुँसैत रामरूप बाबू पत्नीकेँ बौसैत बजला-

"अनेरे छोट-छीन बातक पाछू बेसी पड़ब नीक नै।"

पतिक सह पबिते कादम्बरी छिड़ियाइत बजली-

"ओही दिनसँ अहाँकेँ जनै छी जइ दिन बात काटि देलौं!"

जहिना छिड़ियाइत बातकेँ समेटल जाइत तहिना पत्नीकेँ समटैत रामरूप बाबू बजला-

"सभ दिन तँ महल्लाक सभ सेवा निवृत भेल लोक एक घण्टा-दू घण्टा एकठाम बैसते छी, तही बीचमे किए ने विचारि लेब। अनेरे किए हम बधुआएब आकि अहीं बधुआएब।"

पतिक विचार कादम्बरीकेँ नीक लगलैन। लड़-जड़क बाहुल्यक कारणे तँए अपन पक्ष मजगूत होइत देखलैन। तेतबे नै देखलैन तैसंग ईहो देखलैन जे पति-पत्नी–पुरुष-नारी–क बीच अदौसँ किछु-ने-किछु वैचारिक मन-भेद होइत आबि रहल आ होइत रहत, मुदा फेर केना सम्बन्ध बनल रहल?

हारल-थाकल-मारल बटोही जकाँ पतिक बगे-वाणि कादम्बरीकेँ बुझि पड़लैन। जीतल पति-पत्नी तँ ओ ने जे अपन आ अपन परिवारक

कोनो समस्या दोसराक बीच नै रखि दुनू मिलि समाधान करैत दौड़ैत जिनगी बितबैत मृत्युक धाराकेँ कूदि टपि जाएत? मुदा से तँ नै भेल! ओझराइत बाटक बात देख कादम्बरी बजली-

"सभसँ बड़ौ समाज। भने अपन बात विचारैले रखि हुनको सबहक विचार देखबैन, नीको बुझि पड़त आ अधलो, जे नीक हएत ओकरा पकैड़ लेब, जे अधला बुझि पड़त ओकरा छोड़ि देबइ। सएह ने? तइले जँ दुनू संगियोँ-साथीमे मुँह फुलौने रहब, सेहो नीक नै। दुनियाँक इतिहास गबाही अछि जे विषम परिस्थितिमे पुरुखो आ महिलो एक दोसराक संग छोड़ने अछि। मुदा एहेन पौराणिक गलती अपना जिनगीमे नै उतरए देब। लगभग चालीस बरख पूर्वसँ जहिना हाथ पकड़ा-पकड़ी केने एलौं, तहिना पकड़ने चलब।"

पत्नीक विचार रामरूप बाबूक घोर-मट्ठा भेल मनकेँ जेना फरिछाएल पीबै जोकर पानि बना देलकैन। बजला किछु ने। मुदा आँखि जरूर अँखिआ लेलकैन। अँखिआ ई लेलकैन जे नीक भविस दिस अपनाकेँ बढ़बए चाहि रहली अछि। रामरूप बाबूक आँखि-मे-आँखि मीलिते जेना कादम्बरीकेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक पति ऐगला काज दिस बढ़ैले कहि रहला अछि। काजे ने बोलीकेँ बिलमबै छइ। जँ से नै हएत तँ काजे बिगड़ि जाएत! आ जखने काज बिगड़त आकि अनधुन गरियौनाइ शुरू करत! तइसँ नीक जे रौतुका भोजनक ओरियानमे किए ने लगि जाइ। पति लगसँ उठि कादम्बरी भनसाघर तँ विदा भऽ गेली मुदा मनक दोसर खरी उचैर गेलैन। उचैर ई गेलैन जे अखन तक कहियो ओहेन भोजन नै केलौं जेहेन मनुखक हेबा चाही। पढ़ल-लिखल परिवार रहितो कहाँ कहियो ऐपर विचार केलौं! एक भोजन श्रमक पूर्व होइए दोसर अन्तक पछाइत, जखन लोक आराम करए जाइ छैथ। गरिष्ठ पाक जेते आरामक अवस्थामे हेतै ओते

काजक अवस्थामे थोड़े हेतै? मुदा ईहो केना मानल जाए जे सबहक दिन आकि सबहक राति एके रंग होइ छै...। चौकाक बटलोहीक एक डेग पाछूए हटल कादम्बरी ठाढ़, मुदा विचारतंत्र तेते सक्रिय जे सभ अंग शिथिल पड़ि गेलैन। नजैर टकटकी जकाँ बनि गेलैन।

दुनू परानीक बीच तीन दिनक पछातिक समए बनल जे सभकेँ पूर्व जानकारी देला पछाइत विचारि लेब। तैबीच हुनको सभकेँ समए भेटतैन आ ऐबोक जानकारी रहबे करतैन। अपनो ओइ हिसाबसँ तैयारी करब।

दोसर दिन जेना कादम्बरीकेँ पानि चढ़ि गेलैन तहिना मलेटरी जकाँ समैपर नीन तोड़लैन। केना ने तोड़ितैथ? भोरुका बसंती-वयार केकरा नै बजारि छातीपर बैसए चाहैए। मुदा एहनो तँ लोक छैथे जे नीनकेँ तोड़ै छैथ। जँ नीन अपने नै टुटए चाहैत तँ ओकरा तोड़लो जाइए किने। कादम्बरियो नीनकेँ तोड़लैन।

समैपर उठि अपन सभ जवाबदेहीक काज सम्हारि बैसारक बीचक योजना बनबए लगली। चारि बजे सौंझका समए अछि। चौबीसो घण्टामे सभसँ नीक समए, नीकक माने विचारक अनुकूल मौसम। भोजनो तँ वएह ने नीक जे मौसमक अनुकूल हुअए। जँ से नै आ चैत-बैशाखमे नबका दालि खाएब तँ पेट हड़हड़ेबे, गड़गड़ेबे, पड़पड़ेबे, झड़झड़ेबे करत किने। मुदा जँ अपनो भोजनक विचार मनुख नै करत तँ नै करह। कोइ काहू मगन कोइ काहू मगन.! अपन करनी अपन धरनी अपन मरनी हेतै आकि अनकर? नीक हएत जे ओहेन भोजनक तैयारी करी जे सभकेँ सुपाच्य होइन...।

कादम्बरीक मन मानि गेलैन जे नीक विचार बुधि देलक। मुदा लगले दोसर जोरसँ धक्का दैत कहलकैन-

"सुपाच्च तँ वएह ने जे शरीर पचबए? आकि सुपाच्च बौस? जँ

सुपाच्च पदार्थ सुपाच्च तँ केकरो काँच दूध पचै छै आ केकरो नै पचै छइ। केकरो गर्म दूध पचै छै आ केकरो नै पचै छइ। तखन?”

कादम्बरीक मन फेर दोसर घुरछीमे ओझरा गेलैन। एक तँ अदहे मुट्ठी टीक लोक रखैए, तहूमे जँ दसटा चिड़चिड़ी चोंसिआ जाउ तँ टीक खोलिते-खोलिते नोंचा जाएत आकि एकेबेर जड़ियेसँ कटा कात भऽ जाएत? तैपर सँ पुछबै जे तोरा अपसियाँत भेने हमरा की..! से जेहेन हएत तहिना कादम्बरीक मनमे पनपल। पनपल ई जे जिनका जे सुपाच्य होइ छैन, माने सभ दिन खाइ छैथ, हुनका लेल वएह पाक नीक हएत...।

एकमुँहरी विचार होइते फेर मन घुड़ियेलैन। घुड़ियेलैन जे जँ कोनो नीक बौस बनि जाए जे किनको नहियोँ नीक भेने मन घुमि जाइन तखन की कहबैन जे अहाँले नै तैयार छी? मन ठमकलैन। ठमैकते निआरली जे बेकता-बेकतीक विचारानुकूल पाकक ओरियान कऽ लेब। पेट तँ जंजाल छीहे ने। जँ से नै तँ हजार रसगुल्ला आ बीस किलोक रेहुक पेट जे बनौता हुनका लेल किए ने जंजाल छी...।

भोजनक सूची तैयार होइते कादम्बरी खोज-भाँज लगबए निकलबे करती जे किनका लेल की नीक। तहूमे समए लगबे करत। गप्पोकेँ कि नाँगैर होइ छै, ओकरा कि लोकक देह जकाँ आँखिक नीचाँ मुँह आकि दुबगली कान आकि मुँहक नीचाँ पेट जोड़ैक काज छै आकि कैलाशसँ मानसरोवर आकि मानसरोवरसँ गंगोत्रीक काज छै...। ओकरा तँ सौंसे दुनियाँ देखैक विचार होइ छइ। जँ से नै, तखन ऐ प्रश्नक उत्तर कथी जे ‘अहाँक दुनियाँ केहेन, तँ अपना सन।’

रामरूप बाबूकेँ खाइ-पीबैक धैनियेँ-फिकिर नै। तेकर कारण अछि जे शुरूहेसँ अपन दरमाहा पत्नीकेँ सुमझा पाक-साफ भऽ गेल छला। से नीके छेलैन। नीक ई छेलैन जे पत्नी जहिना अपन भाएकेँ

प्रेमसँ भोजन करबैथ तहिना पतिक भाएकेँ सेहो। तइसँ नीक जे ऐ बरहबर्खा रोगसँ छुट्टीए लऽ लेब नीक। तँए मन खुशी, किए कियो कहता फल्लाँ बाबू भरि पेट खैयोले ने देलैन आकि अमुक वस्तु बनबैक लूरिये ने छेलैन। किएक तँ मनुखेक मुँह छिऐ। बेटा बेरमे राजा छी आ बेटी बेर भीखमंगा!

समैसँ पूर्व कादम्बरी अपन विचार तीन बेर सभकेँ डेरे-डेरे पहुँच सुना चुकल छेली। मुदा रामरूप बाबू चुपे रहला। चुपे ऐ दुआरे रहला जे नव प्रश्न उठत, नव दिशा विचारैक प्रश्न हएत ओ तँ अपन अनुभवक संग समैसँ रस्ता मिलबैत आगू बढ़त। जँ से नै तँ समचीन[3] केना हएत। ओना अपनो मन ओतए ठाढ़ भऽ ऐगला जिनगीक बाटक दिशा ताकि रहल छेलैन, जँ से नै तकता तँ आनक जिनगीकेँ जहिना अपने बुझै छैथ तहिना ने आनो बुझतैन। सभ अपन मनक मालिक छी। सबहक अपन मन ओतए चढ़ि कुचैरते तँ अछि जे भाय, दुनियाँमे सभसँ बेसी बुधियार, सभसँ बेसी इज्जतदार छियौ, टिटही जकाँ हमरेपर अकास टिकल अछि...। तहिना कि दोसराक मन पाँखि लगा उड़ि नै कुचड़त जे ‘हमहूँ छी।’ तखन ओइ कुचरा-कुचरीमे अनघोल हएत की नै? तइसँ नीक ने जे मुँहमे ताला लगा रहब। अनेरे मन वौअबै छी। भाय, जेकर माए-बाप मरत ओकरा जँ नीन पकैड़ लइ वा ओङ्हए लगए तखन दोसराक गति की हेतइ। मुइला पछाइत हौउ आकि जनमला पछाइत, ओकर जे ऐगला प्रक्रिया छै ओ तँ अपने करए पड़ै छै किने...।

चारि बजिते सभ आमंत्रितजन पहुँचला। मुदा बैसैमे फेड़-फाड़ भेल। फेड़-फाड़ ई जे आन दिन जेना अबैत गेला बैसैत गेला, से नै भेल। अपन-अपन गर अँटकारि-अँटकारि जोड़ लगि-लगि सभ कियो

---

[3] समए चिन्हि

बैसला। मैनेजर साहैब जे बैंकसँ सेवा निवृत भेल छैथ, तिनका आ डाक्टर साहैबकेँ खूब पटै छैन, जँ दुनूकेँ समए भेटैन तँ भरि-भरि राति सौन जकाँ बिद-बिदाइते रहि जेता। मुदा जैठाम सभ दौग कऽ आगाँ बढ़ए चाहैए तैठाम मैनेजर साहैब आकि डाक्टर साहैब छूटि जाथि, सेहो तँ नीक नहियेँ...।

जहिना डाक्टर साहैब मैनेजर साहैब लग बैसला तहिना सेवा निवृत इंजीनियर साहैब डायरेक्टर साहैब लग बैसला। फैक्ट्रीक डायरेक्टर साहैब सेहो सेवा निवृत छैथ। दुनूक विचारक विनिमय अपन रहैन, तँए बेसी हेम-छेम छैन। चाह उसरैत-उसरैत पान चलए लगल, मुदा पानक पछाइत जे परसल जाइए ओ अनका मुहेँ परसल जाएत आकि अपना मुहेँ। जेम्हर पान परसा गेल ओम्हरसँ प्रश्न उठल-

“की बात छिऐ यौ रामरूप बाबू?”

प्रश्न उठौलैन डाक्टर साहैब। ओना डाक्टर साहैब बजैमे फड़कोर छैथे, नजैरे तेहेन छैन जे लगले कोनो बातकेँ पकैड़, समाजिक- परिवारिक कोनो समस्याकेँ शरीरक रोगे जकाँ एक्स-रे करा मेडीसीन आकि सर्जरीक दुनू विचार ठाँहि-पठाँहि दऽ दइ छथिन। ओना सभ दिन लोकक बीच रहै छैथ, अखनो अपनाकेँ अथबल नै बुझि रहला अछि, भलेँ नव तकनीकक मारिक चोट किए ने जिनगीकेँ धकियबैत होइन। खाएर, जे छैन ओ तँ हुनकर बेकतीगत छिऐन। ओना काने-कान बीआ-बान कादम्बरी काइए चुकल छेली, मुदा अपन जिम्माक आ गरिमाक मेनटेनो करब छैन्हे।

चौमास जकाँ चौकियाएल विचार रामरूप बाबूक रहबे करैन, बजला-

“गाममे पिता जीक अमलदारीमे पनरह बीघा जमीन छल, हुनका जीविते नोकरी भेल। हम नोकरी दिस बढ़ि गेलौं। बाबू

खेतीएपर अँटैक गेला। दुनू परिवार दू दिस भऽ गेल। चारि पाँच बर्खक पछाइत, आगूए-पाछू दुनूक मृत्यु भऽ गेलैन, किरिया-कर्म भेला पछाइत जे गाम छोड़लौं, से छोड़नहि छी।”

रामरूप बाबूक नमहर प्रश्न, दू जिनगीक प्रश्न, एक किसानीक दोसर नोकरिहाराक। तहूमे दुनूमे लगलगाउ नै, सोलहन्नी नबक शुरूआत। सबहक मन ठमकलैन। अपन जिनगीमे भेल घटना आ बिनु भेल घटनाक दू थर्मामीटर होइ छइ। जिनगीक प्रश्न छी, तँए सभ सबहक मुहोँ देखैथ आ आगू सुनैक प्रतिक्षो करैथ...।

कादम्बरीक मन प्रश्नक उत्तर दइले चटपटाइत रहैन। कारणो छल दुनू परानीक बीच उठल दू दिशाक बाट। मुदा पनचैतियो तँ पनचैती छिऐ, ओहिना पनचैती आ पर-पनचैतीक चलैन समाज पकड़लक आकि खूब नीक जकाँ जोति-कोरि, गोला फोड़ि चिक्कन बनबैले पकड़लक। पनचैती आकि पर-पनचैती ओहिना थोड़े उठि कऽ ठाढ़ भेल। ओहिना कोनो चीज सोझे ठाढ़ होइए आकि ओकरा ठाढ़ रहैक गर बनौला पछाइत होइए। तँए पनचैतियोक ठाढ़ होइक अपन गर छइ। पहिने पहिल पक्ष अपन विचार रखता, ओइ विचारकेँ पञ्चवेदीमे वेदसँ नहाएल-धुअल जाएत, तेकर पछाइत ने दोसर पक्षक विचार, विचारमे औत? जँ से नै आनब आ पनचैतीकेँ निर्णए तक नै पहुँचऽ देबै तखन विचारक उलंघनक दोखी के हएत। तहूमे परिवारक दुनू परानीक बीचक छी, पतिक प्रति अपन अशिष्टता सोझहाँ आबि जाएत। तइसँ नीक जे डाक्टर किसुन भायकेँ कहिये देने छिऐन तँए हुनके इशारा कऽ दिऐन...।

कादम्बरी सएह केलक। मुदा डाक्टर साहैब अपन विचारमे डुमल रहैथ। चारि भाँइक पिताक भैयारीमे विचारक भिन्नता परिवारकेँ मटिया-मेट कऽ चौकिया देलक। तँए कोनो परिवारक प्रश्न छी, बिनु

बजने दोखियो तँ नहियेँ हएब। बेर-बेर कादम्बरीक इशारा डाक्टर साहैब देख-देख अनठबैत रहला। डाक्टरो साहैब छह-पाँचक कमाइ नै केलैन। कियो कम्पनी उपहार देलकैन, तेतबे धरि। तँए सोझ विचार, भाय जे नै बुझिऐ तेकरा लगले किए ने मानि लिऔ। जे कोट-कचहरीक केस जकाँ पचास-पचास बरख रगड़ैत रहियौ। तइसँ केकर नीक हएत। लोको रगड़ाएत सरकारो घँसाएत...।

चुपा-चुपी देख इंजीनियर साहैब बजला-

“सबसँ पहिने दियाद-वादक भाँज लगबए पड़त, गाममे रहनिहार भलेँ मारि-दंगा कऽ बलजोरियो कऽ सकैए मुदा जे बाहरसँ गौआँक बीच जेता हुनका तँ नापि-जोखि कऽ जाएब नीक हेतैन। अपन सुपत केते जमीन बँचल छैन, ओ बिना बुझने केना किछु करता।”

इंजीनियर साहैब अपने गामक भगौआ भेल छला। मुदा से अपने गलतीसँ। जखन घर बनबैक झोंक चढ़लैन, तखन अपन पैत्रिक घराड़ी दियाद-वादक हाथे बेचि लेलैन। ओना देलखिन परिवारेकेँ, इज्जत तँ रखलैन, मुदा जखन अपन रहैक मिथिलांचलक बास बेचि लेलैन, जेकरा कखनो नीक नै कहल जा सकैए आ जखन पाइ-कौड़ी जोर मारलकैन तखन गाम मन पड़लैन। मनसूबा यएह जे बेसीए कऽ कीनि लेब। मुदा जिनगी भरिक समीक्षा केला पछाइत जे इंजीनियर साहैबक किरदानीक समीक्षा समाज आकि दियान-वाद केलैन तँ ऐठाम आबि अँटैक गेला जे इंजीनियर साहैबसँ केकरा की लाभ भेल? तँ किछु ने! तखन पढ़ल-लिखल आ बिनु पढ़ल-लिखलमे की अन्तर भेल, मुरुखोसँ मुरुखपने केलैन। एकमुट्ठी भोजन करा कियो भूखलकेँ तृप्त बुझैत मुदा जिनगीक भूखक तृप्तिता बिना जिनगी ठाढ़ भेने नै होइ छइ। जीवन बनबैक लूरि इंजीनियर साहैबकेँ, मुदा कहाँ एको

परिवार गढ़ि सकला...। ई बात दियाद-वादक मन मानि नेने छेलैन। तँए केतबो नाँगैर पट-पटा कऽ रहि गेला दियाद-वाद ओइ घराड़ीपर नहियेँ आबए देलकैन। कियो अपने बेथे बेथाएल तँ कियो जमीनकेँ जंजाल बुझि ओइ भीड़ जेबो ने करै छैथ...।

चुपा-चुपी देख कादम्बरीक मन भीतरे-भीतर खौंझाइत रहैन जे नीमकहराम सभ भऽ गेला। केहेन कऽ बुझा-सुझा कहबो केलिऐन आ खुएबो-पीएबो केलिऐन। मुदा कियो पीठपोहू हुअ नै चाहैए। पाशा बदलैत बजली-

“एके काज लेल बेर-बेर बैसार करब नीक नै हएत, तँए..?”

कादम्बरीक प्रश्नमे पुछरी जोड़ि मैनेजर साहैब बजला-

“मानि गेलौं जे पनरह बीघा छेलैन, तइमे नै सोलहन्नी तँ अठन्नियोँ मानि लिअ। अदहो तँ साढ़े सात बीघा बँचबे कएल हेतैन। मुदा साफे नै बँचलैन, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।”

मैनेजर साहैबक मन बैंकक सुइद दिस भागैन जे छबे मासमे जखन सुइद मुइर भऽ चलए लगै छै तखन लाखक पूजी पानिमे दहलाइए...।

मैनेजर साहैबक बोल इंजीनियर साहैबकेँ नीक नै लगलैन। नीको केना लगितैन, मन गवाही दैत रहैन जे जहिना छोटका-बड़का सैयो पार्ट मिला मशीन गढ़ल जाइए तहिना तँ परिवारो छी। तँए, अपन प्रश्नपर अड़ान दैते बुझि पड़लैन जे साइकिलक भौल्टू जकाँ गरदैने लगसँ परिवार कटि गेल अछि। कहू जे केहेन लीला छी जे एक माए-बापक सन्तान, बेटा-बेटी भेने केना सम्पैतक अधिकारी आ नै अधिकारीक अधिकार अछि। तेतबे किए, जँ पाँच या सात भाँइक भैयारी छी तँ जेठौंस बँटैत-बँटैत छोटका सोलहन्नी बँटा जाइए आकि रहबो करैए।

गप-सप्पकेँ टेढ़-टूढ़ होइत देख रामरूप बाबू बजला-

“मानि गेलौं जे पनरह बीघामे साढ़े साते बीघा बँचल, तेकरा केना उपयोग करी से तँ विचारल जा सकैए।”

टुटल दाँतक मुँहमे पान गलगलबैत डायरेक्टर साहैब बजला-

“अपन कएल काज कहै छी। अपनो गाममे पाँच बीघा जमीन अछि, मन भेल जे पूर्वजक देल सम्पैत छी पच्छिम लेल छोड़ि दिऐ। तखन तँ भेल ओइकेँ उपजाउ बना दियै आकि परती बना दियै माने उत्पादित राखल जाए आकि परती जकाँ? कोनो कि पावैन-तिहार छी जे अनको आन सम्हारि देतै आ एक-आधटा एकादसीक जरूरत हेतै तँ दैयो देतइ। जँ उर्वर-उपजाउ बनल रहत तँ सुगमतासँ आगूक काज बढ़ौल जाएत आ नै जँ परती बना राखल जाएत तँ मुरदा-साड़ा लग बैस कऽ कानब हएत। भाय, संस्कृति आ मातृभूमिक सेवा कथी छिऐ तेकरा ने नीक जकाँ बुझए पड़त। जैठाम कण-कणमे भगवान आ कण-कण शक्ति सम्पन्न अछि तैठाम केना कि कएल जाए, एना जँ धिया-पुताक गर्दाक घर-अँगना बना खेलब, तँ बेर झुकैत उजैर-पुजैर जाए पड़त।”

डायरेक्टर साहैबक बातमे डाक्टर साहैबकेँ रस भेटलैन। टिटकारी दैत बजला-

“भाय साहैब, अपने तँ टटके खेतपर पहुँचल छी, तँए समयानुकूल विचार अपनहि दऽ सकै छिऐ?”

डाक्टर साहैबक टिटकारी डायरेक्टर साहैब नै परेख सकला। अपन पूछ खिखिर जकाँ मोटगर बुझि पड़लैन...।

अठनियाँ मुस्कान भरैत बजला-

“देखू, अपन सोलहन्नी विचार नै छी मुदा जखन एक महान

अर्थशास्त्री कानमे घोरि कऽ पीआ देलैन जे देखिऔ, अपना ऐठामक माने मिथिलांचलक किसानी जिनगी बेठेकान अछि। तहूमे बहरबैयाक लेल। गाममे रहनिहार तँ ओ भेला जे धार फुलाइते गाँज-डेली लऽ धारक कात जा हियासऽ लगैत जे अमार केमहरसँ आबि रहल अछि। से तँ बहरबैयाक बुत्तासँ बाहर अछि। तँए नीक हएत जे एकेबेर पूजी लगा बीस सालक खेती करि लिअ।”

ओना डायरेक्टर साहैब कुशियारक गुल्ली बना-बना अपन बात राखए चाहै छैथ, जे जखने तरो मीठ, ऊपरो मीठ आ मनो मीठ तखन तँ मिठाइ बनबे करत। बड़ हएत तँ भुसबाक बदला लड्डू बनि जाए...।

नाँगैर पकैड़ ऐंठैत डाक्टर साहैब बजला-

“एहेन नफगर जँ खेती हुअए तँ तेलोसँ चिक्कन। तहूमे अपन इलाका, सत-सत बेर लोक एक-एकटा खेतमे धान रोपैए आ तैयो दहा जाइ छइ। मुदा धन-धरतीक धैर्य तेते धीरजवान छै जे आँखि खोइलियो आ आँखि बन्न कैयो कऽ सदिकाल यएह कहैत जे धरती अहीं हमरा अन्न दइ छी, ह्रदैमे जमा कएल पानि दइ छी, अपन सिनेह-सिक्त कएल पुरबा-पछियाक रूपमे हवा दइ छी, जिनगी लेल की ने दइ छी, मुदा सभ किछु दैतो हे धरती छाती हटौने छी।”

डाक्टर साहैबकेँ भँसियाइत देख रामरूप बाबू बातकेँ समटैत बजला-

“बड़ सुन्नर प्रश्नक उत्तर आबि रहल अछि, एकबेर खेती करैमे ओकरा लगबैमे, जँ बीस बरख दोहरा कऽ ओइमे पूजी नै लागए आ बीस बर्खक पछाइत बीसो सालक उपजासँ बेसीक हिसाब आबि जाए तँ किए ने कएल जा सकैए।”

रामरूप बाबूक विचार सुनि डायरेक्टर साहैबकेँ आरो मनसूबा जगलैन। बमछैत बजला-

"सेवा-निवृत भऽ गेलौं तँए कि ऐ देहमे दम नै अछि? रामरूप बाबू, अपने गाम जा देखि-सुनि आउ। सागवान-गाछक खर्च सरकारी अनुदानपर आ लगबैयोमे जे खर्च औत सेहो सभ सरकारीए अनुदानपर हएत।"

डायरेक्टर साहैबक बमछी देख डाक्टरो साहैबकेँ मन बमछैत रहैन। मुदा अपन जखन सीमा अँकैथ तँ देखैथ जे जहिना बजौल हम छी तहिना तँ डायरेक्टरो साहैब छैथ, अनका ऐठाम एहेन किछु नै हेबा चाही जे घरबैयाक प्रतिष्ठापर कोनो कचोट होइ। तँए गुम्म। मुदा तरे-तर डाक्टर साहैबक मन ई बमछैन जे कहू केहेन भोतलोह सन विचार दऽ रहला अछि। जखन बीस बर्खक खेतक काज हाथसँ छीना जाएत तँ खेतपर रहनिहार लेल ओ हाथ की करत? तहूमे जे धरती दुनियाँक सभसँ नीक अछि, ओ फल-फूल विहीन खेतीमे फँसि जाएत, तखन केहेन रमणगर जनकक फुलवाड़ी हएत? एक तँ जन-जनक फुलवाड़ी तैपर विश्वामित्र सन ऋषिक आगमनक संग सखी-सहेलीक संग सीता आ लक्ष्मणक संग रामक मुस्कान..!

जहिना समए उसरनपर आएल तहिना विचारोकेँ उसारिये देब सभ नीक बुझलैन। डाक्टर साहैब बजला-

"रामरूप बाबू, गाम जा पहिने खेत ठेकना लिअ, डायरेक्टर साहैब खेतीक भार उठाइए लेलैन, तखन शुभ काजमे अनेरे बिलम करब नीक नै।"

बैसार समाप्त भेल। मुदा जहिना नअम् मासक बेथा माइयेटा बुझै छैथ तहिना नअम् जिनगीक बेथा रामरूप बाबूक मनमे कचकलैन।

बैसारक तेसर दिन, दू दिन बीचक समए अहीमे चलि गेलैन जे की करब, केना करब, के संग देत आकि नै देत। एहनो संगी तँ होइते

अछि जे सदिकाल तूम्मे फेड़फाड़ करैए। एहनामे केतए बिसवास कएल जा सकैए..?

कुरसीपर बैसल रामरूप बाबू असकरे विचारि रहल छला। सरकारी सर्टिफिकेट अछि जे आब अहाँ काज करै जोकर नै छी, तैपर बलउमकी करै छी। कोन जरूरत पूर्वजक सम्पैतक अछि, जे गाममे अछि। गौंआँ जोति-कोरि कऽ खाए आकि परती बना कऽ गाए चरबए, गामक सम्पैतक हक तँ ओकरे ने भेल। जिनगीमे गाम छोड़ि पेट पकड़लौं, तैयो मन वौआइते अछि। मुदा दस गोरेक बीच जुआन हारि गेल छी, जँ पाछू हटब तँ अनेरे वएह सभ मुहेँपर थुकता जे रमरूपबाक कोन ठेकान, कोनो कि मनुख छी, धन जमा केने कथी हेतै, जखन जुआने नै तखन ओहेन मनुखक मोजरे केते। मुदा विचार जेना विचार भूमिकेँ खोदि देलकैन। खोदि ई देलकैन जे जखन दुनू परानी दस गोरेक बीच अपन विचार स्थापित करए गेलौं, तखन जे निर्णए भेल ओ दुनू गोरेक ने भेल। कोनो काज लेल आ केतौ जाइ लेल संगीक संग गप-सप्प करैत रस्ता कटि जाइए...। तही बीच कादम्बरी चाह नेने पहुँचली।

पतिक सोगाएल सूरत देख कादम्बरी व्यंग्यवाण छोड़ली-

"मन बड़ खनहन जकाँ बुझि पड़ैए?"

कादम्बरीक वाण रामरूप बाबूकेँ छातीमे बेध देलकैन। बजला-

"मन खनहन की रहत मुदा खरहर तँ अछिए। यएह सोचि रहल छी जे अनेरे बेसी देरी किए करब। काल्हिए-परसूसँ किए ने काजमे हाथ लगा दिऐ।"

'हाथ लगाएब' सुनि कादम्बरी सहमली। सहमली ई जे 'विचार देब' आ 'विचारकेँ हाथक काजसँ मिलबैत चलब' तँ भीन बात भेल! तखन? तखन तँ यएह ने जे पति छैथ, जेना संग दइले कहता तेना

देबैन। ई बात ऐछे जे दुनू परानी बूढ़ भेलौं, मुदा ईहो तँ आशा ऐछे किने जे जँ रस्ता-पेरा मन झूकत तँ दोसरक आशासँ ठाढ़ हेबे करब किने। धनक लोभ छी, मुइलो अछियापर सँ उठि कऽ आबि लोक लाठी भाँजैए। छोड़बो नीक नहियेँ हएत...।

बजली-

"हम तँ जीवनसंगिनी भेलौं, कर्ता-धर्ता तँ अहीं भेलौं, तखन जे जेना सामर्थ रहत से तेना भाँज पुड़ैत रहब।"

कादम्बरीक आस भरल आसक विपरीत दिशामे रामरूप बाबूकेँ आस लगिते मन बढ़लैन। मन बढ़लैन ओइ दिशामे जैठाम अपनाकेँ समाजक ओहन लोक जे सभसँ बढ़ल-चढ़ल अपनो बुझै छैथ आ समाजो मानै छैन, जे दोसराक लेल की केलखिन! कोन मुँह लऽ कऽ समाजक बीच जाएब? मुदा सोझहामे कादम्बरी, तँए बात बदैल बजला-

"गामक लोक बड़ टेढ़ होइए, अनेरे कहत जे अहाँ बाबरी कटबै दुआरे केशकट्टा दियाद छोड़लौं आ आइ मरै बेरमे समाजक आगिये संस्कार चाहै छी। तखन की कहबै?"

रामरूप बाबूक विचार कादम्बरी नै परेख पौली। बजली-

"केकरो अनकर सम्पैतपर जाएब जे कियो मुँह दुसत? अपन सम्पैत छी। चाहे मन्दिर बनाँउ, आकि असमसान, अपना विचारे कियो करैए। तैठाम गौंआँ किए बाजत?"

कादम्बरीक बोल जेना रामरूप बाबूक मनमे बलबोल जकाँ बुझि पड़लैन। मुदा बजला किछु ने...।

जिनगीक रक्छा केना कएल जाए, तेकरा खेल बुझै छैथ। हँ एहेन गाम-समाज अखनो अछि जे अतिथि सत्कारक विधि-बेवहार

बँचा कऽ रखने अछि। रामरूप बाबू समाजक बेटा नै बनि पेला, ई दोख अखनो केकर कलंक भेल। काल्हुक लेल कोन अंक निर्धारित हएत। मुदा कादम्बरी तँ गामक पुतोहु भेलखिन। जखने गाम पएर देथिन तखने समाजक बाल-अबाल सभ अड़ियाइत कऽ अँगने लऽ जेतैन। ओइ संग अपनो रहैक ठौर-ठेकान बना नै चलब तँ समाजक कोनो ठेकान छइ। एकटा मारि-पीटि भेने सौंसे गामक लोक जहिना निपत्ता भऽ जाइए तहिना मारि-पीटि करैकाल सेहो तँ गोलियाइते अछि...।

निर्णए केलैन जे समाजक नीक-अधला समाजक भेल, अपने केना ओइमे प्रवेश करब, ई अपन काज भेल। बजला-

"तीन दिन मानि कऽ चलू। तीन दिन रहैक खेनाइ-पीनाइक फास्ट-फुड ओरियानक संग रहैक घरक जोगार सेहो केने चलब।"

"हँ मोटा-मोटी दू गोरेक बोझहा भेल। मुदा आब तँ गामे-गाम सवारियो जाइते अछि। काल्हिये भोरक प्रोग्राम रखू।"

OO

तिथि : 14 जुन 2014, शब्द संख्या : 5309

सगहा

जेठ मास उतारपर, स्कूल-कौलेज, कोट-कचहरीक गरमी छुट्टीक मजा कियो दार्जिलिंग तँ कियो कश्मीर तँ कियो समुद्री इलाका मुम्बइ पहुँच-पहुँच उठा रहल छैथ...। आइ धरि कहाँ कहियो बुझै छेलौं जे ऐ बेरक गरमी तीस-चालिस सालक पछाइत भेल, चाहे बरखे एहेन भेल आकि शीतलहरीए एहेन भेल!

रमाकान्त सेहो कौलेजसँ सोझे गाम चलि आएल। इण्टर साइंसक विद्यार्थी, इण्टरक पछाइत जिनगीक अनेको बाट फुटै छै, देख अपनो जिनगीक बाट तकैक खियालसँ, बाटे चललासँ ने बातो बनै छै आ नाशो होइ छइ। खियाल ई जे पिताजी दस बीघा खेतबला किसान छैथ, तँए नीक हएत जे इण्टरक पछाइत एग्रीकल्चरे कौलेजमे पढ़ि वंशकेँ आगू बढ़ाएब।

पिता जीक मूल सम्पैत तँ ओही मुरतीमे समाएल छैन किने, जे केना हाथ पहुँचा पकैड़ दस बीघा जमीनपर ठाढ़ अपन इज्जत-आबरू, मान-सम्मान, बँचबैत आएल अछि, ओही परिवारक ने विधि-बेवहार, किरिया-कर्मकेँ काल-क्रमसँ धारक धार अनवरत बहैत रहल, तखन ने परिवारक समुचित समग्र विकास भेल, आगू बढ़ल आकि एक-भग्गू बनि अर्थक गंगा तँ टपि गेलौं, मुदा जमुना, सरस्वती, त्रिवेणी गंगा टपब तँ नहियेँ कहल जा सकैए। गाम ऐबते रमाकान्त किसुनलाल

ऐठाम पहुँचल। एक तँ जेठ मासक रौद तैपर धरती तबधल! ओना तीन बेर बरखो भेल मुदा तैयो जेठ अपन रंग पकड़िये लेलक...।

दू छिट्टा ठढ़िया साग बाड़ीसँ आनि किसुनलाल दरबज्जापर तराजू-सेरसँ जोखै छला। सौदो तँ ओहन सौदा छी जे लगले पानि चढ़ा तौल लिअ, सबाइयो बढ़ि जाएत आ पानि चढ़ाएब छोड़ि दियौ तँ मनुखे जकाँ सेर-पौआ कमि जाएत। मुदा किसुनलाल ओहेन किसान जे बाड़ीसँ टटका काटि आनि पहिने सागकेँ तौल मुट्ठी बान्हि, पछाइत पानि चढ़ौता जे लेवालकेँ जेहेन भाग हेतै तेहने ने सागो हेतइ। जिज्ञासा भरल अवाजमे रमाकान्त किसुनलालकेँ पुछलकैन-

“काका, अहाँ तँ जिनगीक चारिमपनमे पहुँच गेलिऐ, तैयो देखै छी..?”

आगूक बात रमाकान्त जीह तर दाबि लेल, मुदा किसुन काका ओकरा अधला नै बुझलैन। खोदि-खोदि जहिना घाउ बहाएब बहौनिहारक काज छी, से बुझि किसुनलाल पुछलखिन-

“बौआ, साग देख मन झुझुआइत हेतह, मुदा अपन जिनगीकेँ दू कट्ठा बाड़ीमे समैट बारहो मास सागक खेती करै छी आ अपना ढंगक मनुख बनि अपन जिनगीक बाट धेने जा रहल छी।”

किसुनलालक बात रमाकान्त अदहे-छिदहे बुझलक, मुदा जिज्ञासा तँ सौंसे बुझैक रहै, बाजल-

“से की?”

एक काजक अन्तिम घड़ी, पतियानी काज लगल, नहाएब, खाएब आराम करब तखने ने तीन-बजिया गाड़ी पकैड़ कोसी-कमलाक छहर छछाड़ैले जाएब...। तँए, प्रश्नकेँ समटैत किसुनलाल बजला-

“बौआ, अखन अहाँ कौलेजमे परबेसे केलौं हेन तँए हमरो औरुदा भगवान अहींकेँ दैथ, मुदा एकटा बात कहि दइ छी जे जहिना गाछ-बिरीछ, फल-फूलक गाछ रोपल जाइ छै तहिना जिनगीकेँ सेहो रोपल जाइ छइ। हम अपन जिनगी अही दू कट्ठा चौमासमे रोपि देने छिऐ आ दस किलो साग सभ दिन अनै छी, जे चौबीसो घण्टाक बुतात होइए।”

कोनो चीजकेँ बुझब-बुझाएब आ करब-कराएब दुनूक दू रूप भेल, एक भेल थियोरी आ दोसर भेल प्रेक्टिकल। ओहुना कहल जा सकैए, जानब आ जानि कऽ करब। जँ प्रेक्टिकलक बेर थियोरीक प्रश्न उठौल जाएत तँ ओ प्रेक्टिकलक बाधक भेल। ओना प्रेक्टिकल करैसँ पहिने थियोरीकेँ नीक जकाँ चलिया ली। जँ से नै आ घेरा लत्तीक फड़ सेरियबैकाल जँ कियो पुछि दैथ जे सुपाच्चयक दृष्टिसँ घेरा केहेन तरकारी होइए, तँ निश्चित रूपे मन बँटेबे करत। जखने मन बँटाएत तखने नजैर बँटाएत आ नजैर बँटेने घेराक बतियाकेँ कड़चीक सांगहक धक्का लगबै करतै। आ जखने कड़चीक मारि लगतै तँ ओ सड़ि जाएत..!

ओना एक्के प्रश्नपर ठाढ़ भेल रमाकान्तो मने-मन विचारैत आ किसुनलालो। मुदा दुनूक अपन-अपन बुधि-विवेक, तँए अपना-अपना रस्ते दुनू विचार करैत। रमाकान्तक मनमे उठल, अखन हमरा नै एबा चाही, अखन काजक बेर छै, तहूमे किसानक लेल। स्कूल-कौलेज जकाँ दस बजिया थोड़े छी। भरि दिन ने काजक धुमसाही खेती-पथारीक रहैए, मुदा किरिण डुमला पछाइत तँ खेतिहर किसान असथिर होइते हेता, नीक हएत जे हुनकेसँ आगू बुझैक समए लऽ ली...।

रमाकान्तसँ फराक विचार किसुनलालक मनमे उठलैन। मनमे

उठलैन जे कोनो जिज्ञासुकेँ जँ मुस्की मुड़ियबैत दरबज्जापर सँ विदा नै केलौं, तँ अतिथि सत्कार केना भेल? मुदा अतिथो सत्कार तँ काले-क्रमे ने नीक होइ छै...।

अपने बेथे जहिना रमाकान्त बेथाएल तहिना किसुनलालो। मुदा समए केकरा छोड़लक जे अहाँकेँ छोड़ि देत, पकैड़ चलू आकि गुड़ैक-गुड़ैक गुड़कैत चलू, मुदा...।

सामंजस करैत रमाकान्त बाजल-

“काका, आएल तँ छेलौं किछु बुझैले, मुदा अहाँक व्यस्ता देख किछु पुछैक साहसे नै होइए?”

रमाकान्तक प्रश्न सुनि किसुनलालक मनमे भेलैन जे एहेन काज समए चुकब नै भेल, समैकेँ बँचबैत चलब भेल। बजला-

“बौआ, बाल-बोध रहितो ठेकनगर छह। बड़बढ़ियाँ समए अगुआ बजलह। दिनक काज करैक ओरियान लेल भिनसरमे एक-डेढ़ घण्टा आ साँझू पहरकेँ दिनक उसरनक ओरियान करैबेर एक-डेढ़ घण्टा समए खाली रहैए, तैबीच तोरा जे सुविधा हुअ। आबह, एक गामक, एक समाजक ने सभ कियो छी, एकर विचार तँ अपने सभ ने करबै। जँ से नै करबै तँ एके देशमे बम्बै किए इण्डिया बनि गेल आ अपना सभ किए गामे-गमाइत रहि गेलौं।”

किसुनलालक बात सुनि मुस्की दैत रमाकान्त बाजल-

“कौल्हुका समए रहए दियौ काका?”

कहि चलि गेल...।

दुनू छिट्टाक सागकेँ किसुनलाल अध-अध सेरक मुट्ठी बना, सैंति जलसिक्त करैत नहाइले गेला।

सगहा जातिक वंशमे किसुनलालक जन्म भेल। अपन वंशक

रक्छा करैत किसुनलालो अपन बाप-दादाक पुश्तैनी-घराड़ीपर बसोवास छैथ। ओना, सगहा वंश बाँस, खरही, रजनीगंधा आ अड़िकंचन जकाँ फूल-फड़क आशा छोड़ि समए पकैड़ वंश वृद्धि करैए तहिना किसुनलालो अपन वंशक रक्छा अपना लूरिये-बुधिये काइए रहला अछि। सगहा वंश एना फुटल, एके वंशक बीच बिआहक प्रश्न उठल। फौगनहैट लहकी दऽ देने रहै मुदा रहै माघे। कन्या देखए घटक सभ आएल रहैथ, संयोग एहेन बनल जे बथुआ साग तोड़ने कन्यौं आ कन्याक माइयो बाध दिससँ अबैत रहथिन। घटकक बीच एकटा गामक जमाइयो रहथिन। वएह चुटकी सुतारि रस्तेपर कन्याक संग कन्याक माइयोकेँ सभकेँ देखा देलकैन। तत्खनात तँ घटक किछु ने बाजल, मुदा गाम गेला पछाइत समाद पठौलक जे सगहा जातिक छी तँए कुटुमैती नै करब। आर्थिक दृष्टिसँ किछु सम्पन्न तँ रहबे करैथ।

चारि-पाँच बीघाबला किसान परिवारमे किसुनलालक जन्म भेल। गामेक स्कूलमे जखन पढ़ैत रहए आ स्कूल-कौलेजक खिस्सा-पीहानी सुनलक, तखने मनमे रोपि लेलक जे एम.ए. तक जरूर पढ़ब। संकल्पेसँ जहिना संस्कारो फड़ै-फुलै छै तहिना किसुनलालोक फड़ल-फुलाएल।

गामक मिडिल स्कूल तक किसुनलालकेँ पढ़ैमे कोनो असुविधा नै भेल। आध मीलपर स्कूल, टोले-टोल जाइत-अबैत। तहूमे पँचमा तक महिनाक फीस-फास रहबे ने करइ, छठा-सतमामे अढ़ाइ रूपैआ महिना लगइ। तँए कोनो पैघ समस्या नहियेँ। ओना आइक जे परिस्थिति खर्चक हिसाबसँ बनि गेल अछि ओकरा जँ मोटा-मोटी देखब तँ जेते खर्चक पछाइत कियो डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर आकि ओकिल बनि तैयार होइ छला ओते खर्च अखन केते विद्यार्थीकेँ मिडिल स्कूलसँ पहिने भऽ जाइ छइ। सत्ताक मदारी खेल तँ ऐछे जे

एक दिस शिक्षाकेँ अनिवार्य आ फ्री अधिकारक बात अछि तँ दोसर दिस खर्चक ठेकाने ने अछि! जे जेतए छैथ से तेत्तै तबाह..!

मिडिल स्कूलसँ निकलला पछाइत किसुनलालक मन वौआएल नै। जहिना कियो संकल्पित बाट पकैड़ चलै छैथ तहिना किसुनलालो हाइ स्कूलमे नाओं लिखौलक। ओना हाइ स्कूल बहुत दूर नै, मुदा पएरे अबै-जाइबला लेल लगो नहियेँ। आइक परिस्थितिमे तेज सवारी आ रोड भेने जेते दूरपर जा कियो चाह-पान-जलखै करैए तेते दूरपर, सवारी आ रस्ता–पेराक दुर्दशा दुआरे विद्यार्थीकेँ छात्रावासमे रहए पड़ै छल। अपना ऐठामक मौसमो तँ प्रतिकूले अछि मुदा बिना अनुकूल बनौने काजो तँ नहियेँ चलत। प्रतिकूल ई जे जँ पाँच किलो मीटरपर स्कूल अछि बैशाख-जेठमे भिनसुरका पढ़ाइ होइए, एक दिस जाइकाल नीक रहल मुदा दोसर दिस छुट्टीक पछाइत साढ़े एगारह बजे अबैकाल केहेन होइए से तँ सबहक सोझहेमे अछि। तहिना बरसातमे एक तँ रस्ता-पेरापर पानिक बेगो चलैत आ खच्चा-खुच्ची सेहो रहबे करए। चिकनि माटिक थालकेँ धोइयोमे देरी लगबै करै छइ। तहिना बर्खो-बुन्नीक कोनो ठेकान नहियेँ अछि, अध'रस्तेमे जँ कहीं शुरू भेल तँ स्कूल छोड़ाइए देत! तहिना जाड़ोक मास। जहिना दस बजे भिनसरे बुझि पड़ै छै तहिना पाँचे बजे साँझसँ ओस खसए लगै छइ। खाएर जे छै, ओही बीचमे ने जिनगीक पथो-परिवहन छै...। अँटावेश करैत किसुनलाल छह मास होस्टलमे रहि आ बाँकी छह मास घरेपर सँ स्कूल आएब-जाएब शुरू केलक। छह मासक छात्रावासक जिनगी किसुनलालकेँ जिनगीमे ठाढ़ होइक बाट देखौलक। बाइस सेर चाउर, पाँच सेर दालिक संग दस रूपैआ महिना, बस ई भेल भोजनक खर्च। बैसारी काज केनिहारकेँ जलखैक ओते जरूरतो नहियेँ पड़ैए। किसुनलाल मैट्रिक पास केलक।

लोअर प्राइमरी स्कूलमे बच्चा कौलेजक पढ़ाइक गीतो गबै छल आ खिस्सो–पीहानी सुनबो-कहबो करै छल, ओइ घाटपर किसुनलाल पहुँच गेल। पाँच बीघा जमीनबला खेतक उपार्जनसँ निश्चित रूपसँ कौलेजमे विद्यार्थी नै पढ़ा सकै छैथ। ओना कागजी नक्शा किछो बनौल जा सकैए तेकर कारण खेतीक जे पैदावारक दशा अछि, जे बाढ़ि-रौदीसँ आक्रान्त अछि, जैठाम परिवारकेँ अन-वस्त्र जुटाएब कठिन छै तैठाम कौलेजमे बाल-बच्चाकेँ पढ़ाएब कठिन अछिए। पिताक दशा-दिशा देख किसुनलाल, अपना भरे कौलेजमे पढ़ैक निर्णए तखन केलक जखन एम.ए. पास ओहन-ओहन चेहरा अपन जिनगीक खिस्सा-पिहानी सोझहामे आबि ठाढ़ भऽ टाल ठोकि कहैत-

‘हमहूँ मनुखे छी। भाय, रातिकए अस्पतालमे भैयारीक संग मुर्दा उठा-उठा कौलेजक खर्च जुटेलौं...।’

तँ कियो कहैत-

‘प्रतिदिन खर्चक हिसाबसँ कारोबार कऽ पढ़लौं...।’

तहिना कियो ट्यूशन तँ कियो आन-आन काजक हिसाब किसुनलालकेँ जोड़ि कऽ कहलक...।

ट्यूशनकेँ अधार बना किसुनलाल एम.ए. तक पढ़ैक विचार मनमे रोपलक।

जाबे कियो मनकेँ पकैड़ संकल्पित बाटक बातपर राजी नै करौत ताबे तक जिनगीक बाट एकमुहाँ केना बनत? काँकोड़क बच्चा जकाँ, माइक पेट फटिते, सह-सह करैत सभ सभ दिस विदा होइत, तहिना जँ विवेकी मनुखोक हुअए तँ ओकरा की कहबै..? दुनियाँक बोनमे जहिना अनेको पैघ-पैघ गाछ दुनियाँकेँ छाहैर देने अछि तहिना सोझ बाटो तँ रोकनै अछि। सोझ बाट लेल सोझ दिशा-दशा होइ छै, मुदा बोनक गाछ तँ बेठेकान जनमल अछि। जैठाम जेकरा अनुकूलता

भेटलै तहीठाम से जनैम, हवा-पानि पीबैत बाटेपर ठाढ़ भऽ गेल अछि। रंग-रंगक फल-फूल फला गेल अछि। अपन-अपन सीमामे सभ महिराइन बनि गेल अछि। महिराइन ई जे जैठाम जेहेन माटि-पानि छै तैठाम तेहेन अन-फल-फूल-तरकारी जे पूर्व-जनक देल जिनगी छैन, ओकरो नकारल नै जा सकैए। जँ से हएत तँ हजारो रंगक एक वस्तु जेना सागकेँ कोन मौसम अनुकूल अछि, जे मनुखोक जिनगी लेल अनुकूल हएत, तेकर गहन विचार हमर सगहा पूबजन जीह तोड़ि नचैत ठाढ़ जिनगी दुनियाँकेँ देखा चुकल छैथ।

छह बर्खक कौलेजिया जीवनमे किसुनलाल जिनगी जीवैक पद्धतिक बीआ जिनगीक चासमे चसिया लेलक। जिनगीक बीआ ई छिटकल जे निश्चित समैक ट्यूशनसँ अपना भरि दिनक खर्च पुरा लइ छला। पितो कहियो अनदेखी नहियेँ केलखिन। बेर-कुबेर जे हाथ-मुट्ठीमे पाइ आबैन तँ किसुनलालकेँ दैतो छेलखिन आ कहितो छेलखिन-

“बौआ, तोरा पढ़बैले जेते हमरा उचित ओरियान करक चाही, से नै कऽ पाबि रहलियऽ हेन, ऐठामक किसान परिवारक जिनगी सबहक सोझहे अछि, तेकर माने ई नै बुझिहऽ जे पिताक अनुकूल दृष्टि नै छैन।”

पिताक प्रति किसुनलालक एहेन श्रद्धा जे पिताक देल पाइसँ किताव-कलम-कागज छोड़ि, आनठाम केतौ ने खर्च केलक। बजारू जिनगी भेने किसुनलालकेँ पढ़ैक भरपूर समए भेटल। भरपूर ई भेटल जे जहिना कोनो गाममे सम्पन्न पुस्तकालय रहने जिज्ञासु विद्यार्थीकेँ अनमोल-अनमोल फल पबैक केदलीवन भेटैत तहिना किसुनलालोकेँ भेटल। मुदा गाम-गामक पुस्तकालय सभ इतिहासक तरका पन्नामे पड़ि गेने, भाग-दौड़क समैमे ओमहर कियो देखिये ने पाबि रहल

अछि! तँए कि एकरा नकारि देब जे समाजमे पुस्तकालय नै छल? जिज्ञासु छात्रक लेल उच्चकोटिक तीर्थ स्थल अधिकांश गाममे छल। उच्च कोटिक ऐ लेल जे सभ यज्ञसँ ज्ञानयज्ञ नमहर होइ छइ। जे स्कूले-कौलेज, प्रवुद्ध-जनक विचार-विनिमयक संग होइत आएल अछि। माने समाजक बीच सार्वजनिक शिक्षण संस्थान पुस्तकालय ओहने बट-वृक्ष रहल अछि। कियो प्रवुद्ध सदैत सुबट्टी देब अपन धर्मक कर्तव्य बुझै छैथ, मुदा जँ विचारक उत्तर ओहो नै भेल जे कान धरि रहल। तँए ईहो नै कहल जा सकैए जे प्रवुद्धक टोपी पहिर कलछपन नै भेल। भेल, खूब भेल। की गामक पुस्तकालय प्रवुद्ध-जनक संग नबयुवककेँ उत्साहित, उद्वेलित नै करैत रहल, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। की ओइ नबयुवकक मनमे कहियो रहैन जे पुस्तकालय जुआ-शराबक अड्डा बनत आकि प्रवुद्ध-जनक समाजिक विचार-विनिमयक? मुदा दोसर पक्ष एकरो नै नकारल जा सकैए जे गाम-गामसँ पुस्तकालय उजैर गेल। जैठाम शिक्षा मदक सरकारी खर्चक ब्यौरा समाजक बीच अबैए तखन ढोलक बदला नंगेरा पीटि-पीटि कहल जाइ छै, पंचायतक ब्यौरामे लाखोक हिसाब। मुदा केते गाम एहेन बँचल अछि जइ गाममे पुस्तकालय अछि? एक तँ जहूठाम किछु हुअ चाहैए तहूठाम एहेन-एहेन घेरा-घेरी अछि जे सभ काजे घेरा जाइए।

किसुनलालकेँ कौलेज जीवनमे पढ़ैक भरपूर समए ई भेटल जे कौलेजमे रीडिंग रूमक बेवस्था छल। जइमे भरपूर कितावो आ भरपूर समैयो। भिनसरसँ साँझ धरि रीडिंग रूम खुजल रहै छल। गेटपर एकटा चतुर्थ श्रेणीक कर्मचारी जे प्रवेशक समए रजिष्टरमे हस्ताक्षर करबा लइ छला। कर्मचारियोमे इमानदारी छेलैन, भरि दिन काजपर तैनात रहै छला। बीचमे एकटा आरो भेल, किसुनलालकेँ कर्मचारीसँ सम्बन्ध बढ़ल। सम्बन्ध बढ़ैक कारण भेल जे बिनु पढ़ल-लिखल

कर्मचारी आगूमे रजिष्टर-कलम रखि अपन ड्यूटी करैथ, ओना दोहरी ड्यूटी रहैन मुख्य रहैन ओगरवाहि। मुदा केता दिन एहेन भेल जे किसुनलाल छोड़ि दोसर विद्यार्थीक उपस्थिति रीडिंग रूममे नै भेल। असगर किसुनलालकेँ देख ओहो कर्मचारी टुघरल-टुघरल लगमे आबि बैस जाइथ जइसँ जेना गार्जन अपन बच्चाकेँ आगूमे बैसा पढ़बै छैथ तहिना किसुनलालोकेँ बुझि पड़ैत। मुदा भऽ गेल बीचमे दोसरे। अपन उदार विचार बँटैत कर्मचारी किसुनलालकेँ कहलक-

"बाउ, जेते किताव पढ़ी, कियो रोकत नै, मुदा तैसंग ईहो कहै छी जे घरोपर लऽ जा रातिमे पढ़ि भिनसरे जमा कऽ देबै तँ ओहो सुविधा भेटत। ऐसँ बेसी हमरा बुते भाइए की सकैए।"

कर्मचारीक विचार किसुनलालकेँ एना अपनौलक जे घण्टा-घण्टा दुनू गोरे गप-सप्पमे बितबए लगल। एक चतुर्थवर्गीए कर्मचारीक ड्यूटीक निर्भयता सदैत ओकरा चाइनपर चमकैत। समैक भरपूर उपयोग किसुनलाल कौलेज जीवनमे केलक।

एम.ए.क नीक रिजल्ट भेलो पछाइत किसुनलालकेँ नोकरीक आशा नहियेँ। तँए जेकर आशे नै तइसँ हटिये कऽ चलब नीक भेल। मुदा किसुनलाल द्वन्द्वमे पड़ि गेल। एक मनमे उठै जे जखन अपना पढ़ि-लिखि कऽ जिनगी बनबै आ जीबैक लूरि भऽ गेल, तखन अनेरे नोकरीक पाछू पड़ब नीक नै हएत। मुदा लगले दोसर विचार मनकेँ दाबि दइ। दाबि ई दइ जे पढ़ल-लिखल लोक जँ नोकरी नै केलक तँ ओकर खिल्ली केतेको दोहा-फकरासँ उड़ौल जाइए। पढ़ै फारसी बेचै तेल, इत्यादि। लोकक लाजक दुआरे किसुनलाल नोकरी लेल साल भरि दौड़-बरहा करैत रहल, मुदा साल भरिक पछाइत नोकरीक उमेरे बीत गेल। तेकरा ओ अधला नै बुझलक। अधला ऐ दुआरे नै बुझलक जे मन मानि गेल रहै जे स्वतंत्रता आ परतंत्रता लोक अपने सिरजैए।

तँए स्वतंत्र देशक स्वतंत्र नागरिक बनब सबहक अधिकार छी।

नोकरीमे केतौ किसुनलालकेँ गरे नै बैसल। एक तँ सरकारी रेकर्डमे जातिक पञ्जी छूटल अछि, तैपर जतियारेक जाल आ पैसाक महजालकेँ किसुनलाल टपि नै सकल। ओना टैपयो सकै छल मुदा विचारक उदासी सेहो बाधा भेल। जँ से नै तँ कियो पाँच बीघा खेतबला, जेकर जमीनक मूल्य करोड़मे हेतै, ओ जँ खेत छोड़ि नोकरीक जिनगी धारण करए चाहैए, तखन किए ने सम्पैतक हस्तांतरण सेहो कऽ लइए? मुदा किसुनलालक अपन जिनगीक धारणा बनि गेल छेलै जे जे सम्पैत अछि ओहीमे अपन अनुकूल जिनगी बना जीवन धारण करब। ओना चारि-पाँच बीघा जमीन किसुनलालक पितोकेँ, मुदा तीन बीघा जमीनकेँ किसुनलाल जिनगी जीवैक अनुकूल बनौलक। अनुकूल ई जे टुकड़ी-टुकड़ी भेल खेतकेँ समैट, अदैल-बदैल एकठाम केलक। एकठाम केला पछाइत जमीन पूर्ण जिनगीक अनुकूल अपनाकेँ बनबैक परियासमे अपन जिनगीक समर्पण केलक। जिनगीक आवश्यकतानुकूल धानक खेत, दलिहनक खेत, रब्बीक खेत आ तीमन-तरकारी, फल-फलहरी लेल ऊँचरस खेत बनौलक। ऊपर दबा कऽ बोरिंग गड़ौलक जइसँ ऊपर-सँ-नीचाँ तकक सिंचाइ भऽ सकए। ओना बारह मासक सालमे सभसँ मरखाह मौसम बरसात होइए, नै भेल तँ रौदी, तहूमे जैठाम पानिक कृत्रिम साधन नै छइ। आ खूब भेल तँ दाही। ओना अनुकूल तँ होइते अछि, अनुकूल ई जे समगम पानि भेने ने रौदी होइए आ ने दाही। मुदा हिस्सेदारी तँ तीन सालक भेल। एक हिस्सेदार रौदी, दोसर दाही तेसर समगम। खाएर जे भेल...।

खेत बनबैत पटौनीक ओरियान बीआ-खादक जोगार करैत किसुनलालकेँ साठि बर्खक उमेर गलि गेलैन। सिपाही जकाँ अखन

तकक जिनगीमे किसुनलाल आने जकाँ धकिऔलो गेला, मुदा जीबठ बान्हि जिनगीक मोर्चापर ओहिना ठाढ़ छैथ जहिना ठाढ़ होइक विचार जुआनीमे सन्तानक छैन। शुरूहेसँ ओ बुझैक परियास केलैन जे समाजमे केना रातिक बीआ छीटि, रतिचर सभ भरि राति चड़ी करैए। आइक समयक मांग बुझने बिना परिवारिक वा समाजिक ढाँचा सुदृढ़ नै भऽ सकैए। जैठाम धर्मक माने माए-बापक सेवा, बाल-बच्चाक सेवाक संग समाजक सेवासँ जुड़ल अछि, जैठाम पोखैर-इनार खुना, विद्यालय-महाविद्यालक निर्माण सेवा रूपमे धर्म बनि फड़ल-फुलाएल, तैठाम आइक परिवेश केहेन हेबा चाही, ई तँ विचारणीय विचार तँ अछिए।

चारि सन्तान किसुनलालकेँ। चारूकेँ अपन-अपन स्वतंत्र जिनगीक दिशा देखा, पाछूसँ धकैल सुपथ-कुपथक विचार करैक बात कहि अपन स्वतंत्र जिनगीमे पहुँच गेला। परिवार अलग नै मुदा सबहक सभ तरी-घटी बुझैत। तैठाम तँ यएह ने उचित भेल जे केकरो कर्ज कियो ने खाए। अपन-अपन कमाइसँ परिवारकेँ आगू ठेलए।

दोसर दिन रमाकान्त छह बजे साँझमे पहुँचल। ओना किरिण डूमि गेल छल मुदा दिनक लाली रहबे करए। एक तँ अहुना किसुनलाल किरिण डुमैत दरबज्जापर आबि बैस जाथि, मुदा आइ तँ दरबज्जोपर काजे छैन। तँए समैसँ पहुँचब आरो अनिवार्य बुझि रमाकान्तकेँ अबैसँ पहिने आबि बैस गेला। ऐबते रमाकान्तकेँ अपने लग चौकीपर बैसौलैन। दू-जनियाँ चौकी तँए चारि-पाँच गोरे गोलिया कऽ बैस सकैए। एक आसन, एक सिंहासन, यएह ने भेल गुरुकूलक विचार। रमाकान्तकेँ देख किसुनलालक मनमे उठलैन, रमाकान्त कौलेजमे पढ़ैए, शिष्टाचार दुआरे जँ चाह नै पीबए तखन केना पुछिऔ जे बौआ चाहो पीबह? तइसँ नीक जे अपने लाथे बाजब

हएत। पोताकेँ नाओं धरा बजला-

"जगरनाथ, चाह पीबैक मन होइए?"

झँपले-तोपल किसुनलालक बात, इशारे-इशारामे सभ बुझलक। जहिना दानाक रस भरिते दारीम चहैक जाइए तहिना रमाकान्त चहकल-

"काका, अहाँ अपना जिनगीसँ खुशी छी?"

रमाकान्तक प्रश्न सुनि किसुनलालक मनधारमे जुआर जकाँ उठलैन, उठलैन ई जे जिनगीक चारिमपनमे पहुँच गेल छी, एक दिनका एक घटनाक फल जिनगी नै होइए, तैठाम तँ जिनगीक आधारेपर ने जवाब देल जा सकैए। बजला-

"बौआ, जिनगी[4]सँ खुशीए नै वेहद खुशी छी।"

जहिना रमाकान्तक प्रश्न सोझ-साझ तहिना किसुनलालोक उत्तर सोझ-साझ, मुदा रहस्य तँ रहस्ये बनल रहि गेल अछि। तर्क-वितर्क करैत रमाकान्त बाजल-

"काका, नीक जकाँ नै बुझि पेलौं जे की खुशी आ की वेहद खुशी।"

रमाकान्तक जिज्ञासा देख किसुनलाल विचारलैन, पहिने शब्दक अर्थ आ पछाइत जिनगीक बेवहारक बीच साम्यताक चर्च करब नीक हएत।

बजला-

"बौआ, खुशी एकसँ शुरू होइए आ वेहद खुशी सीमा-सरहद टपैत होइए। जिनगीसँ ऐ दुआरे खुशी अछि जे अपन स्वतंत्र जीविकाक आधार अछि, झूठ-फूस बजैक कहियो समैए ने भेटल।

[4] किसानी जिनगी

तँए खुशी छी...।"

ऐगला बात किसुनलालक कण्ठे लग रहैन आकि बिच्चेमे रमाकान्त पुछि देलकैन-

"आ वेहद खुशी?"

रमाकान्तक जिज्ञासा जेहेन उग्र छल, जँ तेहेन उत्तर नै देल जाइत तँ ओ केम्हरो बहैक सकैए। तँए आड़ि-मेड़ सोझ करैत किसुनलाल बजला-

"बौआ, जहिना देशक सीमानपर आन देशक आक्रमणक रक्छामे सिपाही अपन जीवन दान करैए तहिना अपन जिनगी गामक माटि-पानिकेँ दान कऽ देने छिऐ, तँए वेहद खुशी।"

OO

तिथि : 22 जुन 2014, शब्द संख्या : 2860

मनकमना

रामखेलौनकेँ अपन तेहेन भीठगर एको धूर खेत नै मुदा बच्चेसँ लोकक देखसीसँ सेहन्ता लगल रहै जे अपन एक बीट केरा आ कलमी-सरही मिला पाँचटा आमक गाछ होइतए। पाँचटा ऐ दुआरे जे केरा एकोटा बीट रहने सालमे पान-दसटा घौर हेबे करत, मुदा एकटा आमक गाछसँ मन छुछुआइते रहत। छुछुआइत ई रहत जे कलमी रहल तँ रसगर सरही-ले आ सरही रहल तँ गुदगर कलमी-ले। तेतबे किए, केरा जकाँ कि आम थोड़े होइए जे निश्तुकी मोजरबे-फड़बे करत। गोटे साल मोजरबे ने करत, तँ गोटे साल बिजलोकेमे जरि जाएत, गोटे साल रौदीमे सुड़ें लगि जाएत तँ गोटे साल विहाड़िमे फड़लाहा डारिये टुटि कऽ खसि पड़त।

एक तँ गामेक तकदीर फुटल जे जेहो चौथाइ[5] हिस्सा भीठगर जमीन छेलै ओहो कोसीक बान्ह टुटने गामे देने धारक नासी फोड़ि ओहो भीठका जमीनकेँ चौरियोसँ नीचाँ उतारि देलक। जइसँ गामे चोकर आम जकाँ चोकरा गेल। ओना, मछबड़बा सबहक पतरा कहै जे गामे किए गामक लोकोक भाग जगलैन। तेते ने गहींर जमीन गाममे भऽ गेल जे एकरे बान्हि-छेक लोक अपना-अपना खेतमे

[5] 25 प्रतिशत

माछ-मखान उपजौत तँ गामक के कहए, अमेरिका-इग्लैंडक वेपारी पहुँच-पहुँच कीनत। जइसँ बड़का-बड़का होटल, नीक सड़क बनि नीक-नीक गाड़ी दौड़ए लगत। जेहने पूजाक परसाद मखान तेहने मनुखक परसाद माछ भेल। मुदा वैष्णव सभ गाम छोड़ि वृन्दावनक बास करैक विचार करए लगला। मन दुतकारए लगलैन जे गामे मछाह भऽ गेल। लंकाक विभीषण थोड़े छी जे मन-चीत मारि रावणसँ अराड़ि केने रहब। अपने ने माछ पोसब आ ने खाएब मुदा जखने गेनहारी-पटुआ साग जकाँ वाड़ी-झाड़ीमे माछे उपजत तँ सहरगंजा लोक खेबे करत। बड़बढ़ियाँ खाएत तँ अपना मुहेँ खाएत, मुदा रन्हितोकाल आ कलपर धोइतोकाल जे गंध पसरत, तेकरा केना पेटमे जाइसँ रोकब। चाहे मुँहक माध्यमसँ जाए आकि नाकक माध्यमसँ, जाएत तँ पेटेमे। पेटमे नै जाए, तेकरे ने संकल्प लऽ कण्ठी बान्हि वैष्णव भेलौं। गामक पानि (कलक पानि) गंधक दुआरे ढठा जाएत, अपन कल छोड़ि केकरो कल पानि पीबैबला रहत? सबहक कलक पानि इछाइन-मछाइन महकत किने। ओहन छुतहरो तँ नहियेँ छी जे लगले दुधिया घरहर बनि जाएब आ लगले गोबराह बनि छुतहर भऽ जाएब। जइसँ कण्ठी तोड़ि आन-आन जकाँ मछखौक बनि खत्ता उपछए लगब। मुदा गाम छोड़ि पड़ेबो केना करब? अपन बाप-दादाक खतियानी जमीनक हिस्सा सभ दिनसँ रहल तेकर तियागो केना करब? केकरो हाथे बेचि लेब आकि ओहिना छोड़ि कऽ चलि जाएब, मुदा जे कीनत आकि ओहिना दफनौत, करत तँ अपना मने। जँ कहीं खाधि[6] खुनि माछे पोसए लगत, तखन तँ आरो घिनमा-घीन हएत। तैसंग ईहो तँ लोक कहबे करत जे फल्लाँ वंशमे फल्लमा तेहेन बतौर भऽ गेल जे अपने तँ केतए-कहाँ वौआ-ढहना भीख मंगिते अछि जे बापो-दादाक

[6] कोचाढ़ि, डबरा

नाक-कान कटा जनम-धरतियोकेँ मेटा लेलक। जखन जनम-डीहे नै रहत तखन मरन-मरौसी केतए रहत...।

जहिना सभकेँ अपनो, अपन बालो-बच्चा आ परिवारोक प्रति किछु ने किछु मनोरथ होइते छै, जैपर चढ़ि मन जीवन-यात्रा करैत रहै छै, तहिना रामखेलौनोकेँ खेनाइ-पीनाइक आशा तँ बोइन-बुत्तापर छेलैहे मुदा फल-फलहरीक मनोरथ मनमे रोपनै छल। गाम देने बड़का सड़क बनने, सड़कक कातक जमीन जहिना आन-आन दफानलक तहिना रामखेलौनो दस धुर भीठ जमीन पकड़लक। ओ जमीन पहिने गौंवैक रहै जे सड़क बनौनिहारक हाथे बेचि लेलक, जइसँ केकरो कोइ विरोध नै केलक। मुदा ई तँ खतरा रहबे करै जे आगू जहिया सड़कपर माटिक काज हेतै तइ दिन ओही सभमे सँ उठौल जाएत...।

घरे सोझे कनियेँ हटि कऽ दस धुर चौमास रामखेलौनकेँ क्षणिक नसीव भेल। खेत अड़ियैबते बिसरभोर भऽ गेलै जे (जमीन) केकरो अनकर थोड़े छिऐ, ई अपन भेल, जेना जे मन फुरत, तेना से करब...।

अपनेमे रामखेलौनकेँ तेना मन मोहिया गेलै जे रंग-रंगक विचार मनमे जागए लगलै। बिसैर गेल जे जे जमीन क्षणिक हाथमे आएल ओकर केते भरोस। जेतबे भरोस तेतबे ने लाभो हएत। जेकर छिऐ ओ केतेकाल रहए देत, तखन तँ ई भेल जे सालक अनुमान कऽ लेब आ तइ हिसाबसँ जेतबे आशा तेतबे आशा। मुदा से रामखेलौनक मनमे एबे ने कएल। एबो केना करितै, जेते पानिमे बुधि ठाढ़ छेलै ओतबे तकक ने थाह छेलै। मुदा प्रश्न तँ गहींर पानिक अछि जे रामखेलौन सन-सन लोक लेल अगम भेल। अगममे बेसी लोककेँ डुमैक सम्भावना रहै छै, हेलि कऽ ऊपर होइक कमे रहै छै, जेना गंगा स्नान सभ करए चाहै छैथ, करितो छैथ मुदा कियो माटिक बीचक घाटपर बैस लोटामे भरि-भरि करै छैथ तँ कियो घुट्ठी भरि पानिमे, कियो जाँघ

भरि पानिमे, कियो छाती भरि पानिमे तँ कियो माथ डुमा डुमकियो लगा करिते छैथ। तखन तँ भेल जेते पानि तेहेन स्नान आ जेहेन स्नान तेहेन मन-मनोरथक फल...।

किरिण उगिते जेना कियो अपन दिनुका काजे बिसैर जाइए, तहिना रामखेलौनोकेँ बिसरभोर भऽ गेल। भेल ई जे शुरूहेसँ मनोरथ रहै जे एक बीट केरा आ पाँचटा आमक गाछ होइतए। मुदा खेत अड़ियैबते मन तेना उड़ि गेलै जे बिसैर गेल पैछला मनोरथ। मुदा तैयो जेना जमीन जीह घीचने होइ तहिना भोरे सुति-उठि घरवालीकेँ रोबमे कहलक-

“हमरा अबेर भेल जाइए, एको क्षण रूकने काज गड़बड़ाएत।”

कहि चाहो-ताहो ने पीलक कोदारि कान्हपर नेने खेत पहुँचल। बीच खेतमे कोदारि रखि, पुबरिया-उत्तरबरिया कोणपर पहुँच खेतक कोण-काण मिलबए लगल। ओना कोण-काण मिलबैले चारू कोण मिलाएब जरूरी अछि, मुदा से रामखेलौन सन लोकक मनमे उठबे किए करतै। ओहन भूमिक ने खेतिहर छी जे जेते हाथ-पएरसँ काज करैए तेतबे नजरियोसँ। जँ अपने नीक जकाँ नै बुझैए, तँ की हेतइ। सबहक अपन-अपन नीको होइ छै आ अधलो होइ छइ। अपने मने ने कियो मनकेँ बुझा-सुझा बिसवासमे आनि काज करैए...।

कोणा-कोणी खेत मीलल देख रामखेलौन खेतीक मिलान करए लगल। खेतीक लूरि रहितो रामखेलौन केतौ ठौरोपर विचार करैत आ केतौ बेठौरो भऽ जाइ। बेठौर तखन होइ जखन बुधि-विचड़ा मनकेँ बुधि-चितरा रोकि अपन काज आगू करा लिअए। तँए बुधि विचड़ा धकियाइत पाछू पड़ि जाए आ बुधि चितरा आगू भऽ जाइ। जइसँ अपन पहिलुका मन-मनोरथ पछुआ गेलइ। मुदा अखन धरिक काज अकास मार्गी छेलै तँए जमीनी कोनो नोकसानो नहियेँ भेल रहइ।

किछु काजे आगू बढ़लै जे तामि-कोड़ि, गोला फोड़ि चौरऽसे बनबैमे लगल अछि। जखन किरिण माथसँ नीचाँ कनियेँ पूब दिस चढ़ैत बुझि पड़लै तखन कोदारि कान्हपर लऽ आँगन आएल। जहिना परदेसीक घरवाली घरक सोलहन्नी जिम्मा बुझि सभ काजकेँ समैपर सम्हारै छैथ मुदा वएह घरवाली घरबलाकेँ घरमे रहने घरे भरिक काजकेँ माने भानसे-भात केनाइटा केँ काज बुझै छैथ। खाएर जे हौउ, मुदा रामखेलौन दुनू बेकतीक बीच तेसर कारण भेल। कारण भेल जे जहिना रामखेलौनक मन खेत पाबिते अपन बोनिहारक रूप बदलैत किसानमे देखैत तहिना पत्नियोँ आनसँ अपना दिस अबैत देखलैन। जइसँ चाँकि बढ़लैन। चाँकि बढ़िते अँगना-घरमे चकोना हुअ लगली, जइसँ बोनाएल-बिसराएल पतिक काज सेहो कन्हेठ लेली। जइसँ दुनू बेकतीक काजक हिसाबे दिनो बढ़लै।

कहैकाल तँ सभ कहिते अछि जे फल्लाँक दिन-बढ़ल आ फल्लाँक दिन घटल। मुदा की बढ़ल, की घटल, तेकरो तँ तजबीज करए पड़त। चाहे पाथर तर दबाएल, केंकियाइत कियो हुअए आकि हवाइ जहाजपर उड़ैत अकासमे हुअए, ने सुरूजक गति-विधि कमैए आ ने घड़ी-पहरक। तखन दिन केना घटैए आ केना बढ़ैए? मुदा ईहो तँ होइते अछि जे एके स्कूलमे एके शिक्षकक पढ़ाएल एके पोथी पढ़ि कियो शत-प्रतिशत नम्बर हाँसील कऽ ऊपर चढ़ि जाइए आ कियो नीचाँ धकिया तेते निच्चाँ चलि जाइए जे चिन्हें-पहचीन समाप्त भऽ जाइ छइ। माने ई जे जेना ने ओकरा ओहेन पोथीसँ भेँट भेल होइ आ ने ओहेन शिक्षक, आ ने ओहेन स्कूलेसँ। तखन? हँ तखन ई जे दिन-रातिक बँटवारा खाली चाने-सुरूजटा लेल नै, सभले भेल अछि। जे जेते जिनगी जीवैक ढंग पकैड़ जेते सफर करत ओ ओते अगुआइए आ जे जेते कुढंग आकि वेढंग भऽ चलत ओ ओते धक्का खाइत पाछू मुहेँ धकियाइत-धकियाइत धरतीपर खसैए।

दसे धुर खेत, करबारी हाथ पड़ने पाँचे दिनमे अड़िया चौरस बनि बीआ दइ जोकर बनि गेल। बेरुका उखड़ाहाक काज केने रामखेलौन किरिण लहसैत पोखैर-झाँखैर दिससँ आबि, डेढ़िएपर चटकुनी बिछा चैनक साँस छोड़लक। आँगन बाहरैत पत्नीकेँ सोर पाड़ि बाजल-

“तेहेन जुग-जमाना भऽ गेल जे केकरोसँ किछु पुछबो गरदैने कटाएब हएत। सोझ मुहेँ, सोझ बात कियो केकरो कहै छइ। काज रहत आमक आ कहि देत कटहरक फड़ बड़ी-बड़ी होइ छइ। मुदा अहाँ तँ कियो आन नइ भेलौं, तँए अहींसँ विचारि खेतीक आगूक काज करब।”

पतिक बात सुनिते जसमतिक मन टिकुली जकाँ अकासमे उड़ि गेलैन। उड़ि ई गेलैन जे पतिक विचारी कोन पत्नी नै बनए चाहै छैथ, मुदा जिनगीक बेढंगपन तेते दूरी बना देने अछि जे चाहितो अनचाहे रहैए। परिवारक प्रति पति-पत्नीक बिसवास आ पत्नी-पतिक बिसवास जँ नै पाबि सकल तँ श्रद्धा कागजक पन्नाक शब्द भेल। ओना से बात जसमतिक मनमे नै उठलैन, जहिना परिवारो-परिवारो आ गामो-घरमे ओहेन अभाव तँ ऐछे जे काज-उदमसँ मतलब-माने कम आ देश-दुनियाँक गप करैसँ बेसी रहल। तेहने जसमति, तँए अदहा अँगना बहारब छोड़ि पति लग बैसैले नुर-सुर करए लगली। रामखेलौनक नजैर पत्नीक काजपर पहिनहि पड़ि गेल छल मुदा जहिना डायरीमे लोक अपन काज दर्ज करा रखऽ चाहै छैथ तहिना अपन काजक प्रस्ताव पत्नीक डायरीमे दर्ज करै दुआरे बाजल छल। पत्नीकेँ बैसैक नुर-सुरी देख रामखेलौन बात अन्त करैत बाजल-

“पहिने आँगन बहारि लिअ, हाथ-पएर धोइ, चुल्हि पजारि चाह बनौने आउ। दुनू गोरे एकठाम बैस पीबो करब आ जाबे चाह पीब

ताबे गपो-सर्ड़का करि लेब।"

ओना पतिक बोलमे झाँससँ बेसी जसमतिकेँ मीठाँसे भेटल, तँए पतिक बोलकेँ अपन बात कहि जसमति अपना दिससँ टारि पतिये दिस घुसका ई कहि देलक जे 'पुरुख-पातरक बोल अहिना होइ छै... ।'

असलमे जसमतिक मन, 'दुनू गोरे एकठाम बैस चाह पीअब' सुनि उधिया गेल छेलैन। आइ धरि एहेन कहियो ने भेल छल। गमैया लोक गमैया चालिक दुनू परानी। परदेसी आकि नव विचारक लोकक बीच एहेन बेवधान नहियेँ अछि। जसमतिक उड़ैत मनकेँ रामखेलौन परेख लेलक। परेख ई लेलक जे आँगन बहारि, जारैन-काठी चुल्हि लग रखि, बरतन-बासन कलपर धोइ, चुल्हि पजारि चाह बना, केतबे-कालमे पुरा लेलक! एहेने पानिक ने पत्नी हेबा चाही। एहेन तँ नै ने जे अपन माथ चाह पीबैले दुखाए आ पत्नीक माथ बनबैसँ।

एके ओछाइनपर बैस रामखेलौन दुनू परानी चाहो पीबए लगल आ अपन खेत अधारित गपो शुरू केलक। एक तँ खेतीक पहिल प्रकरण समाप्तिक खुशी तैपर सौंझका चाहक चुहचुही, संग-संग एक ओछाइनपर पत्नीकेँ बैसल पाबि मुस्कियाइत रामखेलौन बाजल-

"खेत ते ढुढुर तैयार भऽ गेल, आब बीआ दइते लहलहा उठत।"

हूँह-कारी भरैत जसमति बजली-

"अइमे कोन काल खाएत।"

पत्नीक सह पाबि रामखेलौन बाजल-

"रोपब कथीक बीआ, से तँ विचारि लेब किने?"

पतिक प्रश्न सुनि जसमतिक मन फेर तेते उधिया गेलैन जे थाहे ने रहलैन। जहिना मैट्रिक पास केला पछाइत विद्यार्थी एम.बी.बी.एस; इंजीनियरिंग आकि एम.ए. इत्यादि उच्च कोटिक रिजल्ट पौनिहारकेँ

उधियाइत अपना बरबरि बुझैत, जे नेनमैत भेल, तहिना जसमतिकेँ सेहो भेल। एके सुरे दस रंगक फलोक नाओं, दस रंगक तरकारियोक नाओं आ दस रंगक अन्नोक नाओं गना देलकैन। ई होशे ने रहलै जे दसे धुरमे की सभ हएत। एहनो चीजक नाओं कहलक जेकर आँट-पेट दसो धुरसँ बेसीए होइ छइ। बेसीए नै होइ छै जे एहनो होइ छै जे अपना लग दोसराक बासो ने हुअ दइ छै... ।

दुनू परानी रामखेलौन जिनगीक लीला करैसँ पहिनहि हेरा गेल। माटिक हेरेलहा, पानिक डुमलाहा, बुधिक भोतियेलहा केतए आड़ा लगत तेकर कोनो ठेकान रहै छइ। दुनूक बीच गुमा-गुमी पसैर गेल। दुनूक मन चुल्हिक खोंरना जकाँ दुनूकेँ खोरियबै जे 'झगड़ा ने दन, मुहाँ-मुहीं किए बन्न' मुदा काज मानत हवा-विहाड़ि। जाबे मास-मौसमकेँ ठेकना खेतमे बीआ नै देब, ताबे उपजा केना हएत।

दुनू परानीक बीच किछुकाल गुमा-गुमी रहला पछाइत रामखेलौन बाजल-

"बैसलौं विचार विनिमय करैले, भऽ गेल गुमा-गुमी, तखन आगू की करब?"

हेराएल-भोथियाएल जसमति ठकमुड़ा गेली। ठकमुड़ा ई गेली जे अखन तक जे कोनो नव काज[7] करै छेलौं से गामवाली जेठकी बहिनसँ पुछि लइ छेलौं, दुनू बहिनक सासुर एके गाम, तैठाम ई[8] तेहेन बान्ह बान्हि देलैन जे ओहो पुछब बन्न भऽ गेल। बान्ह ई जे गामक बेसी लोक ठके अछि, कोनो बातकेँ तेना कऽ बुझा देत जे नीकक बदला अधले भऽ जाएत। ओना, ईहो अछि जे किछु लोक जानियोँ कऽ एहेन विचार दोस्तियारैयोमे दैत जे तमाकुलो गाछ मडुए जकाँ

[7] अनभुआर

[8] पति

चौकियाएल जाइए। मुदा से नै, अधिक लोक ओहन छैथ जिनका समुचित बोध नै छैन, तँए कि ओ दोखी नै भेला? भेला। मुदा ठकक दोख लगाएब अनुचित, हुनका ऊपर ई दोख भेल जे बिनु बुझलो काजक विचार, बुझिनिहार जकाँ दऽ दइ छैथ। ई बुधिक दोख भेल। दोख ई भेल जे हुनका अपन जनकारीक जानकारी भरि देब अछि। अनेको रंगक जानकारी लोक कर्मभूमिमे पबैए। तैठाम ओही नजैरसँ ने देखए पड़त जे के अपन बुधिबलसँ हथियार हथिया रणभूमिमे केते दूर धरि पहुँचल छैथ। ई तँ नै, जे कियो हथियार उठा जीवन संघर्ष करै छैथ तँ कियो शब्दवाण अकासमे फेकै छैथ... ।

अपनाकेँ अनाड़ी बुझि जसमति बजली-

"भानसो-भातक समए भेल जाइए, भरि राति गपे-सप्प करब तखन भानस कखन हएत, कखन खाएब, कखन सूतब।"

पत्नीक बात रामखेलौन बुझि गेल। बुझि एना गेल जे कोनो विचार बहिनसँ विचारि करै छल। तैठाम रतुका काजक बहाना बना बहिनसँ पुछैक गर देखलक... ।

बाजल-

"अपन गामवाली जेठकी बहिनसँ विचारब अधला नै भेल मुदा ओइसँ पहिने बुझए पड़त जे ने सभ गामक खेत एक रंग अछि आ ने माटि एक रंग अछि आ ने उपजावाड़ी।"

एक तँ ओहिना जसमतिक मन वौआइत जे बालो-बोध अपन काजक जश चाहैए, तैठाम तँ सहजे दुनू परानी चेष्टगर छी, तखन जे एहेन हूसल काज भऽ जाए जे काजक जश हुअ आकि अजश मुदा पेटमे लात तँ लगबे करत। जखने पेट लतिऔल जाएत तखने जिनगीक रथ केते दिन पथ पकैड़ पथिककेँ लऽ चलत... ।

बजली-

"बीचमे की कहि देलिऐ जे ने सभ गाम एकरंग अछि आ ने खेती-वाड़ी?"

पत्नीक बात रामखेलौन बुझि गेल जे कतिया कऽ कतरए चाहै छैथ। मुदा लगले मनमे उठि गेलै जे अपन आकि अपन परिवारकेँ समैट चलब तँ अपने काज भेल किने। किए ने वेचारीकेँ दू गामक दूरी बुझा दिऐन। मुदा ऐगला काज[9]क समए भऽ गेल अछि, जँ जिनगीक कथा-पिहानी शुरू करब तँ रातिये ससैर जाएत। जखने समए ससरत तखने अपन बोझ माथपर चढ़बैत जाएत, तँए नीक हएत जे अखन गप-सप्पकेँ समए लैत विराम दऽ दिऐ आ भानस करै दिस ठेल दिऐन... ।

बाजल-

"ने घर केतौ पड़ाएल जाइए, आ ने दुनू परानी केतौ पड़ाएल जाइ छी, तखन एते धड़फड़ेने कोनो गप हएत। ताबे हमहूँ नजैर खिरा गाम दिस देखै छिऐ आ अहूँ देखब। जखन खा-पी, निचेन भऽ ओछाइनपर आएब तखन ऐगला गप-सप्प हेतइ।"

जान छुटैत देख जसमति पाल-पाल कऽ भानस करए विदा भेली। असकरे रामखेलौन दू गामक दूरीक विचार करए लगल। कोसे भरि हटि रूद्रपुरो अछि आ रामपुरो। मुदा दुनूमे केते दूरी अछि। ओना दुनू दू परगने नै जिलो रहने लगियो-डण्टाक दूरी अछि मुदा से नै, परिवारिक भोजन-साजनक बात अछि, एक गाममे कुरथी दालि प्रमुख अछि जे भोजो-काजमे तेबखाक संग चलैए आ दोसर गामे बेठेकान अछि, जैठाम कोनो दालिक प्रमुखता छइहे नै। तेकर पाछू दुनूक धरतीक बनाबट अछि। जइ गाममे कुरथीक प्रमुखता अछि तइ गाममे उचरस जमीन बेसी अछि। तँए तेबखा-कुरथीक उपज बेसी

[9] भानस

अछि। ओना ओहन खेतमे गहुमो आ आनो दलिहनक नीक खेती हएत मुदा कृत्रिम पानिक जोगार नै तइसँ लोक कुरथीए-तेबखा उपजबैए। मुदा दोसर गाम तेहेन चापी अछि, जैठाम दलिहनक खेती होइते ने अछि, तँए जिनका जेते ओकाइत से तेहेन दालि अपनो खाइ छैथ आ भोजो-काजमे रन्है छैथ। ओना दुनू गामक धरतियोक सतह अलग-अलग अछि। एक गाममे पचास फीट नीचाँ पानिक लेअर अछि तँ दोसर गाममे अढ़ाइ-तीन सए फीट नीचाँ पानिक लेअर अछि। जेहेन माटि-पानिक मीलान रहत तेहने ने उपजो हएत। तेतबे किए, किछु जगह एहनो होइत जे बालु पबिते पानिक आगमन भऽ जाइए आ किछु जगह एहनो अछि जे बालु रहितो पानि बिलाएल अछि। माटियो की एके रंग अछि, केतौ नीक उपजाउ अछि तँ केतौ ओइसँ दब आ केतौ एहनो अछि जे साफे उपजाउ नै अछि। उपजाउओ की एके रंग अछि, रंग-रंगक अछि। माटि रहितो कोनो खास अन्नो, तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरी खास-खास माटिक खास प्रेमी अछि आ दोसरकेँ तेना नै पकड़ए दिअ चाहैत अछि। माटि-पानिक विचार करैत-करैत रामखेलौन ओहेन सघन वनमे भोतिया गेल जेतए चारूकात अन्हारे-अन्हार बुझि पड़ैत।

जहिना पानि चढ़ल लोहाक औजार काजमे रत-रत करैत आरो पानिक सान चढ़ा लइए आ माटिक परता पाबि भोंथ भऽ जाइए, तहिना जसमतियोक बेवहारिक काज[10]मे पानि चढ़ि रत-रत करै छल, मुदा मनक विचारमे भोथिआइते छलि। ताड़क गाछ जकाँ बिनु-डारि पातक गाछपर चढ़ब जेहने उकड़ू होइ छै, तेहने डारि-पातबला गाछपर चढ़ब असान सेहो होइ छै, मुदा छी तँ दुनू गाछे। भोथियाइत-भोथियाइत रामखेलौनक मनमे उठल, ने खेतीक एकेटा रस्ता अछि

[10] घर-अँगनाक काज

आ ने कोनो काजक, तखन अनेरे किए मनकेँ भरियौने छी। दू गामक बात अछि, एक तँ ओहुना कहल जाइ छै, 'चारि कोसपर पानी बदले आठ कोसपर वाणी।' जखने दू गाम भेल तखने बहुत किछु एकरंगाहो हएत बहुत किछु अलगो हएत। दू गामे किए, गामोमे दू जातिक बीच बहुत रंगक दूरियो अछि, बहुत मिललो अछि।

साँझुका नअ बजिया घड़ी-घण्ट ठकुरवाड़ीमे बजबो ने कएल तइसँ पहिनहि जसमति भानस कऽ, थारी-लोटा अखारि, चिनमारपर रखि, ओसारक पीढ़िया ठीक करैत लोटामे पानि नेने पति लग पहुँच बजली-

"भरि दिनक कोदरवाहिक थाकल-ठेहियाएल छी, चलू पहिने खा लिअ। एक हाथ तेलसँ पएरो ससारि देब।"

पत्नीक आगत-भागत देख रामखेलौनक मन उड़िया गेल। उड़ियाइत मनमे उठल, कहू जे आन दिन तगेदा करए पड़ै छल जे भानस भेल। मुदा आइ केमहर चान उगल..?

चानो तँ चान छी कखनो चानी देत कखनो चाइन तोड़त। कोनो बात[11] केतौ प्रेमोसँ बाजल जाइ छै आ केतौ दुष्प्रेमोसँ बाजल जाइ छइ। से नै, रामखेलौन प्रेमसँ बाजल-

"आन दिन कहै छेलौं जे कलेपर पएरो धोइ लेब आ लोटामे पानियोँ लऽ लेब, आइ इजोरियाक चान उगल कि अनहरियाक।"

आन दिन जकाँ जसमतियोकेँ मन नै, जेना पतिक प्रति प्रेमक नव इतिहास लिखैत हुअए तहिना मनो मतंग...।

बजली-

"इजोरियाक चान हुअए आकि अन्हरियाक चान, हमरा ओइसँ

[11] शब्द

कोन काज अछि, चान-सुरूज तँ दुनू गोरे छीहे। जखन घरेमे चान-सुरूज अछि तखन केतए इजोत-अन्हार, अकास-पतालमे तकए जाएब।"

सिनेहासिक्त पत्नीक बात सुनि रामखेलौन बामा नजैर पत्नीक दहिना नजैरपर दैत बाजल-

"की सभ खेनाइ बनेलौं?"

खेनाइ सुनि जसमति ठमैक गेली। ठमैक ई गेली जे जहिना कुशियारेसँ गुड़, चीनी, मिसरी बनि आनो-आनो वस्तुक संग पकैड़ ओकरो मीठ करि मिठाइ बना दइ छै, मुदा मिसरी आ चीनीक आगू गुड़ो आ कुशियारोक मोल केते अछि, तहिना खाइक वस्तुक विन्यासोकेँ तँ अछिए। जेना गहुमेक रोटियो बनैए, सतुओ बनैए पुड़ियो बनैए आ पकवानो बनैए मुदा पुड़ी-पकवानक आगू सतुओ आ रोटियोक वएह मोल छै? ओकरेटा किए कहबै, तीमनो-तरकारीक तँ वएह गति अछि। जे भँट्टा आकि अल्लू आकि आने कोनोकेँ पका कऽ सन्नो बनौल जाइए, रसगर तरकारियो बनैए आ तेलमे तड़ि तड़ुओ बनैए मुदा तँए कि ओकरा एके कहबै? जहिना मिसरी आगू गुड़, तड़ुआक आगू सन्ना, तहिना ने पकवानक आगू रोटियो अछि...।

लगले मन आगू घुसैक रामखेलौनकेँ अपनेपर पड़ि गेल। अपनापर पड़िते नजैर उठलै। नजैर उठिते, चोन्हियाएल आँखिमे जहिना बिजलोका छिटकै छै तहिना छिटकल। छिटैकते देखलक जे कियो एहनो नारी छैथ जे पतिक पावन व्रत[12]केँ पूर्ति करेबा लेल अपनो व्रती बनि पतिव्रता छैथ, तँ कियो एहनो तँ ऐछे जे अपन जिनगीक अदहा उमेर पतिक प्रेम-संग रहि, बाल-बच्चा-परिवारक सेवा करैत मुदा अपन मनीषा रहितो आगूओ जिनगीमे ओहने कहाँ रहि पबैए।

[12] संकल्पित संकल्प

आ एहनो तँ होइत अछि जे ओकरा धक्का मारि पतीत बना देल जाइ छइ। जेकरा लोक जिनगीक हार कबुल करैत दिन कटिते अछि। ओना जहिना पुरुखकेँ पतित हेबामे कियो बाधक नै बनैत तहिना नारियोक अछि। अपन मनक मरजी सभकेँ अपन-अपन अछि। चाहे नीक वृत्ति पकैड़ स्वर्ग जाऊ आ अधला वृत्ति पकैड़ नर्क जाऊ, दुनू तँ देवलोकेक बास छी। धर्मराजेक राज छी...।

हाथमे पानि भरल लोटा जखन जसमतिकेँ भारी लगए लगलैन तखन भक्क खुजलैन। भक्क खुजिते मन पड़लैन जे पतिक प्रश्न तँ भोज्य पदार्थक छल। विरहाएल-वौआएल जसमति हृदए खोलि बजली-

"गहुमक रोटी आ भँट्टाक चोखा बनेलौं?"

बजैबेर जसमति बाजि गेली मुदा लगले मन चनैक गेलैन। चनैक ई गेलैन जे जे पुरुख भरि दिन कोदारि भँजलैन आ हुनका गहुमक रोटी आ भँट्टाक चोखाक खेनाइ केहेन भेल? प्रश्न उठिते जसमतिक मन ओतए जा ठहैर गेलैन जे घरमे जएह रहत तेकरे बना कऽ ने देबैन। मुदा तैयो पतिक ओ सिनेह जैठाम पुरुखक शक्तिक काज पड़ै छै ओ केना बनि पौत। जेना परिवारक हार कबुल करैत जसमति हारल बटोही जकाँ नेप झाड़ैत बजली-

"काल्हियेसँ घरमे आँटा सधल अछि अहाँ बोनाएले रहै छी, मिलपर जाइके छुटिये ने भेल, हाँइ-हाँइके चारि घानी गहुम उला-पीस कऽ रोटी बनेलौं।"

भानसक अपन बढ़ोत्तरी काज पतिक सोझमे जसमति रखि देलैन। पत्नीक बात सुनि रामखेलौन पाछू दिस उनैट तकलक तँ बुझि पड़लै जे अपनो जे काज दुआर-दरबज्जाक करै छेलौं सेहो आ अपनो काज ओ जे करै छेली तहूमे तीन-तेकठ भेल। गहुम-उला कऽ

पीसबपर नजैर ऐबते रामखेलौनक मनमे खुशी उपकल। खुशी ई उपकल जे जहिना राहड़िक अरबा आ ओकरे उलौला पछाइत जे दालिक सुआदमे बढ़ोत्तरी होइ छै, तहिना ने उलबा गहुम आ अरबा गहुमक रोटीक सुआदमे सेहो हेतइ। पत्नीक विचारसँ सहमति जतबैत रामखेलौन बाजल-

"बुझलौं बड़ काजुल छी, गहुमक रोटी अमृत छी अमृत, एकरा के दूसत जे अहाँ अधला भोजी छी।"

पतिक हरखित मन देख जसमति बजली-

"अपना ते एको डाँट भँट्टाक गाछ नहियेँ अछि हाटपर पुरना गाछक भँट्टा सस्ता छेलै वएह एक सेर अनने छेलौं, ओकरे सबटा कें चोखा बनौने छी।"

'चोखा' सुनि रामखेलौनक मन अखन धरि खसले जेना छेलै तहिना अदहा-अदही खुशी-दुखी पतिकें देख जसमति पोचारा दैत बजली-

"अपनो मन रहए जे, भँट्टाकें पहिने मोटगरे-मोटगरे तड़ि लेब आ ओकरे झोड़गर तीमन करितौं। मुदा ने घरमे तेल छेलए आ ने कोनो मसल्ला। नूनटा छेलए, दाबापर सँ चारिटा मिरचाइ तोड़ि अनलौं आ चोखा बना लेलौं, तरकारीक कोनो रस्ता नै सुझल केना करितौं।"

जसमतिक बात सुनि रामखेलौन मगन भऽ गेल। जहिना सत् बात बजला पछाइत, निरोग फल पेला पछाइत आ दुनियाँक रस-सभसक परिचए भेलापर होइत। बाजल-

"भगवानकें के कहए जे भगवानक बापो नै तिरियाक सोभावकें पकैड़ सकैए। हम तँ हमहीं छी...।"

मुस्की दैत पुनः,

"लाउ लोटा।"

लोटा दइसँ पहिने जसमति इजोतक गरे पानिकें देखलक, देखैक कारण माछी-मच्छर पड़ब छेलै। एकटा खढ़क महिक्का टुकड़ी जकाँ ऊपरमे दहलाइत रहै तेकरा कनछिया कऽ नीचाँ फेक पतिक हाथमे लोटा पकड़बैत जेना देब-लेबक विचार दुनूक मनमे उठलै। जसमतिक मनमे उठल, अहिना पहनुमा निवेदन पतिकें सभ दिन करिऐन। पतिक आँखिपर आँखि घुसकौलैन। तहिना रामखेलौनक मनमे उठैत, यएह छी परिवार आ अही परिवारमे रहब भेल हमर जिनगी। मुदा लगले मन पत्नीक देल समैपर उनैट गेलइ। हाँइ-हाँइ कऽ जसमतिक हाथसँ लोटा पकैड़ मुँह-कान धोइले आगू-आगू अचोना दिस बढ़ल। मुँह-हाथ धोला पछाइत रामखेलौनकें जसमति कहलकैन-

"लाउ लोटा।"

पत्नीक बात सुनि रामखेलौन ठमैक गेल। मन पड़ि गेलै सासुर। केना बड़का भाइक लोटा छोटका भाए हाथमे लऽ, दिशा-मैदान दिस जाइतोकाल आ ऐबतोकाल हँसैत खुशीसँ लेने अबैत-जाइत रहैए...। मनमे तरंग उठए लगलै। पैखानासँ पहिने आ पछातिक एके परिस्थिति अछि। अपन गंदगी दोसराक सिर मढ़ब की नै भेल? धड़फड़ा कऽ रामखेलौन ओसारपर बैस खेनाइ खए लगल। अदहा सेर भँट्टाक तरकारी, अदहा सेरक सन्नामे की अन्तर भेल। सन्ने अछि तँ की हेतइ, झोरक बदला पानि पीब लेब, कोनो कि आन जकाँ खोंइचा फेकल जाइ छै जे सेहो कमत।

आगूमे बैस जसमति अपन परीछा-फल पुछए चाहली। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन- ई तँ जिनगीक परीछा छी जे कहिया की

खाइले भेटत। तखन विन्यास बनबैक परीछा तँ दिनानुदिनक छीहे। एक भनसियाक बनौल तरकारी सभ दिन एक रंग नै होइ छइ। मुदा सन्ना बनबैक परीछे की, आगिमे पका पानिमे धोइ कऽ सिलौटपर लोढ़ीक जोगारसँ बनेलौं। एतबेमे की कलाकारी भेल जे पुछबैन आ कहता...।

तँए पाशा बदलैत जसमति बजली-

"ताबे अहाँ खाउ, बिछान बिछौनाइ छुटले अछि, बिछेने अबै छी।"

कहि जसमति उठि बिछान बिछबए गेली। बिछान समैट जखन बाढ़ैनसँ बाहरए लगली आकि धक-दे मनमे उठलैन, रातिमे बाढ़ैन बर्जित अछि। मुदा उपए? हँ उपए अछि, बिछानकें बिछा दुनू कातक कोण पकैड़ दू-चारि झाड़ैन देलासँ अदहा बाढ़ैनक काज भऽ जाइ छइ। मुदा बिछान बिछैबते-काल मनमे उठलैन- खेबाकाल पुछलयैन कहाँ जे खाइ जोकर भेल किने? एक तँ दुनियाँमे के केकरा पुछैए, मुदा हमरा दुनियासँ कोन काज। हमर तँ दुनियाँ अपन घरे छी...।

बिछान तँ बिछा नेने छेली मुदा धड़फड़ेने सिरमा बिच्चेमे छूटि गेलैन। पति लग आबि जसमति कानक सोझे मुँह बना बजली-

"पुरुख जाबे परसन नै लइ छैथ, ताबे मन झुड़झुड़ाइते रहै छैन, भरिसक खेबा जोग नै बनल की?"

पत्नीक बातकें अनसुनी करैत रामखेलौन खा कऽ उठि, हाथ धोइ कऽ ओछाइनपर पहुँच गेल।

ओछाइनपर पतिकें पहुँचल देख जसमतिक देहक पानि आरो तेज भऽ गेलैन। तेकर कारण अपन खेतीक विचार करब छेलैन। खेतिहर तँ वएह ने भेला जे खेतक प्रति समरपित छैथ, अपना हाथ-पएरसँ कर्म कऽ फसिल लगबैथ, सेवा करैक माने फसिलक जन्मसँ

मृत्यु धरिक बीचक किरियाक लूरि भेल। दुनू योगक बीच खेतिहर भेला। यएह ने भेल जिनगी आ वएह खेत ने भेल जीवनदात्री माता। जेते देबैन तइसँ बेसी देती। मुदा निमूधन रहने हुनका ई दोखो लगाएब केतए धरि उचित अछि, जे हुनके किरदानीसँ नाशो भऽ गेल। खाएर-जे-से। अपन जिनगीक विचार जँ अपन परिवारक बीच नै करब तँ समस्या ओहेन भऽ जाइ छै जेहेन घोड़ागाड़ीमे इंजन लगौने हएत...।

जसमतिक हाथ-पएर घरक काज सम्हारैमे व्यस्त रहैन आ मन दस धुर अपन खेतमे पतिक संग बैस भविसक चान-सुरूज देखैन। थारी-लोटा धोइले जसमतिकें रहबे करैन तइ बिच्चेमे मन उमैक गेलैन। उमैक ई गेलैन जे हो-न-हो अपने जाबे बिछानपर जाएब तइसँ पहिनहि ने कहीं हुनका[13] नीनियाँ देवी आबि कऽ दाबि दन्हि, तखन तँ सभ पानिमे चलि जाएत। बिना आँइठ-काँठ धोनहि, ओसारेपर थारी लोटा छोड़ि, पति लग आबि हियासए लगली जे जागल छैथ आकि सूतल।

ओना रामखेलौन जगले मुदा अपन जिनगीक हिसाब जोड़ैमे तेते वौड़ा गेल जे आँखिक पीपनी खसल, शरीर निश्तेज भेल पड़ल। जसमतिक उताहुल मन मानि गेलैन जे सुति रहला। सूतब मनमे ऐबते ठनका जकाँ खसलैन। मुदा ठनको खसैकाल लोक अपन आँखि-कान बन्न कऽ लगोक खसल ठनकासँ अपन आँखि-कान बँचाइए लइए। मुदा जसमतिकें से नै भेलैन, पहिने जरैत डिबियाकें अढ़ केलैन, जइसँ झल अन्हार भेने आँखि खोलता। जँ नै खोलता तँ बूझब सूतल छैथ। जागलसँ नीन भेर सूतल बीचक हजारो सीढ़ी छै, पहिले सीढ़ीपर सँ जसमति टपि गेली, पति ने पीपनी उठौलकैन आ ने झल अन्हारी एलइ। डिबिया लगसँ कनी आगू घुसैक जसमति हाथपर हाथ

[13] पति

देलकैन।

हाथपर हाथ पड़िते रामखेलौन पतिक स्वरमे बाजल-

“थारी-लोटा समैट घरमे रखलौं?”

पतिक बोल सुनि जसमति ठमैक गेली। सूतल छैथ कि जागल, तइ बिच्चेमे तेना लटैक गेली जे ने अक् चलैन ने बक्। एकटा मन कहैन जे कहू ई केहेन भेल जे हुनका हाथपर हम हाथ देलिऐन। सभ दिन ओ दैत रहला, आगूओ देता। मुदा तखन पत्नी आ परिवारी भेने विचारैक अधिकार तँ अछिए। ओहनो तँ लोक ऐछे जे अपनेटा देखैए, जँ एहेन पैदाइस भेल तँ परिवार आगू की बढ़त जे केतए दहला-भँसिया जाएत तेकर ठेकानो रहत? दुनियाँक झाड़ीमे तेना झड़ा जाएब जे ठेकाने ने रहत जे अपना-ले की केलौं आ जेकर जवाबदेही, बाल-बच्चासँ समाज धरि, अपना ऊपर छल तेकरा-ले की केलिऐ...।

पतिक बोल सुनि जसमति बिना अकार-सकार केने उन्टे पएरे थारी-लोटा माँजए विदा भेली। पीपनी खसौने रामखेलौन अपनाकेँ पढ़ैत- जखने बोनिहारक घरमे जन्म भेल, तखने ने दस दुआरी भेलौं? चिड़ै जकाँ जेतए अहरा-चहरा भेटत तेतए जा कऽ ने बास करब। जहियासँ काज करैबला हाथ-पएर भेल तहियेसँ ऐ समाज आ गामक ने एकोटा खेत अछि जइ खेतमे काज नै केने छी आ ने ओहेन किसान छैथ जिनका काजमे सहयोग नै केने छी, आकि अन्न नै खेने छी। तेतबे नै, गामक एहेन एकोटा कल नै अछि जेकर पानि नै पीने छी। नै नौत-पिहाने तँ काजक जलखैयो तँ जरूर केनै छी...। जइ धरतीक एते सेवा केलौं, ओ हमरा की देली? ऐठाम आबि रामखेलौन लसैक गेल। लसैक ई गेल जे केलहे बिसैर गेल जे कोन खेतमे कोन जजाति कोन मासमे लगेलौं आ कोन मासमे कटलौं। कटैपर नजैर पड़िते मन पड़लै, केते जजात तँ जनिजातिये कटै-उसारै छैथ से केना पुरुख बूझत। तँए

पत्नीक जिज्ञासा करैत रामखेलौन खोंखी केलक। पति-पत्नीक बीचक खोंखीक माने तँ ओते अछि जेते पति आ पत्नीक संख्या अछि। मुदा से नै, जसमति बुझलैन जे भरिसक सोर पाड़ि रहल छैथ, तँए ओसारक चौकैठे लगसँ बजली-

“ऐबते तँ छी।”

‘ऐबते’ सुनि रामखेलौन बाजल-

“कुरथी कोन महिनामे उखाड़ल जाइ छै?”

जसमतियो बिसैर गेली। बिसरबो केना ने करितैथ। गामसँ कुरथीक खेतीए उपैट गेल। बरसाती दलिहन, अधिक बरखा भेने आकि बाढ़िमे डुमने फसिल नष्ट भऽ जाइ छइ। जहिना करहर आकि मखानक पनिपत पकैड़ करहरो उखाड़निहार आ मखानो उखाड़निहारे ने नार पकैड़ उखाड़ि गजुरा फलो खाइए। गजुराएल खेरही आकि बदाम ओते तगतगर होइए जे माटिक ऊपर होइए, सौरखी आ मखान तँ सहजे ओहेन माटिपर होइए जे अथाह पानिमे डुमल रहैए।

बिसरा-बिसरीमे जहिना रामखेलौन तहिना जसमति। बात आकि विचार तँ काजमे सटल चलै छै, काज चलैत रहल, विचार चलैत रहल। काज छूटि गेल आकि बिसैर गेल तँ बातो-विचार हराइए जाइ छइ। दुनू एक दोसरपर नजरियो दैत आ नजैर निच्चो कऽ लैत। नजैर उठा जेना बिसरबकेँ गलती बुझि डाँटए चाहैत तहिना अपन बिसरब बुझि नजैर नीचाँ कऽ लैत, रातियो अपना गतिये चलि रहल अछि रामखेलौन आ जसमति बिसरा-बिसरीमे झूलि रहल अछि। मखानेक बीची जकाँ कुरथीक नाँगैर पकैड़ नचबैत जसमति बजली-

“कोन मासमे कुरथी बागु करै छेलिऐ से कहू तँ मन पड़ि जाएत। कुरथी मौसमी फसिल छी तँए तीन-चारि मासमे हेबे करत। बागुसँ उखाड़ैक समए तीन-चारि मास आगू भेल।”

पत्नीक प्रश्न सुनि रामखेलौन बाजल-

“जाए दियौ कुरथीकेँ, जहिना बाढ़ि-पानि गामसँ ओकरा उपटौलक तहिना ओहो पथरोगिया सभकेँ उपटबैत रहऽ।”

एके चौतालमे जहिना घोड़ा-मिलान होइ छै तहिना दुनूक बीच समझौता भऽ गेल...।

रामखेलौन बाजल-

“ऐ समैमे कोन-कोन फसिल लगौल जाएत आ कोन-कोन कटत, से ठेकानपर अछि?”

जेना जसमतिकेँ ठोरेपर रहैन तहिना बजली-

“आँखि कि भगवान नै देने छैथ, अपना नहियोँ अछि तैयो तँ अनकर देखते छिऐ। काल्हि अहूँ टहैल कऽ गाम घुमि लेब आ हमहूँ घुमि लेब।”

पत्नीक विचार सुनि रामखेलौनक मनमे शीतल समीरक सिहकी सिहकल। अनायास हाफी भेलइ। हल्लुक मन होइत देख नीनियाँ देवीक स्मरण केलक, करिते अपना गोदीमे सुता लेलखिन।

भोरमे नीन टुटिते रामखेलौन ओछाइनेपर सँ हियाबए लगल जे गामक पाहि केना लगाएब। जँ एक भागेसँ दुनू परानी देखब शुरू करब तँ बामी-दहिनीक भाँजमे किछु छुटियो सकैए। तइसँ नीक हएत जे एक भागसँ अपने आ दोसर भागसँ हुनका देखैले कहि दिऐन...।

विचारमे मजगूती देख सूतले-सूतल रामखेलौन बाजल-

“नीन तोड़ू, भोर भेल।”

‘नीन तोड़ू भोर भेल’ सुनि जसमति कड़ैक बजली-

“नीन तँ टुटले अछि, अहाँकेँ की खगल से कहू।”

पत्नीक बोल सुनि रामखेलौन आगू बात कहब छोड़ि मने-मन

विचार करए लगल जे एना किए भेल? भोरे-भोर भगवानक नाओं लोक मधुर ध्वनिसँ लैत अछि तैठाम फुटल झालि जकाँ अवाज किए खनखनाएल छैन। मुदा लगले मनमे उठलै जे जहिना कड़ची, संठी आकि कोनो बौस तोड़ैकाल गोटे टन दे टुटि दू टुकड़ी भऽ जाइए आ गोटे टुटलो पछाइत जोड़ले रहैए, भरिसक तहिना भेल। मन मानि गेलै, बाजल-

“साफसँ नीन तोड़ू, आब उठैबेर भेल अहूँ काज करए जाएब हमहूँ जाएब। काजे छिऐ, जँ डेढ़-वार भेल तँ दिने डेढ़-वार भऽ जाएत। जखने समए डेढ़-वार भेल आकि बातो-विचार डेढ़-वार भऽ जाएत। जइसँ कहीं रौतुका निअरलाहा काजे ने छूटि जाए।”

पतिक गपसँ जसमतिकेँ सुतैकालक बात मन पड़लैन। मन पड़लैन ई जे दुनू बेकती एके ओछाइन, एके सिरहौनापर मुड़ी रखि ने विचारने रही तखन जँ ओ मन पाड़ए चाहलैन तँ एना किए दुतकारलिऐन। भिनसुरका समए तँ जिनगीक प्रभात बेला छी, जखने अपन ठर-ठेकान छोड़ब तखने हवा-विहाड़ि सुगन्ध लऽ कऽ उड़ि जाएत। जइसँ बिनु गंधक फूल जकाँ ने भऽ जाएब। जखन ओहन भऽ जाएब तखन सुगन्धित फूल कहेबा जोकर रहब? किछु छी तँ पति-पत्नीक बीचक विचार छी। ओना पति-पत्नीक सम्बन्धक जे रूप पकड़ने अछि, तइसँ भिन्न, चाहे दोसतियारे हुअ आकि पति-पत्नीक बिआह, पहिल प्रश्न तँ यएह ने होइत जे नमहर जिनगीक बीच मिलानसँ डेग-मे-डेग मिला चलब केना? क्षणिक दोस्तियो होइ छै आ केते देशमे बिआहो ओहेन होइ छै जे भोर घटकैती दुपहर बिआह आ साँझमे छोड़ा-छोड़ी कऽ दुनू पुरबते कुमार बनि जाइए। मुदा तेहल्ला–तेहल्लीक काजकेँ नजैरसँ कनी घुसका अपन दुनू बेकतीक बीच नजैर

राखू, पहिलुका हिसाबे[14] पाँच-सात बर्खक अवस्थासँ मरै धरिक सम्बन्धक व्रत छी बिआह। तैठाम जँ सए बर्खक जिनगी मानब तँ नबे-पनचानबे बरख भेल। नै जँ अस्सी मानब तँ सत्तैर-पचहत्तैर बरख भेल। सेहो नै जँ सरकारी मानब तँ साठि बर्खक भेल। तैयो तँ पचास-पचपन बरख भेबे कएल। मुदा समए एहेन दुरकाल भऽ गेल जे...। विद्योपति कानि-कानि कहलैन- 'जनम अवध हम रूप निहारल, नयन न तिरपित भेल।'

किछुकाल गुमा-गुमीमे समए घुसैक गेल। मुदा घुसकल कहाँ, जहिना रामखेलौनक मन पति-पत्नीक प्रेमक खेत तामए लगल तहिना जसमति अपन बोधक खेत...।

सिनेहक पान करैत रामखेलौन बाजल-

"भकुआएल छी, नीन तोड़ू। रातियोमे तँ तेहेन जगरना नहियेँ भेल जे आँखि करूआएत।"

जहिना कोढ़िया बरद मारिक डरसँ आड़िक कातमे जा कऽ देह पटबैत जे मारियो लागत तँ अदहा आड़ियोमे लगतै, तहिना आड़िक गर देख जसमति बिहुँसैत बजली-

"मेद-मेदीनक राति जकाँ राति बीतल तखन किए करूआएले आकि भकुआएले रहब। हम कि रौतुका निअरलाहा बात बिसैर गेलौं।"

लत्तीक मुड़ी जकाँ सुढ़िआएल जसमतिक विचारमे विचारक सोंगर लगबैत रामखेलौन बाजल-

"सौंसे गाम घुमि कऽ दुनू परानीकेँ देखै-परखैक अछि। तँए बामा भागक भाँज अहाँक रहल आ दहिना भागक भाँज अपन

[14] बाल बिआह

रहल।"

बामा-दहिनाक कारण जसमतिकेँ बुझल नै तँए पूरक प्रश्न उठबैत बजली-

"जँ दुनू गोरे संग मिलि देख-देख मुँह-मिलानी करैत चलब तँ बेसी नीक हएत किने?"

एक संग रामखेलौनक सोझहामे दूटा प्रश्न उठि गेल। पहिल जे चलैकाल जँ नजैर दुनू कात चलाएब तँ रस्ताक घुचीमे पएर पड़ने आकि ठेँसे लगने खसैयोक डर आ ठोकरोक कारण तँ अछिए। दोसर ईहो तँ नीके अछि जे दुनू बेकती देख-देख मुँह मिलानी करैत चलब। जइसँ कोनो ओझरी पछुआएल नै रहत।

तर्क-वितर्क करैत रामखेलौन ओछाइनसँ उठैत बाजल-

"बेसी ओझरी-सोझरीमे कथीले पड़ब, अपना नजरिये जे देखैक मन हुअए से देखब, जे नै देखैक मन हुअए तेकरा छोड़ि देबइ।"

सिरमापर सँ मुड़ी उठबैत मुँह-मिलानी करैत जसमति बजली-

"हमर माए-बाप अहाँकेँ पुरुख जानि हाथ पकड़ौने रहैथ, से की हम बिसैर गेलौं। पति-पत्नीक बीच जिनगीक सम्बन्ध छी, तँए सूतलोमे आ जगलोमे अहाँक संग छोड़ि केतए जाएब, जँ केतौ अपना मने असगरे चलियो जाएब तेकर रक्छाक भार अहाँ ऊपर थोड़े रहत।"

जहिना राति-दिनक संगम स्थल भोर-भिनसर छी तहिना रामखेलौन, दुनू परानीक बीच संगम घाट बनबैत बाजल-

"अपने दुनू बेकती ने नट-नटीन आ जट-जटीन भेलिऐ, दुनियाँक रंग-मंचपर दुनू मिलि नचबै, लोक देख-देख हँसतै।"

बजैकाल तँ रामखेलौन बाजि गेल मुदा लगले मनमे भेलै जे हँसियो तँ नीकोक होइ छै आ अधलोक, से केना बूझब। सौनक मेघ

जकाँ रामखेलौनक मन उमड़ए-घुमड़ए लगल। उमड़ए-घुमड़ए ई लगल जे हँसी तँ ओहन महाभारतक पात्र जकाँ अछि जे मौगी छी आकि मरद से कियो परेखनिहारे नै। नीकोमे खुशी रूपमे हँसब होइ छै, आ अधलो देख तँ लोक हँसिते अछि। तखन? हँ तखन ई जे खुशीक जे हँसी होइ छै, ओ नीक भेल। मुदा जेतए लोक अनका हँसीक पात्र बनबैए तैठाम की अपन मन नै हँसै छै? हँसै छइ। मुदा जहिना भिनसुरके सुरूज देख ने कियो दिन भरिक अनुमान करैए तहिना हँसबकेँ चौपेत रामखेलौन मनमे रखि बाजल-

"अनेरे दुनू गोरे संगे गाम घुमब। जहिना केरा खेती-ले भादो भदबा होइ छै तहिना पुरुख-पुरुखक गपक बीच अहूँ भदवा भऽ जाएब, तँए नीक हएत जे अहाँ घरे-अँगनाक काज सम्हारू जइसँ तुकपर खेनाइयो-जलखै हएत आ काजोक तुक मिलत।"

नीन टुटिते बिछानपर सँ उठब आ टुटल नीने बिछानपर पड़ल रहब, दुनू दू भेल। बिछान छोड़ि लगले उठि जाएब पुरुखपना भेल आ पड़ल रहब रोगपना वा कोढ़िपना भेल...। ई बात जसमतिकेँ मनमे उठिते बिछानसँ नीचाँ उतरैत बजली-

"जाउ अहूँ जेतए जाएब से जाउ, अनेरे सभटा काज जकथक भेल अछि।"

पनरह अखार बीति गेल मुदा बरखा नै भेने अजोध जेठ जकाँ समैयक रूपरेखा। केतौ-केतौ कोनो-कोनो वस्तु रोपलो जाइत आ सुखल-अधसुखू सजमैन-कदीमाक लत्तीकेँ लोक उनटा-उनटा पसाहियो लगबैत। चैतक रोपल आमक गाछ केतौ-केतौ कलशो देने केतौ-केतौ सुखियो गेल। धानोक तहिना, बोरिंग-नहरबला बाधक रोपैन भऽ गेल, बिनु बोरिंग-नहरबलाक धानक बीहैन काटि-काटि गाए-महींसक पूजा होइत, इत्यादि-इत्यादि...।

गाम घुमला पछाइत रामखेलौन निर्णये नै कऽ सकल जे की देखलौं। मन हुमड़लै- एना किए भेल? जिनगी भरि जे गाममे रहि देखबो केलौं, काजो केलौं, रोपबो केलौं आ कटबो केलौं, मुदा ई नै बुझि पेलौं जे अखन खेतमे कथी लगौल जाए! एना किए भेल? करैक लूरि तँ सभ रंगक अछि मुदा बुझैक लूरि किए ने भेल?

रामखेलौन पाछू उनैट तकलक तँ बुझि पड़लै जे खेत-बोनिहार रहने एकर खगते ने भेल। जइसँ किसानक बीच तँ रहल मुदा बोनिहारक बीचसँ ससैर गेल। तखन?

मने-मन रामखेलौनक बीच घमर्थन उठल। घमर्थन ई उठल जे एक तँ सभ किसानकेँ सभ रंगक- ऊँचगर, मध्यम आ नीचरस खेत नै छैन, जइसँ कटा-खोंटा कऽ एकभग्गु भऽ गेल छैथ, दोसर ईहो तँ ऐछे जे बखारी-बखारी धान-गहुम उपजेनिहार किसान, खेत रहितो तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरी हाटे-बजारसँ कीनि-कीनि खाइ छैथ..!

जेते रामखेलौन आगू बढ़ैत तेते माही भेल घाट जकाँ मन इछाइन-बिसाइन हुअ लगलै। मुदा लगले मनमे उठलै- 'मन चंगा कठौती गंगा।' अनेरे मनकेँ वौअबै छी। एते तरहक हवा-विहाड़ि मनुखक बीच उठल मुदा विमले भायटा एहेन छैथ जे चौथापनोमे झूठ बजैसँ परहेज केने छैथ। अनेरे केतए जाएब, केकरासँ पुछब।

रामखेलौनकेँ देखते विमल भाय बजला-

"पहिने तमाकुल खुआबह रामखेलौन, पछाइत कुशलवर्ता हेतइ।"

रामखेलौनकेँ फबल, बाजल-

"भाय, बूढ़ भेने अहूँ भँसिया जाइ छी, पहिने तमाकुल चुनौल जाइ छै तेकर पछाइत ने मुँहमे पड़ै छइ। जाबे तमाकुल चुनाएब ताबे तँ गामसँ लऽ कऽ अमेरिका तकक गप कऽ लेब।"

रामखेलौनक खनहन मन आँकि विमल भाय बुझि गेला जे पहिने किछु गप करए चाहैए...।

बजला-

“की हाल-चाल गाम-घरक अछि?”

गाम-घर सुनि रामखेलौन कैरमवोर्डक गोटी जकाँ ठिकिया कऽ बाजल-

“भाय की रहत, दस धुर चौमास वाड़ी भेल, तामि-कोरि ढुढुर बना सेरियौने छी...।”

ऐगला बात रामखेलौनक पेटेमे रहल आकि बिच्चेमे विमल भाय टोकि देलखिन-

“अपन की विचार छह?”

विमल भाइक बात सुनि रामखेलौन टीक कुरियाबए लगल, जेना किछु मनमे होइ मुदा निकैल नै पबैत रहै, तहिना। विमल भाय बुझि गेला जे किछु मनमे छै जेकरा निकालैत संकोच भऽ रहल छइ। दहलबैत बजला-

“मन छह आकि बिसैर गेलह?”

बिसरब सुनि रामखेलौन बाजल-

“कोन गप भाय साहैब, कनी आगूसँ कहियौ ने।”

“तेसर साल जे माघक शीतलहरीमे बारह बजे बोरिंगक पानिक नम्बर बोरिंगबला देलक आ दुनू गोरे चोरबत्ती हाथे खेत पटेलौं की छोड़ि देलिऐ...।”

विमल भाइक बात सुनि जेना रामखेलौनक काज मनकेँ हुमचलक। हुमचाइते जेना पुरुखपना जगलै। बाजल-

“पुरुख बनि जखन काज करए डेग उठेबै तखन माघक

शीतलहरी हौउ आकि हथियाक झटकी, बिना केने घुमि जाएब।”

रामखेलौनक जगैत पुरुखत्वकेँ आँकि विमल भाय अपना दिस अनलैन। बजला-

“वाड़ी-झाड़ीक की हाल-चाल छह?”

अपन गोटी ससारैत रामखेलौन बाजल-

“भाय साहैब, नौउए-कौउए दस धुर चौमास वाड़ी नसीब भेल, तइमे कथीक खेती करब से बुझिये ने पाबि रहलौं हेन? अपना मनमे बहु दिनसँ सिहिन्ता लगल अछि जे एक बीट केरा आ पाँचटा आमक गाछ होइतए।”

रामखेलौनक मनक मुरादक समए नै। भदवारिमे केराक खेती करब जहिना वर्जित अछि, तहिना आमोक अछि। आमक उपयुक्त समए चैत होइत, जे गाछ लगिते कलैश जाइत। अखाढ़ छी, पानि पछुआएल अछि तँए ने नै तँ आद्रा अन्तिमपर अछि...।

लगले मनमे भेलैन जे सभ बात किए ने कहि दिऐ। बजला-

“रामखेलौन, दस गाछ बैगन लगा लिअ, घेरा-सजमैन लगबैले मचान बनबए पड़त। केरा-आम अखन नै लगाउ। आसीनमे जखन दुर्गा महरानी औती तखन दसो दुआरि खुजत। अन-तीमन, फल-फलहरी, सभ किछु लगबैक समए औत। ओहो लगा लेब।”

विमल भाइक बात सुनि रामखेलौन बाजल-

“गेल माघ उनतीस दिन बाँचल, भाय एतेटा जिनगी सबुरे केलौं तीन मास कोन पहाड़ भेल। जे कहलौं सएह करब।”

OO

तिथि : 19 सितम्बर 2014, शब्द संख्या : 6110

घरवास

चारि बजे भोरेसँ दुनू भैंयौं ‘नवीन आ किशोर’ आ दुनू दियादनियौं ‘मणिका आ प्रेमा’ आ माइयो ‘कमला काकी’ ओछाइन छोड़ि-छोड़ि उठि चारू दिसक काजमे जुटि गेल। चारू दिस काज, अँगना-घर बाहरैसँ लऽ कऽ फूल तोड़ब, ठाँउ करब, माल-जालकेँ घरसँ बाहर करब इत्यादि इत्यादि। तैसंग ऐगला काज करैले सेहो अपनाकेँ तैयार केने...।

ओछाइनपर पड़ल सुवल काका मने-मन सोचैथ जे आइ केमहर सुरूज उगला जे सभ किछु बदलल-बदलल बुझि पड़ैए। आन दिन अपने छह बजेमे ओछाइन छोड़ै छेलौं तँ देखै छेलौं जे सभ ओछाइने धेने अछि आ आइ की बात छिऐ जे चारि बजे भोरेसँ सभ बीन-बीन केने घुड़ैए..!

सुवल काकाकेँ बुझल नै जे आइ घरवास छी, बुझलो केना रहितैन, घरमे जखन रहिते छैथ तखन बास की भेल..?

मुदा मनकेँ थामि रखने छैथ जे कियो जखन किछु पूछत तखन ने किछु बाजब। भने ओहो सभ बुझैए जे सुतले छैथ। मुदा कमला काकीकेँ चुप भेल नै रहल गेलैन, रहलो केना जइतैन। सभ घरवासक ब्योंतमे लागल आ हिनका कोनो धैनियेँ ने छैन।

दरबज्जापर आबि पतिकेँ उठबैत बजली-

“घरमे धुमसाही काज अछि आ अहाँ अखन तक सुतले छी?”

एक तँ भिनसुरका समए तैपर पत्नीक दुतकार सुनि सुवल काका बजला-

“कोन धुमसाही काज घरमे आएल आ हम बुझबो ने केलौं?”

पतिक बात सुनि कमला काकीकेँ जेना अस्सी मन पानि एक्केबेर मनमे पड़ि गेल होइन तहिना भेलैन। जे घरक सिरिष[15] छैथ हुनके नै बुझल छैन! कहू ई केहेन भेल? हम पत्नियेँ भेलिऐन, नवीन आ किशोर बेटे भेलैन, पुतोहुकेँ छोड़लो जा सकैए, मुदा जइ परिवारमे घरक सिरिषकेँ पत्नियेँ आकि बेटे नै पुछ करैन हुनक मन केहेन कलपैत हेतैन...।

फेर नजैर अपनापर पड़लैन। दुनू बेटा तँ सहजे अपना-अपना काज-रोजगारमे लगल रहैए, अपनो काज आ धियो-पुतो, परिवारोक चिन्ता करए पड़ै छै, बिसैरयो गेल हएत। बिसरबो कोनो अनरगल नहियेँ भेल। काज-उदेममे वौड़ा गेने अहुना होइ छै...। नीको काज नजैरसँ उतैर जाइ छै, मुदा अपने तँ से नै छी। घरे-अँगनामे रहैवाली छी, तखन जँ एना भेल तँ अपनाकेँ दोखी होइसँ केना बँचा सकै छी। मुदा अपन दोखो मानैक सोभाव तँ लोकमे एहेन ऐछे जे घोरन आकि चुट्टी जकाँ जेतए पकड़त ओ पकड़नहि रहि जाएत, भलेँ अधडड़ेरपर सँ किए ने टुटि कऽ जान गमा लिअए।

तहिना कमलो काकीकेँ भेलैन। बेटा दिससँ नजैर उतारि पुतोहु दिस देलैन। कोनो कि हमहींटा आँगनमे रहै छी, बुढ़-पुरान भेलौं, बिसैरयो गेल हएब मुदा ई दुनू ‘पुतोहु’ तँ से नै अछि। तहूमे जाबे घरक

[15] श्रेष्ठ

भार दुनू परानीपर छल, जइमे बेटा-बेटीक सेवा, पढ़ौनाइ-लिखौनाइसँ लऽ कऽ बिआह-दानक छल, से तँ निमाहबे केलौं, आब तँ ओ सभ अपने करबारी भेल तखन हमरा कोन मतलब अछि जे अनेरे दोखी बनब। अपनाकेँ निरदोख बुझि कमला काकी बजली-

"दुनू भैयोँ आ दुनू पुतोहुवोक बीच हमहूँ छेलौं तेहीमे विचार भेल जे एकादसीए दिन घरवासो लऽ लेब आ किछु उधवो-बाधव कऽ लेब।"

सुवल काका काजक पारखी तँए मुँहक ओते महत नहियेँ दैथ मुदा चालि-ढालिसँ आगम बुझिते रहैथ। नजैर ओइठाम गरौने रहैथ जे काज नीक करए आकि अधला मुदा समैकेँ जँ काजमे लगौने रहल तँ काजे ओकरा सीखबैत रहतै जे नीक केना होइ छै आ अधला केना भऽ जाइ छै...। तँए मन समगमपर सुवल कक्काक रहबे करैन। तहूमे चारिमपनक पत्नी आ भिनसुरका समए सेहो पइर लागिये गेल रहैन बजला-

"मर्र ई की भेल! जइ घरमे रहिते छी तइ घरक बास हएत। खाएर जे हौउ। आरो की सब हएत?"

'आरो की सब हएत' पाछूसँ बाजल रहैथ तँए कमला काकीक ऊपरक मनमे खुशी भेलैन, मुदा जखन पैछला बातक सोर पकैड़ पाछू दिस बढ़ली तँ मन धुमनाइन हुअ लगलैन। धुमनाइनक माने आगिपर देल धुमनक सुगन्धो आ धुमनाहा आमक जे सुआद होइ छै सेहो, दुनू कमला काकीकेँ मन पड़लैन। एके रस्तामे कटारियो आ टाटो लगौल रहने चलनिहारकेँ ओइठाम अँटैक आगूक रस्ता जहिना हियाबऽ पड़ै छै तहिना कमला काकी हियबैत बजली-

"जेठका बेटो आ जेठकी पुतोहुवोकेँ बहू-दिनसँ मनमे छेलै जे चौपहरा पूजा करब।"

एक तँ सत्-नारायण भगवानक पूजा तहूमे चौपहरा, सुनि सुवल कक्काक मन गद्-गद् होइत जाइन मुदा कमला काकीक परेशानी बेसियाएले जाइत रहैन। बेसियेबो केना ने करितैन, परिवारक ति-मुहाँनीपर बैसल ने कमला काकी छेली। एक दिस पिता-पुत्रक बीच, दोसर- माए-बेटाक बीच आ तेसर- पति-पत्नीक बीच। दूटा बाँसकेँ कनोतब असान होइ छै, मुँह मिला कऽ बान्हि देबै, मुदा तीनटा बाँसकेँ कनोतब माइए सन कलाकार बान्हि सकै छैथ, मुदा गर लगबैमे तँ किछु नजैरक काज पड़िते छै तँए कमला काकीकेँ गर अँटबैमे कनी-मनी परेशानी होइत रहैन...।

काकीक परेशानी देख सुवल काका बजला-

"जेठजन आ जेठजनीक विचारसँ ने चौपहरा पूजा हएत, आ छोट-जनक?"

'जेठ' 'छोट' सुनि कमला काकीक विचारलाहा काज फुड़फुड़ेलैन। फुड़फुड़ाइते बजली-

"जेठ जन-जनीक तँ एकमुहरी विचार भेल चौपहरा पूजा, मुदा छोट जन-जनीक बीच मन-भेद भऽ गेल।"

'मन-भेद' सुनि सुवलो कक्काक मन सेहो फुड़फुड़ेलैन। अकचकाइत बजला-

"की मन-भेद भेल?"

पतिक जिज्ञासा देख कमला काकी माए-बेटा आ सासु-पुतोहुक सीमापर ओझरा गेली। ओझरा ई गेली जे दुनू दियादनीक अपन माए तँ हमरे ने पुतोहु बना बेटीकेँ पठौलक। जँ पुतोहु-जनीक मनमे किछु कमना हेतैन तँ ऐ घरमे नै पुरतैन, तँ आन घरमे थोड़े पुरतैन। दोसर दिस ईहो होइन जे बेटाक बात पुतोहु सोझा-सोझी नै मानि रहल अछि, तखन एहेन पुरुखकेँ टीक पकैड़ झुलौत की नै...।

असमंजसमे कमला काकीकेँ पड़ल देख सुवल काका, सम्हारैत बजला-

"अनेरे अहाँ मनकेँ विसविसाइन-विसविसाइन केने छी, ओकरे सबहक ने घर छिऐ तइले अहाँ किए एते तबाह छी?"

पतिक बात सुनि कमला काकीक मनक बोझ कनी कमलैन। बजली-

"किशोरक मन छै जे दस मुरते भनडरो करब?"

'भनडारा' सुनि सुवल काका बिच्चेमे टोनलैन-

"केहेन बढ़ियाँ तँ विचार छै, तइले मन-भेद किए हएत। जाबे दस मुरतेक भनडारा घरमे नै भेल ताबे घरवास केना भेल! भनडरे ने भण्डार भरै छै!"

कक्काक बात सुनि काकीक मन कनी खरहर भेलैन। जहिना मसुआएल अन्न खापैड़मे पड़ने खरहर होइत तहिना बजली-

"छोट जनीक मन छैन जे आन समाजक बेटी छी तँए समाजक दस गोरेक बीच हमहूँ किए ने अपना भानस करैक लूरिक परीछा दइए दिऐ। फेर कहिया भाँजपर काज औत कहिया नै।"

सभ रंगक विचार सुनि सुवल कक्काक मन चढ़ि गेलैन। बजला-

"एक दिनमे एते काज केना सम्हरत?"

योजना आयोगक प्रमुख सदस्य जकाँ कमला काकी अपन योजना प्रस्तुत केलैन-

"आइ सतनारायण भगवानक चौपहरा पूजा हएत। दोसर कोनो काज नै हएत। पूजेक विहित पुरबैत-पुरबैत सभ समांग तबाह रहब। तैबीच दोसर केना सम्हरत?"

काजक ठेकनगर गर देख सुवल काका बजला-

"घरवासो हएत आ सतनारायण भगवानक पूजो हएत। तहूमे कहै छी जे दिनेसँ पूजा शुरू हएत। घरवास तँ रातिके होइ छइ।"

सुवल काका जे बात बाजए चाहै छला से नै बाजि विचारक रूप पत्नीमे देखैत फेर बजला-

"सतनारायण भगवानक पूजा तँ कोनो जग भेला पछाइत होइए, तखन?"

ओना सुवल कक्काक प्रश्नमे केतौ कोनो ओझरी नै रहैन, मुदा काजक दिन रहितो पत्नी केते समए गमबै छैथ, मन तैपर रहैन। काजसँ पहिने तँ तीनपहरा पूजा हएब शत-प्रतिशत सधाएल रूप भेल। साँझुक पूजा तँ विसरजनक भेल। तैबीचमे घरवास हएत।

जेना महजालकेँ समैट कियो एके बेर हाँसूसँ काटए लगैए तहिना कमला काकी सभ ओझरीकेँ काटैत बजली-

"काज-उदेममे अहिना होइ छइ। तँए आगू-पाछूक हिसाब नै होइ छै, काजक हिसाब होइ छइ।"

पत्नीक बात सुनि सुवल काकाकेँ सबुर भेलैन। मुदा तैयो एकटा झटहा सबुरदानाक गाछक धौरपर फेकैत बजला-

"हमरा तँ बुझले ने छेलए, खाएर जे भेल से नीके भेल। अखनसँ कि हमहूँ केतौ जाएब थोड़े, तँए हमरो नाओं काजकरतेमे लिखि लेब।"

पतिक उपस्थिति मनक डायरीमे दर्ज करैत कमला काकी बजली-

"धिया-पुता केना करै छै, से तँ देखबै किने।"

नअ बजे पूजा प्रारम्भ भऽ जाएत। चारि पहरक दिनमे तीन पहर पुराएब अछि। चारिम पूजा तँ साँझमे हएत। अपन काजक नीवित

बुझि नवीन माइयो, भाइयो आ दुनू दियादनियोंकें एकठाम समैट बाजल-

"चौपहरा पूजा छी, अद्दी-गुद्दी नै छी। तँए सभ देह-झाड़ि कऽ लागब तखने पार लगत।"

एक तँ ओहुना सबहक विचार पहिनहिसँ रहबे करैन, तैपर नवीनक विचार सुनि आरो सभ चौकन्ना भेल। नवीन पूजापर बैसत, तँए सहए पड़तै। एक दिस काजक बढ़ोतरी आ दोसर दिस खेनाइ-पीनाइमे कटौती हेबे करतै! से खाली नवीनेटा लेल नै भेल। मणिका केना नै पतिक संग पुरती, ओहो भरि दिन निराहारे रहैक विचार पहिनहिसँ कऽ नेने छेली। आँगनमे पूजा हएत भैंसुरो आ जेठ दियादनियौं भरि दिन सहती आ छोट दियादनी- 'प्रेमा' केना उपास नै करती, तँए ओहो सहती। मुदा किशोर तँ करबारी छी, तहूमे आइ काजो दोहरा गेल, अपन वेपारक काजक संग-संग परिवारक काज सेहो छै...।

अपन स्वतंत्र विचारक काज केनिहार लेल तँ जटिल समस्या उपस्थित नहियेँ होइए मुदा सभ काजो तँ एके रंग नहियेँ होइ छइ। स्वतंत्र काज किछु एहनो होइए जइमे दोसरक हस्तक्षेप नै होइ छै, आ किछु एहनो तँ होइते अछि जइमे होइ छइ। ओना नोकरी केनिहारकें अलग ढंगक जिनगी होइ छैन। छुट्टी भेटला पछाइत ड्यूटीसँ पूर्ण स्वतंत्र भऽ दोसर काज करै छैथ। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे परिवारमे पैघ-सँ-पैघ आकि जरूरी-सँ-जरूरी काज किए ने हुअए, जेकर दरमाहा लइए, पहिने ओकर काज करए पड़ै छइ।

जहिना नवीन तहिना दुनू दियादनियौं भरि दिन सहती। जे बात किशोरो बुझलक। मुदा बुझैमे कनी फेड़ भऽ गेलै, फेड़ ई भेलै जे करबारी बुधिये सोचलक तँए उपासक महत्-क बात बुझबे ने केलक।

मनमे भेलै जे जखन भनसिया अपने ने खाएत तखन भानसो तँ तहिना ओंघाइत करत, तइसँ नीक जे नहियेँ खाएब। भने ईहो तँ भाइए जाएत जे सबहक संग पुरलौं।

भैयारीमे तँ बात फरिया गेल। जे चारू गोरे 'दुनू भैयौं आ दुनू दियादनियौं' भरि दिन उपासल रहत। बीचमे पाँचम माए, तहूमे सीमा परक भेली। जखन बेटा-पुतोहु सहत आ बीचमे अपने खाएब से माएकें नीक नै लगलैन। अपने फुड़ने बाजि गेली जे हमहूँ उपास करब। पाँच गोरेक उपाससँ दिनमे चुल्हे किए पजरत तहूमे घरवासो छी। मुदा एक गोरे 'सुवल काका' तँ बाँकीए छैथ। तहूमे चुल्हिक पूजा तँ ओहन पूजा छी जे एक गोरे रही आकि दस गोरे, प्रक्रिया एके रंग हएत...।

भानस करैसँ अपन जान बँचबैत प्रेमा सासुकें हाथक टुसकी देलैन-

"बाबुओ-जीसँ पुछि लथुन।"

एक तँ पुतोहुक टुसकी दोसर अपनो सहब कमला काकीकें हूबा बढ़ौनहि रहैन। टुसकी पबिते काकी, काका लग पहुँच बजली-

"आइ चुल्हि नै पजरत, से पछाइत किछु बजबै नै।"

परिवारक सबहक विचार सुवल काका दरबज्जेपर सँ कान ठाढ़ कऽ सुनि नेने रहैथ। बजला-

"आइ घरवास छी तखन जँ चुल्हिये नै चढ़त तँ ओहेन घरमे लोक बास कए दिन कऽ पौत?"

सुवल कक्काक बात नीक जकाँ कमला काकी नै बुझली। मुदा बाता-बातीमे चुपो रहब तँ हारबे भेल। तहूमे दुनू परानीक बीच। भलें बाता-बातीमे महत विला किए ने जाउ।

बजली-

"साँझू पहर ने हएत, दिनका गप कहलौं।"

कमला काकीक सम्हार देख सुवल काका बजला-

"चुल्होकें कि सीमा-नाँगैर छै, ओइपर तँ केते रंगक समान बनैए, टटको बनबैए आ बसियो खाइबला बनबैए। टटका नै चढ़त तँ नै चढ़ह, कौल्हुको-परसुका चढ़लाहासँ तँ काज चलिते अछि। सएह करब।"

कक्काक जवाबमे काकी फेर भोथिया गेली। बजली-

"बाइस-तेबाइस केहेन खाइमे लागत?"

काकीक भँसियाएब काका बुझि गेला। बजला-

"ओइबेर जे बैजनाथसँ पेरा अनने रही से मन अछि किने जे छह मास तक टटकेक सुआदमे रहल।"

बुझल-गमल काज कमला काकीकें, तँए कनी सहैम गेली। मुदा निर्णए तक तँ पहुँचबे छेलैन। बजली-

"ई तँ कहिया कतक गप भेल। मुदा आइ की करब से कहू।"

सुवल काका बुझि गेला जे भरिसक कोनो दोसर काज दिस नजैर चलि गेलैन तँए अगुता रहली अछि। बजला-

"जखन सभ उपासे करब तँ हमरे-ले किए चुल्हि पजारल जाएत। अखन ते घरमे चूड़ो ऐछे, दहियो ऐछे, चीनियौं ऐछे, केरो ऐछे तखन बाँकीए कथी रहल जे भूखल रहब।"

बेटा-पुतोहु लग अपन जीतैत पाशा देख कमला काकी बजली-

"जखन सभ उपासे करत तँ बीचमे अहीं किए खाएब?"

मुस्की दैत सुवल काका बजला-

"आब कोन दिन-ले उपास रहि जोगा कऽ राखब। खाइते-पीविते रामलला।"

घरवासक संग चौपहरा पूजा सुवल काका ऐठाम छिऐन, से गुल-गुली तीन दिन पहिनहिसँ गाममे गुलगुलाइत, ओना यज्ञ-जपमे हकारक प्रथा अदौसँ आबि रहल अछि। मुदा जेना-जेना लगिचाएल अबैत तेना-तेना गामक धीओ आ पुतोहुओक बीच पूजाक उपास करैक विचार बढ़ल जाइत। तैसंग ईहो विचार मनमे उठिते जे जखन सत्-नारायण भगवानक उपास करब तखन जँ निअम-निष्ठासँ नै करब तँ ओइ उपासक महते की? जँ कियो दिन-राति झूठेक खेती करए आ एकटा बात कखनो सते बाजि लिअए तँ ओइ बातक असरिये केते हएत...। तँए, केते गोरे जखनेसँ सुनलक तखनेसँ अशुद्ध भोजन, अशुद्ध बोल आ अशुद्ध काजक तियाग करैत अपनाकें पूजाक समए अबै धरि पुजेगरी रूप बनबए लगल।

एक तँ गाममे अखन तक माने बीस बर्खक बीच ने कियो सत्-नारायण भगवानक चौपहरा पूजा केलैन आ ने कियो उपास केलैन, तँए उपास केनिहारि लेल एकटा नव संकल्प सेहो भेल। नव संकल्प ई जे पूजा वीहिते लोक अपन नीक जिनगी बनेबाक संकल्प लइए। अहुना अपना ऐठाम ठेकनाएल उपास 'जन्माष्टमी, रामनवमी, शिवराति इत्यादि' ऐछे मुदा किछु एहनो तँ होइते अछि जे बेठेकनाएल सेहो होइए। अनको ऐठाम सत्-नारायणक पूजा भेने आनो-आन भरि दिन सहि भगवानक चरनोदक परसाद पेला पछाइते अन-जल करैए। ओना एकपहरा पूजाक चलैन बेसी रहने सहनिहारि सभ बहुत बिसरियो गेल छैथ मुदा चौपहरा पूजाक उपास तँ सहजे पहिले-पहिल हएत, तँए ई लोक थोड़े बिसरत...।

जहिना चारि पहरक दिन आ चारि पहरक रातियो होइ छै,

तहिना ने लोकोक जिनगी बँटाएल अछि। दू जिनगीक जोड़ जहिना नअ बजे दिनसँ नअ बजे राति धरि अछि तहिना ने नअ बजे रातिसँ नअ बजे दिनो अछि। चौपहरा पूजा सेहो दिन-रातिक जोड़क प्रक्रिया छी।

आइ एकादसी सेहो छी, भने दुनू उपास संगे हएत, सुखठीक वेपार आ पशुपतिनाथक दर्शनो हेबे करत। मुदा एकमुहरियो गाममे बाधा तँ रहिते अछि। सरधा दीदीक मन सोल्हो-अना उपास करैक छैन मुदा दुनू परिवार–सरधा दीदीक परिवार आ सुवल कक्काक परिवार–क बीच नोत-हकार सभ बन्न अछि। कोनो बाते झगड़ा भेलैन कहा-कहीमे कहा गेलैन जे अहाँक छाँह देने नै चलब। दुनू ऐपर अड़ि गेला, जइसँ पावैनक बेनसँ लऽ कऽ बेटा-बेटीक बिआहो-दानमे आएब-जाएब बन्ने छैन।

मुदा तैयो सरधा दीदीक मन परिवारक सभ झगड़ाकेँ फानि विचारि लेलैन जे सत्-नारायण भगवान किनको बाँटल छैन, सबहक छियाह तखन किए ने उपास करब। मुदा लगले मन अँटैक गेलैन जे भरि दिन सहला पछाइत बिनु चरनोदक-परसाद मुँहमे नेने केना उपासक पारन[16] करब..!

दीदीक मन ओझरा गेलैन। मुदा लगले मनमे उठलैन जे जखन डोराक ओझरी हौउ आकि डोरीक, अपन दुनू हाथे भलेँ नै सोझराए मुदा दोसर-तेसर हाथ पड़ने तँ सोझराइए जाइए, यएह सोचि सरधा दीदी लाल काकीक आँगन जा कहलखिन-

“भौजी, किछु छी तँ समाजक चौपहरा पूजा छी, केना नै उपास करब।”

[16] पालन

बिच्चेमे लाल काकी टोनि देलखिन-

“एकरा के काटत?”

‘काटब’ सुनि सरधा दीदीक हूबाक संग मनसूबो बढ़लैन। बजली-

“एहनो तँ भाइए सकैए जे अहाँकेँ जे चरनोदक परसाद भेटत, तेहीमे सँ कनी-मनी हमरो दऽ देब।”

दीदीक सोझराएल विचार सुनि लाल काकी बजली-

“एना किए मुँह दाबि बजै छी, सतनारायण भगवान केकरो बाँटल छिऐन, हुनका नीविते जे पूजापर चढ़ल ओ सबहक भेल। तइमे मेख-रोखक की परियोजन।”

लाल काकीक विचार सुनि सरधा दीदीक मनमे ओहने खुशी भेलैन जेहने दूर गेनिहारकेँ लगक संगी भेट गेने होइत। लगक संगीक माने ई जे संगीक उच्चतम् अवस्था। तही बीच पूजाक हकरिया हकार दिअ पहुँच गेल। बाल-बोध हकरिया, कोनो कि सरधा दीदीक परिवारक झगड़ा ओकरा बुझल रहै, बहादूर नोकर जकाँ सौंसे गाम हकार परसैक रहै, सरधो दीदीकेँ किए छोड़त। सोझहेमे सरधो दीदी आ लालो काकी रहबे करैथ, तही बीच हकरिया हकार बाँटि गेल...।

ओना हकार देबाक चलैन एक दिन पहिनुक अछि, नै हएत तँ उपास केना हएत। ई भेल समाजक बीच सत्-नारायण भगवानक पूजाक। मुदा से नै भेल नवीनक मनमे नै आएल। तँए बिसैर गेल। पछाइत मन पड़लै तँए हड़बड़मे जे सोझहामे पड़ल तेकरे हकार दिअ पठा देलक।

हकार पाबि सरधा दीदीक मनमे खुट-खुटी उठलैन। खुट-खुटी ई जे बाल-बोधक फूसि बाजब जहिना फूसि नै छै तहिना तँ सत्तोक

हएत। माने ई जे जहिना छोट बच्चाकेँ माए-बाप करवनो नीको बात सीखबैए आ रातिमे जखन ओछाइनपर गंदा कऽ दइ छै तखन ओइ नीक बातकेँ उनैट अन्हारकेँ देखबैत ओकरा भूत कहिते छैथ, जइ डरसँ बच्चा माए संग छोड़ि, जाबे माए कलपर सँ पानि आनि ओछाइन धोती आकि ओछाइने बदलती ताबे असथिर रहैए आ तहिना बिजलियोबला घरक माए आन-आन बौलकेँ मिझा एकटा रखै छैथ। तेकर कारण ई जे मल-मूत्र तियागला पछाइत मन हल्लुक होइ छै, तहूमे नबका हाथ-पएरबलाक। जेमहर-जेमहर जाएब तेमहर-तेमहर ओहो जेबो करत आ उकठपनो करबे करत, जइसँ छोटो काज नमहर बनैत जाएत, तँए ओकरा भूतक आड़ि माने अन्हार-इजोतक आड़ि दऽ राखए पड़ै छइ। जेहेन लाल काकीक मनमे खुशी रहैन तइसँ दब दीदीक बुझि पड़लैन। खसल मन देख लाल काकी बजली-

“मन उछट करू। चरनोदको आ परसादोक बात आब थोड़े रहल, आब तँ हकार पौनिहारि भेलौं। आब कि कोनो बाधा रहल जे कियो चौपहरा पूजाक उपासकेँ काटि देत।”

लाल काकीक उत्साहित बात सुनि सरधा दीदी मनक विकार बोकैर देलैन-

“कहुना भेल तँ बाल-बोधेक हकार भेल किने..!”

सरधा दीदीक बात सुनि लाल काकीक मन जेना विचारकेँ धकैल देलकैन। बजली-

“एक तँ समाजक बीच चौपहरा पूजा, तहूमे जैठाम सतनारायण भगवानक पूजाकेँ, समाजक बहिन, बेटी अपन-अपन संकल्पक उपास करि पूजाक आरो शोभा बढ़बैत, तैठाम जँ कोनो बिहंगरा ठाढ़ हएत तँ की हम मुँह तकैत रहब...।”

लाल काकीक विचार सुनि सरधा दीदी बजली-

“किछु भेल तँ समाजक धारमे बहब भेल किने। जैठाम लोक जिनगी-मृत्युक बीचक बाट पकैड़ गंगा-यमुना-सरस्वतीक संगमपर पहुँचए चाहैए।”

हँसी-खुशीक वातावरणमे चौपहरा पूजो आ घरवासोक काज सम्पन्न भेल। आब कि घोरूआ परसादक चलैन रहल जे बेसी तरद्दुत करए पड़त। काजो हल्लुके भऽ गेल अछि। पूजाक तीन दिनक पछाइत आइ भनडारा हएत। काज तँ झमेलिया अछिए। झमेल ई जे किशोरक पत्नी ‘प्रेमा’क काज पछुआ गेल। कहलो जाइ छै- भोजक आगू जँ खेबा-पीबाक बिनु बनौल समान सठि गेल तखन तँ हमर विचार मनेमे मरि गेल किने? मुर्दघटीक बरियाती जकाँ ने भेल। मुदा तँए कि वेचारीकेँ संग नै पुरए पड़तै, तहूमे अपन पतिक आराधना छिऐन। ओना, तैयो अदहा काजक विचारी तँ भेबे केली...।

प्रेमे जकाँ दुनू परानी नवीनक बीच सेहो विचारक झमेल उठबे कएल। सत्-नारायण भगवानक पूजा अगुआ कऽ हम केलौं, सभ मिलि निमाहलौं, तहिना तँ परिवारेक काज ईहो ने भेल। यएह ने भेल जे किशोरक मनक उपज छिऐ, तँए जँ ओ अपना विचारसँ करत तँ अपन बुझि अपना जकाँ काज करत, से बेसी नीक हएत। जे ओकरे[17] काजक भार सुमझा अपने सहयोगी बनि जाए। तँ बेसी नीक हएत...।

काजक दौड़, तँए सभ एकमुहरी भऽ पहिने काजक मुँह-मिलानी करए एकठाम बैसल। बैसते नवीन किशोरकेँ कहलक-

“बौआ, औझुका काज तोरा मनक छिअ, तँए तोंही ऐ काजक अगुआ भेलह। हम सभ पीठपोहू रहबह।”

नवीनक विचारक कनोजैर पकैड़ते कमला काकीक मुँह

[17] छोट भाएकेँ

अलगलैन। बजली-

"बौआ, गाममे दू रंगक लोक अछि। भनडाराकेँ लोक वैष्णव भोजन मानैए। बिल्कुल शाकाहारी। तँए समाजमे जेते वैष्णव छैथ ओतेककेँ भनडारा कऽ लैह। आ पुतोहुजनीक जे मन छैन जे अपन लूरिक परीछा दिऐ, तँ शाकाहारीसँ मांशाहारी धरिक भोज परसू कऽ लेब।"

कमला काकीक विचारकेँ मणिका दहलाइत देख बजली-

"माए, पानिमे माँछ आ नअ-नअ कुटिया बखरा, अनेरे करै छैथ। आइ जइ काजक दिन छी पहिने तेकरा सम्हारि लोथु। अखन औझुका काजक ने विचार करती।"

मणिकाक विचारसँ कमला काकीक मनमे मिसियो भरि दुख नै भेलैन। बजली-

"देखहक, एक पंथक लोक दोसर पंथक ने छुबल खाइए आ ने एक पाँतिमे बैस बातो-विचार करैए, तँए असथिरसँ विचार करए पड़तह जे एको गोरे गाममे छुटैथ नै।"

कमला काकीक विचार सुनि चारू गोरे, दुनू भैंयौं आ दुनू दियादनियौं अकबका गेल। अकबका ई गेल जे जखन सभ वैष्णवे भेला तखन एक-दोसरमे बारा-बारी किए अछि? मुदा प्रश्न ई तँ नै जे किए अछि, प्रश्न तँ ई भेल जे समाजमे एहेन अछिए। जहिना लोक जाति-पाँतिमे बँटल अछि, तहिना ने पंथो-पंथाइ तँ बँटले अछि। तखन की करब? ने कमला काकीकेँ जवाब फुड़ैन जे काजकेँ सुतिया आगू बढ़ौती आ ने दुनू भैंयेकेँ।

ओना किशोर दुनू परानी वेपारसँ जुड़ल अछि, गाम-समाजक बेवहारक बात नै जनैए तँए कोनो बात नै। ओना, अछि दुनू परानी पढ़ल-लिखल मुदा जिनगीक काज बदलने जीवनोक किछु काज तँ

छुटबे करै छै, से भेल। मुदा तइसँ कियो समाजक किरिया-कलाप वा रीति-नीतिसँ छुटकारा पाबि जाएत सेहो नहियेँ अछि। खाएर जे अछि, मुदा भैयारियोमे आ मतो-पिताक आगू तँ बच्चे भेल...।

पाँचो गोरेक बीच गुमा-गुमी पसैर गेल। गुमा-गुमी देख किशोर नवीनकेँ कहलक-

"भैया, अहाँ शिक्षक छी पढ़ौनीक काज करै छी, तखन किए चुप छी?"

किशोरक बात सुनि नवीनकेँ तामस नै उठल। मने-मन किशोरक विचारकेँ गौर करए लगल। मुदा कोनो विचारकेँ निर्णए तक पहुँचबैमे दोहरी कारक अछि, पहिल बुझल आ दोसर बिनु बुझल। नवीनकेँ ने बुझल आ ने बुझैक दिशा-बोध, जइसँ किछु अनुमानो करैत। जहिना दिशा बोधबला दिशा पकैड़ डेग आगू बढ़बैत जाइए, मुदा बिनु दिशा बोधबला केमहर डेग बढ़ौत से बोधे ने रहै छै, जइसँ बेसी भोतियेबेक डर रहै छइ। नवीनोक मनमे सएह भेल, तँए परिवारमे दोखी बनैक डरसँ मोटा पटैक बाजल-

"जखन घरमे श्रेष्ठजन छैथ तखन कोनो नव काज करैसँ पहिने विचारि लेब नीक हएत। तँए बाबूकेँ पुछि लेब नीक हएत।"

पिताक नाओं सुनि कमला काकीक मनमे अपन बड़प्पनक बोध भेलैन, जइसँ ललौन गुलाब जकाँ चेहराक रंग बदललैन। मुदा बजली किछु ने। पतिक विचारकेँ पाछूसँ ठेलैत मणिका सासुकेँ कहलैन-

"एना मुँह चोरौने हेतैन? जाबे काजक विचार नीक जकाँ नै कऽ लेती, ताबे काजमे हाथ लगतैन?"

दू-दिसिया सोंगर जहिना घरकेँ सोझ करैए तहिना कमला काकीक मन सेहो सोझ भऽ गेलैन। बजली-

"ओहो[18], की कियो आन छैथ, जे पुछैमे धरी-धोखा हएत, हमहीं बाजब, मुदा सबहक रहब बेसी नीक हेतह।"

सुवल काकाकेँ कमला काकी पुछलखिन-

"गाममे रंग-रंगक वैष्णवजन छैथ, एक-दोसर लग ने बैस कऽ खेता आ ने बनौल खेता, तखन केना हेतइ?"

कमला काकीक बात सुनि सुवल काका मने-मन विचारए लगला। विचारए ई लगला जे समाजमे एहेन प्रश्न तँ अछिए। मुदा लगले मनमे उठलैन जे जँ एहेन अछि तँ एहनो तँ ऐछे जे एक सामूहिक रूपमे आ दोसर खण्ड रूपमे बेकतीगत सेहो अछिए। बेकतीगत रूपमे ई जे, एक मुरते, दू मुरते फुटा कऽ सेहो होइते अछि। पंथाइक झगड़ा जेतए छै तेतए रहौ, मुदा ऐठाम से तँ नै छी। घरवास छी, पथ-पथिक होथु आकि हेराएल-वौआएल बटोही होथु, सबहक आश्रयक आश्रम छी। तैसंग ईहो तँ छीहे जे समाजक बीच रहने समाजक सेहो छीहे। सोझराएल विचार मनमे ऐबते, बजला-

"दूध-माछक बाँतरक झगड़ा हौउ आकि सजमैन-कदीमाक भैंसुर-भावोक, हमरा ओइसँ कोन मतलब अछि। अपनेसँ जा कऽ सभकेँ दल दऽ अबियनु।"

जेना कमला काकी सुवल कक्काक बात बेसी बुझलैन तहिना किशोरकेँ कहलखिन-

"बौआ, अपनेसँ जा कऽ सभकेँ कहिहौन, जँ कियो किछु कहथुन तेकर विचार पछाइत हएत। अखन काजकेँ अँटकाबह नै।"

कमला काकी जे बाजल होइथ मुदा सुवल काका बुझलैन जे भरिसक खाइ-पीबैक बात बजली। बातकेँ सम्हारैत बजला-

[18] सुवल काका

"बौआ, बेसीसँ बेसी कियो कहथुन जे अपने बना कऽ खाएब, तँ ओहो बढ़ियाँ। भने सभ वस्तु पुछि कऽ सुमझा देबैन। तइसँ ईहो हएत जे जश-अजशक भागीसँ बँचि जाएब।"

सुवल कक्काक बात सुनि नवीन बाजल-

"बाबू, जखन जेहेन समए औत, तखन तइ ढंगसँ विचारि काज करब। अखन अगुआ कऽ किछु बाजब, बेसी हएत।"

सह दैत मणिका बजली-

"जहिना चौपहरा पूजामे हकार पुरए सभ एला, तहिना सभ औता। तँए पहिने किछु अनुमान करब, नीको भऽ सकैए आ अधलो भऽ सकैए।"

किशोर दल दिअ विदा भेल। ओना गाममे सभ पंथक वैष्णवजन छैथ मुदा तीन स्तरमे बँटल छैथ। पहिल जे स्वच्छ-जन छैथ ओ अपनाकेँ भोज्य पदार्थसँ लऽ कऽ करनी-भरनी तक अपन संकल्पकेँ निमाहि रहला अछि तँए वैष्णवजन होइथ आकि वैष्णव-जनसँ वृहत होइथ देव स्वरूप मानव बुझि अपनाकेँ भक्त स्वरूप 'गुरु-शिष्य हौउ आकि गुरु-चेला' व्रत निमाहि रहल छैथ, मुदा एहेन जन कम छैथ। तँए ऐ बीच दल स्वीकार करैमे कोनो बाधा उपस्थित भेबे ने कएल। दोसर स्तरक जे छैथ, ओ घरक ओहन खुटा जकाँ छैथ जे सदिकाल 'हवा उठौ आकि झाँट-पानि हौउ' हिलडोल करैत रहता जइसँ घरो हिल-डोल करिते रहैए।

एहेनक संख्या बेसी रहने किशोरक सोझा बेसी प्रश्नो उठल। मुदा जहिना सुवल काका कहने रहथिन तहिना किशोर वैष्णव-जनक प्रश्न सुनि जवाब स्वरूप प्रश्न पुछैत-

"मनुखक समाजक मनुखक रूपमे भोजन करबए चाहै छी, तँए हँ-नइमे कहू।"

किशोरक प्रश्न, जन-जनकेँ जेना छातीमे बेध दैत तहिना अपन नचारी सुनबैत मानि-मानि लेलैन। ओना किशोरकेँ समाजक बीच ईहो देखल-सुनल जे फल्लाँ, साले-साल भदवारिमे शीकपर कण्ठी रखि घरक पछुआरमे टाँगल टौहकी-पहटा लऽ भदवारिक मौज-मस्ती कऽ लैत आ चर-चाँचर सुखिते, जेठुआ वैष्णव-बबाजी बनि अमैया भनडरो पुरि चद्दैर-टाका लऽ कऽ प्रतिष्ठितो बनि जाइत। तेतबे किए, एक पंथाइ जखन बुझैए जे हवा उनटल जाइ छै तखन जँ अपने नै गर घुमब तँ अनेरे धँसनो तरमे पड़ि जाएब, तइसँ नीक जे करे घुमि जाइ। तँए एहनो बबाजीक कमी नहियेँ अछि जे राजनीते जकाँ सतरहटा पंथाइ भोज-भात नै खेने हुअए। खाएर जे से...।

मुदा तेसर स्तरक तीनटा महंथनुमा छैथ। तीनूकेँ कटोरिया धोइध, बोनैया दाढ़ी जकाँ नै, दिनमे पचासो बेर ककही फेड़ल, मक्खन लगौल, बरह-बरखा कनियाँ जकाँ चानिपर खोपा, धपधपौआ एकरंगा वस्त्र, मुदा गामकेँ अपन खनदानी डीह बुझि सालमे दू-चारि दिन रहै छैथ, बाँकी समए स्थान सभसँ लऽ कऽ रेलेगाड़ीमे बीतै छैन...।

संयोग एहेन भेल जे तीनू महंथ गामेमे। जे बात सुवल काकाकेँ बुझल। मनमे रहैन जे नमक हरामीक संख्या जइ रूपे बढ़ि रहल अछि ओ समाजक लेल शुभ नै। पहिने भेलैन जे भरिसक ओ सभ 'तीनू' अबैसँ कतरेता, जँ कतरेता तखन उपए? फेर मनमे उठलैन- भाय, जखने कियो जँ केकरो कोनो टाट लगा रोकैए आकि अपनो ओइ दिशामे तँ रोकाइए जाइए। तँए सुवल कक्काक मनमे एको मिसिया हिलकोर उठबे ने केलैन।

ओना किशोरकेँ बुझले नै थनो परहक केलहा काज रहै जे अपन बिआही पत्नीकेँ, चारिटा बाल-बच्चा भेला पछाइत, रहैत दोसर बिआह

करए लगल कि केसमे फँसि गेल। ओ बँचेलहा उपकारी छी। दोसर, जेकरा बिआहमे बरियातीक गवाह छी जे ओ बबाजी बनला पछाइत अपना हाथे अपना पत्नीकेँ दोसर बिआह करा संकल्प नेने जे बिआह नै करब। ओना अखन धरि निमाहनौं अछि। तेसरो ओही उमेरक, मुदा पहिल दुनूसँ भिन्न। पहिल दुनू समाजसँ सोलहन्नी कटल मुदा तेसर से नै। गाम-समाजसँ जुड़ल, ज्ञान-धियान करैत समाजक बीच अपन हश्ती बरकरार रखने छैथ। तँए समाजक काज केनिहार स्वत: समाजसँ जुड़ल तँए तीनू नकार-नुकार केने बिना दल मानि लेलैन।

घरवासक दोसर प्रक्रिया, साधु भोजन सेहो भऽ गेल। ओना पान-सात दिनक काजक झमार सभकेँ झमारि देने तँए आगूक काज दिस डेग बढ़बैक हिम्मते कमि गेल। मुदा परिवारोक यज्ञक तँ एक प्रक्रिया पछुआएले अछि। ओना कमलो काकी आ सुवलो कक्काक मनमे रहबे करैन जे भैयारीक चारिम पौदानपर बैसल प्रेमा छैथ, तँए जहिना क्रमश: सबहक आराधनाक पूर्ति भेल, तहिना जँ चारिमोकेँ नै होइ ई तँ परिवारमे अन्याय हएत।

ओना कमला काकीक नजैरसँ हटि गेलैन जे प्रेमा अपन लूरिक परीछा समाजमे दिअ चाहै छैथ, मुदा एते तँ रहबे करैन जे जहिना राम-लक्ष्मणक भैयारी तहिना ने सीतो-उर्मिलाक दियादनी। भलेँ सीतासँ बेसी उर्मिले किए ने मने-मन जरल होइथ, मुदा अग्नि परीछा सीतेकेँ ने दिअ पड़लैन।

ओना सुवल काका काजक सुतिहार तँए मनमे नचैत जे तीनूक–नवीन-मणिका आ किशोर–आराधनासँ ओझरौठ आराधना छोटकी पुतोहुक छैन। जे बात मनमे छैन, ओकरा पुरबैमे बेसी समए लगत। बेठेकान समए। सालो भरि। भोज भलेँ चैतमे किए ने हुअए मुदा अचार जेठुए ने रहत। तहिना अदौरी फुसियेने-पनियेने मानत, जखन

वएह मर-मसल्ला आ दालि मिलि विवाद उठौत तँ ओकर बर-बरीक हक नै देबै? तँए ओकरा आठ दिन पहिनहिसँ जँ नै पूजबै तँ अपन रंग थोड़े चढ़ए देत। धड़-फड़मे बरी गढ़ि लेब मुदा अमैनियाँ दालि बनबैमे बिनु गंग-स्नाने पवित्र थोड़े होइए...।

एक दिस जहिना पछुआ पकैड़ अँचार, अदौरी, बरी, बर रखने तहिना दोसर दिस दही कण्ठपर चढ़त जे टटका छोड़ि जखने बसिया करमें तखने तोरो मुँह बसियाइन होइत खटाइन काइए देबौ। मुदा जानए जअ आ जानए जत्ता। भाय, अराधैएकाल ने केकरो विचार कऽ लेबा चाही जे केहेन अराधै छी...।

प्रेमाकेँ कमला काकीक माध्यमे सुवल काका कहलखिन-

"कनियाँकेँ कहि दिऔन जे अपना काजक अगुआ अपने भेलौं, बाँकी सभ सहयोगी भेला, तँए अपन काजकेँ सुतियाएब शुरू करैथ"

पतिक विचारमे कमला काकी अपनो विचार फेंटैत प्रेमाकेँ कहलखिन-

"कनियाँ, जहिना कोरपछू बेटी दुलारू होइ छै तहिना घरमे अहूँ भेलौं। नैहरमे जहिना माए-बापक बात-विचारमे रहै छेलौं तहिना ने हमरो लग रहब।"

जादूगर जहिना अपन खेल पसारैसँ पहिनहि देखनिहारकेँ नजैर बन्न कऽ दैत तहिना भावुक प्रेमाक नजैर बन्न भऽ गेल। कल्पना लोकमे पहुँच सासुक नजैर निहारि बुदबुदाएल-

"कियो पागल कहए आकि दिवाना, मुदा धरती तँ बादले बुझैए।"

समए मंगैत बाजलि-

"माए, काज केतौ पड़ाएल जाइ छै, ओ तँ गुड्डी जकाँ अकासमे

उड़ै छै, लपेटाक संग केना लपेटबै ओ तँ उड़ौनिहारेक काज भेल किने?"

ओना सुवल काका दरबज्जेपर सँ प्रेमाक बात सुनि नेने रहैथ तँए बुझैमे केतौ बेवधान नै रहैन, मुदा एते तँ शंका मनमे उठिये गेल रहैन जे जइ माध्यमसँ जवाब औत, ओइमे किछु नून-मिरचाइ मिलाएले रहत। तँए अपना ढंगसँ बुझैक अछि। सएह भेल। कमला काकी प्रश्नोत्तर करैत पतिकेँ कहलखिन-

"कनियाँक मन बड़ खुशी देखलयैन।"

पत्नीक बातकेँ सुवल काका चौपेत कऽ मनमे रखि आगूक किरिया दिस नजैर फेकलैन। मनमे उठलैन प्रेमाक प्रेमिल विचार। एते पैघ आराधनाक साहस। अदौसँ माने जखन साग आश्रित मनुख छल तहियासँ लऽ कऽ बर-बरी धरिक जुटान, जे दालि उसनासँ बर-बरी बनैमे पचीसो-पचास हजारक जिनगी पौने अछि, जे कुशियार चीनी बनैमे हजारो बरख खेलक, एतेक जुटान बाल-बोधक खेल छी। देखा चाही, केनिहारिकेँ?

आराधनाक अनुकूल वातावरण भेटनौं प्रेमा धड़फड़ाएल नै। चुप्पी साधि, पहिने भोजक विचार केलक। भोजक विचार ई जे, भोज्य-पदार्थ बढ़ने, भोजन विपरीत दिशामे बढ़ि अवघाती बनि गेल अछि। अधिक भोज्य पदार्थ अनुकूल-प्रतिकूल गुणोक तँ समावेश भाइए जाइए। तैसंग ईहो तँ होइते अछि जे हमरा सन चारिम सीढ़ीक लोक, एते एकत्रित केना कऽ सकत। नान्हिटा अँचारे अछि फल-फलहरीसँ लऽ कऽ तीमन-तरकारीक संग सागो-मुरै धरिक बनल अछि। सागेकेँ की कहबै। बरहमसिया छी, मुदा एके साग बारहो मास थोड़े हएत। अपन-अपन समैक संग ने रंग पकड़ने अछि। जँ से नै अछि तँ ललका ठढ़िया रंग-बदलैत बेदरंग होइत हरिअर होइत उज्जर

भऽ भुल्ला कहबए लगैए...।

अगममे बहैत प्रेमा अपन विचारकेँ दोसर दिस मोड़लक। मोड़लक ई जे एते वृहत पदार्थक बीच जँ गोटे चितकाबर भऽ जाइए, तइले एते लोक ढोल किए पीटत। ओकर नैतिकता ओहीमे छै, पचासो विन्यासक बीच पेट नै भरलै। यएह छी मिथिलाक गौरव जे खाइकाल नै बाजी। एहेन समाजमे नीको काज तँ अधले दिस बढ़ि जाइए। तखन? तखन किछु ने, जे जुड़त तइसँ मनकमना पुराइए लेब। ने समाज केतौ पड़ाएल जाइए आ ने अपने केतौ पड़ाएल जाइ छी। जिनगी रहत तँ दिनकेँ के कहए जे मिनटो-क्षण परीछेक घड़ी रहैए। तइले एते मनमे घमरथने किए...।

प्रेमाक आराधनाक भोजक परीछा सेहो भाइए गेल।

भोजक दस बजे राति, सभ काज समाप्त भऽ उसैर गेल। सभ कियो अपन-अपन ओछाइनपर पहुँच गेल। सुवल काका, काकीकेँ पुछलखिन-

“पचास बर्खक संगी तँ ओहूँ भेलौं किने, ऐ बेरक घरवास कैअम छी?”

पतिक प्रश्न सुनि कमला काकी जिनगीक पैछला छोर पकैड़ पाछू मुहेँ ससरैत सासुरक पहिलवास लग पहुँच गेली। पहुँच गेली ओतए जेतए पहिल दिन गाममे प्रवेश केली। मनमे उठलैन- यएह देह छी, तीनटा टटघर आ एकटा भीतघरमे बसै छेलौं, तेहेन रौदी भेल जे घर छारल नै गेल। तीन सालक अँटकल पानि डूम्मा बरिसल। एकोटा घर दढ़ नै रहल जेतए चैनसँ रहि सकितौं।

मुदा समए बदलल, नार हटा खपड़ा देलिऐ। निच्चाँ भीत ऊपर खपड़ा, सतासीक बाढ़िमे भीते खसि पड़ल। जिनगीमे अहिना सभ दिनसँ होइत एलैए, मुदा आइक परिस्थितिकेँ अनुकूल जिनगी बनबैक

खगता तँ ऐछे...।

खपड़ाक पछाइत भीतघरो आ टटघरोपर एस्वेस्टस चढ़ौला पछातिक घरवास सुवल काका आ कमला काकीक छेलैन। तँए मनमे ओते उत्सुकतो नहियेँ। मुदा ई तँ खुशी भेबे केलैन जे अपना अछैते अगिलोक बास भेल।

OO

तिथि : 26 सितम्बर 2014, शब्द संख्या : 4,879

समधीन

बरदहट्टामे जहिना गोटे बरदक जोड़ा एहेन रहैत जेकर सिंग-सिंगहारक संग रंगो-रूप आ पूछो-पएरक एहेन मिलान रहैए जे अनठियाकेँ परेखेमे ने अबैए जे दुनू दू छी आकि एक्के, तहिना गाममे सिनुरिया काका आ खजुरिया समधीनक बीच अछि।

ओना सिनुरिया कक्काक असल नाओं ‘राधारमण’ आ खजुरिया समधीनक नाओं ‘हसीना खातून’ छिऐन। मुदा से छिऐन माए-बापक देल नाओं। जाबे राधारमणक माता-पिता जीबैत रहथिन ताबे तक तँ राधारमणे नाओं बेसी लोक जनै छेलैन मुदा अपन आँखि-पाँखि भेला पछाइत ‘सिनुरिया काका’ नाओं अरैज लेलैन। जइसँ पैछला नाओं मटिया-मेट भऽ गेलैन आ ‘सिनुरिया काका’क नाओंसँ सभ जानए लगलैन, जनैत-जनैत नाउँए पड़ि गेलैन। मुदा तइले सिनुरिया काकाकेँ मिसियो भरि रोग-राग मनमे नै छैन, जहाँ धरि खुशीए छैन। खुशीक कारण ई छैन जे गामक लोक जखन बहराए लगल आ जाबे तक गाम बिसराएल नै छेलै ताबे तक जे कोनो-कोनो फूल, फल, तरकारी आ अन्नोक बीआ अनतएसँ आनि गाममे लगौलक, तहीमे दस-बारह तरहक सिनुरिया आम सेहो आबि गेल। ओना, सभ आमक रंगो आ साइजो एके रंग नहियेँ आ ने सुआदे आकि रसे-गुद्दा एकरंग होइए। मुदा देखैमे तँ लाले-लाल, सिनुराएल लाल, अलाएल लाल, गुलाएल

लाल तँ अछिए। किछु एहनो अछि जे जखने टिकुला होइए तखनेसँ ललए लगैए आ किछु एहनो अछि जे जखन कोशाइए तखन लाली पकड़ै छै आ किछु एहनो अछि जे जुआइत-जुआइत पकड़ै छइ। ओना पकलापर तँ अधिकांश आनो आम ललिआइए जाइए। गाममे आम तँ दस-बारह रंगक बढ़ि गेल, मुदा नाओं सबहक हेरा गेल। हेराएल ऐ दुआरे जे रोपिनिहारे बिसैर गेला। बिनु फड़ने गौआँकेँ मतलबे कोन, बिसरबो केना ने करैत, समए छल जखन उत्तर-प्रदेश, भोजपुरसँ लऽ कऽ ढाका-बंगाल तक जोड़ल छल, जे ससैर पंजाब दिस बढ़ल आ बढ़ैत-बढ़ैत दिल्ली, बंगलोर, बम्बइ दिस बढ़ि गेल। नोकरीए करैक छै तँ जेतए बेसी पाइ हेतै, तेतए जाएत। ओकरा कोन जरूरी छै जे गामक गुलाब खासक सिनुर परखत। जखन गामेक नै परखत तँ आनठामक तँ सहजे बाढ़िक पानि जकाँ आएल-गेल...।

सुभ्यस्त समए भेने अदरो नक्षत्र अपन रंग जहिना देखा देलक, तहिना गामक आमो गाछी देखौलक। लाले-लाल गाछी सबहक बहरबैया आम चमकए लगल। कोनो नव वस्तु भेटने मनमे उत्साह जगिते छै, तहिना आमक रंग देख-देख लोकोकेँ जगल। मुदा सभ साइजक रहितो सबहक रंग एकरंगाहे छइ। गुलाब-लाल, सिनुर-लाल आ आल-लाल परखैक लोककेँ जरूरते की छइ। आम छी खाइक वस्तु भेल। ओकर गुण तँ ओतबे ने भेल जे मीठो हुअए आ बेसियो हुअए। तैसंग बेसी फड़बो करए। गौआँक उत्साह एते बढ़ि गेल जे आमक विचार करब जरूरी भऽ गेल। तइमे सबहक गाछीक आम सहरगंजा भऽ गेल। एक तँ अपन जे पुश्तैनी अछि ओ तँ अपन नाओं जपिये रहल अछि मुदा नबकाक नामकरण भेने बिना काज केना चलत। अही नामकरणक उत्सवमे राधारमणक नाओं ‘सिनुरिया काका’ पड़ि गेलैन। जेकरो पित्ती हेथिन सेहो कक्के कहए लगलैन। आ जेकर भातीज हेथिन सेहो कके कहए लगलैन। अहुना लोक अपन

नामो बाबा, दादा, काका इत्यादि रखिते अछि...।

सिनुरिया काका नाओं किए समाज देलकैन? एके समैमे सभ बहरबैया आम पकैक समए भेल, अहुना जेठसँ शुरू भऽ अखाढ़मे भरखैर पकिते अछि। उत्सवक माहौल रहबे करइ, गाछीए-कलम देखैत-देखैत दस गोरे बिनु बजौले एकठाम भऽ बैस गेला। बैसारमे प्रश्न उठल जे, जे आम टिकुलासँ जुआइ धरि लाले-सिनुराएले अछि, ओ जे पाकत से केना बुझबै? दोसर प्रश्न उठल जे कोन राज्यसँ कोन आम आएल अछि तेकरो ठेकान नहियेँ अछि, ओ केना ठेकनाएब? तेसर प्रश्न उठल जे कोन आम कोगर हएत, कोन गुदगर हएत आ कोन रसगर हएत से ठेकान केना पाएब? तहूमे सभ आम सभकेँ ऐछो नहियेँ, तँए अन्हराक हाथी भऽ जाएत, जेकर रसगर हएत ओ रसगरे बुझबै आ जेकर गुदगर हएत ओ गुदगरे बुझबै। रंग-बिरंगक प्रश्नक बीच सभ ओझरा गेला। मुदा बिना रस्ता भेटने समाज चलबो केना करत। जहिना लोक चलैए तहिना ने समाजो चलै छइ। गुम्मा-गुम्मी बैसार देख राधारमण फनैक बाजल-

"एतबे टा ओझरीमे जखन सभ ओझरा गेलह, तखन काज केना चलतह?"

राधारमणक विचार सुनिते सुकरतिया प्रश्नकेँ उनटबैत बाजल-

"राधारमणे जे कहता से सभ मानि लेब।"

आगू-पाछू जेते राधारमण सोचने हुअए मुदा ठाँहि-पठाँहि बाजल-

"भाय, आम तँ सहजे आमे छी जे सिनुरिया चानिकेँ सेहो चीन्हि सकै छी।"

तहीपर गौँआँ 'सिनुरिया काका' नाओं रखि बजबए लगलैन। अपन अरजल नाओं छिऐन तँए केकरो अधला नजरिये देखबे किए

करता। पितातुल्य पित्तीए भेला।

खजुरिया समधीन गामक समधीन छैथ। अपन माए-बापक देल नाओं 'हसीना खातून' छेलैन। मुदा जगह बदलने बेटीए ने कनियाँ आ आकि आरो-आरो नाओं अरजैत अछि। तीस बर्खसँ अपने बेटी-जमाए लग रहै छैथ। ताड़क आ खजूरक पातक बौस गढ़ैक लूरिसँ हसीना भरल। जहिना खजूर-पातक ओछाइन, सिरमा, पौती बीअनि इत्यादि रंग-रंगक बौस बनबैक लूरि, तहिना ताड़क पातकेँ चटाइ, पंखा, झुनझुना इत्यादि गढ़ैक लूरिसँ सेहो भरल छैथ। जहिये बेटी ऐठाम हसीना पएर रोपि काजमे भागीदारिनी भेली तहियेसँ लोक 'खजुरिया समधीन' कहए लगलैन। ओना वयस पौला पछाइत समैध-समधीनक समए अबैए मुदा से हसीनाक संग नै भेल। जहिना कु-समैयोमे अन्हर-विहाड़ि, पानि-पाथर आबि जाइ छै तहिना खजुरियो समधीनकेँ भेल...।

सिनुरियो काका समधीने कहै छैन आ जे सभ सिनुरिया कक्काकेँ 'सिनुरिया काका' कहै छैन सेहो खजुरिये समधीन कहै छैन। मुदा जे जे कहैन, समाज तँ विशेषाधिकार दइए देने छैन। जइसँ किए ओ बुझती जे गाम अपन नै छी, तहूमे बराबरीक हिस्सा। कहुना भेली तँ गामक समधीन भेली, किए मनमे कुवाथ हेतैन जे कोनो पुरुख आँखि चढ़ि किछु कहैए। बजैक अधिकार जेते समैधकेँ तइसँ कम किए समधीनकेँ हेतैन। हएबो उचित नहियेँ। किएक तँ सृष्टिक सृजनमे दुनू एहेन अछि जे जात जकाँ असगरे चलियो नहियेँ सकैए। ओना महिला जगत नमहर अछि, तँए रंग-रंगक घर-दुआर, बोल-बाइन, सर-सम्बन्ध तँ ऐछे मुदा तइमे समधीन ऐगला मुहराक भेली। अगिले मुहरा ने गाड़ीकेँ रस्तो धड़ा चला सकैए आ दब-उनार करैत उनटाइयो सकैए। जँ समैध प्रेमसँ कहथिन, तँ समधीनो प्रमाग्नि भऽ बजती, नै जँ

क्रोधसँ कहथिन तँ ओहो क्रोधाग्नि नै होइथ, सेहो उचित नहियेँ...।

मुदा से बात सिनुरिया काका आ खजुरिया समधीनक बीच नै अछि। जहिना राधारमणकेँ सौंसे गामक लोक सिनुरिया काका कहै छैन तहिना हसीनाकेँ सेहो 'खजुरिया समधीन' कहिते छैन। से कोनो पुरुखे-पात्र नै महिलो-पात्र। जहिना एक उमेरिया दुनू तहिना एक कान्हीक सेहो। रंगो-रूप भगवानेक देल। कोन भगवानक देल, से ओ दुनू जानैथ। मुदा मासक हिसावसँ जहिना भगवान रंग बँटै छैथ तहिना दुनूकेँ एकमसुआ बुझि रंगो-टीप देने छथिन। तेतबे नै, हाथो-पएरक मिलान एहेन जे तेहल्लाकेँ परखब कठिन...। एक तँ अहुना जखन लोक घर छोड़ि आगू निकलैए तखन बोलीमे टाँस आनए पड़ै छै, हसीना तँ सहजे माए-बापक घरसँ सासु-ससुरक घर होइत बेटी-जमाए ऐठाम समधीन बनि रहली अछि, तँए तेखार कएल खेत जकाँ जहिना गामक समधीन तहिना समतल बोल...। सिनुरियो काका तेहने, जखन जे मनमे उचरल तखन सएह बजलौं। मुदा से पारखी खजुरिया समधीन। तहूमे ताड़-खजूरक बीच रहनिहारि, जइ जगहपर टगल-मरल आबि सिंहासन जमा सिंह बनि घण्टे भरिमे केते राज-पाट उनटा अपने उनैट घर दिस विदा होइए। तइ खेत परहक उपज हसीना।

ओना सिनुरिया काका सौंसे गाम एक-बेर-दू-बेर दिनमे घुमिते छैथ, मुदा बैसार तीनियेँ-चारिठाम छैन। चारू बेवसायी जगह, जइमे एकटा खजुरियो समधीनक छैन। ओना घर, बेटी-जमायक छी, मुदा घरोक बात तँ छोट-छीन नहियेँ अछि। जइ नाओंसँ बेसी लोक घरकेँ जनलक घर तेकर भेल। जेकरा समाजक अधिकार भेट जाइ छइ। केना नै भेटौ, जएह पञ्चवैया, सएह नीरनैया। मुदा किछु हौउ, हसना तँ हसने भेली। जमाए-रशूलोक विचारमे कोनो घटी-बढ़ी नै।

अनुकूले। अनुकूल ई जे घरक सभ कियो तँ जोटले छी, सभ सबहक तरी-घटी जनिते छी, तखन माइए-बापक नाओं ने लोक जगबए चाहैए से तँ ऐछे, जेहने अपन माए तेहने ने घरोवालीक माए। तेतबे किए, कुलक्षण-सुलक्षणक परीछा सेहो एकेठाम वृत्तिये अछि, भलेँ कियो अनेरूआ आ कियो कुलपूज हुअ...।

बरसाती समए भेने सिनुरिया काकाकेँ बैसारीमे बढ़ोतरी भऽ गेल छैन। हाटक काजसँ विदा भेला, रस्तामे खजुरिया समधीनक घर पड़ैत, दुनूकेँ अजमा नेने रहैथ। करीब अदहा किलो मीटरक दूरीमे दुनू गोरेक घर। ओना ई बात सिनुरिया काकाकेँ बुझल जे माघक चद्दैर, भदबरिया छत्ता-लाठी लाइए कऽ घरसँ निकली मुदा गामसँ कनियेँ हटि हाट, करीब किलो मीटरक दूरीपर। तहूमे जँघियाएल हाट। जँघियाएल ई जे एक दिन अहिना हाटपर रहैथ तखने बरखा शुरू भेलै, पुबरिया हवा सह दैत रहै आ पुबेसँ बरखो अबैत रहै, जेकरा लोक कातेसँ घुआँ जकाँ देखै। तीमन-तरकारी कीनि गमछामे बान्हि विदा होइत रहैथ आकि बर्खा-पानि अबैत देखलखिन। मनमे एलैन जे जखन हाटक काज भाइए गेल तखन अनेरे किए हाटोकेँ अजबाड़ने रहबै। अनेरे हाट-बजार भरल रहने जेबीक हेरा-फेरी हएत। तहूमे पँजराक जेबी, एक-दोसरसँ सटल, लोकक जेबीमे हाथ दऽ दियौ, जँ बुझि गेल तँ कहबै, अपना जेबीमे दइ छेलिऐ, अहाँमे चलि गेल। जँ सुतरल तँ शिकारी भेलौं। नै सुतरल तँ शिकार भेलौं। धोतीक ढट्ठा बान्हि सिनुरिया काका घर दिस दौगला, घर तक दौगले एला, मुदा बरखाकेँ पकड़ऽ नै देलखिन। से केलहा अनुभव रहैन, तँए बेसी बिसवास छेलैन।

ओना मेघो छँटल सन रहइ। दोसर, मनमे ईहो रहैन जे जखन टोले-टोल जाएब तखन जेतै बरखा हुअ लगतै, तेतै अँटैक जाएब।

तहूमे कोनो कि हम ओहेन रूआबी लोक छी जे केकरो दुआर-दरबज्जा दिस तकबो ने करबै। तहूमे कोनो कि बड़का भोजनदास छी जे हजारटा रसगुल्ला, पनरह किलो अण्डाएल ललमुहाँ रोहु माछक ओरियान घरबैयाकेँ करए पड़तै। उनाड़ी बर्खाक ओकाइते केते होइ छै, दस-पाँच मिनट भेल, तइले एक जुम तमाकुले की कम भेल। खजुरिया समधीनक घरसँ कनी पाछूए रहैथ तखने टोपर बान्हि मेघ आबि टीपा-टीपी टीप-टीपाए लगल। टीपो-टीपी कि कोनो एके रंगक होइए, केतौ झिसियाएल, केतौ बुनियाएल, केतौ गोलियाएल, केतौ पथराएल, तँ केतौ बिजलियाएल...। मुदा से नै गोलियाएल टीपा-टीपी देख सिनुरिया काका दौगल खजुरिया समधीनक ऐठाम पहुँचला। पुबे-पछिमे रस्ता, दछिन मुहेँ उत्तरसँ मुँह खुजल घर। ओना घरक मुहोँ केते रंगक होइए, एक फीट, एक हाथ, दू फीट, डेढ़ हाथसँ साढ़े तीन फीट पर्याप्त भेल। मुदा जइ घरक एक भागे खुजल रहत तेकरा की कहबै..? ओहने खुजल मुँहक खजुरिया समधीनक घर। रस्तेपर सँ छड़ैप कऽ सिनुरिया काका ऊपर चढ़ला। ऊपर चढ़िते, बजला-

"जेहने छुदराही घरवाली तेहने छुदराहा ओछाइन, केना पहुनमाक पैत बँचत?"

ओना हसीना समधीनकेँ मनमे जोरसँ धक्का लगलैन, मुदा किछु जगह एहनो तँ होइते अछि जैठाम सोचै-विचारैक समैए ने भेटै छइ। बनौआ हुअ आकि सिरजौआ, मुदा भेल तँ समधीने मिलान। की ओ नै जनै छैथ जे हमरे सन नारी अपनो घरमे छैन्हे। तखन तँ भेल भरि मुँह बाजि जिनगीक सुख-दुखमे भागीदार बनब...।

सिनुरिया कक्काक बात सठलो ने छेलैन आकि बिच्चेमे खजुरिया समधीन बजली-

"जेहने छुदराएल पहुनमा तेहने ने सुआगत। केतौ प्रेमो भेटत

केतौ परानो जाएत।"

ताड़क नमहर चटाइ। जैपर अपन समचा पसारि खजुरिया समधीन पंखा बनबैत रहैथ, सिनुरिया काकाकेँ देखते, चीज-वौस एक भाग करए लगली। बिना एकबगली केने बैसैक जगहो नै बनैत। तैबीच अधभिज्जू काका गमछासँ देह परहक पानि पोछए लगला। ओना खजुरियो समधीन बैसले-बैसल चीज-वौस नै बगलौलैन। उठि कऽ ठाढ़ भऽ नुहैर कऽ हटबए लगली। कारखानाक बीच जहिना समधीन तहिना स्नान कएल सिनुरिया काका। दुनू अपना-अपना नजरिये एक-दोसराकेँ पढ़बो करैथ। ओना सिनुरिया काका देखौआ नहाएल नै रहैथ बर्खाक पानिमे भीजल छला। मुदा मन अपन से मानैले तैयारे नै रहैन। कहैन जे लोक कलोपर नहाइए, इनारोपर नहाइए, डबरोमे नहाइए, पोखैरोमे नहाइए, मरलो धार[19]मे आ जीतहो धारमे तँ नहाइते अछि। तेतबे किए, गंगाक सिमरिया घाट आ इलाहावादक त्रिवेणी घाटमे सेहो स्नान करिते अछि, मुदा वदलाएल स्नानकेँ की कहबै? मन मानि गेल रहैन जे समधीनियाँ-आँखि जेहेन चमकैन मुदा अपने तँ से नै छी। बजला-

"समधीन, की हाल-चाल अछि?"

सिनुरिया काका विचारकेँ दाबि छोट करैत बजला तेकर कारण जे एक तँ लोक अपने बेथे तेते बेथाएल अछि जे कियो सुनिनिहार नै भेटै छै, तैपर जँ खोंरना लऽ खोंचारि देबै तखन तँ एकेबेर चुल्हे धधैक जाएत। मुदा मन गवाही दैत रहैन जे समधीन ओना बुढ़ाएल जकाँ बुझि पड़ै छैथ, दस-पाँच बर्खक खेल छैन, मुदा मुर्दघट्टीक बाटपर तँ ठाढ़े छैथ। बिजली-पंखाक आगू ताड़क पंखाक पूछ केतेकाल, जेतेकाल बिजली नै रहल मात्र तेतेकाल। मुदा मुँहक बरीसँ पहुनमा

[19] मोनि वा रूकल पानि

थोड़े खुश हेता, जखने बिजली औत तखने कारखानाक इंजन सेहो औत। मुदा एते बात तँ जरूर जे समधीनक भोगल जिनगीक किछु रहस्यमय विचार छिपल अछि। जँ से नै अछि तँ लोक ऐ बेवसायकेँ अंगीकार किए केलक।

जाबे सिनुरिया काका देह-हाथ पोछि कऽ सुखौलैन ताबे खजुरियो समधीन चटाइकेँ दुनू कोड़ पकैड़ दू बेर झाड़ि आगूमे पसारि देलखिन। सिनुरिया काकाकेँ बैसबैत अपना बैसलो ने छेली आकि बिच्चेमे बजली-

"हमरा सबहक दिने-दुनियाँ बेपाट भऽ गेल अछि तखन तँ कहुना दिन खेपिये जाइ छी। ऐ देहक ठेकाने केते जेतेकाल आँखि तकै छी खाली तेते।"

एक संग खजुरिया समधीन अपन जिनगीक प्रश्न उठा सिनुरिया कक्काक मनकेँ तोपि देलकैन, मुदा दोसर दिस मनमे एलैन, आशा बान्हि जिनगीक बाट चलब...।

प्रश्न उठबैत काका पुछलखिन-

"कारोबारक की हाल-चाल अछि?"

सिनुरिया कक्काक बात सुनि खजुरिया समधीनक मनमे उठलैन-हाल की रहत, बेहाल कहियौ आकि नेहाल कहियौ, छी तँ दुनूक बिच्चेमे। अपन झँपले-तोपल बात खजुरिया समधीन बेटी-जमाए घरक मान सेहो रखबे करती। बाघ रखए बोन आ बोन रखए बाघ। किछु भेलखिन तँ गामक खेलौनेटा नै, बेटी-जमाए घरक सिरिष-जन सेहो भेली...।

बजली-

"खाइ-पीबै जोकर जखन भाइए जाइए तखन नीक नै कहबै तँ

अधलो नहियेँ कहबै, सएह अछि।"

ठिकिया कऽ सिनुरिया काका जे विचार रखलैन से नै सुतरलैन। ओ ठीकियौने रहैथ जे पंखाक आमद-खर्चक बात उठौती, मुदा से नै उठौलैन। जहिना अपन चलाकी अढ़ दबि कऽ छेलैन तहिना ओहो अढ़े दाबि बजली। फेर मनमे उठलैन, मनुख की वनमानुख बनि बोनमे रहल, झाड़ी, डवहारी, दुभियाएल, छीलाएल, चिकनाएल सभतैर तँ ओकर बास छइहेँ। हालो-चाल की कोनो एके रंग रहैए, कियो सासुरसँ मारि खा अबैए तँ कियो सासु-ससुरकेँ मारि कऽ अबैए, कियो माए-बापक हाथे मारि खा चानक बनबैए, तँ कियो माए-बापकेँ मारि, बोहुक संग बंगलोर-बम्बइ ओगरैए। तहूमे परिवार तँ आरो बेसी झँखुराएल अछि। एक दिस बच्चाक स्कूलक समाचार रहल तँ दोसर दिस बेटी बिआहक, तेसर दिस पेटपूजाक रहल तँ चारिम दिस भोजनदासक। इत्यादि-इत्यादि...।

अपनाकेँ समटैत सिनुरिया काका बजला-

"केते उमेरमे पंखा बनौनाइ सिखलिऐ?"

ओना मनक असल विचार अखनो नै रखलैन। मनमे पंखाक प्रयोजन रहैन जे केते दिन लोक एकरा अभावमे कष्ट कटलक, तेकर निमरजना लेल उपए सोचि कथी उपए केलक। मुदा से नै, कियो पाकल आम देख बेठिकियाएल गोला सोझा-सोझी फेक तोड़ि लेत से केना मानल जेतै? किए ने मानल जेतै, अनुभवीक फेकब भलेँ नै हौउ, मुदा एहनो तँ सम्भव ऐछे जे आममे गोला लागियो सकै छइ। मन गुम्हरलैन। गुम्हरलैन ई जे एके तीरे आकि एके गोलीए निशान नै सधै, मुदा अनधुन हजार-पान सए फेकला बाद तँ आम टुटियो सकैए...।

जहिना प्रश्न फेक सिनुरिया कक्काक मन वौड़ाए लगलैन तहिना दोसर दिस खजुरिया समधीनक। समधीनक मनमे एक संग अनेको

प्रश्न उठि गेलैन- अपन जन्म डीह थोड़े छी, जे झूठ बजने माए-बापक नाक कटाएत। तहूमे ऊपर बाइली बेटी-जमाए ऐठाम छी, कनी-मनी कलछपनक मोजर थोड़े हेतइ...।

खजुरिया समधीनक मनमे ई बात ऐबते जेना छाती सकतेलैन। छाती सकताइते ताना मारैत बजली-

“समैध, हाल-चाल की कहबैन, हिनके सबहक आँखि-मुँह देख तीस बर्खसँ जीबैत एलिऐन, आब केते दिन जीबे करब, बस एतबे हकार देने जेबैन जे मुइला पछाइत देख लिहैथ जे खजुरिया समधीन चोरी-छिनरपन कऽ धरतीक अन-पानि खेलकैन आकि अपन बाँहि-बलसँ कमा कऽ खेपलैन, जे किछु देलैन तेकरा उपयोग कऽ जीलकैन आकि उपभोग कऽ।”

गैंची माछ जकाँ खजुरिया समधीन तेना ने तरे-तर छछाड़ी कटैत तेते पनिगर थालमे पहुँच गेली जे सिनुरिया काकाकेँ भाँजे बेभाँज भऽ गेलैन। फेर मनमे भेलैन जे एना नै काज चलत। बजला-

“समधीन, बिआहमे केतेटा रहिऐ?”

सिनुरिया काका ई सोचि प्रश्न फेकलैन जे जुआनी-जबानी जिनगीक वसन्त छी। जेकरा सभ चाहैए, मुदा भऽ की रहल अछि? मुदा खजुरिया समधीनकेँ अपन जन्मदात्री माए-बापपर नजैर पहुँच गेलैन। देखल-भोगल माए-बापक परिवार, जइ परिवारसँ बिआह-संस्कार तक भेलैन। साधारण किसान परिवार, कट्ठा दसेक अपन खेत, परदेशिया सबहक खेत मनखप लऽ पाँच बीघा जोतक किसान परिवार। खेतीसँ जुड़ल परिवार तँए खेतीक सभ लूरि परिवारमे सभकेँ। ओना बिआह माए-बाप ठेकनाइए कऽ केने रहैन। ठेकनाएल ई जे अपने तरहक किसाने परिवारमे केने रहैथ। मुदा जातीय दुर्गुणक चलैत सभटा खेत बोहा गेलैन। बँचैत-बँचैत कट्ठा भरिक घराड़ीमे

चौघारा घरटा बँचलैन। मुदा जहिना जातीय दुर्गुण छै तहिना सु-गुणो तँ छइहे। ताड़-खजूरक पत्ताक कारोबार करैक रोजगारो तँ आबिये रहल अछि...। मनमे उठिते जेना खजुरिया समधीनक छाती डोलि गेलैन। बाट-पड़ल घुच्चीक बीच अँटैक गेली। घुच्ची ऐ दुआरे जे मनुखमे अपन शक्ति छै, जे बाटक घुच्चीकेँ छीलि-छालि एकबट्ट कऽ लैत अछि। सासुर ऐबते खजुरिया समधीनक जिनगी घुच्चीमे फँसि मोड़ा गेलैन। जिनगीक बदलैक परिस्थिति बनलैन। जे हसीना माए-बापक ऐठाम अपन खेत-पथार, वाड़ी-फुलवाड़ीमे बारहो मास गीति गाबि समए बितबै छेली, सएह आइ हसीनाकेँ जिनगी मोड़ि सोलहन्नी अनाड़ी बना देलकैन।

तीन भाँइक भैयारीक परिवारमे खजुरिया समधीन छोट दियादनीक रूपमे सासुर एली। खगल घर, हाथे-पएरक बले चलैत। बरख दुइए-अढ़ाइयेक पछाइत भैयारीमे भीन-भिनौज भऽ गेल। कट्ठा भरि घराड़ीमे चौवगली घर, घरक आगूओ आ पाछूओमे किछु-किछु जमीन खाली। तीनू भाँइक बीच सबूतन छह धुर दू पौआ, दू कनमा, दस कनइ आ दस फनइक बँटबारा भेल। जे बँटवारा भाग लगा-लगा भेल, मुदा घरक अगवास तेहेन जे लग्गी-डण्टासँ बँटवारा हएबे कठिन भऽ गेल। तत्काल तँ घरे-घर आ अगवास साझीए रखलक, मुदा परिवारो तँ परिवार छी, दुनू जेठ भायकेँ तीन-तीन सन्तान, छोट भाए सन्तान विहीन। हालेमे बिआहो भेल आ उमेरोमे सभसँ छोट। चारि-पाँच बरख भीन-साझीक बीच परिवार चलल। भीन-साझीक माने ई जे घरे-घर बँटा, चुल्हि गड़ा गेल, चारिम घर जे दरबज्जा जकाँ छल ओ साझीए रहल। ताड़-खजूरक पातक कारोबार। कारोबार ई जे जहिना खजूरक पातकेँ बीअनि, ओछाइन, मौनी-पौती बनबैत तहिना ताड़क पातकेँ पंखा, चटाइ, झुनझुना इत्यादि बनबैत। जे कारोबार घर-अँगनासँ बाहर धरिक छेलैन। घर-अँगनाक माने ई जे आँगन-घरमे

बीनै छेली आ बाहर जा बिकाइ छेलैन। गाममे ताड़ो-खजूरक गाछक कमी नहियेँ। कमियोँ केना रहत जइ गामक लोक आमक शौखीन रहत ओइ गाममे आमक गाछी बेसी रहत, मुदा जइ गाममे ताड़ीक शौखीन रहत ओइ गाममे तँ तड़बोनीए-खजूरबोनी ने बेसी रहत। जहिना कँटाह खजूरक पात, तहिना धराह ताड़क पात। दुनू दिस धार, जहिना छाजामे तहिना पातमे। गाछक कँचका पातकेँ सुखबैले जगह चाही, ओना खजूरक पात घरक चारपर सुखबैत, मुदा ताड़क छाजा तँ भारी होइ छै जे घरेक छार उजारत, तँए जमीनेपर सुखबए पड़ै छइ। तैपर सँ हरोथिया करची सेहो, जेकर डाँट पंखामे लगैत, आ बाँसो, जेकर बत्ती डाँटमे लगैत तइ रखैले रक्का-टोकी शुरू भाइए गेल रहै, मुदा दोसरो कारण भेल। दोसर कारण ई भेल, जेठ दुनू भाँइक परिवार नमहर, काज केनिहार दू-दू गोरे, मुदा छोट-छोट बच्चाकेँ सम्हारैमे समए लगैत तँए तेसर भाएकेँ माने खजुरिया समधीनकेँ बेसी काज भेने आमदनियोँ बेसी होइ...। खसैत जिनगी अपन जेठ दुनू भाँइ उठैत तेसर भाइक जिनगीसँ द्वेष रोपि दोषारोपन शुरू करए लगल...।

माए-बापक देल संस्कार खजुरिया समधीनक परिवारकेँ अनुकूल बनौलक। अनुकूल ई बनौलक जे जहिना पिता तहिना माता बनि पोस पबैक लूरि सिखा देने रहथिन। जइसँ खजुरिया समधीन अपना पतिकेँ सेहो अनुकूल बना नेने रहैथ, जे यएह उमेर दुनियाँकेँ चिन्हैक अछि, ई उमेर अबोधसँ सुबोध बनैत सियान बनैत अछि। चाहे सियान पागल बनू आकि सियान मनुख, मुदा हूसब तँ हूसैत-हूसैत हुसिया जाएब। जँ अपन तराजूपर घरमराजक काँटा लगा तौल लेब सेहो भऽ सकैए आ नै जँ धोपचटेमे रहि जाएब तँ समाजक काँटा होइ आकि अपने वंशक, जइ दिन तौलल जाएब तइ दिन सभ कियो कानि कऽ रहि जाएत जे फल्लाँक वंश बँचल छै आकि बिलैट गेलइ। मुदा से नै, सासुर ऐबते खजुरिया समधीन फाँड़ बान्हि जिनगीमे कूदि

गेली। मनुखकेँ खगते केते छै, जेहेन जिनगी तेहेन खगता। जखन दुर्वासा मुनि दुभि खा कऽ कृष्णक गुरु बनैक दम अपनामे भरि लेलैन तखन हम सभ तँ अन्न खाइ छी...।

आगू दिस सम्बन्ध बनैक जहिना स्तर अछि तहिना पाछूओ दिस तँ ऐछे, ओही स्तरानुकूल दुनू जेठ भाइक परिवारक बीच सम्बन्धमे प्रगाढ़ता आएल आ तेसर भाएकेँ आगू बढ़ैसँ रोकैक षड्यंत्र रचए लगल। वएह रचना दुनू भैयारीक परिवारक धर्म ग्रन्थ बनि गेल। सात सालक बेटी खजुरिया समधीनकेँ, मुदा साँझ-परात दुनू दियादनियोँ आ भैंसुरोक मुँहक गारिसँ तरे-तर गड़ैत पताल पहुँच, अपनाकेँ सबुरक गाछमे बान्हि मानि लेलैन जे मुँहक गारि ताधैर लागि नै करैत जाधैर ओकरा बेवहारिक रूप नै देल जाएत। तँए जेठक बात छिऐन, अपन जिनगी तँ लोककेँ अपने हाथ-पएरक असिरवादे चलैए, हुनका सबहक बातकेँ असिरवादे बुझबैन, कमसँ कम अपन सम्बन्धक परिचए तँ कराइए रहल छैथ। खाएर जे से...।

दिन झुकि गेल रहै, मुदा साँझ नै पड़ल छल। संजोगसँ तीनू भैयोँ आ तीनू दियादनियोँ अँगनेमे रहथिन। स्त्रीगणक बीच नैहरक बड़प्पन आ छोटप्पनक बात जेठकी दियादनी चालि देलैन। खजुरिया समधीन ई नै बुझि पेली जे स्त्रीगणक एहनो सु-भाव बनै छै जे जँ अपन सासुर परिवारमे डुमैत देखैए तँ नैहरक झाँपल-तोपल बातसँ दोसराकेँ झाँपए चाहैए...।

खजुरिया समधीनकेँ एक दिस भाए-बापक किसानी संस्कार आ दोसर दिस अपन लूरि-बुधिक संस्कार एते जोड़ मारि देलकैन जे फाँड़ बान्हि आँगनमे माटि फेक बजली-

“जँ केकरो माए-बाप जनमा दूध पिऔलकै तँ की हमरा पानि पीआ पोसलकै?”

नक्शा बनाएल सिपाही जकाँ एक दियादनी, खजुरिया समधीनक बाँहि पकैड़ आगूमे बेटाकेँ ठाढ़ केलक, तहिना एक भाँइ पतिकेँ। अनधुन तीनू बेटियो, अपनो आ पतियो मारि खेलक। मारि खेला पछाइत खजुरिया समधीन पतिकेँ कहलखिन-

"जिनगीक पहिल मरन भऽ गेल। जे बँचल अछि आकि बँचल रहत, ओहीसँ ऐगला जिनगी बनबैक अछि।"

अपना देहमे खजुरिया समधीनकेँ स्त्रीगणक मारि लगल रहैन तँए देहक चोट कम आ मनक बेसी रहैन, दोहरी चोट दुनू दियादनियोँ आ दुनू भैंसूरो मिलि पतिक सोझहामे नंगटे ठाढ़ कऽ देने रहैन। मुदा तैयो तीनूमे अपनाकेँ होशगर बुझि खजुरिया समधीन पतियो आ बेटियोक सेवा करए लगली। धिया-पुताक मारि, बेटी लगले नीक भऽ गेलैन, मुदा लाठीक मारिसँ पतिक कपारो फुटल, डेनो टुटल आ देहो चुराएल रहैन। एक मास धिसियौर काटि पति मरि गेलैन। ओना लोक-लाज दुआरे दुनू दियादनियोँ आ भाइयो कनबे कएल, माटियो देलक मुदा खजुरिया समधीनक मन बड़प्पनसँ अड़प्पन दिस ससरए लगलैन।

पतिक मुइला पछाइत खजुरिया समधीन मास दिन तक ऐगला जिनगीक विचार करैमे हेराएल रहली। कारणो छल जे एक तँ पति विहीन सोग, दोसर काजो-उदेम आन समैसँ अलग बदैल गेलैन, जइसँ मन नव काज दिस खिंचा गेल रहैन...।

जेना-जेना आगू मुहेँ समए ससरए लगल तेना-तेना अपनो 'पतिक' सोग कमए लगलैन। जे सोभाविको अछि। सोभाविक ई जे जिनगीक जे मूल समस्या, जिनगी ठाढ़ भऽ चलैक, अछि ओ तँ आन कोनो समस्याकेँ ढकैलते अछि। ओना दोसर कारण ईहो छेलैन्हे, जे पैछला जे कमाइ रहैन ओ पतिक दबाइ-दारूक संग पथ्य-पानि होइत

दुनू माए-बेटीक खेनाइ-पीनाइ धरि पार लगौलकैन। मुदा मास दिन बीतैत-बीतैत ओहो सभटा जे घरक धएल-धरल रहैन, निङहैट गेलैन।

मास दिनक समए खजुरिया समधीनकेँ झिकझोड़ि देलकैन। पैछला जिनगीकेँ झिकझोड़ि खसा-पड़ा एकबट कऽ देलकैन। मुदा जाधैर मनुखो आ आनो-आन जीव-जन्तुक घटमे परान रहै छै ताधैर तँ जिनगीक आशा रहिते छइ। सएह खजुरिया समधीनकेँ सेहो भेलैन। आँखि उठा घर दिस तकली तँ बुझि पड़लैन जे घरक तँ चीनमारेक खुट्टा टुटि गेल! आब केना परिवार ठाढ़ रहत? कोनो परिवार उपारजनपर ठाढ़ रहैए। जेहेन उपारजन तेहेन घरक चुहचुही आ जेहेन घरक चुहचही तेहेन लोकक चुहचुही...।

खजुरिया समधीनक मनमे उठलैन, अछैते लूरिये जीब केना पाएब? ताड़-खजूरक पातक बौस बनबैक लूरि अछि, जेकर खगता अपनो अछि आ लोकोकेँ छै, मुदा पात हाथ तक पहुँचत केना? जहिना कुशल स्वावलंबी करीगर कँच्चा माल आ औजारक अभावमे अपनाकेँ अधमिरित बुझि आशा बान्हि हँसैत-खेलैत आगू डेग ई सोचि बढ़बैए जे जहिना जमीनसँ सात सीढ़ी ऊपर अकास अछि, तहिना सात सीढ़ी नीचाँ पतालो अछि जैबीच दुनियाँ अछि, तहीमे ने हमहूँ छी। परिवारक उपारजनक अदहा काज मरल देखलैन। मरल ई जे अपने सुखल पातकेँ चीरि बौस बनबै छी, से गाछसँ आँगन धरि पहुँचत केना। जहिना उत्तरी बिहारे नै आनो-आनो राज्यमे दछिनसँ सिमटी-लोहा पार नै भेने ईटाक घरे नै बनि पएल। आ जँ केतौ बनबो कएल तँ लोहाक काज लकड़ी आ सिमटीक काज माटि केलक, तहिना अपना मनकेँ खजुरिया समधीन पुछलैन-

"रे मनमा! बाज, बिनु डारिक गाछपर चढ़ि कऽ ताड़-खजूरक पात काटल हेतौ?"

प्रश्न उठिते खजुरिया समधीनक मन थकथका गेलैन। थकथकाइते थाकक-थाक सोग-पीड़ा मनमे उचरलैन । उचरलैन ई गेलैन जे की एहेन समाजमे हमरा सन तीस बर्खक विधवाक बास सम्भव अछि? जे तीन भाँइक भैयारीक परिवारमे जे हाथ पकैड़ अनने छला ओ दुनियाँमे रहबे ने केला, तखन कहबो केकरा करबै...।

लगले मन तमतमा गेलैन, तमतमा ई गेलैन जे पुरुख हुअ आकि मौगी, जँ अपन झाँपन-तोपन अपने नै राखत तँ आनक आशा केतेकाल। लगले मन आगू बढ़ि निर्णए करए लगलैन। करए ई लगलैन जे कारोबार अधखरूआ भेला पछाइत जँ ओकरा पुरबै दिस नै बढ़ब तँ जिनगी भार भऽ जाएत। जैठाम परिवारक संग एते पैघ अन्याय भेल आ समाज मुँह तकैत रहि गेल, ओ समाज तँ अपने मरल अछि। तैठाम हमरा सन मनुखक बास हएत! तखन? तखन तँ यएह ने जे जेतएसँ ऐठाम आएल छी तैठाम जा बसी, आकि बेटी-जमाए ऐठाम जा बसी..?

तीन-मुहाँनीपर ऐबते खजुरिया समधीनक मन जेना लसैक गेलैन। एक दिस वृद्ध माता-पिता, दोसर दिस डम्हाइत बेटी-जमाए। माता-पिता मनमे ऐबते फुड़लैन अपन जिनगीक भविस 'केते दिन जीब' आ माए-बापक भविस 'केते दिन जीवित रहता'मे बहुत अन्तर अछि। माए-बाप तँ बेटीए जकाँ बुझता मुदा भाए-भौजाइक सम्बन्धक जे हवा-विहाड़ि बहि गेल अछि तइमे तँ आरो दम घोंटि-घोंटि मरब..!

एक कोखिक सन्तानक बीच जैठाम एते दूरी बनि गेल अछि तैठाम मानव धर्म मात्र कल्पना छीहे भाए-भौजाइपर नजैर पड़िते खजुरियाक मन जेना मतमा गेलैन। होइन जे केते बाजी केते नै, मुदा वकारे नै फुटलैन। वकारो केना फुटितैन, जैठामक पुरुख-महापात्र, सहोदर बहिनकेँ कोसो दूर भगबए चाहैए तैठाम आन तँ सहजे आने

भेल...।

खजुरिया समधीनक मन फेर थकथका गेलैन। तीन बट्टीपर ठाढ़ भऽ हिया कऽ तकलैन तँ देखा पड़लैन जे एकटा मरिये गेल आ दोसर अधमरूए अछि...। बेटी-जमाएपर तेसर नजैर गेलैन। ओहो तँ बन्ने अछि, लोक बजै छै जे दुनियाँमे भीख माँगि खाइ बेटी ऐठाम नै जाइ। तखन? हँ, तखन उपए अछि, मनुख-मनुखेक असरामे रहत, तखन तँ भेल जे पाहुनक रूपमे अपनाकेँ नै बुझि घरबैया बनि रही। मनमे खुशी एलैन। एते दिन पति करबारी छला आब जमाए हएत, तखन तँ एतबे ने अपन इमान राखए पड़त जे जइ समाजमे बास-भूमि छल से नै रहल तँए आन समाजकेँ पहुनाइक सनेस किछु दिऐ। जेते खेबै-पीबै तइसँ बेसी कमा कऽ देबइ...।

खजुरिया समधीनक मन मानि गेलैन जे बेटी-जमाए ऐठाम रहब। मुदा लगले मनमे उठलैन सहनाक बिआह ने दू बरख पहिने भेल, मुदा दुरागमन तँ नै भेल अछि। मन कुचकुचा गेलैन। कुचकुचा ई गेलैन जे दुरागमनोकेँ की सीमा-नाँगैर छै, तहूमे आब, आब लोक दुरागमन करैए आकि माल-जाल फरिछौट करैए। जँ माल-जालक फरिछौट नै होइ छै तँ पति-पत्नीक दुरागमन भेल, मुदा बाल-गोपालक की भेल? देखा-देखी अहिना ने दुनियाँ चलै छइ। मुदा लगले मन बसैसँ पहिने छोड़ैक विचार केलकैन। मनुख तँ मनुख, बोनैया जानवर आकि मेघैया चिड़ै थोड़े छी, चास-बासबला ने छी। घराड़ीकेँ जँ खड़का नै लेब तँ तेहेन-तेहेन गरदैन-कट दियाद सभ अछि जे घराड़ी कटैमे केते समए लगतै।

योगी जकाँ खजुरिया समधीन तीनू काजकेँ एकठाम जोड़लैथ। जोड़लैथ ई जे घराड़ी ओहेन लोकक हाथे बेचि ली जे दुनू परिवारकेँ कहियो चैनसँ नै रहए दइ। फेर भेलैन जे जखन गामसँ जाइते छी,

तखन जँ समाजो रूपे कहियो नजैर पड़ता तँ आँखि डोलि जाएत। तँए नीक हएत जे तेहल्लाक बीचमे आड़ि-पाटिक दरमे दुनू भैंयेकें दऽ देबैन। तइसँ ईहो हएत जे जँ पहिनौं दाम लऽ लेबै तैयो आशापर ओतेकाल रहबे करब, जेतेकाल बेटी-जमाइक संग घरसँ नै विदा हएब। मन आगू बढ़लैन। बेटीक संग जमाए आ तैसंग अपने जाएब नीक नै, मुदा कएलो की जाए? किछु ने। बेटीकें अगुआ अपने जाएब। खजुरिया समधीनक मन ठमकलैन। ठमैकते विचार करए लगली, जैठाम तीनूक संग चलैक बन्धन समाजमे अछि तैठाम जँ बन्धन तोड़ि निकली आ दोसर समाज रहैक अनुमति नै दिअए तखन केतए भऽ रहब..?

फेर लगले मन घुरलैन जे समाज तँ समुद्र छी, जइमे लाल मोतीक संग घोंघी-सितुआ सेहो रहिते अछि। तैठाम दुनूकें बेराएब कठिन अछि। केतेक एहेन पारखी अछि जे घोंघा-सितुआ आ लाल-मोतीक सम्बन्धकें परेख पौत? के बूझत जे घोंघे-सितुआक पेटसँ लाल मोती सेहो अबैए? एक जिनगीक इतिहास छी, तैठाम हमरा नुकाएल नै हएत। डंका बजा कऽ नै कहबै जे समधीन बनि आएल छी, कहबै जे अपन बेटी-जमाइक सेवा करए आएल छी। देखै छी जे नेपालमे नागरिकता लेल एते छान-बान रहितो लोक अपन अंगीतक ऐठाम रहि नागरिकता पाबिये लइए, गाम-समाज तँ ओइ देशसँ बहुत छोट भेल, मनमे ऐबते खजुरिया समधीनकें खुशी भेलैन। मन-मानि गेलैन जे बेटी-जमाए ऐठाम रहब अनुचित नै भेल। मुदा लगले फेर भेलैन, मुँह नुका कऽ गाम छोड़बो आ प्रवेशो करब नीक नै। जँ गामसँ मुँह नुका कऽ जाएब तँ सभ दिन समाजक आगू मुँह खसले रहत, तहिना जइ गाममे छिप कऽ प्रवेश करब ओहो तँ तहिना हएत। ई सम्भव अछि जे जैठामसँ निकलब, तेकरा सोझा नै पड़ने मुँह निच्चाँ करैक प्रश्ने ने औत, मुदा जैठाम आगू जिनगी चलत तैठाम मुँह खसा कऽ रहब..?

खजुरिया समधीनक मन तरसऽ-कलपऽ लगलैन। जहिना एक समाजसँ तरस रहैन तहिना दोसर समाज तड़ैप कऽ पहुँचब छेलैन। लगले मनमे उठलैन सभसँ बड़ो समाज, समाज परिवार आ परिवारक लोककें जीवन-मरण दइक शक्ति रखैए। तँए पहिने अपना समाजकें पुछि, अनुमति लऽ ली। तखन भेल जे जइ समाजमे जाएब से समाज अंगीकार करत की नै? किए ने करत, जखन ओइ समाजक सीख-लीख पकैड़ चलब तँ किए ने समाज समाज बूझत...।

मनमे उठिते खजुरिया समधीन अदहा रस्ता खोलि लेली आ अदहा खोलैक विचार करए लगली। समाजो तँ समुद्रे जकाँ ने गुँहखत्ताक पानिसँ लऽ कऽ गंगा-यमुना आ सरस्वती नदी धरिक पानि अपना पेटमे समैट रखने अछि। जँ समाजमे कियो एहेन अछि जे कोनो बातकें बिनु बुझनौं बतोत्तर करैए, तँ एहेनो तँ छैथे जे बातोत्तर करै छैथ, तखन? तखन किछु ने। एतबे जे पाँच-दस गोरेसँ विचारि ली। पाँच-दस मीलि करी काज हारने-जीतने कोनो ने लाज। आगू बढ़िते खजुरिया समधीन घरक थारी लोटा, घराड़ीक रूपैआक संग बेटीकें अगुआ जमाए ऐठाम विदा भेली...।

गामक सीमान टैपते पाछू घुमि गामकें गोर लागि दुनू माए-बेटी आगू बढ़ली। बाटमे बेटीकें कहलखिन-

"बुच्ची, बिनु पुरुखक परिवार ओहने भऽ जाइ छै, जहिना बोनमे राम विहीन सीताकें रावणक फाँसमे फँसि भेलैन।"

सहनाक मनमे कोनो विकार नै। अखन ओ उमेर नै जे सासुरक बास बुझैत, दूधमुहौं बच्चा जहिना माइक संग काँट-कुशसँ लऽ कऽ कोठा-सोफा धरि, माइक संग एके रंग बुझैत, तहिना सहनो...। बाजलि-

"से की, से की माए?"

बेटीक जिज्ञासा देखते हसीना फूलक कोढ़ी जकाँ प्रस्फुटित होइत बजली-

"बेटी, बेटी चाहे राजघाटक हुअए आकि मुर्दघाटक, बेटी-बेटीए होइए।"

माइक झाँपल-तोपल बात सहना नै बुझि पेलक, फेर जिज्ञासा करैत बाजलि-

"से की माए?"

सह पबिते हसीना सहैट आगू बढ़ि बजली-

"बुच्ची, जहिना सीता महरानी, महरानी नै बनि बोने-बोन बितेली, तहिना सभ बेटीकें बितबैले कलेजा थामि लेबा चाही। जाबे तक आँखि तकै छी ताबैए तकक ने हमर आशा तोरो हेतौ, तेकर पछाइत तँ अपने लूरिये-मुहें ने जिनगी बितेमें।"

माइक बातसँ जेना सहनाकें माथपर किछु भार-स्वरूप पड़ल। मुदा भारो तँ साधारण नहियें जे सहना बुझि पबैत...।

आने मिथिलांगना जकाँ सहनो मुँह बन्न कऽ सुनि लेलक। बाजल किछु ने।

गामक सीमान माने सहनाक सासुर आ खजुरिया समधीनक समधियौरक सिमानपर पहुँचते दुनू माइ-धी बैस रहली। किरिण डुमैक समए। बाध-बोनसँ गैवार-महींसवारक संग गोबरबिछनी, घसवाहिनी सभ गाम दिस विदा भेल तँ दुनू माए-बेटीकें बैसल देख एकटा घसवाहिनी बजली-

"सुआसिनी, कोन गाम जाएब?"

गैवार-महींसवार गाए-महींसक संग आगू बढ़ि गेल मुदा गोबरबिछनियौं आ घसवाहिनियौं ठाढ़ भऽ गेली। 'सुआसिनी' सुनि

खजुरिया समधीनकें सुआस एलैन। सुआस ऐबते बजली-

"अखन धरि बटोही छेलौं, मुदा आब से नै छी, जँ ऐ गामक लोक रहए देता तँ अही गाममे रहि जाएब।"

'अही गाम' सुनि सभकें आगूक बात बुझैक जिज्ञासा भेलैन। घासक छिट्टो-खुरपी आ गोबरक पथियो सभ रखि चारूभर सँ दुनू माइ-धीकें घेरि कऽ बैस गेली। सोनियाँ दादी सभसँ उमेरगर, तँए सभ हुनके गप करैले देलकैन...।

सोनियाँ दादी खजुरियाकें पुछलखिन-

"ऐ गाममे कियो अंगीतो छैथ?"

'अंगीत' सुनि खजुरिया समधीन सहनाकें देखबैत बजली-

"ऐ बच्चाक सासुर छिऐ, बाप नै छै, हम माए छिऐ, तँए जिनका संग दान केने छी तिनका लग पहुँचबए जा रहल छी।"

सहनाकें गामक बेटी नै पुतोहु बुझि संकोच करैत सोनियाँ दादी पुछलखिन-

"किनकर पुतोहु छथिन?"

जहिना पत्नी पतिक नाओं लइसँ संकोच करैत तहिना कनियाँक माइयो तँ संकोची भाइए जाइ छैथ। से खजुरियो समधीनकें भेलैन, मुदा संकोचकें संकुचित करैत खजुरिया समधीन बजली-

"रशूल, जमाए हेता।"

रशूलक नाओं सुनिते सोनियाँ दादी थकमका गेली। थकमका ई गेली जे रशूलक घर तँ अपने घर लग अछि। लगक पड़ोसिया तँ हम भेबे केलिऐ, तँए अरियाति कऽ लऽ जाएब नीक हएत। बाल-बोध हुअ आकि सियान मुदा गामक बेटी नै पुतोहुए ने भेली। मुदा हमहूँ किछु भेलौं तँ तेहल्ले भेलौं। कोनो जरूरी छै जे दुनू परिवारमे प्रेमक

मिलानीए होइ, गरमिलानियोँ तँ भाइए सकै छइ। एहेन स्थितिमे संगे लऽ जाएब नीक हएत? अनेरे दुनू परिवारक बीच घड़हरिया जकाँ गनजन हएब। मुदा संगो छोड़बकैँ कियो नीक थोड़े कहत? अनेरे लोक कहबे करत जे सोनियाँ दादी चीन्हि कऽ अनचीन्ह केलक। असमनजसमे सोनियाँ दादी पड़ि गेली। मुदा लगले जुइत फुड़लैन। जुइत ई फुड़लैन जे एहेन विचार असगर-दुसगरमे आबि सकैए, ऐठाम कि कोनो असगरे छी। एक गोरेकैँ समदिया बना घरपर समाद पठा देब नीक हएत, समाज छी अपन समाजिकता निमाहैक ताबैए तक ने भागी छी, जाबे तक घरवारीक कान तक समाद नै पहुँचल। सुनला पछाइते ने नीक-अधलाक विचार हएत...।

सहरगंजे सोनियाँ दादी बजली-

“रशूल ऐठामक समदिया के हेमे?”

जहिना कोनो नव बात, नव काज वा नव समाचार पबिते कियो ओकरा बाँटए चाहैए तहिना गोबरबिछनियोँ आ घसवाहिनियोँक बीच भेल। एककैँ के कहए जे अनेको समदिया भऽ गेल। दूटा अधढेरबा बच्चिया दियए समाद रशूलक परिवारमे पहुँचल। समाद पबिते रशूल माइक संग पहुँच दुनू गोरेकैँ अरियाति अपना ऐठाम अनलकैन। जेकरा तीस बरख भऽ गेल।

...अपन बात पुछि सिनुरिया काका खजुरिया समधीनपर नजैर अँटका उत्तर तलासए लगला। सिनुरिया कक्काक बात सुनि खजुरिया समधीन ठमैक गेली। ठमैकते मन नाचए लगलैन। नचैत मन माए-बापक संग वाड़ी-झाड़ीमे केना सजमैन, कदीमा इत्यादि अपन हाथक लगौल लत्तीसँ आनि खाइ छेलौं, मनमे ऐबते बिहुँसि गेली। बिहुँसब देख सिनुरिया काकाकैँ भेलैन जे समधीन नीक जकाँ सभ बात कहती,

मुदा लगले खजुरिया समधीनक मन दहैक गेलैन। दहैक तखन गेलैन जखन नैहर-सासुरक बीच अपन टुटैत जिनगी देखलैन। देखते दहकल मन बिदैक गेलैन।

समधीनक बिदकब देख सिनुरिया काका भोथिया गेला। भोथिया ई गेला जे ई की भेल- एक मुँह कानब एक मुँह गीत..?

जहिना सिनुरिया काका भोथियाएल तहिना खजुरिया समधीन सेहो वौड़ाएल बतही बटोहिन जकाँ कखनो हँसैत तँ कखनो कनैक सुरसार करए लगली। मुदा बेटी-जमाए ऐठाम कानबो उचित नै बुझि अपन सासुरपर नजैर गेलैन। नजैरकैँ सासुर पहुँचते मुँह मुस्कियेलैन। मुस्कियाइते सिनुरिया काकापर नजैर एलैन तँ बुझि पड़लैन जे भरिसक अपने बातमे ओझराएल छैथ अखन सुनैक मन नै छैन। समैयो तँ सएह भऽ गेल अछि जे केकरा एते पलखैत छै जे माए-बाप आ सर-समाजक बात सुनत आकि बूझत। मुस्कियेली ऐ दुआरे जे जखन सासुरमे तीनू भैयारीमे अपनाकैँ उठैत देखलैन। मुदा लगले भैयारीक दुश्मनी मन पाड़ि मनकैँ चूड़ि देलकैन...।

लगले हसनमुँह आ लगले कननमुँह समधीनक देख सिनुरिया काका आरो भोथिया गेला। ई की भेल? की विपटाइ कला आ हँसोर कला एके भेल? जोकराइ तँ ओ भेल जे धारा छोड़ि कुधाराक प्रदर्शन करैए, मुदा...।

सिनुरिया कक्काक मन बेकाबू भऽ गेलैन। होश हवसा गेलैन। हवास होइते मनमे उठलैन जे एना झाँपि-तोपि बजने काज नै चलत। खोलि कऽ बजला-

“समधीन, अखन परिवारमे केते आमद अछि आ केते खरच?”

जहिना थलाह हाथे गैंची पकैड़ राखब, आकि अधडरेड़पर सँ बिलक साँप पकड़ब कठिन अछि तहिना खजुरिया समधीनक पेटक

बात निकालब सिनुरिया काकाकैँ उकड़ू भऽ गेलैन। गैंची जकाँ ससैर खजुरिया समधीन बजली-

“जानए जअ आ जानए जत्ता। हम तँ उलफी भेलौं, अनेरे कोन जरूरी अछि केकरो घरक नीक-बेजए बुझैक।”

गैंची जकाँ गैंचियाइत समधीनकैँ देख सिनुरिया कक्काक मनमे भेलैन, एना नै हएत। बजला-

“समधीन, जँ आइ अहाँक पाहुन भऽ जाइ तँ पौहुनाइ कराएब? देखते छिऐ जे केहेन पानि होइए जे ने बाट छोड़ैए आ ने बाट पकड़ैए।”

ऐ बेर सिनुरिया काकाकैँ सुतरलैन। खजुरिया समधीन बजली-

“समैध, नै पान तँ पानक डण्टियो लऽ कऽ सुआगत करबे करबैन। जानियेँ कऽ तँ भगवान गरीब बनौने छैथ, तखन दरबज्जापर आएल पहुनकैँ नै किछु तँ एक लोटा पानियोँसँ तँ मान रखबे करबैन।”

जहिना पनहाइत गाए महींसकैँ मलकार परेख लैत अछि तहिना सिनुरिया काका खजुरिया समधीनकैँ परखलैन। परेख बजला-

“भरि दिनमे कएटा पंखा बना लइ छिऐ?”

‘कएटा बना लइ छिऐ’ सुनि खजुरिया समधीन ठमैक गेली। ठमैक ई गेली जे एके गरे काज थोड़े होइए। पहिने गाछसँ काँच डारि काटि सुखौल जाइए, तखन ओकरा पत्ताकैँ चीरि-चीरि छोड़ौल जाइए, तेकरा बाद ओकरा छाँटि-छूँटि बाँसक डाँट बना ने बनौल जाइए। तँए ठाँहि-पठाँहि किछु कहब कठिन अछि। बजली-

“कोनो कि एक दिनक काज छी जे दिने-दिन हिसाब बुझबै।”

जइ दुआरे सिनुरिया काका बात उठौलैन से फेर नै भेलैन। मनमे छैन जे एको गोरेसँ पातक भाँज लगलासँ सभ भाँज जँ नहियोँ तँ

बहुत भाँज तँ लगिये जाएत। तेकर कारण भेलैन जे जहिना कोनो गाछक सिर उखाड़ला पछाइत उखाड़ैक सम्भावना बढि जाइए, तहिना भेलैन, मुदा गाछक मुसरा उखरत आकि नै उखरत ई तँ प्रश्न अछिए। उखड़ियो सकैए आ नहियोँ उखैड़ सकैए। ई तँ गाछपर निर्भर करैए। मुदा जिनगीक गाछक मुसरा सिराहेटा नै जलाहो होइए। सिनुरिया कक्काक मन थकमकेलैन। थकमकाइते पाछू उनैट देखलैन तँ एकटा मोटगर सोड़ि पकड़ल बुझि पड़लैन। बजला-

“समधीन, नै बुझलौं जे की कहलिऐ- जानियेँ कऽ गरीब भेलौं?”

खजुरिया समधीन जानि आ मानिक अरथे ने बुझै छेली। एकेकैँ दुनू बुझै छैथ, मुदा तेहेन बात पुछि रहल छैथ जे की कहबैन। धखाइत बजली-

“समधी, ईहो बड़ बतबनौन छैथ, हमरा गाम दिस अहिना लोक बजैए जे जान-मान एके छी।”

ओना सिनुरिया काका जान-मानमे ओझरए लगला। मुदा मनमे एलैन, जिनगी जाल छी, एक दिस घुरछी छोड़बै छी तँ दोसर दिस लगि जाइए। आकि नबके बनि जाइए। आब कहू जे अमीर-गरीब जनमाउ छी आकि बरखाउ? ई केना झाँपल-तोपलमे बूझब? होइ तँ दुनू छइहे, बुढ़ाड़ीमे बजैकाल सभ बजैए जे हमर जिनगीक अमुक समए स्वर्णकाल छल आ अमुक समए अन्धकारकाल। मुदा केना स्वर्णकाल एबो कएल आ गेबो कएल, से केना बुझबै? जीह जाँति बजला-

“समधीन, एहनो तँ समए रहबे ने कएल हएत जे नीक-निकुत खेबो-पीबो केने हएब आ घरो-दुआर बनौने हएब?”

सिनुरिया कक्काक बात सुनि खजुरिया समधीनक मनमे खुशी उधकलैन। उधैकते चौअनियाँ मुँह फुल-फुलेलैन। फुल-फुलाइते

बजला-

“समधी, की दिन छल आ की दुनियाँ, चारूकात हरियरे देखिऐ। मुदा दिन धराबए तीन नाम।”

खजुरिया समधीनक बात सुनि सिनुरिया काका फेर भोथियए लगला। मनमे उठलैन कहू, ई की भेल? एक दिस ‘हरिहरे’ दोसर दिस ‘तीन नाम’ सेहो बाजिये देलैन। मन कहलकैन, जहिना अपनेकेँ पीछराह पुरुख बुझै छी तहिना भरिसक समधीनो पिछराहे छैथ। एक तँ एके पीच्छर केतेकेँ पीछरा खसबैए, तैपर टिकासन धेने समधीनो...।

लगले मन धक्का मारलकैन। बजला-

“घरक नोन-तेल आ जारैन-काठीसँ लऽ कऽ लत्ता-कपड़ा, घर-घरहट करैत हाथ-मुट्ठीमे केते सालक पछाइत बँचै छेलए?”

सिनुरिया कक्काक बात सुनि फेर खजुरिया समधीन सुरकुनियाँ मारि बजली-

“समधी, हिनकासँ कोनो लाथ किए करबैन। जहिना ई पोता-पोतीक बीच जीबै छैथ तहिना ने हमहूँ नाति-नातीनक संग अही समाजमे जीबै छी। दुनू गोरे एक बतरिया भेलौं, हम अहाँ जे करबै, जेना चलबै तहिना ने बालो-बच्चा ठेकना कऽ चलतै। जखन अहूँ बाबा-दादाक कोरामे छेलौं तही समए ने हमहूँ छेलौं, जखन दुनू गोरेक माए-बाबू एकठाम दुनू गोरेकेँ रखि खेलौने हेता तखन भाइए-बहिनक सम्बन्ध बनौने हेता किने?”

एक संग अनेको प्रश्न खजुरिया समधीनक सिनुरिया कक्काक मनमे आबि अँटैक गेलैन। बर्खाक बुन्नो छोट होइत-होइत छूटि गेल। वादलो टुकड़ी-टुकड़ी होइत छँटए लगल। बीच दोग देने सुर्जक लाली उगल। लाली उगिते खजुरिया समधीनक मन सेहो ललियए लगलैन।

सिनुरिया काका बजला-

“समधीन, जेतबो दिन हम सभ ललियाएल रहलौं तेतबो दिन धिया-पुता थोड़बे ललियाएल रहत। तखन तँ जेतबे दिन जीबै छी तेतबे दिनक ने भागी हेबइ। जाइ छी।”

ÓÓ

तिथि : 04 अक्टुबर 2014, शब्द संख्या : 6098

परिचय

नाओं : जगदीश प्रसाद मण्डल
जन्म : 5 जुलाई 1947 ई.,
माता : स्व. मकोबती देवी।
पिता : स्व. दल्लू मण्डल।
पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।
पता : गाम- बेरमा, भाया- तमुरिया,
प्रखण्ड- लखनौर, अनुमण्डल- झंझारपुर,
जिला- मधुबनी, (बिहार) पिन : 847410, **मो.** 9931654742

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। **जीविकोपार्जन :** कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती) **शिक्षा :** एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र) **साहित्य लेखन :** 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...। **सम्मान/पुरस्कार :** ‘विदेह सम्मान’, ‘विदेह भाषा सम्मान’, ‘टैगोर लिटिरेचर एवार्ड’, ‘वैदेह सम्मान’, ‘यात्री सम्मान’, ‘विदेह बाल साहित्य पुरस्कार’ तथा ‘कौशिकी साहित्य सम्मान’सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

मौलिक रचना संसार- 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन- उपन्यास। 26. कल्याणी, 27. सतमाए, -28. समझौता, 29. तामक तमघैल, 30. बीरांगना- एकांकी। 31. तरेगन, 32. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 33. शंभुदास, 34. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 35. गामक जिनगी, 36. अर्द्धांगिनी, 37. सतभैंया पोखैर, 38. गामक शकल-सूरत, 39. अपन मन अपन धन, 40. समरथाइक भूत, 41. अप्पन-बीरान, 42. बाल गोपाल, 43. भकमोड़, 44. उलबा चाउर, 45. पतझाड़, 46. लजबिजी, 47. उकड़ू समय, 48. मधुमाछी, 49. पसेनाक धरम, 50. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 51. फलहार, 52. खसैत गाछ, 53. एगच्छा आमक गाछ, 54. शुभचिन्तक, 55. गाछपर सँ खसला, 56. डभियाएल गाम, 57. गुलेती दास, 58. मुड़ियाएल घर, 59. बीरांगना, 60. स्मृति शेष, 61. बेटीक पैरुख, 62. क्रान्तियोग, 63. त्रिकालदर्शी, 64. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- लघु कथा संग्रह। ○ ○ ○



पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड न. 06,
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

₹ 251

ISBN : 978-93-87675-22-3